महाकाव्य
माया
संसार चन्द प्रभाकर
-Akant-

पुस्तक की यह प्रति
आदरणीय श्री नसीब सिंह
मन्हास को सादर-सस्नेह

[illegible]

21/5/95

हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी द्वारा समीक्षित एवं दो हज़ार रुपये की वित्तीय अनुदान सहायता प्रदत्त—

महाकाव्य

'माया'

संसार चन्द 'प्रभाकर'

प्रकाशक : नीरज प्रकाशन, पंकज भवन,
फतेहपुर-176053, तह० ज्वाली (कांगड़ा) हि० प्र०
दूरभाष : 209

प्रथम संस्करण दिसम्बर, 1991
मूल्य : 65-00 रुपए

मुद्रक : रोहिणी प्रिंटर्ज, कोट किशन चन्द,
जालन्धर-144004.

संसार चन्द 'प्रभाकर'
गांव-डा० फतेहपुर
तह० ज्वाली (कांगड़ा)
हि० प्र०, पिन-176053
दूरभाष : 209

'माया'

महाकाव्य का ब्योरा

इस महाकाव्य में सरसी, सार, दोहा, सोरठा, कबित्त तथा कुंडलीय आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है।

—संसार चन्द 'प्रभाकर'

Maj. D. D. KHANURIA
Member of Parliament
(Lok Sabha)

161, South Avenue,
New Delhi-110011
Phone : 3792064

P. O. Bnuri,
Ten. Palampur,

Kangra (H. P.)
Phone : 2356 PLP
Dated 15 Dec., '91.

सन्देश

पहाड़ी भाषा में अभी तक कोई महाकाव्य नहीं लिखा गया था। श्री संसार चन्द 'प्रभाकर' नें इस ओर अपनी कलम उठा कर हिमाचल-प्रदेश का प्रथम महाकवि होने का गौरव प्राप्त किया है। अठारह सर्गों का यह 'माया' महाकाव्य छन्दोबन्द है। इस महान ग्रंथ के अंश 'हिम भारती' पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुके हैं। श्री संसार चन्द 'प्रभाकर' का हिमाचल प्रदेश के साहित्यकारों में विशेष स्थान है। पहाड़ी भाषा में महाकाव्य की रचना कर के इन्होंने पहाड़ी साहित्य को समृद्ध करने का स्तुत्य प्रयास किया है। मैं इन्हें इस महान कार्य के लिए हार्दिक बधाई देता हूं।

Maj. D. D. KHANURIA
Member Parliament
LOK SABHA

राधा रमण शास्त्री

शिक्षा मन्त्री,
हिमाचल प्रदेश,
शिमला-171 002.

सन्देश

महाकाव्य 'माया' पहाड़ी भाषा में रचित हिमाचल प्रदेश के प्रतिष्ठित कवि श्री संसार चन्द 'प्रभाकर' की काव्य रचना है। यह छन्दोबन्द रचना अठारह सर्गों में विभाजित है और पुस्तकाकार में आने से पूर्व 'हिम भारती' में इसका धारावाहिक प्रकाशन हो चुका है।

वास्तव में पहाड़ी भाषा में रचित साहित्य अधिकांशतः अपनी माटी की गन्ध लिए रहता है। इसमें अपनत्व का एक अनूठा अहसास होता है, जो हर शब्द से स्वतः झलकता प्रतीत होता है।

मुझे विश्वास है कि श्री 'प्रभाकर' की उक्त रचना का पहाड़ी भाषा के अनेक कवियों, लेखकों और अध्येताओं द्वारा तो स्वागत होगा ही, इससे नवोदित रचनाकारों को भी पहाड़ी भाषा में साहित्य सृजन की प्रेरणा मिल सकती है।

मैं लेखक को उनकी साहित्यिक उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई देता हूं और उनके उज्जवल भविष्य के लिए अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त करता हूं।

राधा रमण शास्त्री

'दो शब्द'

महाकाव्य किसी भाषा के साहित्य का अलंकरण होता है। महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना क्षेत्रीय भाषा अवधी में कर के राम कथा को जन मानस के आधार से जोड़ा और कालान्तर में यह योगदान ग्राम्य संस्कृति का आभूषण बन गया। गांवों में निवास करने वाले अपठित व्यक्ति जब, "रघुकुल रीति सदा चलि आइ। प्राण जाएं पर बचन न जाइ।" कह कर अपनी धारणा व्यक्त करते हैं तो तुलसीदास अनायास स्मरण हो आते हैं।

प्रस्तुत महाकाव्य 'माया' के रचनाकार संसार चन्द 'प्रभाकर' ने भी स्थानीय उपभाषा में ग्रंथ रचना करके प्राचीन भारतीय परम्परा का निर्वाह किया है। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत प्रबंध काव्य तथा महाकाव्य पर्यायवाची माने गए हैं किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रबंध काव्य में रसात्मकता को इतिबृत से अधिक महत्व दिया है। कुछ अन्य विद्वानों की धारणा है कि प्रबंध काव्य में नायक के सम्पूर्ण जीवन चरित्र को अंकित करने की आवश्यकता नहीं होती जबकि महाकाव्य में नायक का समग्र जीवन अभिव्यक्त होता है।

आचार्य विश्वनाथ ने प्रबंध काव्य के महाकाव्य, काव्य तथा खण्ड काव्य नाम से तीन भाग निर्धारित किए हैं। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार प्रबंध काव्य के तीर गीत, महाकाव्य, छन्दबद्ध रोमांचकारी कथाएं तथा यथार्थवाद के चार महत्वपूर्ण अंग हैं। कतिपय भारतीय विद्वान प्रबंध काव्य के महाकाव्य और खण्ड-काव्य दो भेद मानते हैं।

महाकाव्य की परिभाषाएं कालान्तर में बदलती रही हैं। संस्कृत के आचार्य भामह ने महाकाव्य को सर्गबद्ध, विशाल, गरिमापूर्ण भाषा में लिखित साहित्यिक कृति माना है। संस्कृत मनीषियों का विचार है कि चतुर्वर्गफल विधा से युक्त रचना ही महान काव्य कही जा सकती है। संक्षिप्त रूप से यह कहा जा सकता है कि महाकाव्य ऐसी रचना होती है, जिसमें कोई महान उद्देश्य उद्घाटित होता है। इस का कथानक ससम्बद्ध तथा सुसंगठित होता है और उस में कथाकार की विलक्षण काव्य प्रतिभा की छाप होती है। महाकाव्य में युग विशेष के सम्पूर्ण विचार चिन्तन का चित्रण रहता है और उस के नायक नायिका मानव शरीर में होते हुए भी दिव्य भावों से ओत-प्रोत रहते हैं। वास्तव में महाकाव्य मानव चिन्तन की उच्चतम भावभूमि पर आधारित प्रेरणादायक उदात्त रचना होती है और इस के माध्यम से कालगत परिस्थितियों की झलक अनायास ही उपलब्ध हो जाती है। महाकाव्य 'माया' उपरोक्त कसौटी पर कैसा उतरता है, इसका निर्णय सुधि पाठक वर्ग ही करेगा परन्तु यह निश्चित है कि पहाड़ी की कांगड़ी उपभाषा में रचित इस ग्रंथ से पहाड़ी भाषा की साहित्यिक क्षमता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकेगा।

हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय भाषा पहाड़ी है। इस की प्रमुख बोलियों यथा कांगड़ी, कलहूरी (बिलासपुरी) मुंडियाली चम्बियाली, सिरमौरी, महासुवी, कुल्लई आदि में पर्याप्त साहित्य प्रकाश में आ रहा है परन्तु अभी तक भाषा का मानकीकरण पूर्ण न होने के कारण इस का स्पष्ट स्वरूप निश्चित नहीं हो सका है। किसी भी भाषा के स्वरूप निर्धारण के लिए उसमें रचित साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्यिक कृतियों की विषयगत विविधता ही भाषा का स्वरूप निखारती है। इस दृष्टि से भी इस कृति का महत्व है।

श्री संसार चन्द 'प्रभाकर' हिमाचल प्रदेश के प्रतिभा सम्पन्न तथा समर्पित पहाड़ी कवि हैं। इन्होंने हिन्दी तथा ब्रज भाषा में सुन्दर कृतियां

साहित्य जगत को अर्पित की हैं। प्रस्तुत कृति के कुछ अंश हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी की पहाड़ी भाषा की पत्रिका हिमभारती के अंकों में प्रकाशित हुए। दिसम्बर, 1987, मार्च, 1988 जून, 1988 तथा सितम्बर, 1988 के अंकों में इस कृति की सामग्री द्रष्टव्य है। 'माया' महाकाव्य के अठारह सर्ग हैं। महाकाव्य की नायिका 'माया' सीता का रूप है। कथानक में भगवान राम की कहानी को परोक्ष रूप में कुछ अन्य शास्त्रयुक्त जीवन के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार महाकाव्य का कथानक पुरा कथा पर आधारित है। नारद, मन रूपि तोता, दशरथ, रावण परशुराम, कैकेयी, मन्थरा, भरत, खर दूषण, सूर्पनखा, जटायु, रामायण कालीन सेतुबंध, मेघनाथ बध, अग्नि परीक्षा के बाद, लंका का राज्य तथा भगवान रामचन्द्र द्वारा अश्वमेध यज्ञ, लक्ष्मण का सरयु नदी में अन्तर्धान होना महाकाव्य को अठारह सर्गों में सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। महाकाव्य में तोते के माध्यम से निरीह मानव को कहानी सुना कर उस के मोह को दूर करने का संयोजन किया है। इस प्रकार श्री प्रभाकर प्रचलित राम कथा को स्थानीय उपभाषा में नए ढंग से प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं।

स्तुति खण्ड में कवि का कथन है —

जिस घर जिस्स गराएं अन्दर, राम नाम दा झेड़ा।
तिस घर तिस्स गराएं बसिए, कदीं न डुब्बै बेड़ा।।

और—महावीर जो मत्था टेकी, कलम दवात सम्हाली।
राम नाम दा सागर भरिया, ऊची मारै छाली।।

इस प्रकार प्रथम सर्ग में कवि का कथन है—

जीवन ऐ सुपने दी नाईं, माह्णू कंगला जान।
हक्ख खुड़ै तां माया न्हट्ठै, किछ होऐ जदूं ज्ञान।।

× × ×

अधी रातीं इक कंगले जो, इक्क सुनन्दर आया।
सुपने दे विच दुस्सी तिसजो, दबियो अणमुक माया।।
मोह्‌रां कन्नें भरियां तिन्नीं, किछ बल्टोइयां दिखियां।
तिन्हां अन्दर हीरे मोती, चमकन लड़ियां सुच्चियां।।

इसी सर्ग में आगे लिखते हैं—

इसा औन्दिया देर न लगदी, जान्दी छालीं मारी।
मूरख माह्‌णू माया दिक्खी, तणदा खड़ी कियाड़ी।।

तथा :—

झगड़े दी जड़ पैसा-ध्हेला, कनैं जमीन जनानी।
माया संग इन्हां दे डोलै, मंगै जिन्द कुरबानी।।

विवाह में नारद की स्थिति पर कवि का कथन है :—

नारद आई सीसा दिक्खै, बान्दर मुह्‌आं बणिया।
क्रोध दे विच बली उट्ठिया, तिन्नीं मत्था तणियां।।
विसणू दे अग्गें जाई कै, नारद हुण हुंक्कारै।
लगा देण मैं शाप विसणुआं, जोरे ने ललकारै।।

द्वितीय सर्ग में एक दोहे में कवि का कथन है :—

दो० सिरखुद माह्‌णूं भुल्लदा, होऐ भूत सुआर।
भारै सोठे अंबरें, गिरै सिरे दे भार।।

तथा—

दो० कुम्भकरण मुंह मंगा, लैण लगा वरदान।
सरसुरतिया सिर चढ़ी कै, फेरी लई जबान।।

और—

दो० जोरे वाला मारदा, कममोरे दी आह।
सूंकै मोया बक्करा, लोआ करै सुआह।।

कथा को आगे बढ़ाते हुए कवि कहता है—

सो० मूरख दन्त गुआर, हुण आई युद्ध रचान ।
होया धरती भार, लै ठोकर तीर कमान ।।

इस से आगे एकादश सर्ग में कवि का कथन है :—

कुं० तोता जोरें बोलदा, कंगलिया अवतार ।
धरती लीला राम दी, सैह राम करतार ।।
सैह राम करतार, रावणें अकल गुआई ।
मुरुआया परिवार, बगानी नाए चुराई ।।
बोलै कवि 'संसार', पापियां हिरदा खोटा ।
जाऐ हरीदुआर, उचारै राम न तोता ।।

राम राज्य का वर्णन करता हुआ कवि कहता है :—

कुं० जंगल जाई खेलदा, कोई नईं शिकार ।
धरत पतालें गास थी, जीब जन्त घलियार ।।
जीब जन्त घलियार, सुखी थे लोक सुनक्खे ।
खुल्ले भित्त दुआर, नईं थे चोर उचक्के ।।
बोलै कवि 'संसार', राम दे राज्जें मंगल ।
बदिया खूब बपार, बूटियां छाए जंगल ।।

अष्टदश सर्ग में कवि बार-बार सृष्टि के रचने और माया जाल की चर्चा करता हुआ एक छन्द में कहता है ।

किती वरी धरतिया विसणू महेस होए,
गौरजां तां लच्छमी दे कई अवातार न ।
किती वरी धरती पताल गास होए सब,
रुक्ख बूट जीब-जन्त होए बार-बार न
ब्रह्म वेद किती वरी इन्दर गनेस देव,
होए रात रुत्त किती बरी दिन वार न ।

बोलदा एह 'संसार' माया जाल् किती बरी,
किती बरी टुट्टिया तां होए तार तार न ।।

पहाड़ी भाषा में इस प्रकार की महत्त्वपूर्ण कृति का भाषा के साहित्यिक इतिहास के लिए उल्लेखनीय योगदान है। पहाड़ी भाषा तथा उस की उपभाषाओं का इतिहास यद्यपि नाथ-सिद्ध साहित्य अर्थात् वीर गाथा काल से आरम्भ होता है। नौ नाथों तथा चौरासी सिद्धों के पदों में पहाड़ी बोलियों के अनेक शब्द सम्मिलित हैं परन्तु महाकाव्य की रचना पर्वतीय बोली में प्रथम प्रयास है। विलासपुर के दरबारी कवि गणेश सिंह वेदी तथा अन्य कुछ साहित्यकारों यथा रुद्रदत्त आदि ने अपनी रचनाओं में स्थानीय शब्दों का प्रयोग किया है। कवि रुद्रदत्त के कुछ कवित्त कांगड़ी उपभाषा में उपलब्ध होते हैं। गणेशसिंह वेदी की कृतियों में उन द्वारा पहाड़ी बोलियों के शब्दों को यत्र-तत्र प्रयोग में लाया गया है। अपने महाकाव्य 'सूर्योदय जन्म साखी' में जो मूल रूप में गुरमुखी लिपि में लिखी गई है तथा एक अन्थ इतिहास ग्रंथ 'शशि वंश विनोद' में इस प्रकार के प्रयोग मिल जाते हैं। 'शशि वंश विनोद' में वे एक स्थान पर लिखते हैं—

जंदबड़ी का लाका जोई अब तिही भनें हथावत लोई।

तथा—वीकचन्द गृह जाई कैं, कुट्टी निज रानी,
तिनैं जाय निज तात कँ, फरयाद वखानी।
(पृ० 15 व 36)

इस पद्यांश में लाका शब्द इलाका के लिए तथा कुट्टी शब्द का प्रयोग मारने के लिए हुआ है।

प्रभाकर पहाड़ी के सिद्ध कवि हैं। इनकी कविता में स्वभाविक रवानी है। 'माया' महाकाव्य की रचना के पश्चात अपनी कृति को प्रकाशित रूप में देखने के लिए इन्होंने अथक परिश्रम किया है। सरल

व्यक्तित्व के धनी इस साहित्यकार ने कुछ बहुत अच्छे उपन्यास, कहानियां तथा निबन्ध साहित्य जगत को भेंट किए हैं। कुछ वर्ष पूर्व मुझे उनके 'निरपराध अपराधी' उपन्यास के हस्तलेख की समीक्षा करने का अवसर प्राप्त हुआ तब श्री प्रभाकर मेरे सम्पर्क में नहीं थे परन्तु उनकी रचना ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने अनुभव किया कि इस उपन्यासकार में सामाजिक उपन्यास लिखने की असाधारण प्रतिभा है। बाद में मुझे पता चला कि हिमाचल प्रदेश के सुदूर क्षेत्र फतेहपुर जिला कांगड़ा के ये साहित्यकार बहुत मिलनसार तथा विनम्र सामाजिक कार्यकर्त्ता ही नहीं हैं बल्कि कभी ब्रज क्षेत्र में न जाने पर भी इनके पूर्व संस्कारों के अनुसार यह ब्रज भाषा के आशु कवि हैं।

डा० मनोहर लाल ने अपनी पुस्तक 'हिमाचल प्रदेश के ब्रज कवि' में इस क्षेत्र के सुप्रतिष्ठित ब्रजभाषी कवियों का रचनाओं सहित इतिहास अंकित किया है और यह सुखद संयोग है कि उन्होंने प्रदेश के आधुनिक ब्रजभाषी कवियों में प्रभाकर जी की कुछ ब्रज कविताओं को भी सम्मिलित किया है। संसार चन्द प्रभाकर पहाड़ी कवि सम्मेलनों की शोभा हैं। वे हास्य-व्यंग्य प्रधान रचनाओं में प्रवीण हैं। उनके शब्द चित्र इस महान ग्रन्थ में यत्र-तत्र अनेक छन्दों में देखने को मिलते हैं।

इस महनीय कृति के लिए प्रबुद्ध साहित्यकार और अब महाकवि श्री संसारचन्द प्रभाकर को मैं हार्दिक शुभकामनाएं तथा बधाई देता हूं। आशा है उनकी निर्बाध लेखनी से अनेक मूल्यवान कृतियां साहित्य जगत को प्राप्त होंगी। उन्होंने मुझे पहाड़ी भाषा की इस गौरव कृति के लिए कुछ शब्द लिखने का अवसर दिया, इसके लिए मैं उनका ऋणी हूं।

सचिव, **डा० बंशी राम शर्मा**

हिमाचल कला संस्कृति और

भाषा अकादमी, शिमला—171001

आमुख

मैं अपनी सातवीं पुस्तक महाकाव्य 'माया' जिसे मैं भगवान राम की अपार कृपा से ही लिख पाया हूं माता सरस्वती के पावन मन्दिर में भेंट कर रहा हूं । मैं हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी तथा माननीय मुख्य मन्त्री (हि० प्र०) श्री शान्ता कुमार जी का आभार व्यक्त करता हूं जहां से मुझे इस महान ग्रंथ को प्रकाश में लाने हेतु योगदान मिला है। मैं माननीय सांसद (लोक सभा दिल्ली) मेजर श्री डी० डी० खनूरिया जी एवं माननीय शिक्षा मन्त्री (हि० प्र०) श्री राधा रमण शास्त्री जी का आभारी हूं जिन्होंने इस ग्रंथ के लिए अपनी ओर से कुछ शब्द जोड़ने हेतु अपना अमूल्य समय दिया है। मैं आदरणीय डा० श्री वंशी राम शर्मा सचिव हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी (शिमला) का धन्यवादी हूं जिन्होंने इस महान कृति को प्रकाश में लाने हेतु मेरा पग-पग पर मार्ग दर्शन करने के साथ-साथ अपनी व्यस्तता से कुछ समय निकाल कर पहाड़ी भाषा के इस ग्रंथ में दो शब्द जोड़ने हेतु अपना योगदान दिया है।

किसी भी साहित्यिक कृति का लिख पाना मैं किसी भी साहित्यकार के जीवन की अद्भुत घटना समझता हूं। मैंने इस ग्रंथ की रचना अपनी क्षेत्रीय भाषा में की है ताकि इस पर्वतीय क्षेत्र में बसे अनेक गांवों के लोग भगवान राम के पावन चरित से लाभान्वित हो पाएं । आज का मानव भौतिकवाद के रथ पर चढ़ कर दौड़ लगा रहा है । उसे अपनी मंजिल की खबर नहीं । वह सभी दैवी शक्तियों को भूल कर स्वयं देव बन बैठा है। इसलिए आज समाज को चेतावनी देने हेतु पौराणिक

गाथाओं की आवश्यकता है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए मैंने इस ग्रंथ की रचना क्षेत्रीय भाषा में की है।

भगवान राम का चरित अथाह सागर के समान है इसका वर्णन कर पाना मेरी सामर्थ्य और बुद्धि से परे की बात थी परन्तु मैं जो कुछ लिख पाया हूं यह सब भगवान राम का ही चमत्कार है। यह ग्रंथ पहाड़ी भाषा में मेरे जीवन की एक महान कृति है। इस महाकाव्य के अठारह सर्ग हैं। इस ग्रन्थ का आरम्भ स्तुति खण्ड से किया है। इस महाकाव्य में मैंने सीता को माया का रूप दिया है। प्रथम सर्ग में मनुष्य को कंगाल बताया है अर्थात् जब मनुष्य पैदा होता है तो वह नंगा-भूखा और आश्रित होता है उसके पास कुछ नहीं होता। आधी रात का अर्थ है—यौवन। यौवन में मनुष्य स्वप्न लेता है। धन उपार्जन करता है और मोह-जाल (माया) के चक्कर में फंस जाता है। काम-क्रोध, लोभ-मोह, अहंकार में उलझ कर मनुष्य माया की चक्की में पिसता है।

इस ग्रंथ के पहले सर्ग में नारद ऋषि के माया के चक्कर में फंसने की कहानी को छन्दोबद्ध करने का प्रयास किया है। दूसरे सर्ग में तोते को मन रूपी आध्यात्मिक शक्ति का रूप दिया है। तोता कंगाल मनुष्य को जो माया रूपी भवसागर में गोते खाता है उसके स्वप्न से जागृत अवस्था में लाने हेतु भगवान राम की कथा सुनाता है। कंगाल रूपी मनुष्य की पत्नी जिसे बुद्धि की संज्ञा दी है। भगवान राम की कहानी हरा घास अर्थात् सच्चाई को हाथ में ले कर सुनती है। हरा घास (द्रब) अच्छे कर्मों का प्रतीक माना गया है।

यदि मनुष्य अच्छे कर्म न करे तो उसे मन रूपी तोता पत्नी रूपी बुद्धि के साथ जोड़ कर राम कथा कह कर भी जागृत नहीं कर सकता अर्थात् अच्छे कर्म ही मनुष्य को मोहजाल से छुटकारा दिला सकते हैं। इस सारे ग्रंथ में कर्म को ही प्रधान बताया गया है। मनुष्य अपने किए

हुए कर्मों को भूल जाता है परन्तु ईश्वर के पास मनुष्य के कर्मों का लेखा-जोखा रहता है और समय आने पर मनुष्य को अच्छे या बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलता है यह एक सच्चाई है। आज का भौतिकवाद चाहे इस सच्चाई को झुठला दे परन्तु अन्त में उसे भी इस सच्चाई को मानना पड़ता है।

मैंने इस ग्रंथ में राम कहानी को ज्यों का त्यों नहीं रखा है अपितु इस कहानी के प्रत्येक पात्र को उसके कर्मों के अनुसार ही स्थान दिया है। भगवान राम की लीला अपार है इसीलिए माता सीता को माया का रूप माना है। यदि माता सीता (माया) का जन्म न होता तो धरती से राक्षसों का संहार भी न होता। अन्त में मैं यह बात कहना न भूलूंगा कि इस ग्रंथ की रचना मैंने जान बूझ कर नहीं की यह जो कुछ भी लिखा गया है स्वतः किसी दैवी प्रेरणा से हो पाया है। न जाने वह कौन-सी शक्ति थी जिसने मुझे प्रेरित किया--सभी छन्द स्वतः बनते गए। साथ ही साथ मैं उन सभी मित्रों एवं विद्वानों का आभारी हूं जिन्होंने मेरी इस रचना की सराहना करने के साथ-साथ कुछ सुधार करने के संकेत दिए। मैं सम्पादक 'हिम भारती' का भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने बड़ी लग्न से इस महाकाव्य के कुछ अंश पत्रिका में प्रकाशित करवाने का योगदान दिया।

मुझे पूर्ण आशा तथा विश्वास है कि पहाड़ी भाषा में रचे गए इस ग्रंथ के पाठ से मात्र हिमाचल के वासी ही नहीं अपितु समूचे भारत के लोग भगवान राम के चरित्र से लाभान्वित होंगे।

संसार चन्द 'प्रभाकर'
गांव—डा० फतेहपुर
ता० ज्वाली (कांगड़ा)
हि० प्र० पिन-176053

महाकाव्य 'माया'

स्तुति खण्ड

सरसी० छन्द अज्ज धियाड़ा सुभे सौगुणें, आया खरा बचार ।
राम नाम दी लीला गाई, करिए किछ उद्धार ।।
भान्त-भान्त दे छन्दां भरियो, कविता खरी वणाऐ ।
अलंकार जे राम न होऐ, जीह्वा नेईं सुहाऐ ।।
छन्द अलंकारां दे वाझी, राम नाम दा गीत ।
जीह्वा उप्पर सोह्णां लग्गै, ढाऐ गरमी सीत ।।
जिस घर जिस्स गराएं अन्दर, राम नाम दा झेंड़ा ।
तिस घर तिस्स गराएं बसिए, कदीं न डुब्बै बेड़ा ।।
डाल् पत्तर कजो पूजिए, ढक्कें पाणीं पाइए ।
रुक्ख बडोऐ झल्ल-झुल्लरा, फल-फरूटां खाइए ।।
कक्खां कानां कजो पकड़िए, चढी राम दे बेड़ें ।
दुक्ख दलिदर दूर करै सैह, बसिए तिसदें नेड़ें ।।
महल माड़ियां अंग्गण कोठे, हीरे मोती सुन्ना ।
राम-नाम दे वाझी लालां, भरिया माह्णूं सुन्ना ।।
पत्थर तारै बैरां खाऐ, जूठ-मीठ नीं जाणैं ।
ऊच-नीच नीं मन्नै मेरा, राम प्यार पछाणैं ।।
सत जन्मां दे कोह्डां गाल्, निर्मल देई करदा ।
राम नाम ने डुवदा बेड़ा, उप्पर आई तरदा ।।
जिसदें घट-घट राम बसै तां, सैह् माह्णूं अलवेला ।
के करने तिस हाथी घोड़े, सोना पैसा धेला ।।
राम द्रोई जेत्थूं वस्सन, घड़ी चैन नी औऐ ।
हर दम बज्जै मारू वाजा, रती न माह्णूं सौऐ ।।

घोर विपत दे वेलें दिन्दा, माह्णूं राम दुहाई।
पापी माह्णू दी वी करदा, मेरा राम सुणाई॥
तारै पत्थर पाणी उप्पर, गज दे फंद छुड़ाऐ।
हत्थ दई के अपणें भगते, मेरा राम बचाऐ॥

स० कोई लिखी न जाणै भाई, राम नाम दी गाथ।
मैं माह्णू अक्ली दा अन्हा, राम दियां तूं साथ॥

पहलैं पूजी सरसुतिया जो, मन्नां भिरी गणेस।
पूजां तिन्न लोक दे स्वामी, विसणू ब्रह्म महेस॥
सीता माता जगदम्बा जो, अपणां सीस नुआं।
जय जगदम्बे लछमी माता, राम नाम गुण गां॥
महावीर जो मत्था टेकी, कलम दवात सम्हाली।
राम नाम दा सागर भरिया, ऊची मारै छाली॥
चऊं पासियां पाणीं सुज्झै, मैं तां पार न पाहं।
राम नाम दी थाह न कोई, किय्यां मैं गुण गाहं॥
कुनीं देवतें पार न पाया, मैं माह्णूं दुर्बुद्ध।
निर्मल करियां राम गुसाईं, मेरी अप्पूं बुद्ध॥
मैं न जाणां आरती पूजा, नीं मैं राम तिहाई।
पिछले जन्मे इस जन्मे दी, मेरी नईं कमाई॥
किय्यां लंग्गां इस सागर जो, राम भरोसा तेरा।
अप्पूं आई छैल करी दे, इक-इक अक्खर मेरा॥
दुर्वल देई पापां भरियो, अणमुक्के दे रोग।
राम नाम तां नईं जपोऐ, मिज्जो ऐ धड़जोग॥
मेरे पापां रोगां तों तू, मिज्जो लियां छुड़ाई।
हे राम! देह निर्मल करियां, तेरी दियां दुहाई॥
मन मेरे जो सत्त पाणिएं, आई राम तूं धोऽ।
किय्यां लिखणीं तेरी लीला, मेरे आल खड़ोऽ॥
अक्खर मेरे ढेर मढेरे. राम नाम दी आस।
भर वरसाती रैह् तरिहाया, उडै पपीया गास॥
स्वाती पीऐ भगत राम दा, खूह सागर न जाणै।
नदियां नालू कनैं बौलिया, पखरू नईं पछाणै॥

स० **भरत सत्रुघन जय लछमण जय, सीता जय महावीर।**
राम नाम दा बेड़ा मंग्गां, आई खड़ोता तीर॥
दिया आसरा अक्खर लिक्खां, राम नाम दे चार।
चप्पू लाई बेड़े तारा, मेरा करा उद्धार॥

इस धरती पर वड़े देवते, पाणी पवन पहाड़।
चऊं पासियां सिंह गर्जदे, जोरें जोर दहाड़॥
जीजू कण्डू सप्प धरतिया, ताप कोह्ड़ हन रंग।
राम जपण नीं दिन्दे सारे, भगती करदे भंग॥
इस सागर दी लहरां उप्पर, बेड़ा तरदा जाऐ।
राम नाम दा चप्पू पकड़ै, बेड़ा पार लगाऐ॥
न्हेरी झक्खड़ विच्च सागरें, लहरां गासें छहोन।
राम नाम दे वाह्झी चप्पू, पाणिएं नईं खड़ोन॥
भवसागर दे अन्दर फिरदे, मग्गर मच्छ सुराल।
टक्कर मारी बेड़ा डोबन, आई राम सम्हाल॥
भान्त-भान्त रे पोत सागरें, चलदे कई जहाज।
मेरा बेड़ा कच्चा लक्कड़, जान्दे पाई दाग॥
राम नाम रा लई आसरा, बेड़ा पाणीं पाया।
सागर ऊची छाली मारै, जी मेरा घबराया॥
भर बरसातीं पाणीं बरिया, कईं तौन्दियां धुप्प।
अणमुक झक्खड़ झांजा आया, न्हेरा होया गुप्प॥
कई सुरालीं मुहएं बाकी, मगरमच्छ वी आए।
मेरे बेड़े कन्नें सप्पड़, पत्थर वी टकराए॥
ऊची लहरां गासें चढ़ियां, बेड़ा वी पलटोया।
राम नाम रे मन्तर कन्नें, ढेरा बाल न होया॥
राम नाम संजीवन बूटी, तरदा बेड़ा जाऐ।
अप्पूं राम बचाऐ आई, जेह्ड़ा बूटी खाऐ।
पत्थर सप्पड़ किछ नीं करदे, हिल्लण होऐ बन्द।
राम नाम रा बेड़ा तरदा, विच्च सागरें चन्द॥

स० **लेई आज्ञा राम लिखण दी जगदम्बा परनाम।**
माया नाएं ग्रन्थ लिखां मैं, महावीर हनुमान॥

बल बुद्धि कनैं दियां चेतना, नाम जपां महावीर ।
बार-बार मैं नमन करां सिर, बोलां जय रघुवीर ॥
मानसरोवर राम कहाणी, मोती चुगदे हंस ।
सुणैं-गुणैं माह्‌णूं चित लाई, तारै अपणा बंस ॥
देव-देवते करन तपस्या, सब ऋषि-मुनि चित लाई ।
चंचल मन माह्‌णू दा इसजो, दिन्दा झट भरमाई ॥
सिब संभू दी करां बेनती, नन्दी गण दरवान ।
कैलासे पर धूणा धुखदा, नील कण्ठ भगवान ॥
सिर गंगा गल अजगर माला गौरां कनैं गणेस ।
सब गण सिवजी दे मैं पूजी, मंग्गां अकल महेस ॥
राम लिखण दा वर दे मिज्जो, हे भोले भंडारी ।
लिखी सकां में राम नाम दी, लीला बणीं लखारी ॥
सेस़ नाग विसणू दी सेजा, जो मैं सीस झुकाऊं ।
नाग राज तूं वर दे मिज्जो, लिखां राम दा नाऊं ॥
सूरज चन्दर करां आरती, राम नाम मन प्यास ।
धरत पतालें देव-देवते, इन्दर पूजां गास ॥
नौ ग्रह पृथ्वी दे मैं पूजी, यम कुवेर गुण गाऊं ।
पवन देव दी करां आरती, जपां वरुण दा नाऊं ॥
धरत पतालें सागर गासें, लीला राम अपार ।
सृष्टि दे जड़ चेतन पूजां, नदियां कनैं पहाड़ ॥
सुग्रीव अंगद जो पूजां मैं, जामवन्त बलवान ।
नल नीले दा लियां सहारा, सेवक राम महान ॥
सब्ब माह्‌णुआं जीब-जन्त जो, मैं तां धूप धुखाऊं ।
राम रूप सबनां विच दिक्खां, दिन रात धुप्प छाऊं ॥

स० ब्रह्मा सिब दा लई सहारा, लिखां ग्रन्थ दे बोल ।
माया विसणू दी इस धरती, राम नाम अनमोल ॥

महाकाव्य 'माया'

प्रथम सर्ग

सरसी० छन्द जीवन ऐ सुपने री नाईं, माह्‌णूं कंगला जान ।
हक्ख खुड़ तां माया न्हट्ठै, किछ होऐ जदू ज्ञान ॥

अधी रातीं इक कंगले जो, इक्क सुनन्दर आया ।
सुपनें दे विच दुस्सी तिसजो, दवियो अणमुक माया ॥
मोह्‌रां कन्नें भरियां तिन्नीं किछ बल्टोइयां दिखियां ।
तिन्हां अन्दर हीरे मोती, चमकन लड़ियां सुचियां ॥
लगा ढोण हुण बल्टोहियां जो, अन्दर ढेर लगाया ।
बणीं गिया सुपने च कंगला, इक राजे दा जाया ॥
लाड़ी पुच्छै तिसजो दस हुण, माया किय्यां आई ।
मत पकड़ोन्दा चऊं पासियां, फिरदे वड़े सपाई ॥
बोलण लगा कंगला, 'चुप कर', माया बड़ी नियारी ।
इसदे अग्गें पाणीं भरदे, सब्बो बारी-बारी ॥
सब सपाइयां ठाणेदारां, इसदे अग्गें झुकाणां ।
जिसजो दिग्गे बुक्क भरी कै, तिन्नीं कदी न बुकणां ॥
वड़े बड़े माह्‌णू वी इसदे, कन्नें झट खरदोन्दे ।
इसदे झटके ऋषियां मुनियां, तों वी नईं झलोन्दे ॥
सांजो मिल्ली दवियो माया, कोई किसमत स्हाड़ी ।
पिछले जन्मे असां कीतियो, थी पुन्ना दी खारी ॥
माया लैणें ताईं लोकी, रिस्पत गुज्झां खान्दे ।
इस जो दिखणें ताईं माह्‌णूं पुट्ठे कम्म कमान्दे ।
कई मदारी करन तमासे, सप्पां खूब नचान्दे ।
जूआ खेलन कई जुआरी, धूफां लोक धुखान्दे ॥

कई बडह्‌दे गल लोकां दे, दूणा सूद लगान्दे ।
सन्हां डाके मारी लोकी, माया खूब बणान्दे ॥
भ्रस्टाचारे दी तां माया, बड़ी देर नीं रैह्‌न्दी ।
किच्छ दिनां दी माया छाया, जिय्यां घटिया मैह्‌न्दी ॥

४० चऊं पासियां सुण कंगलिए माया रा विस्तार ।
बिन माया संसार सागरें, नीं एँ बेड़ा पार ॥

खाली हथ वी मुहएं अग्गें, कदी न जान्दा भाई ।
माया ताईं करदे लोकी, अन्हे वाह कमाई ॥
रिस्ते नाते बिन माया तों, अपणां नक्क मरोड़न ।
पुत्तर धीय्यां कनैं जनाने, सारे रिस्ते तोड़न ॥
माया कन्नें माह्‌णू दी ऐ, जगती पर जयकार ।
हत्थ जोड़दे चऊं पासियां लोकी रिस्तेदार ॥
कंगले दी न बात पछोऐ, सारें दुर-दुर होऐ ।
निरगुण मायाधारी माह्‌णूं, तख्तें बई पजोऐ ॥
इतणी गल्ल करी कंगलुएं, राज मिस्तरी सद्दे ।
महल बणाया विच्च मदाने, लौ लशकर सब्र सज्जे ॥
तिस महले दे कई दुआरे, किछ अंगण किछ कोठे ।
कंगलें पाले महले अन्दर, कई कबूतर तोते ॥
बाह्‌र दुआरें हाथी झूजन, घोड़े विच्च तबेलें ॥
पहरा दिन्दे कई सपाई, जागन वेल सवेलें ॥
कई घम्हां दे घेरे अन्दर, तिन्नीं बाग लुआया ।
थाईं-थां दा बूटा आणीं, बागे बिच्च लुआया ॥
संगे मर-मर फर्श लुआए, रस्ते छैल वणाए ।
तिन्हां रस्तियां अक्खें-वक्खें, फुलणूं खूब सजाए ॥
तिस महले रे चऊं पासियां, फिरदी कन्द दुआई ।
अणमुक बुर्जां कन्नें ऊची, पक्की छैल बणाई ॥
अणमुक्के दे नौकर चाकर, तिसदा कम्म कमान्दे ।
रोज धोई के कंगले जो, कपड़े सैह लुआन्दे ॥
अतर फलेलां मली कंगला, मुच्छां बाट चढ़ान्दा ।
कंजरियां रे करै तमासे, अणमुक नाच नचान्दा ॥

स० महले अन्दर कंगलुएं दिन, रातीं जय जयकार ।
हीरे मोती तख्तें तिसदें, गल लालां रे हार ॥
माया दे झटके ने होया, कंगला हुण जुआन ।
कुल दुनिया दे लोकी आई, तिसजो सीस नुआन ॥
ताज कगलियां लाई कै हुण, दरबारे जो जान्दा ।
मन्तरियां ने करै मसबरा, अपणा हुकम चलान्दा ।
कंगली हुण वणीं के वौन्दी, इय्यां लगदी राणीं ।
अग्गें पिच्छें फिरन गोलियां, बोलन मिट्ठी बाणीं ॥
कंगलुए ने दूरे तों हुण, पखरू किछ मंगाए ।
तिसदे बागें करन कलोलां, पिंजरे च हड़ुआए ॥
मोर पपीहे पकड़ी आन्दे, हिरन तारियां लान्दे ।
जगा-जगा दे कई पखेरू, संझ भियागा गान्दे ॥
मोरे दी कूकां दे कन्नें, बागें सोभा वददी ।
हिरने दी छालीं दे कन्नें, कंगलुएं हिक चढ़दी ॥
नेड़ें-तेड़ें सब नगरां रे, लोकी सोचन सारे ।
एह के होया चौं दिनां विच, इतणें महल सुआरे ॥
कोई न बुझी सकिया इतणा, धन्न कथूं तें आया ।
कोई इन्नी चोरी कीती, या ऐ डाका पाया ॥
तंगड़ खुरपा रोज लई कै, घाह् खोतणां जान्दा ।
अज्ज कंगला राजा बाणीयां, मौजां खूब उड़ान्दा ॥
बुक्कां-बुक्कां बंड्डै पैसे, मंगते देन सीसां ।
कंगले जो राजा दिखी कै, लोक नुआन्दे सीसां ॥
किछ दिनां विच कंगलें थी इक, वड्डी फौज बणाई ।
भरती कीते तिस फौजा विच, गबरू कई सपाई ॥
जालूं कंगला फौज दिक्खै सब्ब सलामी मारन ।
निक्के वड्डे सारे अफसर, जय जयकार पुकारन ॥
किले अन्दद कंगलें अपणी, तगड़ी फौज सजाई ।
लौ लश्कर घोड़े मंगाए, फौज करै सखलाई ॥
स० कंगले दी फौजा जो दिखी, कंबन धरत पहाड़ ।
कई हजारां हाथी झूजन, घोड़े लक्ख हजार ॥

कंगलुए जो दिक्खी कोई, रती न बोलै डरदा ।
तिसदे राज्जे अन्दर सूरज, रोज खरा नित चढ़दा ॥
सुपने दे विच कंगलुए ने, वड्डा किला वणाया ।
तिसदे उप्पर रंग बरंगा, झंडा इक चढ़ाया ॥
तिस दुर्गे दे अक्खें-बक्खें डूगी कड्डी खाई ।
तिस दे कंढे ऊचे कीते, पाणीं कनें भराई ॥
किले दे अन्दर कई सन्तरी, रात धियाड़ें फिरदे ।
पहरा दिन्दें मन चित लाई चोरां कन्नें भिड़दे ॥
चिड़ी न फड़कै अन्दर दुर्गे, ऐसा दुर्ग वणाया ।
अणमुक राशन फौजा ताईं, किट्ठा भिरी कराया ॥
पाणिएं ताईं कंगले ने, खूह् चश्मे बणाए ।
कई बौड़ियां कनैं तलाटू, डूगे करी खुणाए ॥
किले अन्दर कंगलें अपणां, सिंहासन बणुआया ।
चिट्टे मोती चमकन तिसदे, हीरे कनें जड़ाया ॥
तेथूं जाई रोज धियाड़ें, हुण दरबार लगान्दा ।
करै फैसला मन मरजी दा, हुकमें-हुकम चढ़ान्दा ॥
सब्ब मन्तरी अक्खें-बक्खें, हां-हां करी गलान्दे ।
दिनें रात गलाऐ कंगला, न्हेरा सब फरमान्दे ।
चापलूसां दे बिच कंगला, अपणीं सोभा जाणैं ।
खरे-बुरे जो भुल्ली बैठा, ठौकर नईं पछाणैं ॥
तंग्गड़ खुरपा तिसजो भुलिया, भुल्ली खिद पुराणी ।
गोलियां दे बिच कंगली बी वणीं गई हुण राणी ॥
जालू माह्णू भुल्ली जान्दा, अप्पणिया औकाता ।
हाकां मारी सद्दी लैन्दा, तग्गड़िया औफाता ॥

स० सुपने दे बिच बणिया राजा, कंगलें नीं बचार ।
माह्णू मूरख नईं पछाणैं, सुपना ऐ संसार ॥
माया दे विच फसदा माह्णू, रती न लाऐ देर ।
डूगी आली गोते खाऐ, फिरै घिरनुएं घेर ॥
माया छाया चऊं दिनां दी, घिरदी फिरदी रैह्न्दी ।
कदियों चढ़दी उप्पर गासें, कदीं पतालें ढैन्दी ॥

कदियों अणमुक छालीं मारै, कदीं खड़प्प खड़ोऐ ।
इसदे उप्पर बड्डा फणियर, काला सप्प सरोऐ ।।
धीय्यां पुत्तर रिस्ते नाते, सब माया दे भुक्खे ।
जालू माया नजर न औऐ, सब रुक्खे दे रुक्खे ।।
इसा औन्दिया देर न लगदी, जान्दी छालीं मारी ।
मूरख माह्णू माया दिक्खी, तणदा खड़ी कियाड़ी ।।
माया सक्की नेईं कुसी दी, न ऐह् बणदी मित्तर ।
पहलैं करदी प्यार फण्फड़े, भिरी मारदी छित्तर ।।
झगड़े दी जड़ पैसा धेला, कनैं जमीन जनानी ।
माया संग इन्हां दे डोलै, मंग्गै जिन्द कुरबानी ।।
माया दे नेड़ें नीं जाऐ, तां माह्णू अलबेला ।
नेईं तां पूरा ई कंगला, घोड़े वाझ तबेला ।।
काम क्रोध तां अहंकार हन, सब माया दे साथी ।
लोभ इसा दी जीव्हा उप्पर, जिय्यां मदिया हाथी ।।
माया दे बिच्च अन्हा होई, माह्णू किछ नीं सोचै ।
हाखीं मीटी करै तमामैं, हत्थें अंबर बोचै ।।
माया दे जाले बिच फसिया, रावण सीता चोरै ।
कंसें बड्डी सिला बणाई, जमदे बच्चियां फोड़ै ।।
हिरणकश्यपें धम्म तपाया, माया बिच फणसोई ।
अपणें पुतरे बन्है तिसने दिक्खै दूर खड़ोई ।।
दुर्योधन ने माया पिच्छें, अणमुक युद्ध कराया ।
न रेह् कौरू न रेह् पाण्डू, चौपट सब्ब सफाया ।।

स० **ऋषि मुनि माया बिच भुल्ले, कंगलें न औकात ।**
जिय्यां डड्डू चफड़े अन्दर, बोलै भर बरसात ।।

मेंडक बरसाती जो दिक्खी, डम-डम ढोल बजाऐ ।
मूरख माह्णू माया दिक्खी, ठौकर जो भुलि जाऐ ।।
धरत अंबरे नेईं पछाणैं, डड्डू छालीं मारै ।
जोरें जोर रड़ाऐ मेंडक, ठौकर जो ललकारै ।।
सप्पे दे मुहएं बिच फसदा, मेंडक दिऐ दुहाई ।
माया सप्पे नेईं पछाणैं, मूरख जिन्द गुआई ।।

माया सपणी डड्डू माह्णू, जालूं नेड़ें जान्दा ।
पैंने दन्दां मुंहएं अन्दर, बणीं छीछरा जान्दा ॥
इक्की जो मरदे दिक्खी कै, दूआ सबक न सिक्खै ।
डडुए तों बी मूरख माह्णू, इसजो लख-लख धिक ऐ ॥
माया दे चकरे पर चढ़दा, माह्णूं नीं समल्होदा ।
जाल् अन्दर फड़-फड़ करदा, खड़ियां बाईं रोन्दा ॥
घिरन् फिरदा इस माया दा, तेज पाणिएं साईं ।
जालूं डुब्बै डुस्कै माह्णूं, मारै खडियां ढाईं ॥
माया दिक्खै बई तमासा, पाणीं कंडें हस्सै ।
जां माह्णूं जोरे ने रोऐ, माया दूणी नच्चै ॥
भले खरे तगड़े जो दिक्खी, तिसदा खून नचौड़ै ।
पहलैं मारै डांग सिरे पर, पिच्छें हत्थां जोड़ै ॥
माया तां ऐ लाह्लो ठगड़ी. जिय्यां छैल जनानी ।
बणीं ठणीं तां दूर खड़ोऐ, मंग्गै किछ कुरबानी ॥
इसजो दिक्खी अन्हा होई, माह्णू छाल् लगान्दा ।
डूगे पाणीं गोते खाऐ, अपणीं जिन्द गुआन्दा ।
छैल-छबीले धागे डोरे, माया जाल् वणाया ।
लम्मी डोरी लई शिकारी, विड़िया आटा लाया ॥

स० सब बिड़ियां भवसागर अन्दर, माया जाल अपार ।
मुनिवर नारद भुली गए तां, कंगले दी न हार ।

माया दे चकरे विच नारद, मुनिवर इक्क महान ।
तपी तपीसर कई ध्हूणियां, भुलिया सब्ब ज्ञान ॥
नारद ने था घोर तपे ने, कामदेव जो ढाया ।
अपणीं जित्त सुणाणें ताईं, ब्रह्म पुरी हुण आया ॥
बोलै नारद ''हे ब्रह्मा ! मैं, माया जित्ती सारी ।
काम देव दी सारी ताकत, मेरे अग्गें हारी ।
त्रै लोकी बिच घोर तपी नीं, मेरे साईं कोई ।
परमेसर बी मेरे लागें, दिक्खै अज्ज खड़ोई ॥
नारद दे अभिमाने दिक्खी, ब्रह्मा अचरज होया ।
सोचण लग्गे मन दे अन्दर, नारण अज्ज भतोया ॥

किछ घड़ियां हुण सोची समझी, ब्रह्मा बचन उचारे ।
बोलण लग्गे, 'हे बेटा! हन, माया खेल नियारे ॥
अहंकार माया दा साथी, तेरे अन्दर आया ।
तेरे घोर तपे दा इन्नीं करना सब्ब सफाया ॥
अहंकार माया दी बेटा, है भीषण किलकारी ।
काम क्रोध तां लोभ मोह हन, माया तेज सुआरी ॥
छैल रथे पर माया बौन्दी, घोड़े हिण-हिण करदे ।
इसा दे अग्गें ऋषि देवते, सारे पाणीं भरदे ॥
माया जो जितणां नीं बेटा. रती सुखाला कम्म ।
अहंकार होए जां तिसजो, भरना पौऐ डन्न ।
दिखियां विसणूं अग्गें जाई, कोई गल्ल सुणान्दा ।
अहंकार मत करदा बेटा, माया मत्त जगान्दा ॥
नीं तां माया विसणूं छडणीं, तप्प छीन तां होणां ।
नारद गल्ला गट्ठी बनियां, नीं पिच्छें पछताणां ॥

स० **अपणें मुहएं अपणें जोरे दा गत करैं वखान ।**
तपी तपीसर बेटा तू ऐं होया ऐ अभिमान ॥
ब्रह्मा दी जां गल्ल सुणीं तां, नारद मनें उदास ।
क्रोधे दे बिच बली उट्ठिया, छड़े लम्मे सास ॥

''सच्च बोलदे लोकीं बोलै', नारद दूर खड़ोई ।
वडियाई अपणें दी अपणें; तो नीं कदीं झलोई ॥
बड्डे रुक्खे हेठ कदीं वी, निक्का नईं वडोन्दा ।
दिक्खा पिपले हेठ कदीं वी, घा नीं रती सरोन्दा ॥
बड्डा कदीं न झल्ली सकदा, निक्के दी वडियाई ।
नारद वोलै जोरें-जोरें, कजो मैं गल सुणाई ॥
ब्रह्म पुरी तों उट्ठी नारद, कैलासे पर आया ।
सिब दे कन्नें आई तिन्नीं, सारा हाल सुणाया ॥
वोलै नारद, '' हे सिव मैं हुण, काम जित्तिया जाई ।
मिज्जो बड्डा मुनिवर मानां, मेरी घोर कमाई ॥
नारद दी गल्ला दे उप्पर, सिब जी हासा आया ।
बोलण लग्गे, 'हे मुनिवर ! तूं, के टप्पी के आया ?

काम वसे बिच कीता नारद, अहंकार हुंक्कारै ।
जप तप तेरा छीन करै सब, जोरे ने ललकारै ।।
पंज वकारां जो नीं मारै, सन्त न बणदा पूरा ।
पूरा होई कदीं न छुलै, छलकै धड़ा अधूरा ।।
माया जो बस करने ताईं, कई जन्मां तप करदे ।
तपी तपीसर कई धूणियां जम्मीं जमदे मरदे ।
भवसागर दे अदर सारें, माया धागे डोरे ।
पूरण माशी चंद वांदनी, सागर लैन हिलोरे ।।
जालूं सागर छाली मारै, माया जाल बछाई ।
सब जीबां जो अपणें अन्दर, लैन्दा झट्ट लुकाई ।।
इस जाल दी बिसणूं हत्थें, लम्मी झम्मी डोरी ।
माया जाल अन्दर फसियो, लैन्दे जीब हिलोरी ।।

स० **माया दा 'संसार' एह सब, काम क्रोध दा जाल ।**
अहंकार तां लोभ मोह हन इसदी पैनी धार ।।
भवसागर माया दी चक्की, कीली हथ करतार ।
देव देवते जान भियोई, माहूणू तां दो फाड़ ।।

हे नारद ! मत गर्व करें तूं कामे जिती आया ।
अहंकार सिर चढ़िया तेरें, तूं ऐं अज भरमाया ।।
विसणू दे लागें जाई के, गल करियां समलहोई ।
दिखियां गल्ल गलान्दा ओथूं, कोई तूं फणसोई ।।
तप्प छीन मत करदा नारद, बिसणूं अस्तर माया ।
तिसदे अग्गें क्या वडियाई, जिन्नीं खेल रचाया ।।
सिब संभू दी छुरिया साईं, नारद जो गल्ल चुभी ।
वोलण लग्गा हे सिब संभू तेरी भगती डुब्बी ।।
भूत मसाणां दे विच खेली, तूं ऐं बणियां भूत ।
हां ने हां मेला तूं करना तूं विसणूं दा दूत ।।
तिज्जो तां वणवास दई कै, बिसणूं मौजां मारै ।
अप्पूं किल्ला बई सिंहासन, माया जाल उतारै ।।
ब्रह्मा वी ब्रह्म होई गिया, विसणूं विसणूं बोलै ।
सिब कैलासै उप्पर आई, किल्ला मखियां झोलै ।।

बिसणूं माया दे जाले ने, अपणां जोर बधाऐ ।
अप्पूं जो तां बड्डा समझै, स्हाड़ा जोर घटाऐ ॥
मैं माया जो जित्ती आया काम वसे विच कीता ।
मेरे अग्गें बिसणूं दा नीं. चलणां धूण पलीता ॥
नारद इतणीं गल्ल गलाई. बैकुंठे जो आया ।
दो गण सिव जी ने वी भेजे, धूणा भिरी जगाया ॥
अग्गें-अग्गें नारद पिच्छें, सिव जी दे गण जान्दे ।
वैंकुण्ठे विच जाई सारे, अपणां आसण लान्दे ॥
नारायण थे सेजा उप्पर, लछमी पैर दबाऐ ।
सेस नाग दे फुंक्कारे ने, नारद किछ घबराऐ ॥

स० **कई देवते आसें पासें विसणूं दा दरबार ।**
लछमी सुन्दर छैल छबीली, सोभा बड़ी अपार ॥

इक हत्थे विच चकर सुदर्शन दूएं संख सुहाऐ ।
त्रीएं हत्थें पद्म पकड़िया, चौथें गदा हिलाऐ ॥
नारद जो दिक्खी कै विसणूं, मनें च किछ मुस्काए ।
नारद ने विसणूं दे अग्गें, अपणें बोल सुणाए ॥
नारद बोले, 'हे नारायण !' कामे जित्ती आया ।
इसा सृष्टिया उप्पर मैं तां, तगड़ा कम्म कमाया ॥
नीं तूं जित्ती सकिया कामें, नीं ब्रह्मा नीं सिव्व ।
कामदेव जो जित्ती मैं तां, पूरी कीती जिद्द ॥
इसा सृष्टिया अन्दर जितणें, जीव जन्त हन सारे ।
सवनां तों मैं ऊचा बाणिया, कीते कम्म नियारे ॥
मेरे तपे दे कन्नें सृष्टि, डग-मग डोलै सारी ।
मैं जित्ती के कामे आया तेरी माया हारी ॥
तेरा जादू जन्तर टूणां, हुण नीं चलणा कोई ।
मेरे तप दे अग्गें कोई, सकदा नईं खड़ोई ॥
नारद बोलै, हे विसणू अज, तेरी होई हार ।
काम देवता जित्ती के मैं, आया हां दरबार ॥
नारद दी गल्ला पर विसणू. नेत्र लेए उघाड़ी ।
वैंकुण्ठे दे अन्दर होई, इक्क भीषण किलकारी ॥

विसणू सोचै मुनिवर नारद, घोर तपीसर होया ।
अहंकार दे अन्दर फसिया, अपणें आप घटोया ॥
अहंकार इस दा नीं मेटां, सुद्ध नईं इस होणां ।
किल्ले कामे जित्ती मुनिवर, पूरा वुद्ध न होणां ॥
इस गल्ला जो सोची विसणूं, अपणीं गल्ल सुणाई ।
बोलण लग्गे, 'मुनिवर नारद, कीती वड़ी कमाई ॥

स० **काम जित्तिया माया जाली, नारद तपी महान ।**
तिन्न लोक दा जस्स कमाया, जाणैं सकल जहान ॥

स० **ऋषियां मुनियां दे बी तोड़ै, ठौकर सब्ब घुमण्ड ।**
माह्णू बी जे ऊचा बोलै, खरी कसोऐं झंड्ड ॥

इतणी गल्ल गलाई विसणूं. माया जाल रचाया ।
सिल्ल नगरिया अन्दर माया, दा विस्तार कराया ॥
सिल राजे दी सुन्दर कन्या, सोह्णी छैल् वणाई ।
बाल् तिसा दे लम्मे-झम्मे, कोमल कल़ी सजाई ॥
हिरने साईं हाखीं जग-मग, दन्द मोती साईं ।
केले दे थम कोमल लत्तां, लमियां-झमियां बाईं ॥
मोरे साईं चाल तिसा दी, मस्त हाथिए साईं ।
छुण-मुण दिल दे अन्दर होऐ, बंग्गा छणकन बाईं ॥
रूप रंग सब दई लछमियां, तिसजो छैल् बणाया ।
हीरे मोती लालां कन्ने, सोह्णां छैल् सजाया ॥
नौ लख तारे सिर जो लाए, सूरज चन्द सजाए ।
सिरो पैंरिया सोह्णी कीती, अंग-अंग वणकाए ॥
सिल्ल नगरिया दे राजे ने, अपणां सब्द सुणाया ।
चऊं पासियां अठ कूंटां बिच, सारें बोल पुजाया ॥
अपणीं कन्या दा राजे ने, रचिया इक्क स्वयंबर ।
जगा-जगा दे सब्ब देबते, धरत पतालें अंबर ॥
नारद दे रस्ते विच विसणू, मायापुरी बणाई ।
आटा लाई लम्मी डोरी, पैंनी बिड़ी सजाई ॥
विसणू दे दरबारे चा हुण, उट्ठी नारद आया ।
सिल्ल नगरिया अन्दर आई, माया विच भरमाया ॥

माया दी नगरी विच पुज्जा, महलां अन्दर जाई।
राजे ने मुनिए जो दिक्खी, कन्या लई सदाई ॥
राजा बोलै, 'मुनिवर ! कन्या, दे कर्मां जो दिक्खा ।
इस दे मत्थे पर के लिखिया, दुद मिलगा के छिक्का ॥

स० **जालूं कन्या छण-मण करदी, आई नारद आल।**
दंग रई गिया नारद दिखी. माया पाया जाल ॥

राजे ने नारद दे हत्थें, टिपड़ा था पकड़ाया ।
कन्या दा वर पुछणे ताईं, अपणां बोल सुणाया ॥
पुच्छै राजा मुनिवर दस्सा, के ऐ इस दे मत्थें ।
कुण राजा हुण इस जो वरगा, रेखा दिक्खा हत्थें ॥
तुर-बुर करदा नारद दिक्खै, कन्या दे हुण भाग ।
मत्थें दिक्खी रेखा तिन्नीं, नारायण अनुराग ॥
कन्या दे भागां था लिखिया, वर परमेसर साईं ।
सुन्दर छैल़-छबीला हुंग्गा, सैह कन्या दा साईं ॥
इस कन्या जो कोई वरगा, तिस ठाकर बण जाणा ।
रेखा टिपड़ा मत्था दस्सै, तिन्नीं तां तर जाणां ॥
इस गल्लां जो सोची नारद, मने च करै वचार ।
जे कन्या हुण मिज्जो वर लै, गल़े च पाऐ हार ॥
तां मैं दूआ नारायण हुण, तिरलोकी पर होणां ।
विसणूं ने वी मेरे अग्गें, बन्ही हत्थ खड़ोणां ॥
चप्प-चुपीता उठी खड़ोता, राजे जो पतियाई ।
बोलण लग्गा; 'हे राजा सुण, गल्ल समझ नीं आई ॥'
काम देव दे जितणें दा तिस, चेता मुड़ी न आया ।
भुली गिया हुण सब किछ नारद, माया चकर चलाया ॥
जालूं माया चक्कर चलदा, भुलदे तपी सुजान ।
जाई खुब्बदी विच कालजें, माया दी किरपाण ॥
माया दिक्खी तपी धूणियां, नारद था भरमाया ।
कामें जित्ती व्याह करन जो, जी तिसदा ललचाया ॥
सिल्ल नगरिया तों उट्ठी कै, वैकुण्ठे बिच आई ।
विसणू कन्नें नारद ने थी, अपणीं गल्ल सुणाई ॥

स० **नारद बोलै, 'हे नारायण !, आयां मैं दरबार ।**
मिज्जो रूप दिया हुण अपणां, तां ऐ बेड़ा पार ।'
घोर तपस्वी तपी धूणियां माया बिच भरमान ।
भवसागर दे अन्दर माह्णू. अणमुक गोते खान ॥

नारद दी जां गल्ल सुणीं तां, नारायण मुस्काए ।
पुच्छण लग्गे हे मुनिवर ! हुण, रस्ते चा मुडी आए ॥
रूप रंग दी लोड़ पई क, कोई ब्याह कराणा ।
दस्सा मिज्जो मुनिवर सब किछ हुण कुस जो भरमाणां ॥
रूप रंग दी लोड़ असां जो, तुसा रूप के करना ।
दस्सा सारी गल्ल दिले दी, कुस कन्या जो वरना ॥
काम जित्तिया माया जालो, मुनिवर तुसां कहाए ।
हुण वैकुण्ठें रूप रंग जो, मंग्गण मेथों आए ॥
विसणू दी जां गल्ल सुणीं तां, नारद बोल सुणाया ।
बोलण लग्गे ; हे विसणू ! मैं, दरबारे बिच आया ॥
तेथों लैणां रूप रंग मैं, बिच्च स्वयंवर जाणां ।
सिल राजे दी कन्या कन्नें, अपणां व्याह कराणां ॥'
नारद दी जां गल्ल सुणीं तां, लछमी अचरज होया ।
सोचण लग्गी मन दे अन्दर, नारद अज्ज भतोया ॥
कई धूणियां तपियां इन्नीं, काम जित्तिया जाई ।
ब्याह करै अज मुनिवर नारद, मनें गल्ल के आई ॥
नारद दी गल्ला पर सारें, सुरगें हलचल होई ।
विसणूं हाखीं मीटी सोचन, अज्ज मने दी होई ॥
किछ घड़िया नीं उत्तर दित्ता, विसणू चुप्प खमोस ।
नारायण जो चुप दिक्खी कै. नारद आया जोस ॥
बोलै नारद ; देर करा मत, सिल्ल नगरिया जाणां ।
बिच्च स्वयंवर जाई मैं तां, अपणां व्याह कराणां ॥
रूप रंग वस्तर अपणें हुण, झट-पट दिया उतारी ।
तुसां बिहोए जमदे अप्पूं, हुण तां मेरी वारी ॥

स० **जे गल्ला जो नेईं मन्नगे, तां मैं देणा शाप ।**
हे नारायण ! देर करा मत, मिज्जो ऐ सन्ताप ॥'

बिसणू करी चलाकी नारद, बान्दर रूप बणाया ॥
मुनिवर बणीं ठणीं के चलिया, माया विच भरमाया ॥
अग्गें-अग्गें नारद पिच्छें, सिब जी दे गण भाई ।
विच्च स्वयंबर आए नारद, बैठे आस लगाई ॥
सारे दिक्खन नारद पासें, मुनिवर खिड़-खिड़ हस्सै ।
विचली गल्ला डरदा मारा, कोई नीं हुण दस्सै ॥
नारद सोचै मनें च अपणें, मिज्जो दिक्खन सारे ।
मेरे तां अज छैल विसणुएं, सारे अंग सुआरे ॥
सुरगे दे सब देव देवते, रए स्वयंवर आई ।
माया नगरी दी सोभा जो, दिक्खन सारे जाई ॥
नारद लग्गै बान्दर साईं, होए लोक हरान ।
सोचन सारे मन दे अन्दर, के कीता भगवान ॥
नारद कन्नें कुनीं गल्ल नीं, रती भरें जतलाई ।
शापे तों डरदे मारे ने, गल्ल न कन्नें पाई ॥
नारद दिक्खै चऊं पासियां, लोकी हस्सन सारे ।
सोचन सारे मन दे अन्दर, विसणू खेल नियारे ॥
रूप मंग्गिया नारद ने तां बान्दर रूप बणाया ।
काम देव जो जित्ती मुनिवर, माया बिच भरमाया ॥
अपणें आपें बणियां ठणियां, नारद विच्च स्वयंवर ।
लक्कें ध्होती गलें जनेऊ, मुहएं दा था बन्दर ॥
नारद अग्गें बदिया कनिया, माला लेई आई ।
मुनिवर सोचै गले च इन्नां, हुण पाई के पाई ॥
इक लैणां जो छड्डी कन्या, अगली लैणां जाऐ ।
नारद वी झट उट्ठी अगली, पैंठी बौन्दा जाऐ ॥

स० **नारद जो अपणें आपे पर, तगड़ा था बिसुआस ।**
कन्या ने वर वरना मिज्जो, नारद लग्गी आस ॥

स० **त्रिस्ना आसा कदीं न जाऐ; सब माया दा फेर ।**
माहणू माया पिच्छें दौड़ै, बणदा ध्हूड़ी ढेर ॥
नारद सोचै मन दे अन्दर, इतणीं देरी लाई ।
कैंह न मेरे गले च आई, इन्नां माला पाई ॥

कोई इसा भलेखा लग्गा, जादू टोणा होया ।
इस गल्ला जो सोची नारद, अकड़ी करी तणांया ।।
सोचै अपणें आपें नारद, रूप विसणुएं साईं ।
नीं समल्होई होया तिसतों, चुक्कै खड़ियां बाईं ।।
नईं निहाली सकिया नारद, चऊं पासियां जाऐ ।
कन्या दे जां अग्गें पुज्जै, कन्या मुंह लुकाऐ ।।
तिसजो दिक्खी सारे हस्सन, कुण बोलै हुण डरदा ।
अपणें आपें सारे सोचन, नारद अज के करदा ।।
कोई बोलै. 'अचरज होया, नारद वड़ा सियाणां ।
माया दे पिच्छें दौड़ी कै, अज तां बणै नियाणां ।।
कोई बोलै, 'बुड्डे वारें, अकल न रैहन्दी मत्थें ।
कोई बोलै, 'माया छाया, नीं औणीं ऐं हत्थें ।।
माया दी ऐ तिलकणबाजी. पैर घसातड़ जान्दा ।
माया दे पिच्छें न्हट्ठी कै, नारद अज भरमान्दा ।।
नारद सोचै गल के होई, कन्या नक्क मरोड़ै ।
मिज्जो दिक्खी दूरे तों तां, मत्थे अज संगोड़ै ।।
रई न सकिया नारद हुण तां, अग्गें रीया जाई ।
कन्या बोलै ; गांह जाण दे, कजो रोकनां भाई ।।
हब्ब रई गिया सुणी कै गल्ला, नारद अचरज होया ।
सोचण लग्गा मेरे कन्नें, के खचरेडा होया ।।
पिछें मुड़ी कै कन्या ने हुण, तिसजो गल्ल सुणाई ।
सीसे दे विच मुहएं दिक्खी, तू औणां था भाई ।।

स० **एह के बणीं के आयां तूं दरबार दे अन्दर ।**
व्याह राजकन्या दा एथूं, नईं खेल कलन्दर ।।

बिच्च स्वयबर मुंह बान्दरे, दा लाई के आया ।
चऊं पासियां फिरै बतूरा, रंगे च भंग पाया ।।
ऐह राजियां दी धरती ऐ, बान्दर दा नी खेल ।
अपणें आपें दिक्ख वचारी, मेरे ने के मेल ।।
इक पासें राजे दी कन्या, दूएं बान्दर मुंहआं ।
नईं नच्चदा मोर कदीं बी, दई भलेखा धूआं ।।

इतणीं गल्ल गलाई माला, बिसणू दे गल पाई ।
नारद तुर-बुर दिक्खण लग्गा, गल्ल समझ नीं आई ।।
नारद जो दिक्खी कै सिबजी, दे गण दौएं हस्से ।
तिन्हां अपणे गूठ लक्हेरी, नारद जो थे दस्से ।।
नारद ने परना झाड़ी कै, मूंडे उप्पर पाया ।
ढूण-मढूणा उट्ठी नारद, बाह्र स्वयंवर आया ।।
नारद आई सीसा दिक्खै, बान्दर मुहआं बणियां ।
क्रोधे दे विच वली उट्ठया, तिन्नीं मत्था तणियां ।।
बिसणू दे अग्गें जाई कै, नारद हुण हुंक्कारै ।
'लगा देण मैं शाप विसणुआं', जोरे ने ललकारै ।।
इतणी गल्ल गलाई तिन्नीं, अपणा कम्म कमाया ।
चुलिया दे विच पाणीं पाई, अपणां शाप सुणाया ।।
पाणी दा छिट्टा मारी कै, नारद गल्ल सुणाई ।
मुनिवर बोलै, 'अज्ज विसणुआं, तेरी दियां दुहाई ।।
रूप रंग जे मिज्जो दित्ता, तेरे कम्में औणां ।
त्रेता दे विच नार वजोगें, बणें-बणें तूं भौणां ।।
जेह्ड़े हस्से सिबजी दे गण दानव करी कहांगे ।
सिबजी दिक्खी गण अपणे हुण, घड़ी-घड़ी पछतांगे ।।

स० **जिय्यां अज्ज जणासा दा ऐ, होया असां बजोग ।**
तिय्यां ई तां कई धियाड़े, तिज्जो वी धड़जोग ।।

स० **बैकुण्ठे बिच हा-हा कारा, नारद दित्ता शाप ।**
देव देवते सारे दिक्खन, लछमी जो सन्ताप ।।

इतणीं गल्ल गलाई नारद, कई धूणियां तपिया ।
अहंकार जाले चा छुड़की, जाई क्रोधें फसिया ।।
तांह् दी लान्दा तुआंह् बुझान्दा, माया खूब नचान्दी ।
सौण न दिन्दी कदीं कुसी जो, रात दिनें तड़फान्दी ।।
इस तों डरदे साधू योगी, कई धूणियां तपदे ।
सन्यासी वी ताड़ी लान्दे, कई घरिस्ती खपदे ।।
माह्णू दी करतूतां दिक्खी, माया खिड़-खिड़ हसदी ।
कदी न बौन्दी कदी न सौन्दी, हर दम छण-मण नचदी ।।

कदीं जड़ोऐ सुन्नें रूपें, छैल् चादरू ओढी ।
बाह्रें दुस्सै छैल्-छबीली, जैह्र चड़ैनू डोडी ॥
माया दे दीय्ये पर माह्णू, बणीं पतंगा पौन्दा ।
झल्सोई कै फंगा फूकै, चैन दिलें नीं औन्दा ॥
अदमर माह्णू माया उप्पर, आईं फंग खलारै ।
सेक काल्जें खाई रोऐ, माया भिरी पुकारै ॥
फड़-फड़ करदी लो दीय्ये दी, माया नाच नचान्दी ।
माह्णू नच्चै इस जो दिक्खी, इसजो नईं सुखान्दी ॥
उक्कल मुंड्डी पुट्टी सुट्टै, जींडा दिऐ सुकाई ।
माह्णू दे अन्दर दी लोई, इक दम दिऐ बुझाई ॥
अपणें अन्दर दे धूएं जो, दिक्खी कै फणसोऐ ।
माया जाल् हत्था पैरां, माह्णू खड़ा झसोऐ ॥
डुंड्डा रोह्ला बणीं ढेडला, माया-माया करदा ।
लउएं पाकें भरिया कुप्पा, सड़ी-सडी कै मरदा ॥
देव-देवते माया दे विच, अप्पूं आई फसदे ।
जालूं माया चक्कर चलदा, हफी-हफी कै थकदे ॥

स० **माया दस्सै ऐशपरस्ती, अणमुक करदी खेल ।**
माह्णू नच्चै माया दिक्खी, कड्डै अपणां तेल ॥

जालूं माह्णूं माया दिखदा, खड़े कियाड़ें जान्दा ।
माया दे जोसे बिच आई, पुट्ठे कम्म कमान्दा ॥
भलेमाणसां जो मारै तां, लुच्चियां जो गल् लाई ।
जीव-जन्त जो मारी सुट्टै, हा-हा कार दुहाई ॥
परमेसर दी फुलवाड़ी जो, भूतड़ बणीं उजाड़ै ।
भन्नी सुट्टै तोड़ी सुट्टै, कमजोरां जो मारै ॥
माह्णू दी करतूतां दिक्खी, परमेसर जां कोपै ।
माया छड्डी फूकी सुट्टै, होर न कोई रोकै ॥
माया जो दिक्खी कै माह्णू, भस्मासुर दे साईं ।
नच्चण लगदा नखरे करदा, उप्पर नीन्दा बाईं ॥
झल्सोई कै भल्-भल बल्दा, धूड़ मुड़ी कै होऐ ।
परलै होऐ पाणीं-पाणीं, माह्णू नीं पछणोऐ ॥

न एह जाणैं नईं पछाणैं, माया सुपनें साईं ।
जमणां मरनां भुल्ले माह्णू, इक दिन रोऐ ताईं ।।
वेद पुराणां जो नीं पढ़दा. इतिहासे नीं जाणैं ।
माया दे चक्कर जो माह्णूं. रती भरें नी जाणैं ।।
जालूं दिखदा जोर जुआनी, हिक्का ने ढिग ढान्दा ।
खड़े कुआलें जोरें पत्थर, अणमुक भिगी चढ़ान्दा ।।
माह्णू भुल्लै परमेसर जो, नईं सणोऐ कन्नां ।
जोरे दी न्हेरी जो दिक्खी, होऐ हाखीं अन्हां ।।
ढोल नगारे एह न सुणदा, माह्णू जोर पुकारैं ।
मदियो झांटे साईं आई, खेतर खड़े उजाड़ैं ।।
जोर जुआनी नित नीं रैह्न्दे, एह माह्णू न जाणैं ।
धुप्पा छौआं दे पलटे जो, अन्हा नईं पछाणैं ।।

स० मेरा पुत्तर मेरी जोरू, मेरा ऐ परिवार ।
डुब्बै बेड़ा मैं मेरे दा, आई कै मंझधार ।।

स० मैं जो मारै माया जालै ता माह्णू दरवेस ।
ठोकर दी सब लीला जाणै, तिसजो नईं कलेस ।।

जालूं बकरी मैं-मैं करदी, छुरी गले पर औन्दी ।
माह्णू दी मैं इक दिन सारी, समसाणें पर सौन्दी ।।
चढ़दा डुबदा सूरज दिक्खी, माह्णू सबक न लैन्दा ।
लोई न्हेरे नईं पछाणैं, मुड़ी-मुड़ी के ढैन्दा ।।
ठेडे-ठोकर खाई मरदा, उठी-उठी कै चलदा ।
धूएं साईं कई बरी तां, धुखी-धुखी कै बलदा ।।
अपणे ई मुहएं दे लउए, कई वरी जां चट्टै ।
दूए दी हड्डी समझी कै, खिड़ खिड़ करदा हस्सै ।।
इक दूए जो दिक्खी कुढ़दा, कुत्ते साईं घूरै ।
जालूं खड़कै डांग सिरे पर, जंग्गां बाईं झूरै ।।
जोर जुआनी दिक्खी माह्णू, फुल्ली-फुल्ली बौन्दा ।
चऊं पासियां सज्जण मित्तर, नाता रिस्ता औन्दा ।।
मौज बहारां दिक्खी अन्हा, गासे पींग चढ़ाऐ ।
ऊंचा जाई सब किछ भुल्लै, कई झुटारे खाऐ ।।

धरती दे जीबां जो दिक्खै, कीड़ मकोड़े जाणैं ।
दरड़ी सुट्टै निक्के मोटे, लमियां लत्तां ताणैं ॥
आणमुक्के दे झूटे खाई, पींग कसोन्दीं सारी ।
धड़-धड़ करदी इक-इक ताणीं, टुट्टै वारो बारी ॥
माहणू पौऐ धरती उप्पर, दन्दां मुहआं तोड़ै ।
माया दिक्खी खिड़-खिड़ हस्सै नक्के भिरी मरोड़ै ॥
बणीं निहत्था बिलसै माह्णूं, मुंह न कोई लान्दा ।
रिस्ता नाता दूर खड़ोई, तिसदा अपजस गान्दा ॥
डुंडा रोह्ला लई भोड़ियां, दर-दर भिखिया मंग्गै ।
नक्कें मुहएं लालां गुलफे, हत्थ अडदा न संग्गै ॥

स० **जालूं पेस कोई न चल्लै, चेतें औऐ राम ।**
ढिल्ली होऐ चमड़ी अन्दर खड़-खड़ करै बदाम ॥
सोठे हत्थें पकड़ी चल्लै, सारे ई दुतकारन ।
पुत्तर धीय्यां रिस्ता नाता, सारे पल्ला झाड़न ॥
गिड़-गिड़ करदा सबनां अग्गें, हर दम तरले करदा ।
अपणीं करनी दा फल भुगतै, जाई वकुण्ठे बड़दा ॥
धक्के मारी गुरजां मारन, जम राजे दे दूत ।
चेतें औऐ माह्णूं जो तां, सारी ई करतूत ॥
सबनां गल्लां सोची माह्णूं, ढूण-मढूणां झूरै ।
जम राजे दा दूत माह्णुएं, करनी दिक्खी घूरै ॥
सोचै माह्णू कजो चढ़दिया, बिच थे पाप कमाए ।
जिन्हां ताईं पुट्ठ कमाए, सैह नेड़ें न आए ॥
जिन्हां ताईं माह्णू सोचै, भरी जुआनी गाली ।
डुब्बण लग्गी बेड़ी ताह्लूं, कुनी न आई तारी ॥
किल्ला किलकै भवसागर विच डूगा हेठ दबोऐ ।
अदमर माह्णू गोते खाऐ, अपणे मनें झसोऐ ॥
माया दूर कनारें बैठी, पई तमासा दिक्खै ।
छैल-छबीली बणीं खड़ोऐ, तिसदे लागें छिक्कै ॥
माह्णू माया जो दिक्खी कै, वट्ट त्यूड़ी चाढ़ै ।
लागें शागें जोरें जोरें, अपणें बोल उचारै ॥

बोलैं माह्‌णू लोकां जो, 'मत, माया दे विच फसदे ।
इस बिड़िया दे आटे जो मत, मेरे साईं चखदे ।।
नीं तां मेरे साईं लोको विच्च घिरनुएं फसणां ।
माया ने विड़िया दी डोरी, जोरें खिज्जी हसणां ।।
समसाणें पर सारे माह्‌णूं, सोचन गल्ल बचारी ।
घर जाई के भुल्लन सारे, असरे देन उतारी ।।

स० **बुरा न छड्डै माह्‌णू करना, नीं सुज्झन समसाण ।**
जिय्यां अग्गी आब चढ़ै तां, तेज बणैं किरपाण ।।

स० **घड़ी घड़ी दा ठोकर रखदा, लेखा कनैं हिसाब ।।**
माह्‌णू दे करमां दी बणदी, मोटी इक्क किताब ।।

समसाणें जो बलदे दिक्खी, कोई असर न होऐ ।
जिय्यां छाई अणमुक छोला, नौणीं नईं खड़ोऐ ।।
घर जाई कै करदे सारे, दूणीं टूंज-पटूंजी ।
वैर बरोधे कदीं न छड्डन, माह्‌णूं खान धरूंजी ।।
कणें दे जालें मूरख एह्‌, माया बिच भरमान्दा ।
जाल दे विच उलझी जाऐ, अपनां आप फसान्दा ।।
अणमुक लालां मुहएं छड्डै, पुट्ठा करी लटोऐ ।
तणियां-तड़छां अणमुक मारै, जाले बिच तड़छोऐ ।।
मुहएं दी लालां दे कन्नें, अणमुक धागे धीड़ै ।
कोह्‌लू दी तां लट्ठ वणीं कै, माया इसजो पीड़ै ।।
अपणें ई तेले दी पिड्डें, माह्‌णूं मालस करदा ।
लोकां जो बी तेले वेचै, पलिया-पलियां भरदा ।।
वैल कोह्‌लुए हा वी बणदा, चऊं पासियां फिरदा ।
लट्ठ खिज्जदा जोरें-जोरें, रती भरें नी घिरदा ।।
हाखीं मीठैं बैले साईं, एह न रती बसून्दा ।
रात धियाड़ें चलदां रैह्‌न्दा, राम कनें नीं कून्दा ।।
तेली टब्बर माया छूचक, पिट्ठी पर जां मारै ।
कोह्‌लू दा एह दान्द खाई कै, मारा नीं सुस्कारै ।।
तेली मित्तर धीय्यां पुत्तर, माया छूचक कोड़ा ।
कोह्‌लू दे बैले दी पिट्ठी, उठदा बड्डा फोड़ा ।।

बैंदे जो हुण रती न दस्सन, तेली लीकां लान्दे ।
बैंले दे जखमे दे ताईं. लोआ लाल तपान्दे ।।
ठंड सियाले बाह्‌र रई कै, भर बरसाती सड़दा।
सारे बोलन दूर खड़ोई, कैंह न डंग्गर मरदा ।।

स० अदिया रातीं जिन्द घटोऐ, औऐ कंठें जान ।
कुल बुल करदे कंड्‌डी, कीड़े, हडियां चब्बी खान ।।
जिन्हां ताईं कंड्‌ड उच्चड़ी, कीड़े भिरी सरोए ।
बैंले मरदे दिक्खी तेली, रोए नईं घटोए ।।
माया दा जां झक्खड़ झुलदा, उड़दे सारे गासें ।
विरला-खिरला कोई साधू, रैंह्‌न्दा इसतों पासें ।।
लोऽ-लुआंटे माया दे हन, चऊं पासियां बलदे ।
इस दे तत्ते औए अन्दर, पत्थर सिल्लां गलदे ।।
जड़ चेतन बणने तो पहलैं, माया लगदा जाग ।
माह्‌णू दे जमणें तों पहलै तिसदे बणदे भाग ।।
हवा पाणिएं अन्दर जिय्यां, नईं दुस्सदी जान्दी ।
जीव-जन्त जड़-चेतन छिट्‌टे, माया ढलियो चान्दी ।।
माया छौंटे साईं भाई, सुज्झै नीं पकड़ोऐ ।
इसा दे जालें अन्दर सृष्टि, सारी ई जकड़ोऐ ।।
इस माया दे अंसें कन्नें, बूटे धरती जमदे ।
पत्थर पाणीं पर्वत बद्‌दल, सब माया तों बणदे ।।
प्हाड़ां उप्पर बर्फ चोटियां. इस माया तों जमदी ।
इसा माया दे जोरे ने ई, धरती चक्कर घुमदी ।।
जीव-जन्त सब पंख पंखेरू, माह्‌णू पैदा हुंदा ।
बोली अटपट बोलन सारे, लग्गै सब किछ गुंग्गा ।।
हौलें-हौलें इक दूए जो, सारे लैंन पछाणीं ।
बर्फ ढली कै नदियां अन्दर, जिय्यां बगदा पाणीं ।।
इक दूए दी हाखीं दे विच, किरे बणीं कै रड़कन ।
जिय्यां बद्‌दल गासे उप्पर, जोरें-जोरें गड़कन ।
माह्‌णूं बोलै अट-पट बोली, जीबां साईं रींगै ।
धुप्प दुपह्‌रां रुक्खां थल्लैं, डुड्‌डीं अन्दर चींगै ।।

स० के माह्णूं के जीव-जन्त सब, ठौकर दा परबार ।
इक्को बोली इक्को भाषा इक्को दिया उडार ।।

स० जीब जन्तुआं रुक्ख बसूटां, धरती लगदा जाग ।
भान्त-भान्त दे पखरू जन्तू, बोलन संझ भियाग ।।

नंग मनुंगे करन गुजारा, पतरां कनें ढकोई ।
फलां फरूटां खाई निगली, माह्णू जात बडोई ।।
सिल्लां जो सन्दर समझी कै, माह्णू जीबां मारैं ।
कच्चे मासे खाई भूतड़, जोरें जोर डकारैं ।।
किछ सदियां दे बाद माह्णुएं अग्ग बाल्ना सिक्खी ।
पत्थर उप्पर पत्थर मारी, उडी चिंगारी चिट्टी ।।
हौले-हौलें भिरी माह्णुएं धरती अन्न उगाए ।
लोआ तांबा पित्तल तोपी, सन्दर खरे बणाए ।।
पत्तर छड्डी खल्लड़ ओढे, तां सूतर बणुआया ।
डुंड्डीं जो छड्डी कै माह्णुं छन्नीं अन्दर आया ।।
लक्ख हजारां सालां पसुआं इसदे कम्म कमाए ।
कई पखेरू लई सन्देसे, नेड़ें दूर पुजाए ।।
घोड़े खोते खच्चर पाली, अणुमक भार ढुआया ।
जीव जन्तुआं रली-मिली कै इसदा कम्म कमाया ।।
कुत्ते तों रखुआली लैन्दा, गौआं म्हैसां पालै ।
बैलां जो जुगड़ै धरती पर, खेतर खरे उसारै ।।
भेड़ बक्करी हाथी पालै, ऊंटें करै सुआरी ।
जड़ी बूटियां दे लाजे ने, ढाऐ सब्ब बमारी ।।
गोल् चक्करे आला इन्नीं, पेय्या भिरी बणाया ।
गड्डी मोटर कूकां मारै, सड़कां दा कम लाया ।।
गासे उप्पर उड़न खटोल्, इन्नी भिरी चढ़ाए ।
सागर तरने ताईं बेड़ी, बेड़े बड़े बणाए ।।
पढ़ी लिखी कै माह्णू जाह्लूं, अपणें जोरें आया ।
राज चलाई तख्त सांबिया, मत्थें ताज चढ़ाया ।।

दो० बणीं गिया सब जीब जन्तुआं, दा माह्णू सरदार ।
राज करै धरती दे उप्पर, बदी गिया परबार ।।

राजा वणियां माह्‌णूं धरती, उप्पर राज चलाऐ।
बददा-बददा बदी गिया हुण, दूए नईं सुखाऐ॥
इक दूए ने करैं लड़ाई, धरती खून खराबा।
किय्यां होणां लड़ी-लड़ी कैं, माह्‌णू दा हुण बादा॥
परमेसर अवतारैं अप्पूं धरती भार घटाऐ।
भिरी न माह्‌णूं अकल बचारैं, इक दूए जो खाऐ॥
जुग वी पलटे परलै होई, कई वरी किछ होया।
कई वरी तां खिड़-खिड़ हसिया, कई वरी ऐ रोया॥
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग, पलटा झोला आया।
माह्‌णू धरती जमिया मरिया, होया मूल सफाया॥
सतयुग दे विच सबर सन्तोखें, माह्‌णू बदिया फुल्लिया।
त्रेता दे विच अन्हा होई, माया दे विच भुलिया॥
पूरी सतयुग सृष्टि होई, त्रेता दे विच फुल्ली।
अद्‌दे माह्‌णू देव-देवते, अदियां जो गल्ल भुल्ली॥
द्वापर होयां छलें-छलेडा, धरती उप्पर आया।
घमासान हुण घोर लड़ाई, परलै पलटा छाया॥
कलियुग हस्सै खिड़-खिड़ करदा, त्रैंह्‌ युगां पर भारी।
घर-घर माया नच्चै आई, मत्त माह्‌णुएं मारी॥
विषय वकारां दे विच भुल्ली, माह्‌णूं दूए खाऐ।
माह्‌णूं दी करतूतां दिक्खी, ठीकर वी पछताऐ॥
कलियुग दे विच घर-घर आया, चोरी ठगी कलेस।
तामस माह्‌णू ठाठां मारै, होए अणमुक भेस॥
खरे खोटियां रती न पुच्छै, कलियुग गई पछाण।
माया जाले दा हुण घर-घर, तगड़ा पिया वछाण॥

स० अद्‌दे माह्‌णूं करन लगे जां, दानव दा ब्योहार।
धरती भार घटाणें ताईं, ठीकर लै अवतार॥

दो० धरती डगमग डोलदी, होऐ हा-हा कार।
अपणां दुखड़ा फोलदी, बिसणू लै अवतार॥

महाकाव्य 'माया'

द्वितीय सर्ग

दो० सिरखुद माह्‌णू भुल्लदा, होऐ भूत सुआर ।
मारै सोठें अम्बरें, गिरै सिरे दे भार ॥

जां धरती पर चऊं पासियां, होऐ हा-हा कार ।
ठौकर अग्गें धरती जाई, अपणी करै पूकार ॥
बिच्च सुनंदर तोता बोलै, माह्‌णू जो समझाऐ ।
माह्‌णू दी करतूतां तोता, हौलें-हौलें गाऐ ॥
सुपने दे विच तोते ने हुण, राम कहाणी लाई ।
कंगली लई दरुबा डाल्ू, उट्‌ठी सुणना आई ॥
तोता बोलै कई राजियां, धरती कीती लीरां ।
छैल-छैल तां लई राजियां, माड़ी लई फकीरां ॥
जगा-जगा पर इक-इक राजा, जगा-जगा सन्यासी ।
विच्च अयोध्या दसरथ होया, लंका रावण वासी ॥
जनकपुरी जनके दी नगरी, विच्च पतालें दन्त ।
घोर वणां बिच्च घोर तपस्वी, कई साधु कई सन्त ॥
जां बंडोई सारी धरती, लोकां राज चलाए ।
अपणीं-अपणीं राजधानियां, अपणें हुकम बणाए ॥
कुंभकरण रावण गण सिव दे, लंका विच अवतारी ।
देवतियां दी करन तपस्या, दौएं वारो बारी ॥
रावण ने कैलासे उप्पर, हवन कुण्ड वणुआया ।
सिबां दे अग्गें सिर उतारी, तिन्नीं अग्गी पाया ॥
बडिया जमिया कई बरी सिर, रावण दा जां आई ।
सिवजी दी जां ताड़ी खुल्ली, कुंड्‌डें नजर घुमाई ॥

रावण दे मुंडां दे कन्नें, सारा कुण्ड भरोया ।
सिब जी पुच्छन रावण तों तूं, लऊ लुहाणैं होया ।।
के मंग्गाना रावण मेथों, इतणीं भगती कीती ।
कई वरी अपणें सिर उतारे, तूं तां हाखीं मीटी ।।

दो० सिब जी पुच्छन रावणें, के लैणां वरदान ।
दानव हाखीं मीटिया, मुह्‌एं नईं जदान ।।

बार-बार हुण पुच्छन सिब जी, रावण किछ नीं बोलै ।
दौं हत्थां दे उप्पर चुक्की, कैलासे जो झोलै ।।
अणमुक झूटे सिब जी लग्गे, गौरां वी बदलोई ।
सिब जी बोले, 'रावण तेरी, भगती पूरी होई ।।
तिज्जो लोड़ पई सस्तर री, क्या तूं युद्ध रचाणां ।
अमर बणीं जा धरती रैह्‌णां जा वैकुण्ठें जाणां ।।
रावण बोलै 'हे सिब संभू !' ब्रह्म पुरी तों आया ।
चार वेद छः सास्तर पढ़िया, पण्डत करी कहाया ।।
सास्तर दी रख करने ताईं, सस्तर दी ऐ लोड़ ।
हे सिब संभू ! इस धरती पर, इक दूए ने होड़ ।।
जोरे जो सब मत्थे टेकन, इल्मे जो कुण पुच्छै ।
पढ़िया डरदा जोरे तों तां, डुडडी अन्दर लुक्कै ।।
धनुषे लैण चढ़ी कैलासें, हे सिब संभू आया ।
कई वरी सिर बड्‌डी अपणां, अग्गी दे विच पाया ।।
इतणीं गल्ल गलाई रावण, जय सिब जी दी बोलै ।
भिरी कलासे चुक्की हत्थें, चऊं पासिया झोलै ।।
सिव जी खिड़-खिड़ हस्सी बोले, मैं अज परसन होया ।
कैलासे पर झूटे झोले, नन्दी गण परतोया ।।
सिब संभू जो परसन्न दिक्खी, रावण बोल उचारै ।
दसकंधर वर मंग्गै 'मिज्जो, जीव जन्त नीं मारैं ।।
देव देवते होन वसे बिच, मैं होआं बलकारी ।
काल बसे बिच मेरें होऐ, मैं सबना पर भारी ।।
सिब जी बोलन हे रावण तूं, हुण के लैणां मेथों ।
मैं लुकहाई किछ नीं रक्खां, सच्चे भगता तेथों ।।

दो० नां माह्णूं नां देव देवता, नईं जीव नीं जन्त ।
इस धरती पर मेरे साह्ईं, नां होए बलवन्त ।।'
भोले शंकर रावणें, देण लगे वरदान ।
सुरग पुरी दे देवते, दन्दां जीब्ह दबान ।।
'नौ ग्रह होन बसे विच तेरें, काल न जित्ती सक्कै ।
तेरे अग्गें परमेसर वी, अवतारी कै थक्कै ।।'
सब वरदानां जो देई कै, सिब्ब जी आसण लाया ।
धनुष लई के सिब संभू दा, रावण रस्ते आया ।।
रावण दे वरदानां दी जां, खबर नारदें होई ।
ब्रह्मपुरी विच बोलै नारद, ब्रह्मा आल खड़ोई ।।
अचरज होया हे ब्रह्मा जी, सिब ने धनुष गुआया ।
रावण चुक्की सिब धनुषे जो, कैलासे तों आया ।।
देवतियां दे कन्नें होणीं, हुण तां घोर लड़ाई ।
सिब जी दे वरदानां तो हुण, तू नीं सकैं बचाई ।।
दानव रावण वरदानी बण कैलासे तों आया ।
इस धरती पर दानव दल ने, करना सब्ब सफाया ।।
नौ ग्रह सब्ब बसे विच तिसदें, काल न जित्ती सकदा ।
सिब जी दे धनुषे दे पासें, देव न दिक्खी सकदा ।।
जीब-जन्त नीं देव देवता, कोई नीं हुण मारै ।
रावण अमर इसा धरती पर, परमेसर अवतारै ।।
अणमुक्के दे वरदानां ने, कैलासे तों आया ।
भोले-भाले सिब संभू ने, सब किछ अज्ज गुआया ।।'
नारद दी जां गल्ल सुणीं तां, ब्रह्मा चिन्ता होई ।
उठी खड़ोते झटपट सोचन, किल्ले अज्ज खडोई ।।
घोर मुसीबत दे बेलें तां, अकल कम्म नीं करदी ।
मूरख होन मलाह पाणिएं, बेड़ी डुब्बै तरदी ।।
सिव जी ने अज देव देवते, सारे लए फसाई ।
ब्रह्मा दे अग्गें आई कै, सब्बे देन दुहाई ।।
दो० ब्रह्म देवता अज्ज इस, बरदानें जो टाल ।
रावण जो वर दई कै, सिब जी सुटिया जाल ।।

देर लाई तां दसकंधरें, लंका दौड़ी जाणां ।
तिन्नीं जाई गढ़ लंका बिच, सिव दा धनुष पुजाणां ।।
रोका रस्ते दे बिच तिसजो, सबनां गल्ल गलाई ।
सिव दे धनुषे अददें रस्तें. तिसतों दिया रखाई ।।
देवतियां गल सोची समझी, झट-पट मता मताया ।
रावण दे पिच्छें नारद था, सर-पट भिरी दुड़ाया ।।
अग्गें-अग्गें रावण पिच्छें, नारद बोलै, भाई ।
घोर तपे दी चुक्की अन्दी, तूं तां सब्ब कमाई ।।
भार उतारी लिया बसूईं, जनकपुरी ऐ नेड़ें,
किल्ला मत चुक्कैं तूं भारे, रख हुण मूंडें मेरें ।।
रावण ने जां गल्ल सुणीं तां पिच्छें नजर घुमाई ।
इय्यां लग्गै जिय्यां कोई, दिक्खै मुड़ी कसाई ।।
बोलै रावण, 'अज्ज नारदा, मत तेरी ऐ मारी ।
कैलासे तों चुक्की आया, एथूं दियां उतारी ।।
नारद ने हुण समा बचारी, अपणीं गल्ल गलाई ।
बोलण लग्गा, 'हे दसकंधर, बलकारी तूं भाई ।।
कई बरी कैलासै तोलैं, अणमुक सीस चढ़ाए ।
तेरी भगती पूरन होई, सिब दे दरसन पाए ।।
तेरे साह्ईं इस धरती पर, नीं होणां बलकारी ।
तेरे अग्गें सीस नुआणां, सबनां वारो वारी ।।
अणमुक फफड़े नारद कीते रावण नरम बणाया ।
रावण बोलै. 'हे मुनिवर तूं, सच्चो-सच्च गलाया ।।
ज़े धनुषे जो दियां उतारी, नईं चकोणां मेथों ।
हिलणां झुलणां मुड़ी कदी नीं, कम्म न होणा तेथों ।।

दो० गल्ल सुणीं जां नारदें, मनें च करै पुकार ।
हे नारारण ! दानवे, दी अकला जो मार ।।
सेस नाग दी सेज पर, त्रै लोकी दे नाथ ।
कन्ना जाई ठणकदी, नारद दी अरदास ।।

नारद दी मन सुणीं पुकारा, बिसणूं हल-चल होई ।
रावण दे मगजे दे अन्दर, मक्खी गई सरोई ।।

बोलै रावण, 'हे नारद ! मैं, धनुषे दियां उतारी ।
गोह्ए दा लेपन होऐ जां, फुल्लां भरी कियारी ॥
साईं सखणीं धरती उप्पर, एह धनुष नीं रखणां ।
लंका जे नीं पुज्जा जाई, अन-जल मैं नीं चखणां ॥'
रावण दे जां बचन सुणे तां, नारद भिरी गलाया ।
'हे दसकंधर ! तूं धरती दा गढ़ जित्ती कै आया ॥
तूं कैलासें धनुषे चुक्कै, सिब जी खान हुलारे ।
हे रावण ! तेरी बाह्ईं दे, सारे कम्म नियारे ॥
इस धनुषे दी गल्ल नईं ऐं, तूं ब्रह्मण्डे चुक्कैं ।
जनकपुरी बिसराम करी लै, दो घड़ियां किछ रुक्कैं ॥
सुन्दर नगरी जनके दी तूं, दिख थां धनुप उतारी ।
अठ सिद्धी नौ निद्धी एथूं, रावण दिक्ख बचारी ॥
छैल-छबीली जनकपुरी ऐ, ऊचे भवन वणाए ।
नारद रावण दौएं चल्ली, जनकपुरी विच आए ॥
अग्गें होया नारद पिच्छें, रावण चलिया भाई ।
मूंडें तिसदें धनुष सिवांदा, झूटै झूटे खाई ॥
सिब जी दे धनुषे जो दिक्खण, लोकी दौड़े सारे ।
जनक सिंहासन छडी आया, आई बचन उचारे ॥
जनक गलाऐ : हे दसकंधर !, मनें गल्ल के आई ।
इस नगरी दे भाग खुले हन, दरसन तेरे पाई ॥
मुनिवर नारद दे पैरां पर, जनकें सीस नुआया ।
वैदेह बोलै, मुनिवर अज्ज, धरम धियाड़ा आया ॥

दो० **वैदेह बचन उचारै, धनुषै दा ऐ भार ।**
सुण दसकंधर बेनती, धनषे धरत उतार ॥
रक्खा धनुषे धरती उप्पर, मैं सेवा ऐ करनी ।
हे दसकंधर पण्डत पूरे, देणीं मैं अज बरनी ॥
जप्प पाठ मैं हवन कराणां, हे दसकंधर ! तेथों ।
दरसन दित्ते अप्पूं आई, तूं वड्डा ऐं मेथों ॥
दसकंधर ने गल्ल सुणीं तां, दूणां था फणसोया ।
खिड़-खिड़ हसिया तिसदा हासा, जाई गासें छहोया ॥

रावण दे हासे ने पर्वत, डग-मग सारे डोले ।
जनके दी नगरी विच आए, तत्ते अणमुक झोले ॥
नारद ने गोह्‌ए दा लेपन, धरती पर करुआया ।
सिव जी दा हुण धनुष रावणें, तों धरती रखुआया ॥
ब्रह्म पुरी विच नारद आया, अपणां कम्म कमाई ।
रावण जां तिस धनुषे चुक्कै, सारा जोर लगाई ॥
धनुष सिवां दा धरत गडोया, विच्च पतालें छहोया ।
रावण इस गल्ला जो दिक्खी, अपनें मनें घटोया ॥
आकासे पर ब्रिजली चमकी, रावण पई उआज ।
'हे रावण ! के सोचा करनां, हाखीं खोड़ीं जाग ॥
नारायण अवतारैं आई, ताईं धनुष चकोणा ।
होर कुसी तों नईं हिल्लणां, नाईं मुड़ी रखोणां ॥
रावण दिक्खै चऊं पासियां, नारद नजर न औऐ ।
दसकंधर मन धुड़कू बोलै, रती चैन नीं औऐ ॥
जनके पासें दिक्खी रावण, होया लालो-लाल ।
बोलण लग्गा, 'जनक राजिया, इस बिच तेरी चाल ॥
मिज्जो अज्ज भलेखा लाई, मेरा तप्प घटाया ।
सच दस वैदेह, नारद तूं, कूंटा कुस्स लुकाया ॥

दो० सच्च गलायां राजिया, नईं समझियां काल ।
अज्ज लुकाएं नारदे, वरतैं तिसदी ढाल ।'
दसकंधर दा कोप था, धरती गास पताल ।
नारद बिसणूं आल हुण, अरज करै ततकाल ॥

रावण दी एह गल्ल अंबरें, आकासे ने छहोई ।
उप्पर ऊची दूर हवा विच, बाणीं अद्‌भुत होई ॥
बाणीं बोली, 'हे रावण सुण, जनके दा नीं दोस ।
नारद वी इस गल्ला तों ऐं, बिलकुल ई निरदोस ॥
कैलासे तों धनुषे चुक्की, अद्‌दे रस्तें आई ।
तूं रखिया धरती दे उप्पर, अपणां भार घटाई ॥
अकल ठकाणें नीं हुण तेरी, लोकां दिन्नां दोस ।
लोकां कन्नें करैं लड़ाई, अप्पूं तूं बे होस ॥

इस गल्ला दे उप्पर जे तूं, जनके जो दबकांगा ।
हिल्लण हुंगा इस धरती पर, धनुष पतालें जांगा ॥
बाकी दे वरदानां जो तूं, हत्थो-हत्थ झसोणां ।
सारी भगती निसफल जाणीं, तूं नीं कुथी खड़ोणां ॥
गासे दी जां गल्ल सुणीं तां, रावण अचरज होया ।
किच्छ नीं बोली सकिया अग्गें, मनें च बड़ा घटोया ॥
खाल-मखूली चली गिया हुण, गढ़ लंका विच पुज्जा ।
जनके ने बदला लैणें दे, ताईं किछ नीं सुज्जग ॥
जनकपुरी विच धनुष रखोया, देव-देवते हस्से ।
रावण दे दरबारे विच्चा, नौ ग्रह डरदे न्हस्से ॥
रावण ने पकड़ी कै होड़े, जेला अन्दर पाए ।
काल बन्नियां पटिया कन्नें, बोलैं हाय ! हाय ! ॥
अद्दे वरदानां जो रावण, लंका विच्च लियाया ।
चऊं पासियां अठ कूटां विच, अपणां हुकम चलाया ॥
दूएं पासें कुंभकरण दी, भगती पूरी होई ।
ब्रह्म देवता पुच्छण लग्गे, तिसदे आल खड़ोई ॥

दो० **कुंभकरण मुंह मंग्गा, लैण लगा वरदान ।**
सरसुतिया ने सिर चढ़ी, फेरी लई जबान ।

दानव सोचै वर मंग्गां मैं, छे म्हीने नीं सौआं ।
फिरां जागदा इसा धरतिया, नीं थक्कां नीं बौआं ॥
सरसुतिया दे भारे कन्नें, जीब्ह गई थथलोई ।
इक दिन जागां छियां म्हीनियां, तिसतों गिया गलोई ॥
छः म्हीने सौणें दा वर था, कुंभकरण ने पाया ।
'दो दिन जागै साले दे विच', ब्रह्मा बोल सुणाया ॥
छे म्हीने लंका दा द्यो हुण, सौऐ निन्दर गालै ।
कुंभकरण रावण दा भाई, वर ब्रह्मा दा पालै ॥
रावण कुंभकरण गण सिबदे, नारद जो थे हस्से ।
त्रेता दे विच लंका जाई, दौएं रस्से-बस्से ॥
सिव धनुषे दे ताईं गौरां, अणमुक करै वलाप ।
गौरा दिक्खी सिव संभू दे, मन होया सन्ताप ॥

लाणें ताईं तिसा भलेखा, विसकर्मा बुलवाया ।
सुन्ने दा इक सुन्दर तिसतों, महल सिवां बणुआया ।।
सिब जी सोचन माया दिक्खी, गौरजां भुली जाणां ।
धनुषे दा चेता नीं रैह्णां, माया बिच भरमाणां ।।
विसकर्मा ने किछ दिनां विच, सुन्दर महल बणाया ।
सागर कंडें सुन्ना चमकै, हीरियां ने जड़ाया ।।
परतिष्ठा महले दी करनां, रावण पण्डत आया ।
महले दिक्खी दानव दा मन, लैणें जो ललचाया ।।
परतिष्ठा तों बाऽद दक्खणां, सिव तों मंग्गै जाई ।
दखणां दे विच दसकंधर ने, महल लिया मणसाई ।।
महले दे विच रावण बसिया, सिव जी गए कलास ।
गौरा छड्डी इस धरती दी, अपणीं सारी आस ।।

दो० रावण लंका बिच करै, निरभै होई राज ।
जीब-जन्त हुण सब डरै, जिय्यां चिड़ियाँ बाज ।।

भागां होए फकीरी, तां नीं मिलदे राज ।
करमां दे बिन बणन नीं, माह्णू मत्थें भाग ।।

जान्दी-जान्दी गई गौरजां, दई रावणें शाप ।
इक दिन जलनी लंका तेरी, मिज्जो ऐ सन्ताप ।।
दानव गौरां दे शापे जो, रती भरें नीं जाणैं ।
अन्हा होया माया दे बिच, गौरां नईं पछाणैं ।
दई भलेखा सिब संभू जो, महल लिया मणसाई ।
सिब ने अपणीं माया छड्डी, दन्त लिया भरमाई ।।
तोता बोलै ब्रिच पिंजरें दें सुण कंगलिया गल्ल ।
गढ़ लंका दे दूएं पासें, बिच्च अयोध्या चल्ल ।।
बिंच्च अयोध्या दसरथ, राजा, बाण सब्द जो मारै ।
सरयू कंडें नित जाई कै, धनुषें तीरां चाढ़ै ।।
जो करदा सो भरदा माह्णूं, ठोकर दोस न होऐ ।
जोरे दे विच पाप कमाई. अन्त समय तां रोऐ ।।
मां बब पुतरां दे तीरथ हन, वेदां गल्ल उचारी ।
जनता तीरथ राजे दी ऐ, वर तीरथ पति नारी ।।

अन्हा बोला पुत्तर होऐ, डाकू चोर लफंग्गा ।
माऊ बब्बे दे भाए दा, सूरज ऐ सतरंग्गा ।
तिय्यां ई तां खसम जनाने, दा होऐ बदकार ।
तिस जणासा दी तां सैहई, ऐ सच्ची सरकार ।।
सब्द बेध बाणे ने मारै, दसरथ अणमुक जन्त ।
खाई भल्हेखा फसी गिया, सरयू कंडें सन्त ।।
सरबण पुत्तर इक्को-इक था, मा-बब तिसदे अन्हे ।
लई बैंह् गिया तीरथ करदा, हंडै सरयू बन्नें ।।
हाखीं जो लो लाणें ताईं, मा बब वैंह् गी पाए ।
दऊं पासियां सरवण ने थे, मूंडे पर लमकाए ।।

दो॰ घोर बणें बिच सरबणें, माऊ लग्गी प्यास ।
सरबण लई घड़ोलुए, पाणीं करै तलास ।।

बैंह् गी बणें दे गब्हें रक्खी, सरबण बणें च भटकै ।
छेड़ कुथीं कैसी दी होऐ, दसरथ कन्नें खड़कै ।।
सरयू कंडें पुज्जा सरबण, पाणीं छाली मारै ।
दूएं पासें दसरथ अपणां, रूप काल दा धारै ।।
छेड़ा उप्पर धनुषे फेरै, दसरथ राजा आई ।
सब्द वेध तिसदे बाणें तो, कोई बचै न भाई ।।
दसरथ रातीं आई बैठा खेलै खूब शिकार ।
तीर चढ़ै तिसदे धनुषे पर, कोई विरथा वार ।।
हाथी चीते गैंडे आई, सरयू पाणीं पीन ।
अपणीं प्यास बुझाई जन्तू, अपणां जीणा जीन ।।
सरबण ने सरयू दे कंडें, पाणीं घड़ा डुबाया ।
गुड़-गुड़ दे सब्दे पर दसरथ, अपणां बाण चलाया ।।
तीर खुब्बिया विच्च कालजें, सरबण था परतोया ।
कंबदे हत्थां विच पाणिएं, भरिया घड़ा छडोया ।।
'हे बापू ! हे माता !' बोलै, सरयू कंडें वीर ।
लुकी छुपी कै कुनीं मारिया, दिक्खा मिज्जो तीर ।।
सरबण दी जां गल्ल सुणीं तां, दसरथ नेड़ें आया ।
सोचै अपणें मन दे अन्दर, मैं तां पाप कमाया ।।

सरबण जो दिक्खी कै दसरथ, होया बड़ा अधीर ।
न्हौता सरबण लउए ने हुण, पैंना खुब्बा तीर ।।
सरबण बोलै, 'हे राजा !' तूं मारिया अज भखारी ।
अम्मा बापू तरिहाए हन, बैंह्‌गी मेरी भारी ।।
कुनीं चुक्कणें कुनीं कराणें, तीरथ हुण मां-बाप ।
अन्हा-अन्ही विच्च वैंहगिया, मिज्जो ऐ सन्ताप ।।

दो० राजा तीर जे मारै, करिए कुथूं पुकार ।
मारै अप्पू डाकियां, कपटी पहरेदार ।।
जोरे आला मारदा, कमजोरे दी आह ।
खल्लड़ जालूं सूंकदा, लोआ करै सुआह ।।

बिलखी-बिलखी मा-बब मरगे, मैं नरके जो जांगा ।
फुटियां हाखीं दे रोजे जो, राजा कुण पुज्हांगा ।।
इतणी गल्ल गलाई सरबण, होया था बेहोस ।
दसरथ पश्चात्ताप करै हुण, मरिया इक निरदोस ।।
सत्ताधारी सस्तर चुक्कै, होऐ उलकापात ।
निरदोसा जो मारै जाऽलूं, विलखै अपणें आप ।।
निर्बल जोरे आले कन्नें, लई न सक्कै टक्कर ।
करड़े लोए भस्म करै अग, जालू बल्‌दा लक्कड़ ।।
लोआ वडदा लक्कड़िया जो, छिब्बी-छिब्बी सुट्टै ।
बींडी बणीं वदाणें दी तां, लोए दा सिर कुट्टै ।।
अपणें पापे दिक्खी दसरथ, थर-थर करदा कंब्बै ।
घड़ी-घड़ी सरबण हुण तिसतों, पाणीं-पाणीं मंग्गै ।।
बिलखी-बिलखी सरबण छड्डी, जीणे दी जां आस ।
वणें बैंह्‌गिया मा-बब तिसदे, बोलन लग्गी प्यास ।।
जोरें जोरें 'सरबण ! सरब्रण !', बोलै सरबण माई ।
सरबण दा बब तिसजो सद्दै, जोरें हाकां पाई ।।
सरबण दे माऊ बब्बें था, बणें च रौला पाया ।
पाणीं लैण गिया था सरबण, मुड़ी करी नीं आया ।।
जीब जन्त अज बणें च सारे, ढूण-मढूणें होऐ ।
सरबण दी लोथा जो दिक्खी, तारे गासें रोए ।।

गासे उप्पर चन्दर जाई, बिच्च बददलां लुकिया ।
जालूं मरिया सरबण पुत्तर, दसरथ मूडें चुकिया ॥
इक मूडें पर मरिया सरबण, दूएं ठंडा पाणीं ।
दसरथ चलिया विच्च जंगलें, लत्तां आया पाणीं ॥

दो० सरबण दे जां मापियां, सुणीं बणें बिच छेड़ ।
बोले, 'पुत्तर सरबणां, तूं लाई अज देर ॥'

'तिन्न पह्र तां रात चली गई, साड़ी जिन्द सुकाई ।
चुप-चुपीता आई खड़ोतां, सांजो हक्क न पाई ॥
रोज धियाड़ें पुत्तर सांजो, लमियां हाकां पान्दा ।
अम्मां बापू करी कुआन्दा, ठंड कालजें पान्दा ॥
अज तूं गूंगा वणें च आयां, के विपता ऐ आई ।'
जोरें जोरें पाऐ हाकां, पुच्छै सरबण माई ॥
'तूं साड़ी हाखीं ही लो ऐं, तीरथ वरत कराए ।
बोल-बोल किछ बोल सरबणां, प्राण न कण्ठें आए ॥
रुक्खां दा पत्तर नीं हिल्लै, अचरज के अज होया ।
मिरच बणें दा बोलै नीं हुण, उल्लू वी अज रोया ॥
अद्दिया राती कोअ् रड़ाए, फौह्ई फैंह्कै आई ।
पुत्तर सरबण सच दस सांजो, इतणी देरी लाई ॥
सुन्न सुनाटा चऊं पासियां, पत्तर दी नीं छेड़ ।
बोल सरबणां अपणें मुहएं, कजो करा नां देर ॥'
सरबण दे माऊ बब्बे दी, गल्लां दसरथ सोचै ।
अन्हियां कन्नें के गलाऐ, तिस सब्दे जो तोपै ॥
पापी दा मन थर-थर कंब्बै कोई होऐ राजा ।
पाप पुराणां कदी न होऐ, जालूं दिक्खा ताजा ॥
दसरथ हत्थ लऊ सरबण दा, तरी पाणिएं आया ।
मोया सरबण धरती रक्खी, बुक्कें पाणीं पाया ॥
तिस पाणिएं अन्हे अन्हियां, दसरथ लगा पियाण ।
लिया अन्हियां हत्थ पछाणीं, धिक-धिक लगे गलाण ॥
बोलन लगे, 'सच दस तू कुण, लई घड़ोलू आया ।
सरबण साड़ा कुथूं भेजिया, कूंटा कुसा लुकाया ॥

दो० दसरथ बोलै सरबणें, औणां लगणीं देर ।
कण्ठें सेड़ा अप्पणें, राजा लाऐ फेर ॥
दो० डूगे गत्तां उक्खणीं, नईं दबोऐ पाप ।
छाती फाड़े बद्दलां, बिजली चमकै गास ॥
राजे दी गल्ला पर होया, रतीं नईं बिसुआस ।
अन्हे पुच्छन सच दस्सै तूं, कुण ऐं साड़े पास ॥
हुण दसरथ ने झट्ट गलाया, मैं आं राजा दसरथ ।
इस जंगल बिच शब्द बाण दी, करना आई कसरत ॥
दशरथ दी जां गल्ल सुणीं तां, अन्हा-अन्हीं बोले ।
'तूं राजिया साड़ियां फुटियां, हाखीं पाए फोले ॥
सरबण कुथूं लुकाई पाया, के होया तिस कन्नें ।
असां भेजिया संझा वेलें, सरबण सरयू बन्नें ॥
जे साढ़े ने सच नीं दसिया, असां जल नईं पीणां ।
हे राजा ! सरबण दे वाझी, असां पल नईं जीणां ॥
एह गलाई गल्ल अन्हियां, खाऽदी इक्क पछाड़ ।
गस खाई भरनोए दौएं, घटिया वैंहूगी भार ॥
दौं घड़ियां विच उठी खड़ोते, 'सरबण-सरबण' बोलन ।
दसरथ दे हुण पाप अप्पणें, तिसदे मनें खरोलन ॥
दसरथ बोलै गल्ल सुणां हुण, मैं पापी निरदोस ।
सब्द बेध बाणे मेरे ने, सरबण ऐ बेहोस ॥
सरबण दा धड़ दशरथ ने जां, आल अन्हियां रखिया ।
बोलन अन्हें, 'हे राजा तूं, सच्च दस किय्यां बचिया ॥
सरबण मरिया तिज्जो नीं तां, आया दसरथ काल ।
हे राजा ! तूं कैंह् खिज्जिया, साड़ा सोठू बाल ॥
अन्हियां ने रोई रड़ाई, पाया बणें रडत्त ।
मापियां दी अज्ज फुटी गई, सरबण पुत्तर हक्ख ॥
बिलसी बिलसी अज्ज अन्हियां, अपणा शाप सुणाया ।
सरबण रे पिड्डें हथ रक्खी, हिक्का कन्नें लाया ॥
दो० बोलन अन्हें दसरथा, जिय्यां असां वियोग ।
तेरे महलां इक्क दिन, पौणां तिय्यां सोग ॥

किछ करनी किछ करम फराटीं, पूर्व जन्म दे लेख ।
भुगतै माह्‌णू अपणी करनी, मत्थें बज्जै मेख ।।
करनी इक दिन भरनी पौऐ, माह्‌णू नईं बचार ।
वे बचारा अन्हा एह तां, करदा मारो-मार ।।
निरदोसां जो मारै माह्‌णू कड्डै धक्के लाई ।
जालूं पौन्दे इस जो धक्के, दिन्दा खड़ी दुहाई ।।
कोह्‌ड़-कलंकी अणमुक रोह्‌ले, हर दम हत्थां अडदे ।
पाप कमान्दे तगड़े माह्‌णूं, छुरियां चुक्की बडदे ।।
कई बजोगी जमदे-मरदे, करमां दा फल भाई ।
लीक मत्थियां बिध माता ने, करमा उप्पर लाई ।।
माह्‌णू दी करनी मत्थे पर, आई लखोन्दे लेख ।
विरला-खिरला कोई जाणै, साधू जा दरवेस ।।
माह्‌णू बोलै किछ नीं कीता, भुलदा पाप कमाई ।
छेलू ई तां बणीं खड़ोऐ, छुरिया लई कसाई ।।
कई वरी तां लोकां मारै, अप्पूं भिरी मरोऐ ।
अपणी करनीं इसतों दिक्खा, अप्पूं नीं पछणोऐ ।।
बुरे दिनां विच माह्‌णू भुलदा, ठौकर दिन्दा दोस ।
अपर्णी कीती अप्पूं भरदा, ठौकर ऐ निरदोस ।।
खरे दिर्नां विच नईं पछाणैं, अप्पूं पाप कमान्दा ।
जालूं करनी भरनी पौऐ, मुहएं बुरे बणान्दा ।
ठौकर बैठा लई तक्कड़ी, पाप पुन्न जो तोलै ।
तिसजो गूंगा समझै माह्‌णू, ठौकर किछ नीं बोलै ।।
ठौकर दी मरजी ने अन्हे, पए मूरछा खाई ।
मरी गए मापे सरवण दे, धड़ां जिन्द नीं आई ।।

दो० **दसरथ ने विच जंगलें, कीता हुण संस्कार ।**
हवन कराए पाठ बी, कीते जग्ग अपार ।।

हवन पाठ होमां दे कन्नें, दसरथ घर सन्तान ।
राम लखण सत्रूघुन होए, होए भरत सुजान ।।
राम कौसल्या लखण सत्रूघुन, सौमित्रा दे जाए ।
भरत कैकेइया दा पुत्तर हुण, दसरथ बाग लुआए ।।

दसरथ पुत्तर चार अयोध्या, रौणक पूरी आई ।
पली बडोई बड्डे होए, चारें सक्के भाई ॥
तिस वक्ते विच होण लगा इक, देवासुर संग्राम ।
अपणें-अपणें पासे दे सब, योधे लगे सदाण ॥
दसरथ देवतियां दी रखिया, करना युद्धें आए ।
तिन्हां दानवां दे उप्पर थे, सस्तर सब्ब चलाए ।
दसरथ कन्नें युद्ध मदानें, कैकेई थी आई ।
गासे उप्पर देव दानवां दी थी घोर लड़ाई ॥
लड़दा लड़दा दानव राजा, धरती उप्पर आया ।
राजा दसरथ ने तिस पर था, पैना तीर चलाया ॥
दानव दा सिर गिया बढ़ोई, धड़ धरती पर आया ।
रथ दसरथ ने फौजा पिच्छें, अपणां भिरी दुड़ाया ॥
विच्च दानवां घिरी गिया रथ, घोड़े दौड़ी थक्के ।
इक दम रथ तां गिया खड़ोई, आए बाह्‌रें चक्के ॥
घोर लड़ाई विच्च दानवां. दसरथ घेरें आया ।
धुरी रथे दी भजी गई हुण, पइय्या बाह्‌रें आया ॥
कैकेई ने समा बचारी, दित्ती अपणीं बांह ।
धुरी वणाई बांह रथे दी, दसरथ वदिया गांह ॥
न्हठी गिया दल दानव दा हुण, दसरथ संख बजाया ।
दानव दल दा चऊं पासियां, होया खरा सफाया ॥

दो० दिन डुबदे नें धरतिया होई जय-जय कार ।
फुल्लां बरखा अंबरें, दसरथ विजय बहार ॥

युद्धे जो जित्ती कै जाह्‌लूं, दसरथ मह्‌लां आया ।
कैकेइया बांह ढिल्ली कीती, पइयें पलटा खाया ॥
पइया आया बाह्‌रें निकली, घोलां-घोलां जाऐ ।
बाह्‌ईं दा लऊ कैकेइ दा, धरती धुरी नुहाऐ ।
राजा पुच्छै रांणी तो हुण, दस के अचरज होया ।
धुरिया तों पइया निकली कै, धरती पर पलटोया ।
दसरथ राणी दी बाह्‌ईं जो, दिक्खी होया दंग ।
बोलण लग्गा, 'क्या राणी तूं, लड़िया कोई जंग ॥

बांह तेरी कैंह दरड़ोई, धरती होई लाल ।
कुनीं वैरिएं बाण चलाया, आया तिसदा काल ॥
दसरथ दी गल्ला पर राणीं, अपणें बोल उचारे ।
राणी बोली, 'हे राजा ! हुन, युद्धें खेल नियारे ॥
जे राजे दी रख नीं होऐ, राजें जिन्द उधारी ।
राजे दी जिन्दू जाणें ने, परजा ऐ कुतकारी ॥
राजे दी रख करने ताईं, जिन्द करै कुरबान ।
तां परजा राजे दी सच्ची, बोलन वेद पुराण ॥
राजे दी विपदा जो दिक्खी, परजा मुंह् लुकाऐ ।
तां परजा बैतरणीं अन्दर, जाई गोते खाऐ ॥
अपणीं जिन्द गुआई परजा, राजें करै उद्धार ।
देस भगत तां परजा होऐ, बेड़ा सागर पार ॥
राजा होई नईं पछाणै, परजा दा वलिदान ।
चऊं कूंटा दे सारे लोकी, तिसजो बुरा गलान ॥
विपदा दे विच राजा दिक्खी, अपणां लऊ बगाया ।
कैकेई ने राजे ताईं, अपणां धरम नभाया ॥

दो० **धुरी रथे दी निक्कली आई युद्धें बार ।**
बांह फसाई अप्पणीं, असां थम्मियां भार ॥
बल न दिन्दी अप्पणीं, तां साड़ी थी हार ।
धरम निभाया अप्पणां, नीं कीता उपकार ॥

तालूं तां छिड़िया था राजा, युद्धे दा घमसाण ।
दस्सा मिज्जो धुरी रथे दी, कुण था लगा बणाण ॥
बाह् ईं दा मैं दई सहारा, सारा युद्ध लड़ाया ।
ताईं तां राजा जित्ती कै, महले अन्दर आया ॥
जे मैं अपणी बाह् ईं कन्नें, करदी कोई प्यार ।
तां राजे दी विच्च मदाने, होन्दी तगड़ी हार ॥
राणीं दी जां गल्ल सुणीं तां, दसरथ बोल उचारे,
राजा बोलै राणीं तेरे, खूने बगे पनाले ॥
इस खूने दा वदला देणा, तिज्जो दो वरदान ।
बाह्ईं दी धुर नीं बणान्दी, नीं वचदी थी जान ॥

इतनी गल्ल सुणी कैंकेई, बोली रिया उधार ।
जालू मरजी मेरी हुंग्गी, लैंणें कौल करार ॥
जान्दे वक्तें देर नीं लगदी, दिनें दी होऐ रात ।
म्हीने बरियां युग बीतदे, रात होऐ परभात ॥
वक्ते कन्नें माह्णू दे वी, बीतन कई बचार ।
कदियों हस्सै कदियों रोऐ, बुढ्ढा बणीं लचार ॥
कैंकेई नें सांह्बी रक्खे, अपणें दो वरदान ।
दूएं वक्खें रावण अपणीं, परजा लगा सताण ॥
रावण ने अपणीं परजा पर, अणमुक जुलम कमाए ।
टैक्सां मंगण दूत बणां बिच, रावण दे थे आए ॥
ऋषियां तों कर मंग्गै रावण, खूने भिरी नचोड़ै ।
घड़ा भरोया पापे दा जां, रावण तिसजो फोड़ै ॥
पत्थर मारी घड़ा न टुट्टै, पापें पंड भरोई ।
हिल्ली न सैंह न सैंह झुल्ली, न सैंह भिरी रखोई ॥

दो० अति ओड़कें परमेसर, करदा आई बैर ।
टाक मारदी क्याड़िया, दुरा मकोड़ी पैर ॥

दसरथ करन लगा हुण अपणां, निरभै होई राज ।
दरबारे बिच विसुआमित्तर, इक दिन दिऐ उआज ॥
विसुआमित्तर सब्द सुणाऐ, 'साड़ी इक्क पुकार ।
तेरे राज्जें न्हेरा दुस्सै, के करने हथियार ॥
विच्च जंगलां खून खराबा, दानव ऋषियां खाऽन ।
हवन कुंड बिच हड्डियां सुट्टी, बलदी अग्ग बुझान ॥
बिच्च बणां दे चलणां मुस्कल, लोथां लग्गे ढेर ।
घ्हीड़-घसीटी रात कटोऐ, निकलै नईं सबेर ॥
जिस दे राज्जें खूनं खरावा, सैंह राज समसाण ।
के करने तिन्नी राजे ने तरकस तीर कमाण ॥
जिस राजे दी परजा डरदी, अपणी जिन्द लुकाऐ ।
सैंह राज तां इक दिन डुब्बै, खूह खातरें जाऐ ॥
ऋषिए दी जां गल्ल सुणीं तां, दसरथ होया हरान ।
बोलै मुनिवर कुन्नीं दुस्टें, पाया एह् घमसाण ॥

कुनीं मचाया उद्धम इतणा, कुसदा आया काल ।
चुप होए हुण दस्सा गल्ला, युद्ध करां तत्काल ॥
कुण दानव इस धरती उप्पर, अपणां जोर जताऐ ।
विच्च जंगलां ऋषियां उप्पर, अपणें कैह्रे ढाऐ ॥
सुरगें जाई दन्त दानवां, तों इन्दर छुड़काया ।
मेरी धरती उप्पर आई, कुन्नीं जुलम कमाया ॥
ऋषियां दे खूने दी कीमत, दुणीं जाई चुकांऽ ।
जिन्नीं दुस्टें जुलम कमाया, मौता गलें लंघांऽ ॥
इतणीं गल्ल गलाई दसरथ, होया लालो-लाल ।
बोलण लग्गा मुनिवर ! दुस्टां, दा आया हुण काल ॥

दो॰ बिसुआमित्तर बोलिया, दसरथ दें दरबार ।
बिच्च जंगलां राजिया, दानव इक परिवार ॥
घुम्मै अन्दर जंगलां, दानव दल बदकार ।
मारै ऋषियां साधुआं, होऐ हा-हा कार ॥

दानव इक्क सुबाहू तिसदी, इक्क ताड़का भैण ।
राछस घुम्मै भूत बणीं कै, कनैं ताडका डैण ॥
खून खरावा बिच्च जंगलां, तप्प हवन सब बन्द ।
बिच्च बद्दलां मुंह लुकाऐ, पापे दिक्खी चन्द ॥
इतणीं गल्ल सुणीं ऋषिए दी, राजा होया त्यार ।
तीर तरकसां पाई दसरथ, कस्सै हुण हथियार ॥
बिसुआमित्तर गल्ल करै हुण, सुण राजा इक बात ।
राम लखण जो भेज जंगलें, तां होणीं परभात ॥
युद्ध कला विच राम लखण हुण, होए हन परबीण ।
वीर बहादर बालक तेरे, मत समझैं तूं हीन ॥
हुण राम लखण जो दे आज्ञा, जाई युद्ध रचान ।
दन्त दानवां जो मारी कै, अपणां जोर जमान ॥
ऋषिए दी जां गल्ल सुणी तां, दसरथ बड़ा उदास ।
'बोलै बालक निक्के मुनिवर, नईं विजय दी आस ॥

दसरथ दी जां गल्ल सुणीं तां, ऋषिएं बोल उचारे ।
निक्के नीं हन बालक राजा, वीर बहादुर साड़े ॥
भेज बालकां मेरे कन्नें, असां परीछा लैंणीं ।
कोई औऐ चोट भदानें, असां सरीरें सैह्णीं ॥
तेरे दरबारे बिच्च आई, मैं अज करां पुकार ।
राम लखण जो टिक्का लाई, दे हत्थें हथियार ॥
दसरथ दे हिरदें हुण रड़के, ऋषिए दे दो बोल ।
पासंग तकड़ी लै झुटारे, डंडी खाऐ झोल ॥
हिक्का पर पत्थर रक्खी कै, दसरथ सब्द सुणाया ।
राम लखण जो आज्ञा दित्ती, मत्थें तिलक चढ़ाया ॥

दो० ऋषिए हत्थ पकड़ाए, अपणें दौएं लाल ।
चल्ले युद्ध रचाण हुण, राम लखण ततकाल ॥

अग्गें चल्ले विसुआ मित्तर पिच्छें लछमण राम ।
निक्के बालक कियां लड़गे, लोकी सब्ब गलान ॥
दित्ती जाई बण्णें राम ने, धनुषे दी टंक्कार ।
दानव इक्क सुबाहू आया, होई हा-हा-कार ॥
दानव विच्च बणें दें गरजै, जोरें दिऐ दहाड़ ।
पर्वत सुट्टै राम लखण पर, कंब्बन धरत पहाड़ ॥
चऊं पासियां दानव दौड़ै, दन्त बड़े विकराल ।
तिन्हां जो दिक्खी राम लखण, होए लालो लाल ॥
अणमुक्कां दे तीर चलाए, दानव लम्मे पाए ।
युद्धे दिक्खण उप्पर गासें, कई देवते आए ॥
बिच्च जंगलें दानव मारे, लोथां लग्गे ढेर ।
आई ताड़का मुंह बाकी, रती न लाई दर ॥
इक्क चबाड़ी धरती लाई, दूई लाई गास ।
खाण लगी हुण राम लखण जो, होए सब्ब उदास ॥
इक्क तीर हुण राम चलाया, संघे दे विच्च पाया ।
गले विन्नदा तीर तालुएं, उप्पर बान्दा आया ॥

लछमण ने हुण दन्तणियां पर, तीरां बरखा कीती ।
लत्तां बाह्ईं छींडे कीते, पैने तीरां सीती ॥

दन्तणियां दे उडे पखेरू, गए अंबरें प्राण ।
सुरगें उप्पर देव देवते, धन-धन राम गलान ॥

ढैन्दी दिक्खी दन्तणियां जो, चढ़ी सुबाहू आया ।
तीर चलाया लछमण ने हुण, तिसदा फाह मुकाया ॥

सुरगें सिद्दी गई ताड़का, कनैं सुबाहू दन्त ।
राम लखण दी जय-जय बोले, विच्च जंगलां सन्त ॥

दो० **राम लखण दो बालक, दन्तां मार मुकान ।**
बिरला जाणैं देवगति, राम-राम भगवान ॥

सो० **मूरख दन्त गुआर, नीं पछाणन ठौकरे ।**
राम लखण अवतार, धरती भार उतारदे ।

महाकाव्य 'माया'

तृतीय सर्ग

दो० पाप कमाई लोक सब, दूए दे सिर लान ।
उतारी रस्से अपणें. दूए दें गल पान ।।

रावण सोचैं अपणें पापे, दूए दे सिरें लांऽ ।
घड़ा चुकाई जनके दे हुण. राज्जें जाई दबांऽ ।।
पर तिसजो के पता कदी बी, पाप नीं रैन्दा गुझा ।
इक दिन धरती छेक छड्डदी, बाह्रें औऐ कुज्जा ।।
रावण ने अपणें पापे जो, जनके दे सिर लाया ।
घड़ा चुक्किया जनके दें हुण, राज्जे बिच्च दबाया ।
कई साल तां जनक पुरी बिच, बरखा वून्द न होई ।
जनके अग्गें तिसदी परजा, धाड़ो-धाड़ पटोई ।।
नदियां नालू सुकी गए सब, सुक्के खूह तलाऽ ।
नां खेती नां रुक्ख-बूट हुण, कई बरियां नीं घाऽ ।।
ऋषियां आई जनके तों हुण, बरखा जतन कराया ।।
हल चुक्की कै राजें अप्पूं, खेतर बिच्च चलाया ।
घड़ा पटोया पापे दा हुण, माया कन्या रोई ।
धरती बोलै भार चकोया. फुल्लां हौली होई ।।
धरती बोलै भार चकोया, फुल्लां हौली होई ।।
जनके ने कन्या जो पाली, सीता नाम रखाया ।।
दूएं पासें राम बैसणूं, दसरथ दें घर जाया ।।
सीता माया राम बैसणूं धरती उप्पर आए ।
ऋषियां दे खूने ने दिक्खा, कितणें कम्म कमाए ।।

जोरे दिक्खी अन्हा माह्णूं, अंबरें छुरे मारै ।
जोर जुआनी सेक तपाऐ, अपणें आपे जालै ॥
माह्णूं अपणें पापे उप्पर, अणमुक पड़दे पान्दा ।
फाड़ी सुट्टै पाप पड़दियां, रत्ती नईं सुखान्दा ॥
पाप खड़ोऐ तणी-तणाई, ढक्कण दिऐ उघाड़ी ।
पाप बडोऐ माह्णूं रोऐ, तिसजो दिऐ पतारी ॥

दो० बे समझ मूरख माह्णूं, गल्ला नईं पछाण ।
माया दे बिच भुल्लदा, झिल्लां करै बछाण ॥

चार वेद दा ज्ञाता रावण, छेह सास्तरां जाणैं ।
अणमुक भगती कीती तिन्नीं, कैलासे जो छाणैं ॥
सिव जी तों वरदान लई कै, लंका गढ़ी बणाई ।
चऊं पासियां घिरदी फिरदी, सागर डूंगी खाई ॥
अप्पूं ताईं महल उमां ने, सुन्ने दा वणुआया ।
दसकंधर ने महल सिवां तों, दाने विच मणसाया ॥
मेघनाथ पुत्तर रावण दा, योधा इक वलकारी ।
तिसदे अग्गें देवतियां दी, सारी ताकत हारी ॥
देवतियां ने करै लड़ाई, सुरगें करै चढ़ाई ।
तिसदे अग्गें इन्द्र देवते, दी नीं रई समाई ॥
हुण वायु अग्नि वरुण देवता, कैदा विच्च घट्होन ।
अट्ठ ग्रैह रावण दी जेला, रात धियाड़ें रोऽन ॥
काल बन्निया पटिया कन्नें, रावण जोरें आया ।
दूएं पासें राजे जनकें, सीता ब्याह रचाया ॥
राजे जनकें सब देसां बिच, अपणीं गल्ल पुजाईं ।
सिब धनुषे जो चुक्कै कोई, सीता दियां बियाई ॥
धनुष सिवां दा युगां पुराणां, अंगण बाह्र रखाया ।
राजे जनकें सीता दा था, तगड़ा ब्याह रचाया ॥
सब देसां दे राजे सद्दे, न्यून्दर पत्तर पाई ।
कोई खिज्जै धनुषें डोरी, चिल्ला दिये चढ़ाई ॥
इक पासे दा रावण आया, दूएं आए राम ।
अणमुक्के दे राजे आई, अपणां जोर लगान ॥

धनुष न हिल्लैरती कुसी तों, जोर राजियां लाया ।
ठौकर अग्गे पेस नईं थी, जिसदी सारी माया ।।

दो॰ इस कौतके दिक्खी हुण, जनक लगा घबराण ।
बिच्च राजियां गल्ल इक, जोरें लगा सुणाण ।।

दो॰ जालूं पेस नां चल्लै, होऐ जीब उदास ।
होऐ मरजी ठौकरें, माह्णूं नीं बिसुआस ।।

'धरती सारी निस्सल होई, ससझा दे विच आया ।
कजो स्वयंबर एह रचाया, सीता व्याह सुणाया ।।
किय्यां करने सब्ब राजियां, इस धरती दे राज ।
नईं जोर जे बाह्ईं अन्दर, कजो चढ़ाए ताज ।।
राज न चलदे कमजोरां तों, जोरे वाला खोह्ऐ ।
धनुष सिवां दा अज्ज कुसी तों, चुक्की नईं रखोऐ ।।
चरज बड़ा अज बाह्ईं अन्दर नईं रिया हुण जोर ।
धनुष हिल्लिया नईं सरकिया, कुण खिज्जै हुण डोर ।।
वाञ्झ राजियां धरती सुन्नी, सीता रैंग कुआरी ।
मैं अज गल्ल मनें विच अपणें, पूरी लई बचारी ।।
नईं सूरमा धरती उप्पर, नीं दुस्सै बलवान ।
जनक राजिया विच्च खड़ोई, धिक-धिक लगा गलाण ।।'
जनके दी जां गल्ल सुणीं तां, गुरुएं भिरी गलाया ।
दसरथ पुत्तर सैनक देई, अपणें आल सदाया ।।
विसुआमित्तर बोले हूण, 'राम करैं मत देरी ।
सिब धनुषं जो चुक जाई कैं, होई आज्ञा मेरी ।।
गुरुआं अग्गें सीस नुआई, धनुषे लागें जाई ।
हत्थ राम ने धनुष चुक्किया, डोरी खिजण लाई ।।
धनुषे चुकणें कन्नें धरती, डग-मग हिल्ली सारी ।
गासे उप्पर लस-लस चमकी, बिजली दी चमकारी ।।
अद्द समानें गड़-गड़ होई, टोटे धनुषें होऐ ।
सौ-सठ पूले अग्गी बलदे, अंबर जाई छहोए ।।
धरती खिन्नू बणीं गई हुण, योजन ऊची आई ।
धनुष तोड़िया राम स्वयंबर, सीता लई बियाई ।।

दो० चारे कूंटां राम दी, बोलन जय-जय कार ।
सीता आई निक्कली, दौं हत्थां जय माल ॥

सीता ने जय माला चुक्की, राम गले विच पाई ।
धरत पतालें गासें ऊची, वज्जी अज्ज बधाई ॥
जनकपुरी विच बाजे-गाजे, सबनां मंगल गाया ।
राम चन्द्रां जनके दा अज्ज, सारा दुख घटहाया ॥
धनुषे दे टुटणे दे कन्नें, धरती धक्के लग्गे ।
परस राम दी ताड़ी खुल्ली, घोर बणें दे गब्बे ॥
सोचण लग्गा हुण के होया, धरती डोली सारी ।
अज्ज तपस्या भंग हुई हुण, मेरी खुल्ली ताड़ी ॥
दिब दृष्टिया कन्नें दिक्खै, परस राम रणधीर ।
सिब धनुषे दे टोटे दिक्खी, होया बड़ा अधीर ॥
सस्तर सारे सांवे तिन्नीं, धनुष मूंडियां पाया ।
लस लस करदे लई कुहाड़े, भरी सभा विच आया ॥
गल् जनेऊ अंग भवूता, सिरें जटां दी ख्वारी ।
इय्यां लग्गै सिबां अप्पणीं, तीजी हक्ख उघाड़ी ॥
परस राम जो दिक्खी राजे, न्हट्ठण लग्गे सारे ।
कईयां ने सिर न्हीठे पाए, अपणें ताज उतारे ॥
भरी सभा विच चऊं पासियां, सुन्न-सुनाय छाया ।
जिय्यां चिड़ियां दे झुंड्डे पर, बाज उडी कै आया ॥
खिसकण लग्गे लोकी सारे, होई बन्द बधाई ।
मत्थे टेकन सब ठौकर जो, बोलन लियां बचाई ॥
इक दूए ने सारे लोकी, कन्नो-सन्न गलाऽन ।
खिसका हौलें-हौलें नीं तां नीं बचणीं हुण जान ॥
परस राम धनुषे जो दिक्खी, हाखीं लाल उगालै ।
कदी कुहाड़े चुक्कै ऊचे, तरकस तीर उछालै ॥

दो० कुनीं तोड़िया धनुष हुण, कुस दा आया काल ।
परस राम जां बोलिया, होया लालो लाल ॥

दो० तिरलोकी विच तिन्न ऋण, सदा सिरे पर भार ।
नीं उतारै माह्णू तां, नीं होऐ उद्धार ॥

अप्पूं निकलै बाह्र सभा चा, वखरा सैह खड़ोऐ।
मैं नीं चाह्न्दा इकसी ताईं, सारी सभा मरोऐ॥
मैं अज अप्पूं दिक्खण आयां, कुण ऐ सिब्ब द्रोई।
मेरे अग्गें इक घड़ी सैह, दिक्खें जरा खड़ोई॥
मेरे गुरुए दे धनुषे जो, कुनीं तोड़िया आई।
मेरे नांएं भुली गिया कुण, दिक्खां याद कराई॥
जनके पासे दिक्खी मुनिवर, जोरें लगा गलाण।
सच दस राजा कीता के तूं, टोटे बणीं कमाण॥
सारे राजे सद्दी कै तूं, एह के कम कमाया।
परस राम दा चेता तिज्जो, सच दस तां नीं आया।
ज्हार भुजा सहस्रबाहू दी, छेदन कीती जाई।
विनां राजियां धरती मैं तां, खाली कीती आई॥
खण-खण करदा सदा कुहाड़ा, हुन्दी जां टंङ्कार।
इस धरती पर चऊं पासियां, मचदी हा-हा कार॥
परस राम दी गल्ल सुणीं कै, बचनां राम उचारैं।
तिन्न लोक दा स्वामी बोलै, मिट्ठे बोल उसारैं॥
बोलण लग्गे जिन्नीं तां सिब, धनुष तोड़िया आई।
सिब दा कोई सेवक हुंग्गा मुनिवर दियां दुहाई॥
इतणां भारी धनुष सिबां दा एह तां नीं चकोऐ।
सिवजी दे भगते दे बाझी, चुक्की नईं रखोऐ॥
धनुष टुट्टिया जर-जर करदा, जनकें नईं कसूर।
जे बणियां तां इक दिन भजणां, कुदरत दा दस्तूर॥
इस गल्ला जो सोची मुनिवर, मनें च लिया बचारी।
असां तोड़िया धनुष सिवां दा, दिया कुहाड़ा मारी॥

दो० इतणीं गल गलाई कै, आए सनमुख राम।
परसराम हैरान था, मुह्एं नईं जबान॥

परस राम जो चुप दिक्खी कै, लछमण बोलै आई।
तेल सुट्टिया अग्गी उप्पर, बुझियो अग्ग जगाई॥
बोलै लछमण, 'कजो कुहाड़े, चक्की एथूं आया।
लाई भबूता लई सस्त्रां, बहूरूपिया आया॥

बणीं पखंडी पूरा मूनिवर, तीर तरकसां पाई ।
साधू भेसें लाज लुआएं, कजो समाधी लाई ॥
युद्ध छत्तरी दा कम मुनिवर, मने च करैं बचार ।
एह् नीं ढैणें ललकारा ने ऊचे अडिग पहाड़ ॥
गलिया सड़िया धनुष पुराणा, जम्में लग्गा आई ।
इस दे टोटे चुगी दियां मैं, परना रक्ख बछाई ॥
हथ लान्दियां टुटी गिया एह, टुकड़े टोटे होया ।
तिमदे ताईं मुनिवर आई, इतणां तूं घटहोया ॥
इस धनुषे दे बदलें तिज्जो, दिन्नां धनुष हजार ।
मुनिवर जे धनुषां दे कन्नें, तिज्जो बड़ा पियार ॥
लछमण दी जां गल्ल सुणीं तां, मुनिवर गुस्सा आया ।
परस राम बोलै, 'तेरे सिर, काल चढ़ी कै आया ॥
लई कुहाड़े तणीं खड़ोता, गासें बिजली छहोई ।
राजसभा जनके दी सारी, दिक्खी कै डफलोई ॥
परस राम दे गुस्से दिक्खी, बोले राम सुजान ।
छमा ! छमा ! मुनिवर बालक दी, गलती बड़ी महान ॥
बालक तां दुधमुहंआं बच्चा, गल्ला नईं बचार ।
योधा होई बालक उप्पर, मत चुक्का हथियार ॥
बच्चे बालक कनैं धमोड़ीं, सबनां इक्क सुभाव ।
इन्हां दे कन्नें छेड़ा तां, बदला मिलै खराब ॥

दो० **तुसां सियाणें मुनिवरा, बच्चे उलकापात ।**
सुणा हमारी बेनती, गलती करां मुआफ ॥
तत्तें लोएं पाणिएं, होऐ अणसुक छेड़ ।
गरमी सरदी सप्पड़ें, डूगी दियै तरेड़ ॥

परस राम तां गल्ल सुणी कै, भरी करोधें बोलै ।
लई कुहाड़े मनें अप्पणें, बल बाह्ईं दा तोलै ।
बोलण लग्गा निरा ऋषि नईं, मैं योधा बलकारी ।
बिनां राजियां धरती कीती, सुन्नीं इक्की-बारी ॥
कई बरी धरती दा कीता, गंगा जाई दान ।
कई बरी तां सारी धरती, लऊएं करै स्नान ॥

कई राजे तां बलीं चढ़ाए, बडहे अणमुक आई ।
मिज्जो मूरख समझै बालक, सददै मुनी कुआई ।।
इस बालक दे गलें अज्ज मैं, दियां कुहाड़ा फेरां ।
इस रे खूने दी बून्दां ने, सुक्की धरती सेड़ां ।।
लछमण ने जां गल्ल सुणीं तां, बली करोधें आयां ।
परस राम दे पासें दिक्खी, धनुषें तीर चढ़ाया ।।
बोलण लग्गा हुण मत बोलैं, नीं तां जान उधारी ।
पहलैं तां राजे मारे तूं, आई तेरी ब्रारी ।।
सब्ब राजियां दा मैं पूरा, बदला अज्ज चुकाणां ।
सिब धनुषे दे कन्ने तिज्जो, वी हुण सुरग पुजाणा ।।
परस राम ने गल्ल सुणीं तां, लछमण पासें आया ।
छमा ! छमा ! हुण जनक उचारैं, हा-हा कार मचाया ।।
सारे राजे परस राम दे, अग्गें न्हीठे होए ।
दंडवत कीती राम चन्द्रां, मुनिवर किछ ठंडहोए ।।
सणें राम दें सारे राजे, माफी मंगन आई ।
राजे जनकें 'हे सिब !' बोली, दित्ती खड़ी दुहाई ।।
राम गुसाईं करी इशारा, लछमण चुप्प कराया !
मुनिवर जो मत्था टेकी कै आसन दई बठाया ।।

दो० कौड़िया गल्ला पौऐ, भाई बड़ा बगाड़ ।
थत-पथत्ते जीब्ह पढ़ै, सिरें पटाके मार ।।

सारी गलती राम गुसाईं, अपणें जम्में लाई ।
परस राम तों लिया बचाई, अपणां निक्का भाई ।।
ततिया गल्ला बदै लड़ाई, जिय्यां छाई पाणीं ।
सारे गुस्से दियै मुकाई, आई मिट्ठी बाणीं ।।
जां तख्त जां तखता मिलदा, सब जीब्हा दा फेर ।
जीब्हा ने लोकी मरुआए, मारी कीते ढेर ।।
तित्तर बोलै ऊचे घ्हाएं, जोरें रौला पाऐ ।
लई शिकारी तीर कमानें, तिसजो मारी खाऐ ।।
खरी गल्ल जे नईं गलोऐ, माड़ी कदीं न करिए ।
जीब्हा मुहएं अन्दर रखिए, दूए दी गल जरिए ।।

जरिया-धरिया कम्में औऐ, गल्ल कालज़ें रड़कै ।
अग मल्ही दीं इक दिन आई, अन्दर बाह्रें भड़कै ।।
जे गल्ला जो बदणां दिग्गे, भांवड़ पूले होन ।
बलदी अग्गी छाल दई कै, गाह्णूं कई फकोन ।।
मिट्ठी बाणीं कोयल बोलै, सबनां लग्गै प्यारी ।
कोए दी कां-कां पर सारे, पत्थर दिन्दे मारी ।।
समां बचारी गल नां करिए, तां नां होऐ खैर ।
कजो गल्ल तां माड़ी करिए, जिसने पौऐ बैर ।।
जे गल्ल नईं मनें जरोऐ, तां उट्ठी जाईए ।
अपणें गुस्से जाड़ां बाड़ां, जाई न सुणाईए ।।
राम गुसाईं समां बचारो, मिट्ठा बोल सुणाया ।
परस राम दा सारा गुस्सा, ढली पाणिएं आया ।
मुनिवर बोलै, लिया बचाई, तूं अज अपणां भाई ।
पिछले जन्मे दी थी कोई, इसदी खरी कमाई ।।

दो० दो हथ जोड़ी राम ने, अपणीं गल सुणाई ।
टुटियो ताणीं तन्द तां, जोड़ी झट बणाई ।।

दो० मिट्ठी बाणी ठंड ऐ, दिऐ उतारी जैर ।
निरमल करदी मनें जो, होण दिए नां कैर ।।

राम गलाऐ, 'मैं सेवक तूं, तपसी मुनी महान ।
तूं स्वामी मैं चरनां चाकर, छमा-छमा दे दान ।।
छमा दान ऐ सब तों बड्डा, मुनियां दा सिर ताज ।
बद्दला बलदा अग्गी साईं, जाऽन फकोई राज ।।
बालक ने थी वीर बचारी, तत्ती गल्ल गलाई ।
दिक्खे तरकस तीर मूंडियां, कनैं कुहाड़ा आई ।।
जे ऋषियां साऽईं आऊंदे, बालक सीस नुआन्दा ।
मुनिवर चरनां ध्हूड़ लई कै मत्थें तिलक चढ़ान्दा ।।
स्हाड़े बंसें ऋषियां मुनियां, कन्नें नईं लड़ाईं ।
रघुवंस दी रीत नईं एह, राम ने गल सुणाई ।।
युद्धे जो ललकारै कोई, असां न करिए देर ।
काले अग्गें सदा खड़ोई, मारिए मारी ढेर ।।

तुसां सियाणें अप्पूं मुनिवर, बालक बुद्ध अयाणीं।
तीर कमानें परसे दिक्खी, सकिया नईं पछाणीं॥
राम गुसाईं दी गल्ला पर, मुनिवर गुस्सा आया।
बोलण लग्गे मिट्ठ जीब्हड़ा, तूं कुण उट्ठी आया॥
असां राजियां दे वैरी आं, तिज्जो नईं पछाण।
गलें जनेऊ तिलके दिक्खें, परसा दिक्ख कमाण॥
अपणें मुहएं अप्पूं कीती, परसराम बडिआई।
बोलण लग्गा धरती होई, खूने दी तरिहाई॥
तूं गुरुए दे धनुषे जो था, अपणां हत्थ लगाया।
राजे जनकें तिज्जो नीं था, आई कै समझाया॥
सिब धनुषे जो तोड़ी कै तूं तेलें तींली लाई।
काला खड़पा डंग्ग चलाया, मिट्ठी जीब्ह बणाई॥

दो० मेरे मत्थें करज ऐ, गुरुए दा ऐ भार।
छियां उतारी मूल हुण, सूदे सणें उधार॥

गुरुए दा ऋण नईं उतारां, तां सिखिया कुतकारी।
गुरुए दी निन्दा कन्नां विच, खूने दी पिचकारी॥
परमेसर तौं वड्डा होऐ, गुरुए दा वरदान॥
गुरुए दा ऋण नेईं उतारन, नरकें गोते खान॥
मा बब दिन्दे जन्म गुरू तां, विचली हक्ख उघाड़ैं।
भवसागर विच तरना दस्सै, पार जाई उतारै॥
गुरुए बाझी गति नीं होऐ, वोलन वेद पुराण।
गुरू छुड़ाऐ औ-ब्री बकणां, दस्सै सब्ब जहान॥
जिस पतली रोट्टी खाईए, तिसदा करिए पाहरा।
उप्पर गासें जिय्यां जागै, रातीं नौ लख तारा॥
गुरुए दी चीजां दी रखिया, करिए धरम बचारी।
तिसतों लईए कजो रखिये, पल्लें चीज उधारी॥
धनुषे दे टोटे मैं दिक्खां सिब्ब द्रोई होआं।
धरम गलाऐ राम न मारां, तां मैं अज्ज मरोआं॥
नईं मैं चुक्कां अज्ज सस्त्रां, तां सिखिया के करनी।
पापे दी पंड कुथूं सुटणी, किय्यां करनी भरनी॥

इतणीं गल्ल गलाई मुनिवर, हाखीं डोरे लाल ।
मुनी गलाऐ सिब्ब वैरिया, आया तेरा काल ॥
राम चन्द्रां देर नीं लाई, चरनां सीस नुआया ।
बोलन, 'मुनिवर मारा छड्डा, अग्गे सीस चढ़ाया ॥
ऋषियां कन्नें युद्ध नईं हुण, चरनां सीस उतारां ।
दिया सुणाई मुनिवर हुकमें, भारे अज्ज उतारां ॥
जे बचदा सिर लिया बचाई, बोलां मैं भृगुराई ।
नीं बचदा तां सिर मैं पहलैं, दित्ता चरन चढ़ाई ॥

दो० मिट्ठे बोल उचारिए, चुप होऐं किरपाण ।
राम नाम दे जाप ने, बोलन नईं बबाण ।

दो० पारस पूरा नाम ऐ, माह्णूं नईं पछाण ।
छह्ऐ पत्थर राम ने, तिसजो पौन प्राण ॥

परस राम दा सारा गुस्सा, गिया बड़ा ठंडह्ोई ।
सस्तर कनैं कमान कुहाड़े, धरती गए रखोई ॥
गासे उप्पर बाणी आई, अपणां बोल उचारैं ॥
मनिवर तुरबुर दिक्खैं अपणीं, तीजी हक्ख उघाड़ैं ॥
परस राम सोचैं मन अपणें, अज्ज चलित्तर होया ।
हत्थ खिसकिया अज्ज कुहाड़ा, धरती अज्ज रखोया ॥
नईं चकोऐ सस्तर कोई, मुनिवर करैं विचार ।
बाणीं गासें आई बोलै, 'राम ! राम, अवतार ॥'
अवतारे दी गल्ल सुणीं तां, परस राम डफलोया ।
राम गुसाईं जो दिक्खी कै, पाणीं-पाणीं होया ॥
बोलण लग्गा, अज्ज धरतिया, आया दूआ राम ।
दो राम नीं किट्ठे रैह्न्दे, इक्की जो बिसराम ॥'
इतणीं गल्ल गलाई मुनिवर, झट पट गए खड़ोई ।
दिब्ब दृष्टिया कन्नें दिक्खे, राम गए पछणोई ॥
इक दूए दे पासें दिक्खन, हुण कुण गल्ल गलाऐ ।
इक्क राम दूए जो दिक्खी, मनें भलेखा खाऐ ॥
परस राम ने मनें च अपणें, कीती जय-जयकार ।
चली गए तप करना जंगल, मन्नीं अपणीं हार ॥

कोई गल्ल न विचली जाणैं, राम रचाया खेल।
परस राम दा जनके दें घर, राम-राम ने मेल ।।
इस माया जो अप्पू जाणैं, राम-राम रघुराई ।
परस राम हुण घोर जंगलें बैठा ताड़ी लाई ।।
जंगल दे विच परस राम ने, राम नाम मन गाया ।
राज़े जनकें वेद विधाने, सीता व्याह रचाया ।।

दो० जनक पुरी विच रौणकां, आए देव सुजान।
जोरें बोली मन्तरां, सीता व्याह करान ।।

परस राम दे जाणें तों हुण, सबनां खुसी मनाई ।
गई गुआची जानधड़ां विच, भिरी मुड़ी कै आई ।।
ऋषियां ने व्याए दा मंडप, महलां विच बणुआया ।
वेदां दे मन्तर बोली कै, सीता लग्न कराया ।।
लग्न-वेद फेरे सब कीते, सीता डोलें पाई ।
जनक पुरी तों चल्ली माया, विच आयोध्या आई ।।
अवध पुरी विच बाजे बज्जे होई जय-जयकार ।
सीता दें गल पाए लोकां अणमुक फुल्लां हार ।।
भरत शत्रुघुन लछमण दे, दसरथ ब्याह रचाए ।
उर्मिल बेटी जनके दी हुण, लछमण ब्याई लाए ।।
दसरथ दी फुलबाड़ी दे बिच, फुल्लां सोभा होई ।
रंग बरंगे फुल्ल बाटिका कलियां कनें भरोई ।।
रोज धियाड़ें बाजे बज्जन, महलां मंगल चार ।
लग्गे बीतणां म्हीने बरसां, माया पाया जाल ।।
खरे दिनां विच्च भुलदा माह्णूं चेतें गल्ल न औऐ ।
पाप पुन्न जां पूरे हुन्दे करनी भरनी पौऐ ।।
माह्णूं तां चेतें नीं रक्खैं अपणीं खोट कमाई ।
ठौकर जाणैं जिन्नीं मत्थें, इक-इक गल्ल लखाई ।।
खोटे कम्म कमाई माह्णूं विच्च तीरथां न्हौऐ ।
जालूं चेतें औऐ करनी, तां निन्दर नीं पौऐ ।।
देणा पौन्दा इक दिन आई, सारा नकद उधार ।
ठौकर अग्गें कदीं न चल्लै, झूठे दा ब्योपार ।।

पापे उप्पर दिऐ पलोपा, मन्दिर मस्जिद जाई।
बगला भगत बणीं कै माह्णूं, बौऐ ताड़ी लाई॥

दो० खरे करम नईं करदा, ताईं भरदा डन्न।
ढैंन्दी ताईं इक्क दिन, पापें भरियो छन्न॥

दो० पाप कमाऐ जिन्दड़ी, ढाऐ हिक्का प्हाड़।
पीड़ कुल्ज़दी मरदियां, सैह लेखा अपार॥

माड़ी करनी सिरें खड़ोऐ, खेलन भूत मसाण।
चेले जोगी झोलन मुट्ठे, बुजरू तुला करान॥
हवन पाठ नीं धोऐ पापां, नां गंगा दा पाणीं।
कोई तन्द न भिरी गठोऐ, जालूं टुट्टै ताणीं।
माह्णूं अग्गें अपणें करमां, दा ई भूत खड़ोऐ।
अपणी करनी माह्णूं तों वी अप्पूं नीं पछणोऐ॥
कदीं गलाऐ वैद खरा नीं, देवतियां दा खोट।
अपर्णीं करनी हर दम आई, तिसजो मारै चोट॥
अपणी करनी एह भुलाऐ. लोकी बुरे गलान्दा।
अप्पूं बीजै रस्तें कंडे. त्रुब्बन खड़ा रड़ान्दा॥
लोकां दे हक़ खाईं निगली, अपणां ढिड्ड वधाऐ।
जालूं ढिडें टुंब्ब पौऐ तां, माह्णूं खड़ा रड़ाऐ॥
निरदोसां जो मारै माह्णूं, तीर कमानां चुक्की।
अपणी बारी औऐ जालू, वौऐ कूंणां लुक्की॥
माह्णूं बोलै इस जन्में तां, मैं नीं बुरा कमाया।
लोकां लाऐ एह भलेखा, हाखीं नीर वगाया॥
रिसपत गुज्झां नईं चलदियां, होऐ सब इनसाफ।
परमेसर नीं करै कुसी दे बाल जो वी माफ॥
टिक्के धूफ धुखाई माह्णूं, कई डालियां आणैं।
इस दी खोट कमाई ठौकर, घड़ी-घड़ी दी जाणैं॥
माह्णूं अग्गें दूत घुम्मदे, ठौकर लीला भाई।
तिसदी इक-इक गल्ला उप्पर, जाई देन गलाई॥
माह्णूं सोचै ठौकर अन्हां, कन्नां दा ऐ बोला।
ठौकर तिसदी करनी आई, तोलै तोला-तोला॥

दो० परमेसर दा राज ऐ, अंबर धरत पताल् ।
ठौकर कदी नीं झलदा, पुट्ठी सिद्दी छाल् ॥

सूया दे नक्के चा कड्डै, सुरमा दियै वणाई ।
परवत करदा राई ठौकर, करै परवतां राई ॥
हसदे माह्णूं दियै रुआई, रौन्दे खिड़-खिड़ हस्सन ।
अपणें करमां कन्नें माह्णूं उजड़ी-अजड़ी बस्सन ॥
झुलदे रुक्खां दियै सुकाई, नग्गर होन उजाड़ ।
बद्दल् पापे दा जां फट्टै, दल-दल होन पहाड़ ॥
जोरे दे विच जुलम कमाऐ, लऊएं करै स्नान ।
ठौकर गल्लां याद कराऐ, कंठें औन प्राण ॥
परमेसर न कुसी जो वक्सै, राजा रंक भखारी ।
खरे खोटियां करमां दिक्खै, अपणीं हक्ख उघाड़ी ॥
इक-इक गल्ला गट्ठी बन्है, माहणूं नईं वचार ।
इस दे अग्गें जात पात नीं, ब्राह्मण नईं चमार ॥
इक हक्खी ने सबना दिक्खै, ठौकर वड़ा सियाणां ।
इस दे अग्गें भेद-भाव नी, मज़हब नईं पुराणां ॥
इक पैंठी विच सारे बौन्दे, ठौकर दें दरबार ।
नईं कुसी जो कुरसी ओथूं, नीं बड्डा अधिकार ॥
ताज राजियां दे धरती पर, भुईय्यां सब बछाण ।
अपणीं-अपणीं नेक कमाई, सारे आई खान ॥
तिय्यां ई धरती पर माह्णूं करदा करनी भरदा ।
घड़ी-घड़ी दे लेखे तिसदे, ठौकर अप्पूं करदा ॥
माह्णूं दा मन तोते साईं, चंचल होऐ भाई ।
खरे-बुरे जो नईं पछाणैं, धरती उप्पर आई ॥
ताईं तां जाल् विच फसदा, तोतें नईं बचार ।
माह्णू तोता माया डोरी, टब्बर टेरा जाल् ॥

दो० तोता भरै उडारियां, खाऐ अपणीं चोग ।
नईं पछाणै दाणियां, लगन सरीरें रोग ॥

दो० लोभी तोते भुल्लदे, दूणीं चुंज चलान ।
माया जाल् उल्झदे, उलझी कै पछतान ॥

जाल़े दे विच तोता फसदा, जालूं पिज्जर तोड़ी।
टब्बर टेरा चैन करै नां, खिज्जै जालें डोरी ॥
लाल गल़े ने लऊ सच्चदा, होवण चुंजां लाल।
राम-राम जोरे ने बोलै, जालूं दिक्खै काल ॥
मुहएं नें तां राम गलाई, नईं कटो·दे पाप।
मनें राम नां औऐ जालूं, तां नीं सच्चा जाप ॥
जीब्हा कन्नें राम गलाऐ, तोता भरै उडारी।
पाप बणीं कै बाज बैठिया, तोतें जिन्द उधारी ॥
रखिया राम गुसाईं करदा, अन्दर हिरदें राम।
कई पखंडी बगले दिक्खा, राम करन बदनाम ॥
तोते साऽईं राम जपी कै, राम मिलै नीं भाई।
अन्दर हिरदें राम नईं तां, सैह न खरी कमाई ॥
दसरथ दे घर राम जम्मियां, अप्पूं ठौकर आई।
पर दुसरथ ने अपणीं भुगती, खोटी खरी कमाई ॥
अपणें-अपणें करमां भुगतै, ठौकर दा परवार।
माहणूं दे करमां दा लेखा, करदा ऐ करतार ॥
दसरथ राजा बदिया फुलिया, जुधिया रौणक छाई।
दूरें दिक्खै घूरै तिसजो, तिसदी खोट कमाई ॥
राजे दे पुन पूरे होए, छाबा उप्पर आया।
अपणां बदला पापी करमां, तिसजो याद कराया ॥
काल बणी कै करम खड़ोता, महलां फेरे पाऐ।
राजा दिक्खै दल-बल अपणां, रती नईं घबराऐ ॥
समां बीतियां करमां आई, अपणीं छुरी चलाई।
कई बरेसां महलां अन्दर, बज्जी नेई वधाई ॥

कुं० राम रूप भगवान थे, लछमण भरत सुजान।
शत्रुघुन दए सूरमे, दसरथ दी सन्तान ॥
दसरथ दी सन्तान, करम गत अपणीं भाई।
माहणूं मत्थें लेख, मेख बिधमाता लाई ॥
बोलै कवि 'संसार', मन घोड़ा करम लगाम।
करम खरे नीं होन, तां नीं मिलदे हन राम ॥

चतुर्थ सर्ग

कुं० गरमी सरदी पलटदी, पतझड़ तां बरसात ।
ऋतुआं अन्दर ढक्कदा, माह्णू अपणें पाप ॥
माह्णू अपणें पाप, कदी नीं दस्सै लोकां ।
ठौकर अग्गें दूत लगान्दे तिसदी चोकां ॥
बोलै कवि 'संसार', माह्णुएं पुट्ठी करनी ।
ठौकर अग्गें सच्च, गलोऐ उतरै गरमी ॥

दो० रात दिनें दे चक्करें, चढ़दा मुड़ी धियाड़ा ।
माह्णूं भुलदा करनियां, करदा भिरी उजाड़ा ॥

समां गुजरिया इक दिन दसरथ, मनें च सोचां सोचै ।
कुसजो हुण युबराज बणां मैं दसरथ दा मन तोपै ॥
सोची समझी दसरथ ने हुण, कीता मनें बचार ।
रामचन्द्रा देण लगा सैह, राजे दा अधिकार ॥
इक दिन राजे दसरथ ने हुण, जां दरबार लगाया ।
अपणां सारा सोच दसरथें, लोकां विच्च सुणायां ॥
दरबारे विच्च दसरथ दी सब, पूरी गल्ल मनोई ।
तिलक देणें दी राम चन्द्रा, जो थी मति मतोई ॥
महलां दे विच रौनक लग्गी, बाजे सब्ब बजाए ।
आयोध्या खुशियां छाईयां, घर-घर मंगल गाए ॥
बाजा लोकां खरा नी लग्गै, ढोले देन फुटाई ।
दुद्दे मटके देन फटेरी, सुट्टन विच्च खटाई ॥
अज्ज मंथरा महलां अन्दर, अपणां करै वचार ।
हुण किय्यां विगड़ै गल्ल एह, पौऐ इसा बगाड़ ॥

दूए जो हसदे दिक्खी कै, कपटी दा मन कुढ़दा ।
सोचै सोच मने दे अन्दर, कालूं मुड़दा मरदा ॥
बारें सुज्झै चिट्ट चरेला, अन्दर माह्णूं मैला ।
इसदे अन्दर कालख भरियो, सप्पें जैह्री थैला ॥
महलां वज्जन बाजे गाजे, गोलियां घरें सोग ।
महलां दी अज सारी रौणक. दिक्खी लग्गा रोग ॥
होछे माहणूं दी गल्ल होछी, करै करम तां खोटे ।
सुनें दे पिंजरे विच पाई, कौं नीं बणदे तोते ॥
कौआं दी तां गोली कां-कां, लट-पट कर्दा न बोलै ।
दुद्दें चूरी खाई निगली, जाई गन्द खरोलै ॥

दो० होछे दी बुद्ध होछी, हर दम उलकापात ।
बड़्डा लाई –लग्ग तां, होए दिन दी रात ॥

सप्पे दा कम डंग मारना, दिक्खा धूप धुखाई ।
आदत अपणें खानदान दी, कदी न जाऐ भाई ॥
काला़ कंबल़ नीं रंगोऐ, चढ़ै रंग नीं दूआ ।
गंगा नेड़ें जाई बस्सै, बगला बणै न सूआ ॥
जे सैह् जिसदे संस्कार हन, कदी न जान्दे भाई ।
लोए दे गैह्णें नीं बणदे. दिक्खा अग्ग तपाई ॥
रणवासे विच रई मंथरा, रती असर नीं होया ।
बाजे-गाजे सुणीं तिसा दां, अन्दर मन घटहोया ॥
गेई कालजें धक-धक करदें इक हत्थे ने पकड़ी ।
लगी ढेरुए सारे फूकण, इक्को धुखियो लकड़ी ॥
बाह्रें तों तां चिट्ट चरेल़ी अन्दर अग्ग धुखोई ।
कैंकेईया दे पासे हुण, आई डैंण भतोई ।
राणी पुच्छै 'अज्ज मंथरा', तूं होई बेहाल ॥
महलां अन्दर बज्जन बाजे, तेरे खिलरे बाल़ ॥'
इस गल्ला जो सुणीं मंथरां, डूगा लिया सुआस ।
गोली बोलै, हे राणी हुण, जीणें दी के आस ॥
जिस आसा दे कन्ने महलां, अणमुक कम्म कमाया ।
कल आसा पर पाणी फिरनां, होणा सब्ब सफाया ॥

गोली बोलै मिज्जो राणी, निन्दर अज नीं आई ।
इय्यां लग्गै साड़े उप्पर, तगड़ी आफत छाई ॥
राजतिलक कल चढ़ै राम जो भरतें चाकर बणनां ।
असां सारियां सणें भरत दें कम्म राम दा करनां ॥
राम ने बौणां तख्ते उप्पर, अपणा हुकम चलाणां ।
राणीं गल्ला नीं सम्हालैं, तां तूं वी पछताणां ॥

दो० अज मैं जगानी तिज्जो, हाखीं खोड़ी जाग ।
करैं जलन तां पलटदे, मत्थे दे हन भाग ॥

दो० राजे ताज दे ताईं, कम्म करन ततकाल ।
घड़ी भरे दी ढिल्ल तां, राजें औऐ काल ।

हे राणीं तूं गोली बणियां, सदा हजूरी करियां ।
अपणीं सौंकण अग्गें जाईं, तूं वी पाणीं भरियां ॥
मैं गोली तां गोली रैह्णां, मिज्जो फरक न पौऐ ।
भरत राम जो हत्थां जोडै, साड़ा नक्क बढोऐ ।
पाली-पोखी बड्डा कीता, रक्खी आस लगाई ।
खूहएं आसा चली गेई, राणीं जिन्द सुकाई ॥
राणी तूं तां भोली-भाली, मत्थें अकल न तेरें ।
दिन चढ़दे ने गोली बणना, तूं तां वड़ें सवेरें ॥
सच्ची गल तां कौड़ी लगदी, थू-थू करदे सारे ।
नईं ढकोऐ अग्ग पाणिएं, दिनें नीं दुस्सन तारे ॥
समा गुआचा भिरी न औऐ, हत्थां झस्सन लोकी ।
गंज्जे दे सिर नीं गन्दोऐ, मींडी लम्मी चोटी ॥
राज गुआचे भिरी न मिलदे, लक्ख तरलियां पाई ।
धन दौलत दी दुनिया सारी, नीं चाची, नीं ताई ॥
जोरे वाझी रोब नमाणां, ढूण-मढूणां रोन्दा ।
अपणें भारे रोऽला जिय्यां, धीड़ घस्होटी ढोन्दा ॥
पैसे वाझी माह्णूं अन्हां, विन पैसें नीं सुज्झै ।
जिय्यां खाली गागर खूएं, जोर लाई न डुब्बै ॥
ताज गुआचे मुड़ी न मिलदे, राणीं करै बचार ।
सारे दिन्दे लत्तां उप्पर, जालूं ढैन्दे बाड़ ॥

हथ जोड़दे राजियां अग्गें, कंगलियां कुण पुच्छै ।
निक्के घाए सींघी छड्डै, डंग्गर वी नीं पुच्छै ॥
चढ़दे जो सब करन सलामां, डुबदे जो घर औन्दे ।
खरे छप्परे सब सम्हालन, कुण लैन्दा ऐ चौन्दे ॥

दो० सौंकण समा बचारिया, खेली तगड़ी चाल ।
तिज्जो राणी कड्डिया जि:यां दुद्दें बाल ॥

तू तां राणीं फुल्ली बैठी, खुरिया अकल जणासां ।
भरियो हट्टी उजड़ै राणीं, लई उधारे गाऽकां ॥
तत्ते लोएं इक दो चोटां, ठंडें कई हजार ।
बरसाती जा पाणीं चढ़दा, नई टपोंदे नाल् ॥
कौसल्या ने कौतक कीता, तेरी होई हार ।
राजे जो बस अपणें कीता, अपणें मनें बचार ॥
इतणीं गल्ल सुणी कैकेई, गई करोधें आई ।
बोलण लग्गी, 'अज्ज मंथरा, तूं के गल्ल गलाई ॥
भरत राम विच अन्तर दिक्खैं, वुद्ध अज कैंह मारी ।
जे राम सैह भरत प्यारा, अकली दिक्ख बचारी ॥
इस गल्ला जे मुड़ी गलांगी, जीव्हा कडगी बाऽर ।
तूं गोली उतणीं गल करियां, जितणां ऐ अधिकार ॥
दखल दिऐं मत राज घराने, अपणा कम्म कमाऽ ।
जिस पतली तूं रोटी खानी, उस मत छींडा पाऽ ॥
इतणीं गल्ल सुणीं राणीं दीं, गोली वुड़-बुड़ कीती ।
इक कूणां जो ढूण-मढूणीं, चली गई चुप कीती ॥
खरिया गल्ला असर न होऐ, चुगली मिट्ठी लग्गै ।
भोए दी अग हौलें-हौलें, मार लुआंटे जग्गै ॥
चुगली मैंजर सुणन जनानें, देह्ला वक्त गुज़ारी ।
चुगली मिट्ठी मिसरी लग्गै, कौड़ी गल्ल करारी ॥
जिन्द जणासां दी ऐ कोमल, असर झट चढ़ी जान्दा ।
मक्खी खाई फिरै मल्का, मन उल्टोई जान्दा ॥
गल्ल राणियां गई कालजें, भिरी तरेरा आया ।
ढिड्डें होया घोल्-मथोला. हाखीं पाणीं छाया ॥

दो० जिय्यां होणीं बापरै, माह्णूं बणन बचार ।
तत्ता लाबा निक्कलै, जालू फटन पहाड़ ।।

दो० ठौकर हक्ख उगालदा, मारी करदा ढेर ।
जालू बिज्ज कड़ाकदी, डुड्डीं बड़दे शेर ।।

खरे बुरे जो नईं पछाणैं, ताईं माहणूं मरदा ।
खौलै पाणी उप्पर जालूं, पुट्ठा होई तरदा ।।
जे ठौकर दो मरजी होऐ, पुट्ठीं फेरै बुद्ध ।
नईं पछाणै छाऽई माह्णूं, समझै चिट्टा दुद्द ।।
कैंकेईया दी सुध हुण मारी, दसरथ पाप बड़ोया ।
अज्ज राणियां दी जीब्हा पर, पापें रुक्ख सरोया ।।
गोली ने जड़ पक्की कीती, राणी खाऐ झुटारे ।
पापे दा हुण रुक्ख बडोया, करमां खेल नियारे ।।
कैकेई तां नीं सम्हालै. तिस रुक्खे दा भार ।
गई घसातड़ पैरें राणी, पेई मुंहएं भार ।।
राणी सोचै मन दे अन्दर, गोलिया सच गलाया ।
दसरथ दे पापे ने आई, अकली पड़दा पाया ।।
गई मंथरा दे पासे जो, गोली हिक्का लाई ।
जिय्यां कोई मिट्ठे जैह्रे, झट-पट लैन्दा खाई ।।
राणी बोलै, अज्ज मंथरा, मेथों बुरा गलोया ।
गल्ल गलाई तिज्जो माड़ी, मेरा मन घटहोया ।।
गोली नीं हुण समझां तिज्जो, तू तां सक्की भैण ।
तेरे बाझी नईं खड़ोऐ, मन लगा एह् ढैण ।।
तेरी हाखीं दे रोजे दा, मिज्जो पश्चाताप ।
गल्ल गलोई मेथों माड़ी, मेरे मन सन्ताप ।।
कैकेई दी गल्ल सुणीं तां, गोली अणमुक डुस्कै ।
सुस्कारां जो दिक्खी राणीं, हब्ब होई न चुस्कै ।।
केकेई दे उप्पर होया, तगड़ा जादू टोणां ।
लई गोलिया मच्छी पकड़ी, तगड़ा लाया पूणां ।।

दो० पत्थर फाड़न चुगलियां. उल्लू बसै उजाड़ ।
गोली समा बचारदी, विरथ न जाऐ बार ।।

नखरे अणमुक कीते तिन्नां, रोजे लगी वगाण ।
लोए जो साणीं लाई कै, आबू लगी पकाण ।।
डुस्की-डुस्की बचन उचारै, राणीं जो समझाऐ ।
हुण तां हाखीं मीटै खोड़ै, मुहएं बुरे बणाऐ ।।
बोलण लग्गी अपणां समझी, मैं थी गल्ल गलाई ।
जे होणां कल अज्ज दस्सिया, दित्ता था समझाई ।।
कल-कलन्तर कोई न बोलै, पहलै गल नीं दस्सी ।
फिटियो दुद्दें कदी न बणदी, राणीं नौणीं लस्सी ।।
अन-जल खादा राणीं तेरा, मिज्जो तेरी पीड़ ।
कोई तेरा माड़ा इच्छै, मेरा जिगर अधीर ।।
भरत राम सत्रुघुन लछमण, कुसी जो मिलै राज ।
मेरे भाएं सिरें कुसी दें, रक्खै राजा ताज ।।
मैं गोली दी गोली रैह्णां, राज राजिया भाग ।
पाणीं छोली़ नईं खड़ोऐ नौणीं सुट्टा जाग ।।
भरते उप्पर कोई राजा, अपणां हुकम चलाऐ ।
विच्च कालजें खल़बल़ पौऐ, छंडे फालक पाऐ ।।
जीव्हा जो मैं था समझाया, नीं समझी बदकार ।
गल्ल गलाई सच्ची इन्नां, ताईं खादी मार ।।
हुण मन्थरा दा मन्तर सैह, कैकेई जो छह्या ।
डंग मारिया जैह्री सप्पें, राणी मन उलटोया ।।
राणी बोलै, गोली तू ऐं, बिलकुल बड़ी सियाणी ।
पीड़ करैं तूं सच्ची साड़ी, मैं तां गल्ल पछाणीं ।।
राजे जो किय्यां समझाणा, बुद्ध कम्म नीं करदी ।
कुनीं खिजणीं जोर लगाई, गासें झंडी चढ़दी ।।

दो० लोकी चढ़दें जागदे, सूरज रसमां लाल ।
सेहरे-सालु सोभदे, कई सिरां पर काल ।।

दो० भाग पलटदें देर नीं, दिन दी होऐ रात ।
चढ़दे ताज कंगलियाँ, राजे बणदे दास ।।

सूरज चढ़दें सब किछ बिगड़ै, इक रातीं के होणां ।
किय्यां हसणां तू ई दस थां, जे करमां बिच रोणां ।।

गोली बोलै, 'करम बड़े नीं, जतन बड़े हन राणों ।
जतन कीतियां उप्पर चढ़दा, ऊचे प्हाड़ां पाणीं ॥
जतनां अग्गें जोर कोई नीं, करम पाणिएं भरदे ।
वाझी जतना निक्के कम वी, नेईं सिरें हन चढ़दे ॥
हत्थे-मत्थे उप्पर रक्खी, किछ नीं बणदा राणीं ।
जतनां कन्नें सिद्दी होऐ, सब्ब पिलचियो ताणीं ॥
जे राणी तूं जतन करैं तां, भरतें मिलणां राज ।
तेरे जतनां कन्नें तेरा, सिद्दा होणा काज ॥
गोली दी एह गल्ल सुणी कै, राणी बचन उचारे ।
बोलण लग्गी ,अज्ज मन्थरा, तेरे बोल प्यारे ॥
जो बोलं तूं सो मैं करना, बोल-बोल तत्काल ।
अज्ज मंथरा तगड़ा सुटिया, कैकेई पर जाल ॥
गोली बोलैं, हे राणीं तूं, कोप भवन विच जाऽ ।
राजा पुच्छै तेतों आई, तां तूं गल्ल सुणाऽ ॥
वचन लियां राजे तों पहलैं, मंगियां दो बरदान ।
करी कालजे निग्गर अपणें, खोलियां भिरी जबान ॥
दिखियां डग-मग हुन्दी राणीं, राजें करनी चाल ।
कई भलेखे लाणें तिज्जो, तेरा पुछणां हाल ॥
इक्क वरे दा राणीं मंगियां, भरते ताईं राज ।
दूए दे बिच्च राम चन्द्रां, जो होऐ बणवास ॥
राजे ने नाहं नुक्कर करनीं, राणीं मत पतियोन्दी ।
राजे दी गल्ला मत मनदी, दिखिया कुथीं ठगोन्दी ॥

दो० गल्ल सुणीं जां राणियां, गई तिसा दी होस ।
दियै नपाली वैद तां, दूणा औऐ जोस ॥

गोली बोलै हे राणीं सुण, गल्ल सिरें तां चढ़नी ।
जालूं राजा जे हां करगा, बेड़ी तेरी तरनी ॥
पापी माहणूं फट्ट मारदा संग करै नीं भाई ।
तरस करै न लई गंडासा, बकरे बड्ड कसाई ॥
अज्ज मंथरा पूरी उतरी, जात अप्पणी दस्सी ।
गई बमियां डंग चलाई, सपणीं खिड़-खिड़ हस्सी ॥

जैह्‌र गुल्लिया पाणिएं उपर, आई छालीं मारै ।
विलसै धरती उप्पर राणीं, ध्हाड़ो-धाड़ पुकारै ।।
गोलिया दी हुण गल गूंजदी, कोप भवन विच आई ।
सब सिंगार उतारै राणीं, जोरें जोर रड़ाई ।।
गैह्‌णें टिक्के सब्ब उतारे, सिरें बाल खलारे ।
दूएं वक्खें बिच आयोध्या बज्जन ढोल नगारे ।।
माह्‌णूं अपणीं सोचां सोचै, ठौकर सोचै होर ।
परमेसर दी मरजी अग्गें, नईं कुसी दा जोर ।।
महलां दे नौकर सब दौड़े, दसरथ हाल सुणाया ।
खुलियां ताणीयां पैर पियादें, राजा दौड़ी आया ।।
दसरथ पुच्छै कैकेई जो, तूं के कीता राणीं ।
सब सिंगार उतारी दित्ता, हाखीं डोलै पाणीं ।।
सुभ घड़ियां विच औगण कीता, कोप भवन तू आई ।
मनें दे विच गल्ल कोईं थी, मिज्जो नईं सुणाई ।।
सच दस राणी हुण के होया, छडिया हार सिंगार ।
देर करैं मत दिन चढ़दे ने, जाणां असां दरबार ।।
तिलक राम जो देणां राणीं, अपणां भार उतारी ।
ताज चढ़ाणां विच्च सभा दे, सददे सब दरबारी ।।

दो० अज वधाई बज्जदी, तिज्जो पश्चात्ताप ।
तूं गल्ला दे उघाड़ी, कजो करैं विरलाप ।।
सोर-मसोरा अन्दरें, बाह्‌रें बज्जन ढोल ।
दसरथ दे हुण पाप दा, बान्दा आया पोल ।।

रस्ता हंडी मुकदा राणीं, मुकदी गल्ल गलाई ।
अन्दर मने घटोऐ माह्‌णूं, बणदा सैह सुदाई ।।
दसरथ दी जां गल्ल सुणीं तां कैकेई हुण बोली ।
पहलैं तिन्नां गल्ल अप्पणीं, विच्च मनें दे तोली ।।
तकड़ी डंडी झोले मारै, कैकेई मन डोलै ।
सिरें लऊ दसरथ दें सरबण, राणी मुहएं बोलै ।।
खून कदी नीं गुज्झा रैन्दा, कुदरत दा दस्तूर ।
इक दिन करनी दा फल भुगतै माह्‌णूं आई जरूर ।।

कैकेई दी जीब्हा उप्पर, शाप चढ़ी कै बोलै ।
दसरथ दे पुन्नां जो आई, लऊ सरबणें तोलै ।।
कई झुटारे खाऐ तकड़ी, छाबा उप्पर चढ़िया ।
अन्हियां दे सुस्कारे दा अज, सप्प बणीं के लड़िया ।।
राणीं बोलै, हे राजा दिख, अपणीं बुद्ध बचारी ।
इक पुत्तरे जो तख्त बुहालैं, दूए दियैं उजाड़ी ।।
राम अयोध्या राज करै हुण, सबनां दा हक खाई ।
बाकी पुत्तर करन चाकरी, तिसदे पैर धुआई ।।
तूं जे राम ऐ बड़ा प्यारा, सांजो दे बणवास ।
मार कटारे दियैं मुकाई, जीणें दी के आस ।।
कौसल्या एह बड़ी प्यारी, सांजो जैह्‌र पियाऽ ।
दे धक्का सुट सागर दे विच, जीन्दे जीऽ रुड़्‌हा ।।
उजर नईं हुण ताकत तेरें, हत्थें राजा भारी ।
ताज रक्ख तूं सिरें राम दें, बणिएं असां भखारी ।।
कजो झूरिए अपणीं करनी, साड़ें दिन हन माड़े ।
डाका पाया साड़े उप्पर, लुट्टे दिने धियाड़े ।।

दो० कैकेई दी गल सुणी, दसरथ हुण हैरान ।
जीव्ह गेई सतरोई, धुड़-धुड़ करदी जान ।।

राजा सारी गल्ल सुणीं कै, सोचै अचरज होया ।
कैकेई दे अन्दर आई, जैह्‌री सप्प सरोया ।।
अपणीं कीती याद न रक्खै, झट्ट भुलाऐ बन्दा ।
पाप कमाई कदी नीं चढ़दा, कुसी दा उपर झंडा ।।
महलां बाह्‌रें जय-जय कारे, राज घराने सोग ।
जिय्यां कोई लाज करै तां, बददा जाऐ रोग ।।
राज घराने कैह्‌र बरतिया, ठौकर होया कोप ।
लऊ सरबणें दा सिर दसरथ, फणियर मारै चोट ।।
दसरथ समझाऐ राणी जो, राणीं रोऐ दूणीं ।
सिन्ने रूएं राजा बट्टै, नईं बटोऐ पूणीं ।।
हारी-हुट्टी राजा बोलै, जे दसगी हुण मरगा ।
तेरिया गल्ला उपर राणी, मैं जींगा तां तरगा ।।

तेरी गल नीं मोड़ा कोई. पत्थर पौऐ लकीर।
कजो बगानी धरती उप्पर हाखीं दा तूं नीर ॥
राजे दी जां गल्ल सुणीं तां, राणी लगी गलाण।
गोली जिय्यां था समझाया, तिय्यां लगी सुणाण ॥
दूए दी गल्ला पर चल्लै, तां माह्णं वी डुब्बा।
जिय्यां झोटे साऽई चल्लै, धुस्स देई कै कुब्बा ॥
तोता गल्ला नई बचारै, तां कैदा विच पौऐ।
अपणें मगजें नई बचारै. तिसजो चैन न औऐ ॥
रोज पढ़ायो पत्थर पटकन, टोटे जान्दे होई।
सिक्ख सखालें लग्गैं माह्णूं, जाऐ अकल मरोई ॥
राणीं बोलै. हे राजा जे, बचन दियैं गल करनी।
नीं तां जीव्हा अन्दर रक्खां, गल्ल मनें मैं जरनी ॥

दो० फूके घर हन चंटियां, महलां पई उजाड़ ।
सारा पाणीं ढक्कदा, जालूं बदै सबाल़ ॥

पाप-पुन दा झगड़ा ऐ, सब करमां दा खेल ।
लैण देण दा धरतिया, आई होऐ मेल़ ॥

राणीं दी जां गल सुणीं तां, राजें बोल उचारे।
दसरथ बोलै, सुण राणी नीं, तेथों बचन प्यारे ॥
राजे तों हुण बचन लई कै, राणीं जीव्हा तोलै।
जिय्यां सपणीं लप-लप करदी. फिणें अप्पणें झोलै ॥
कैकेई सपणी डंग चलाई, लगी बामियां ढाण।
भूतड़ डंगर कैकेई हुण, खेतर लगी मुकाण ॥
राणीं बोली, 'हे राजा ! तूं, कीते कौल-करार।
दो वर मंग्गी तेथों अपणें, लैणां अज्ज उधार ॥
इक वर मेरा भरत करै हुण, विच आयोध्या राज।
चौदह बरिया बणें त्र जाऐ, राम उतारै ताज ॥'
दो वर कैकेई दे पैने, तिक्खे तत्ते तीर ।
विच्च कालजें दसरथ खुब्बे, होई अणमुक पीड़ ॥
दसरथ हाखीं नीर मूरछा, इक-दम आई भाई।
बणियां राजा बल़ी बक्करा, राणीं बचन कसाई ॥

राजा थर-थर कंबण लग्गा, जिय्यां बिज्जै छेलू ।
कौड़ा जैह्रें भरिया सारा, बचन गुड़े दा ढैलू ॥
सुस्कारां विच राजा बोलै, 'राणी बुद्ध बचार ।
इक पुतरे जो राज दियां मैं, दूए कड्डां बाऽर ॥
जीन्दें जी तां नईं झलोणां, मेथों राम वियोग ।
तेरे बचनां पाणां राणीं, महलां अन्दर सोग ॥
कुस जीब्हा ने दियां गलाई, राम करै बणबास ।
विच आयोध्या तिस दे ताईं, राज तिलक दी आस ॥
कैकेई दे अग्गें राजा, सुस्कारां ने बोलै ।
जिय्यां बच्छी बूचड़ अग्गें, अपणीं पूछा झोलै ॥

दो० लऊ उतरै हाखीं तां, अरजां असर न होन ।
तत्तें तौएं छिट्टियां, पाणीं नईं खड़ोन ॥

राजे दे सुस्कारां दा हुण, रती असर नीं होया ।
अपणें वचनां दे भारे ने, दसरथ अज्ज पथोया ॥
दसरथ दी जां गल्ल सुणीं तां, राणी बोल उचारे ।
बोलण लग्गी, 'राजा मेरे, दे तूं अज्ज उधारे ॥
करजा मेरा सिर तेरें ऐ, इसजो अज्ज उतार ।
नईं तां राजा रघुवंस दे, झूठे होन करार ॥'
दसरथ फसिया विच बिड़िया दें, दिक्खै जिन्द उधारी ।
जे गुल्लै तां जीब्ह धड़ोऐ, सुज्झै आफत भारी ॥
जे बचनां जो टालै राजा, रघुकुल रीत उतारै ।
जिन्द गुआऐ वचन दई कै, भरियो घरे उजाड़ै ॥
दसरथ ने कैकेई जो था, बार-बार समझाया ।
कैकेई थी फिरियो पूरी, माया चकर चलाया ॥
काल रूप थे वचन अप्पणे. दो मुहएं थे सप्प ।
फिणां खलारी मारन डंग्गां, राजें आई गस्स ॥
तिन्न पहर जां रात गई हुण, चौथा पहरा आया ।
विच आयोध्या ढोल नगारे, लोकां मंगल गाया ॥
न्हेर मुन्हेरा महलां विच्च, रोऐ विलखै राणीं ।
दूएं पासें राजा विलसै, मंगै—पाणीं-पाणीं ॥

राजे दी जां हालत दिक्खी, गोली दौड़ी आई।
तिन्ना आई रणवासे विच, सारी गल्ल सुणाई॥
बोलै गोली, 'कोप भवन विच, भारी अचरज होया।
राजा ताजे खोड़ी धरती, विलसै अणमुक रोया॥
राणीं रोऐ जोरें-जोरें, सब सिंगार उतारे।
महलां आई घोर मुसीबत, गोली बचन उचारे॥

दो० गोलिया दी गल्ल सुणीं, आया सब रणवास।
राम लखण उट्ठी दौड़े, दसरथ कंठ सुआस॥
मरदी वारी पाप पुन, माह्णूं मत्थें औन।
लेखे नच्चन सामणें, घड़ी भरें नीं सौन॥

हुण दिक्खी राम जो दसरथें, अपणें नैन उघाड़े।
बोलण लग्गे 'सुणैं राम तूं, राम-राम हे प्यारे॥'
इतणीं गल्ल गलाई दसरथ, कैकेई जो दिक्खै।
जिय्यां मरदी वारी मरह्णूं, अपणां लेखा लिक्खै॥
दसरथ बोलै, हे राणीं सुण, धड़ें जिन्द नीं रैऽणीं।
राम जुदाई इक पल मैं तां, जीन्दें जी नीं सैऽणीं॥
दसरथ दी गल्ला दा राणीं, रती असर नीं होया।
अन्दर तिस दे जैह्री बूटा, बड्डा अज्ज सरोया॥
राणीं बोलै, 'हे राजां! वर, लैणें अज्ज जरूर।
गल्ल गलाई मत मुकरैं हुण, मिज्जो दियैं कसूर॥
दिया गलाई अपणें मुहएं, सन्मुख राम खड़ोते।
दे हुण दो वर राजा मेरे, सत्त पाणिएं ध्होते॥
इतणीं गल्ल सुणीं दसरथ ने, हाखीं नीर वगाया।
गिया चकोई अज्ज कालजा, धुड़कू उप्पर आया॥
हाखीं अग्गे न्हेरा छाया, छड्डी जीणें आस।
दसरथ पाणीं-पाणीं मंग्गै, बोलै बडीं पियास॥
हत्थ फेरिया सिरें राम दें, दसरथ बोल सुणाया।
राजा बोलै, 'राम-राम हुण मैं बणवास सुणाया॥
चौदह बरियां रियां बणें विच, ताजें छडियां आस।
तिलक नईं एह राम-राम, होया हुण बणवास॥'

दूआ वर दसरथ ने दित्ता, भरत अयोध्या राज ।
वर मंगदिया कैकेई जो, रती नीं आई लाज ॥
राज करै हुण विच्च अयोध्या, राम न, निक्का भाई ।
उल्टी होई रीत युगे दी, दसरथ गल्ल सुणाई ॥

दो० गल्ल गलाई दसरथें, लग्गें भरे सुआस ।
गेई मूरछा आई, छड्डी जीणें आस ॥

राम राम करदे दसरथ जो, गेई मूरछा आई ।
दसरथ विलसै कैकेई जो, रती दोस नीं भाई ॥
अपणीं करनी दा फल राजें, अप्पू आई पाया ।
अन्हे अन्हिया दा सुस्कारा, महलां उप्पर छाया ॥
पाप चकोऐ धरती तों नीं, हिल्लण होऐ आई ।
दुर्बल दे सुस्कारे भरियो, सागर देन सुकाई ॥
कमजोरां दे हौके कन्नें, राज राजिया जाङन ।
इक दिन अप्पूं तड़पन जेड़े, दूए जो तड़फान ॥
कुण ठौकर जो जाणीं सकदा, माया चकर चलाऐ ॥
कैकेई दी अकली अन्दर, ठौकर पत्थर पाऐ ।
राज तिलक दे बदलें आई, होया ऐ बणवास ।
भाग पलटदें देर न लग्गै, कदीं पतालें गास ॥
इक बाजा तां मंगल लग्गैं, दूआ पौऐ खाण ।
व्याह कारजां बजै बधाई, मरनें ढड्ड-मुकाण ॥
ढोल नगारे बज्जन सारे, बाजें नईं कसूर ।
खरे दिनां विच नच्चै माह्णूं, बुरें गुआऐ नूर ॥
इक राती बिच पलटा खादा, गल्ल गई पलटोई ।
दिन डुबदे नें हस्सी लोकी दिन चढ़दे ने रोई ॥
चऊं पासियां सुन्न सुनाटा, महलां पई उजाड़ ।
इक दूए ने बोलन लोकी, के कीता करतार ॥
म्हूरत राज तिलक दा मुड़िया, लोकां सोग मनाया ।
बोलन माड़ा एह धियाड़ा, विच्च अयोध्या आया ॥
बिसुआमित्तर गुरु वसिस्टें, म्हूरत कढिया आई ।
ठौकर दे अग्गें सब हारे, पेस न चल्लै भाई ॥

दो॰ कोई घोखै ठौकरे, कोई माड़े भाग ।
अपणें-अपणें डफ्ले, अपणें-अपणें राग ॥

दो॰ कैकेई जो घोखदे. लौकी बुरा गलान ।
करम दसरथें कीतियो, तिस पर पड़दा पान ॥

नीं पकड़ोन्दी जीब्ह कुसो दी, गल करदियां भाई ।
कोई बोलै, 'कजो राम ने, सीता लई वियाई ।।
करम इसा दे माड़ें लग्गे, महलां पई उजाड ।
राजे दे करमां नीं दिक्खन, जिसदा पाप पहाड़ ।।
दूए दी धीय्या जो सारे, दिन्दे दोस न आई ।
अपणें अन्दर जो कुण दिक्खै, अपणीं खोट कमाई ।।
कोई बोलै, कैकेई जो, बचनां दी के लोड़ ।
सबनां दे ढिड्डें हुण आए, वक्खो वक्ख मरोड़ ।।
बुरे दिनां विच झलणं पौऐ, बुरे माह्णुआं गल्ल ।
पेस नईं तां चल्लै जालूं, हलिएं टुट्टै हल्ल ।।
इक पासें तां पौन्दा इक घर, आई सुन्न-मसाण ।
दूएं पासें नीं पकड़ोऐ, कैंची चलैं जबान ।।
विच्च अयोध्या सारे लोकां, कन्नो सन्न गलाया ।
कैकेई जो जनक सुता जो राम जो अज गलाया ।।
अपणीं-अपणीं करनी भुगतै, माह्णूं धरती आई ।
भरनी पौन्दी इक दिन सबनां, अपणीं खोट कमाई ।।
दिन चढ़दे ने राम गुसाईं भगवां चोला पाया ।
दसरथ महलां अन्दर विलसै, सारी पलटी काया ।।
कैकेई दी समझा अन्दर, कोई गल नीं आई ।
सारे दिक्खन इक दूए जो, होई बन्द वधाई ।।
दसरथ दे दरबारे दिक्खी, कुत्ते अज्ज रड़ाऽन ।
उल्लू बोलै महलां उप्पर, इल्लां फेरे पाऽन ।।
ढोल-ढम्हाका हुण न वज्जै, लोकी डुस्कन सारे ।
नरसिंहे बाजे नीं वज्जन. होए वन्द नगारे ।।

दो॰ विच्च अयोध्या कोप था, घर घर छाया सोग ।
कुसी दुआई काट नीं, बदी गिया था रोग ।।

छन्द० कोई नथो जाणदा एह् गल्ल सारी के होई,
धरतिया आई माया जाल था उसारिया ।
पापियां दे मारने जो विसणूं बकुठं छड्डी,
धरतिया आई अप्पूं राम अवतारिया ।
वक्खो-वक्ख बोलियां हुण लोक हन बोलदे,
जपै कोई राम नाम सैंह तिन्नी तारिया ।
बोलदा एह संसार राम नाम वड्डा गुण,
जपिया नीं माह्णुआं तां कजो देह धारिया ॥

महाकाव्य-माया

पंचम सर्ग

छन्द धरतिया आई अप्पूं राम बणवास कट्टै,
माया जाल् ठौकरे दा बड़ा बे अन्त ऐ ।
कंगलियां राज दियै राजियां फकीर करै,
इसदा ई सारा जल थल जीव-जन्त ऐ ।
इसदी न थाह कोई धरत पताल् गास,
विसणूं ब्रह्म सिब एह ई तां अनन्त ऐ ।
दिखदा एह 'संसार' जप तप जोग सारे ।
करनी पछाणदा ऐ बोलदा नीं सन्त ऐ ।।

दो० राज तिलक बणवास सब, परमेसर दी चाल ।
ऋषि मुनि कोई जाणदे, योगी तपी रसाल ।।
दसरथ दे हुकमे मन्नी कै, लई भवूत रमाई ।
भगवां चोला पैर खड़ावां, राम-राम रघुराई ।।
राम चन्द्रां महलां अन्दरें, जोरें अलख जगाया ।
कौसल्या दे अग्गें आई अपणां सीस नुआया ।।
सौमित्रा जो मत्था टेकी, कैकेई कछ आए ।
सीस नुआया चरनां उप्पर, रती नईं घबराए ।
राम दे भेसे दिखी सबनां, हाखीं नीर बगाया ।
ठौकर वी तां कम्म कमाई, अप्पूं ई पछताया ।।
कौसल्या डुस्की कै बोलै, के कीता करतार ।
कुस जन्मे दी सांजो दित्ती, आई गुज्झी मार ।।
राम गुसाईं जो दिक्खी कै, लोकी विलखन सारे,
कोई पेस न ठौकर अग्गें, तिसदे कम्म न्यारे ।।

कौसल्या ने रोई विलखी, अपणा बोल सुणाया।
बोलण लग्गी, 'राम प्यारे, तूं के भेस वणाया ॥
राज ताज दे बदलें बेटा, होया अज्ज फकीर ।
बिध माता दी कोई जाणै, लिखियो भाग लकीर ।
राम गलाया पेस कोई नीं, करमां खेल न्यारे ।
करमां अग्गे कई तपस्वी, करी तपस्या हारे ॥
ठौकर दी करनी ऐं सारी, उस दा ई सब खेल ।
धिय्यां पुत्तर रिस्ता नाता, मोह्-माया दा मेल ॥
तिसदी मरजी सब किश होऐ, माह्णूं पेस न चल्लै ।
तगड़ा जादूगर ऐ उप्पर. मारै मेखां ठल्लै ॥
ठौकर मरजी राज तिलक हन, तिसदी मरजी योग ।
तिसदी मरजीं वजै वधाई, पौऐ आई सोग ॥

दो० लीला ऐ सब ठौकरें, माह्णूं बणन बचार ।
अप्पूं आई धरतिया ठौकर लै अवतार ॥

माह्णूं सोचै अपणीं मरजी, ठौकर सोचै होर ।
माह्णूं दे करमां दी तिसदें, हत्थें लम्मी डोर ॥
नटवर ठौकर नाच नचाऐ, माह्णूं नचदा जाऐ ।
ठौकर दी मरजी नीं जाणैं, तां माहणूं पछताऐ ॥
अपणें उप्पर ओड़ै सब किछ, माह्णूं सोचै मेरा ।
रती दुक्ख न होऐ तिसजो, जेह्ड़ा सोचै तेरा ॥
नईं गलोऐ तेरा ताऽईं, माह्णूं दुक्ख मनान्दा ।
जे जम्मैं तां हस्सै खिड़-खिड़. मरनें पर पछतान्दा ॥
मरना जीणां तिसदे जिम्मे, क्या राजा वणवासी ।
माह्णूं सोचै अपणां सब किछ, होऐ वड्डी उदासी ॥
ठौकर जिम्मे सब किश लाऐ, तां माह्णूं अलवेला ।
ठौकर दी मरजी जां जाणैं, मेटै सब्ब झमेला ॥
ठौकर दे कम्में विच माह्णूं, अपणीं लत्त घसोड़ै ।
ठौकर खिज्जै लत्ता तां एह्, मत्था किछ संगोड़ै ॥
पंज तत्त दा पुतला माह्णूं, ठौकर पाई जान ।
धरती उप्पर आया वन्दा, जीवां दा सुलतान ॥

अपणीं अकली कन्नें आई, अपणां हुकम चलाऐ ।
ठौकर खिज्जै डोरी जालूं, ठौकर ने टकराऐ ॥
ठौकर दी ताकत जो जालूं, अपणें हत्थें आणैं ।
मारै जीबां धरती उप्पर, ठौकर नई पछाणैं ॥
परमेसर अवतारै अप्पूं, तिसने युद्ध रचाऐ ।
जालूं माह्णूं ठौकर बणदा, तां पिच्छें पछताऐ ॥
जो बीजै सो बड्डै माह्णूं, जो बड्डै सो खाऐ ।
करमा उप्पर भाग माह्णुएं, मत्थे वणदा जाऐ ।

दो० कौसल्या मन मोडिया, घटिया पश्चात्ताप ।
राम गलाया मात मैं, चरना दा हां दास ॥

दो० अनहद गासें उप्परें, बाजा ऐ भगवान ।
जीव जन्त सब रूप ऐ, माह्णूं नईं पछाण ॥

जे नी मन्नां हुकम पिता दा, तां ऋण मत्थें चढ़ना ।
जाई डुब्बणां विच्च सागरें, तां वेडा नीं तरना ॥
हुकम पिता दा ठौकर मरजी, कन्नें ई तां होया ।
ठौकर दी मरजी थी ताईं, भगवां चोला होया ॥
राज तिलक दे बदलें माता, होया ऐ बणवास ।
ठौकर दी मरजी ऐ सारी, गई तिलक दी आस ॥
तिसदी मरजी सब किछ होऐ, माह्णूं नईं पछाण ।
ताज चढ़ाऐ ठौकर अप्पूं, धरती करै बखाण ॥
माह्णूं दे करमां जो दिक्खी, ठौकर हुकम चलाऐ ।
ठौकर दे हुकमें नीं मन्नै, तां माह्णूं पछताऐ ॥'
बारो-बारी राम गुसाईं, सबनां जो समझाया ।
ठौकर दी मरजी ऐ सारी, अपणां बोल सुणाया ॥
सीता बोलै, 'पति देव हुण, मैं महलां नीं रैऽणां ।
बिजन आत्मा कुस सरीरें, पाणा आई गैह्णां ॥
जे आतमा चली गई तां हुण, पिंड्डा ऐ कुतकारी ।
जिस मन्दिर न देव देवते, के फुल्लां दी खारी ॥
विच्च बणें मैं कन्नें कट्टां जाई कै बणवास ।
जे महलां विच किल्ली छड्डा, के जीणें दी आस ॥'

सीता दी जां गल्ल सुणीं तां, भगवन वचन उचारे ।
बोलण लग्गे, 'हे वैदेही, जंगल वास नियारे ।।
विच्च जंगलां हाथी झूजन, गर्जन जोरे सिंह ।
गैंडा भालू दी किलकारी, कंठें औऐ जिन्द ।
कन्द-मूल फल़ खाणा पौऐ, नीं मिलदे पकुआन ।
नीं नौकर नीं गोली ओथूं, नीं कोई दरवान ।।

दो० ऊची न्हीठी धरत सब, जंगल घोर उजाड़ ।
सुन्न सुनाटा बणां विच, नदियां नाल़ पहाड़ ।।

विच्च बणां दे रैह्‌णं खोटा, होन झोंपड़ी वास ।
चैह्‌ल-पैह्‌ल नीं सुन्नी धरती होऐ जीव उदास ।।
रुक्ख बूट सब आसें-पासै, ल्हाईं ढिग्गां पहाड़ ।
गिद्‌दड़-फौई बोलै रातीं, पैने कंडें जाड़ ।।
लम्मा पैंडा रस्तें कंडें, डूगे खड़े कुआल़ ।
साधू सन्त वणें विच बस्सन, कोई फिरन गुआल़ ।।
लो नीं कोई बत्ती ओथूं, रातीं न्हेर गुबार ।
ठंड सियाल़ा सीत बणें विच, खाणां पौन्दे जाड़ ।।
न मंज्जा न सेज बछौणा, धरती होन बछाण ।
कपड़ा छड्‌डी सारे ओथूं, अंग भवूत रमान ।।
महलां दे सुख नईं वणें विच, सीता मने बचार ।
तू महलां विच चौदह बरियां, अपणां वक्त गुजार ।'
'चौदह बरियां कुनीं दिक्खियां, सीता बोल उचारे ।
चौदह घड़ियां मैं न कट्‌टा, किल्ली राम प्यारे ।'
सीता दी जिद्‌दा जो दिक्खी, हाखी आए नीर ।
लम्मा पैंडा कोमल पिंडा, सोचन हुण रघुवीर ।।
राम गलाया, 'हे सीता सुण, कोमल तेरे पैर ।
पत्थर कंकड़ रस्ता खोटा, तू मत समझै सैर ।।
कोमल पैरां नईं चलोऐ, ऊची न्हीठी बत्त ।
सूंकन जाड़ा विच्च सुरालीं, अक्खें-वक्खें सप्प ।।
चौदह वरसां जुग चौदह हन, पतां नईं के होणां ।
जे कोई दुःख वणें विच होया, तेथों नईं झलोणां ।।

दुःख वणें दे सारे दस्सी, सीता जो समझाया ।
सीता डोऽलै हाखीं पाणीं, राम समझ नीं आया ।।

दो॰ राम दी जां गल्ल सुणीं, सीता मनें उदास ।
एह पिड्डा कुत कारी, जे नी होन सुआस ।।

दो॰ माया हट्ठ जनानियां, मरद न चल्लै पेस ।
माया जित्तै ठौकरे, क्या साधू दरबेस ।।

सीता बोलै, 'नीं नीणां तां, धड़ें जिन्द नीं रैऽणीं ।
इतणीं लम्मी राम जुदाई, दस्सा किय्यां सैऽणीं ।।
जिय्यां मच्छी पाणीं बाझी, धरती उप्पर सौऐ ।
तिय्यां मिंजो राम बजोगें, घड़ी चैन नीं औऐ ।।'
सीता दी गल्ला जो दिक्खी, राम करन विसुआस ।
जे कन्नें नीं नीती सीता, इसा छड्डणें सास ।।
सारी गल्लां सोची समझी, राम ने हुण सुणाया ।
गासे उप्पर इक्क पपीया, पी-पी करदा आया ।।
गासे दिक्खी बोलण लग्गे, तिन्न लोक दे नाथ ।
सीता दे दुखड़े जां दिक्खी, होया जिगर उदास ।।
बोलण लग्गे, 'हे सीता हुण, भगवां चोली पाअ ।
मेरे कन्नें चल वणें विच्च, दर-दर अलख जगाऽ ।।'
सीता दी हुण गई गुआची, जिन्द धड़ें थी आई ।
जिय्यां स्वाती पीन पपीए, अपणीं प्यास बुझाई ।।
मिली गिया धन अणमुक्कां दा, कुसी गरीबें आई ।
बद्दल जिय्यां मोर नचाऐ, उप्पर गासें छाई ।।
राम गुसाईं दी गल्ला पर, भगवां चोला पाया ।
वणें जाण दा भेस अप्पणां, सीता सब्ब बणाया ।।
पैर खड़ावां हत्थें माला, सिरें भवूत चढ़ाई ।
अज आयोध्या छड्डी चल्ली, तिन्न लोक दी माई ।।
माया जाले नीं पछाणन, लोकी तां पछतान ।
कैकेई जो कन्नो सन्नी, सारे बुरा गलान ।।
कैकेई नी गोली माड़ी, सब माया दा खेल ।
होऐ लम्मी कदीं जुदाई, कदीं कराऐ मेल ।।

दो० कोई नी जाणैं राम, नारायण अवतार।
सीता लछमी धरतिया, खेल करै करतार॥

जिस जुग माह्णू पैदा होऐ, जीव होन अवतारी।
नीं पछणोऐ हाखीं पड़दा, माया चाल न्यारी॥
सारे तिसजो माहणूं समझन, कोई विरला जाणैं।
कोई तपसी जा सन्यासी, साधु कोई पछाणैं॥
ठौकर अपणें दूत भेजदा, जां अप्पूं आऊंदा।
लोकी सौन्दे ठौकर जागै, जागन लोकी सौन्दा॥
ठौकर अपणें कम्म कमाई, लुकी छुपी कै जाऐ।
जालूं पड़दा हाखी खुल्लै, सब लोकी पछताऐ॥
इय्यां ई सब राम न जाणन, लछमण बोलै, 'भाई।
'मैं वी जाणां विच्च बणां दे, मेरी करा सुणाई॥
मैं किलियां तां किय्यां भेजां, जंगल बड़ी उजाड़।
चऊं पासिया सिंह गर्जदे, भालू तां भगियाड़॥
रात दिनें मैं करां रक्खिया, राजा राम पछाणीं।
जे आफत आऊन्दी सुज्झै, मैं सैह सब नठाणीं॥
जंगल दे विच दन्त दानवां, दा ऐ भाई राज।
मैं किलियां न भेजां जंगलां, मिंजो औऐ लाज।
विच्च बणां दे दर-दर घुम्मै, मेरा वड्डा भाई।
महलां दे विच ऐस करां मैं, मेरी धिक्क कमाई॥
जेत्थूं स्वामी ओथूं सेवक जिन्द जान इक होऐ।
स्वामी दे दुख दिक्खी सेवक, दी तां जिन्द धड़ोऐ।
जे गल्ला मैं नईं वचारां, कुत कारी ऐ देह।
गर्मी सर्दी किट्ठे झलिए, झक्खड़ न्हेरी मेह।
जंगल दे विच कन्द मूल मैं, अप्पूं दियां लियाई।
चौदह वरियां करां चाकरी, तीर कमाना पाई॥

दो० गल्ल सुणीं जां राम ने होए बड़े अधीर।
रघुवर गए थथलोई हाखीं छाया नीर॥

दो० धरत पतालें चमकदी चऊं पासियां लोअ।
ठौकर अप्पूं धरतिया, दस्सै माया-मोह॥

रघुवर बोले, 'लछमण मिज्जो, तूं एं बड़ा पियारा ।
जंगल दे विच नी कै तिज्जो, मैं होआं हतियारा ॥
राज आज्ञा मनणीं भाई, कटणां मैं बणवास ।
तू सेवा कर महलां दे विच, हुण माता दे पास ॥
राज काज तूं दिख आयोध्या, भरते दे समझाई,
सारे कम्म कमा राज्जे दे, रघुवर गल्ल गलाई ॥'
राम गुसाईं दी गल्ला पर, लछमण बोल उचारे ।
'भाई दी भाई भाई नीं समझै, तां समझा दिन माड़े ॥
बड्डा भुगतै घोर मुसीबत, निक्का मुंह लुकाऐ ।
सत जन्मां तां नरके अन्दर, जाई गोते खाऐ ॥
सर्दी गर्मी किट्ठा कट्टै, सुख होऐ जा दु:ख ।
नईं पाणिएं छड्डै मच्छी, जालूं कड़कै धुप्प ॥
लछमण दा हठ पूरा दिक्खी, रघुवर बोल सुणाया ।
वण चलणें दा अपणें कन्ने, अपणां हुकम गलाया ॥
होए पूरे बणवासी हुण, लछमण सीता राम ।
तिन्नें भगवां चोला पाई, महलां अलख जगान ।
जटां बन्हियां तरकस पाए, हत्थें लए कमाण ।
राम लखण सीता वण चल्ले, लोकी सब्ब गलान ॥
पैर खड़ावां भगवां चोला, गले च माला पाई ।
अग्गें पिच्छें राम लखण ता, गब्हें सीता माई ॥
लोकी विलखन विच आयोध्या, सुन्न सुनाटा छाया ।
बोलन सारे हे ठौकर अज, बुरा धियाड़ा आया ॥
कौसल्या सौमित्रा विलखै, कैकेई वी रोऐ ।
रोऐ विलखै अज्ज मंथरा, वखरी दूर खड़ोऐ ॥

दो० **गल्ला जो नीं सोचदा, माहणूं तां बदकार ।**
गल्ला ने घर उजड़दे, गल्ला पौन बगाड़ ॥

महलां तों हुण राम निक्कली, नगर अयोध्या आए ।
बच्चे बुड्डे सब जणासां, हाखीं नीर वगाए ॥
हाखीं दे रोजे ने धरती, सिज्जी चिक्कड़ होया ।
चिड़ू पखेरू विच आयोध्या, विलखी-विलखी रोया ॥

डंगर बच्छ् सब रम्हाए, तोता विलखी रोऐ ।
इक पखेरू ढूण-मढूणां, आई अज्ज खड़ोऐ ।।
कंगलां पुछै तोते तों हुण, के होया अज भाई ।
तोता बोलै राज ताज दे, ताईं धरत लड़ाई ।।
राज ताज माया दी खातर, माहणूं दूए मारै ।
इक दूए जो खाई निगल़ी, अपणां कम्म सुआरै ।।
राज-ताज माया दे ताईं, राम गए बणवास ।
माया दा चक्कर जां आया, दसरथ कंठ सुआस ।।
माया अपणां कम्म कमाऐ, मुहएं नईं गलाऐ ।
माह्णूं माया दे विच भुल्लै, वार-वार पछताऐ ।।
दो वर कैकेई दे पैंने थे माया दे तीर ।
दऊं वरां जो देणें ताईं, दसरथ होए अधीर ।।
राज-ताज सब माया धंधा, कैकेई के जाणैं ।
राज दुआऐ भरते जो तां, माया नईं पछाणैं ।।
कैकेई दे उप्पर माया तगड़ा जाल़ फसाया ।
माया ने ई राम गुसाईं, जो बणवास दुआया ।।
विच अयोध्या माया ने अज, पाई सुन्न मसाण ।
राजे दसरथ साह घटोया, धरती होया बछाण ।।
तोता बोलै सुण कंगलिया, सब माया दी चाल ।
विच अयोध्या अज्ज बछाया, माया अपणा जाल़ ।।

दो० सबनां दे गलाणें पर, नईं मुड़े जां राम ।
राम बजोगें दसरथें, छड्डे अपणें प्राण ।।

दो० जगत रचाया राम ने, सैह कट्टै बणवास ।
तोता बोलै माह्णुआं, छड माया दी आस ।।

राम वणें जो चल्ले कन्नें, लछमण निक्का भाई ।
सीता चल्ली संग राम दे, लोकी देन दुहाई ।।
कैकेई ने दूत भेजिया, भरत शत्रुघुन आए ।
चल्ले जालूं दौएं भाऊ, कोआं घेरे पाए ।।
अग्गें रोऐ कुत्ता पिच्छें, बिल्ले खूब रड़ान ।
नौल़ बोलियां बोलन गासें, इल्लां फेरे पान ।।

दौएं सोचन बिच्च मने दें, अवलच्छण हन माड़े ।
पुच्छन दूते दौएं भाऊ, मंगल घरें हमारे ॥
दूत न बोलै डरदा किछ वी, तिन्नी ध्हारी चुप्प ।
हत्थां झस्सै फूकां मारै, जालूं कड़कै धुप्प ॥
नानकियां तों चल्ली दौएं, विच आयोध्या आए ।
दिक्खन सारें सुन्न-सुनाटा, इल्लां घेरे पाए ॥
भरत प्यादे पुच्छण लग्गा, अज के होया भाई ।
राज दुआरें रौणक नीं अज, बज्जै नईं वधाई ॥
भरते जो लोकी दिक्खी कै, मुंह वट्टी हुन जान ।
इक दूए ने हौलें हौलें, कन्नो सन्न गलान ॥
कोई बोलै भरते दी थी विच्चो विच्च सलाह ।
माऊ पुत्तरें मिली करी, कीता बंस तबाह ॥
कोई बोलै ताईं तां अज, मुड़ी घरे जो आया ।
बड्डा भाऊ जंगल भेजी, वब्बे जो मरुआया ॥
खुसर-फुसर पिट्ठी दे पिच्छें, अग्गे मुहएं चुप्प ।
बदलें अन्दर लुक्क लुकाड़ा, खेलै जिय्यां धुप्प ॥
जे जे लोकां मुहएं आया, सबनां बोल सुणाए ।
कोई न बोलै जोरें-जोर, सबनां मुंह लुकाए ॥

दो० भरत शत्रुघुन आई कै, दिक्खन सुन्न मसाण ।
सबनां जो सैह पुच्छन, कुथूं गए हन राम ॥

सुज्झा दी नीं सीता सांजो, लछमन वीर न दुस्से ।
नीं पिता दे दरसन होए ताजें मोती सुच्चे ॥
भरते दी जां गल्ल सुणीं तां, कैकेई समझाया ।
बोलण लग्गी, 'बेटा तेरे, ताईं कम्म कमाया ॥
राजे तों मैं दो वर मंगे, तिज्जो ताईं राज ।
दूआ वर चौदह तां बरसां, राम करै वणवास ॥
चौदह वरियां लम्मा अरसा, राम मुड़ी नीं औणां ।
अपणीं निन्दर राज चलाई, असां मजे ने सौणां ॥
बेटा तेरे ताईं खेली, मैं तां सारी चाल ।
राम भेजिया विच्च वणें दे, कड्डी दुद्दें बाल ॥

लछमण सीता वी चली गए, होया सब्ब सफाया।
तेरे ताईं भरत प्यारे, तगड़ा कम्म कमाया ।।
इस कम्मे जे नईं कमान्दी, तां था उमर झमेला।
तिज्जो कदीं न झलदा तेरा, भाऊ अज्ज सुतेला।।
राज ताज दे ताईं बेटा, करना पौन्दे काज ।
अपणां राज चलाणें ताईं, मारैं पखरू बाज ।।
राजे तों गल नीं झलोई, तिन्नी जिन्द गुआई।
राम लखण सीता बण भेजे, गोली बुद्धि पाई ।।
जे मंथरा गल नईं दसदी, भरत न मिलदा राज।
राम उमर भर राजा बणदा, धरी सिरे पर ताज ।।'
कैकेई दी गल्ल सुणीं तां, भरतें गुस्सा आया।
बोलण लग्गां, हे माता तूं. पुट्ठा कम्म कमाया ।।
राज ताज सब माया धंदा, तूं के कीता माए।
इस माया दे ताईं तूं तां, इतणें पाप कमाए ।।

दो० कैकेई हैरान थी. होया था सन्ताप ।
समा मुड़ी न औए हुण, झूठे पश्चात्ताप ।।

दो० राणी मन्नै गोलिया, होऐ धूड़ सुआह ।
कम अकली दे नौकरां, होऐ राज तबाह ।।

भरत गलाऐ कालख लाई, चादर मैली कीती।
नईं सियोणीं जर-जर करदी जे धेडी कै सीती ।।
टल्ली टाकी किछ नीं करदी, जालूं बदै लंगार।
जान दवोई निक्के पत्थर, जालूं पौऐ पहाड़ ।।
माया छाया राज ताज तां, चऊं दिनां दा मेला।
मूरख माह्णूं जुलम कमाऐ, पाऐ गलें झमेला ।।
सक्के भाई दियै मुकाई, अणमुक जुलम कमाऐ।
राज ताज दी फाई चुक्की, अपणे गलें फसाऐ ।।
दूऐ जो तां दियै मुकाई, खाऐ तिसदा हक्क ।
नरके दे कूड़े विच जाई, टुट्टै सारा लक्क ।।
दूए दे हक्के जो मारी, अप्पूं ताज चढ़ाऐ ।
डुब्बै तिसदा भरिया बेड़ा, विच्च पतालें जाऐ ।।

भरत माऊ जो बोलदा, दित्ता बंस उजाड़ी ।
रघुकुल दा तूं फलदा बूटा, ढक्कों लिया उखाड़ी ॥
धिक-धिक लोकां मिज्जो करनी, थुकणां मुहएं मेरें ।
कुस कुंटा मैं मुंह लुकाणां, माए न्हेर मुन्हेरें ॥
इतणी गल्ल गलाई भरतें, खाऽदो इक्क पछाड़ ।
भरत वीर धरती परतोया, महलां हा-हा कार ॥
इक बन्नें कौसल्या रोऐ, सौमित्रा दे हौके ।
धरती उप्पर भरत पिया अज, राज तिलक दे मौके ॥
सत्रुघुन हुण दियै दिलासा, सबनां निक्का आई ।
'करमां लिखिया कदी न मिटदा, सबर करा हुण भाई ॥'
भरत पलाटे मारै धरती, राणियां शोर मचाया ।
हाखीं दे नीरे दा सागर, महलां अन्दर आया ॥

दो० **सागर ठाठां मारदा, महलां सुन्न मसाण ।**
धरती उप्पर बिलसदे नीं हुण पुच्छ पछाण ॥

सत्रुघुन भरते जो बोलै, 'भाई अकल बचार ।
नीं तां बेड़ा भरिया डुबणां, कुनीं न जाणां पार ॥
जो बीती सो गई गुआची, गल्ल न औऐ हत्थें ।
अगले वक्ते लिया वचारी, अकल बचारा मत्थें ॥'
सत्रुघुन दी गल्ल सुणीं कै, भरतें सब्द सुणाए ।
बोलण लग्गा, 'हे भाई हुण करने कजो उपाए ॥
राम बणें विच सीता लछमण, राजा धरती सुत्ता ।
मेरिया माऊ मिज्जो भाऊ, दिता तगड़ा बुत्ता ॥'
महलां दा जां रौलां सुणियां, विसुआमित्तर आए ।
मुनि बसिस्टें विच्च महलां, अपणें बोल सुणाए ॥
गुरु बसिस्टें गल्ल गलाई, 'कैकेई निरदोस ।
अकल बचारा अपणें मत्थें, सब्ब करा किछ होस ॥
मत्थे दी रेखा पर चल्लै, माह्णूं धरती आई ।
मरना जीणां ठौकर हत्थें, मेल-मिलाप जुदाई ॥
अपणीं करनी भरनी पौए, लेखा उसदे हत्थें ।
माह्णूं दी करनी पर आई, लेख लखोन्दे मत्थें ॥

माह्णूं सोचै मैं सुरियाखा, पुट्ठे कम्म कमाऐ।
ठौकर इस दी सारी करनी, अपणें कागद लाऐ॥
पाप पुन्न तां खून खराबे, सारे जान लखोई।
माह्णू दी करतूतां दे सब, नकसे जान खंजोई॥
माह्णू दी करनी जो दिक्खी, ठौकर हुकम सुणाऐ।
बाल्-बाल् जो चीरी सुट्टै, इक-इक गल्ल गणाऐ॥
अपणें जिम्में गल्ल न ओडै ठौकर बड़ा सियाणा।
जो करदा सो भरदा माह्णूं, बोलै, ठौकर भाणा॥

दो० नइं पासंग छाबियां, पूरे तिसदे तोल।
पूरा तोलै तक्कड़ी, कदीं न मारै झोल॥

दो० लेखा पूरा बोलदा, ठौकर दें दरबार।
अन्त फैसला ठौकरें, सच्ची ऐ सरकार॥

जे दसरथ ने कम्म कमाए, तिसदे अग्गें आए।
कैकेई दा दोस रती नी, गुरुएं शब्द सुणाए॥
कैकेई दा लई बहानां, नाटक ठौकर रचिया।
खिज्जी ठौकर ने जां डोरी, दसरथ दा गल् फसिया॥
परमेसर दी माया सारी, डूगा करा बचार।
कैकेई तां जाल् मंथरा, मच्छी रघु परिवार॥
पाप पुन्न दा करै नतारा, ठौकर बिड़ी बणाई।
लखण राम सीता बणवासी, दसरथ जिन्द गुआई॥
माया दा सब जाल् बछाया. ठौकर धरती आई।
दो वर बिड़िया दे दो कंडे, पाणीं डोरी पाई॥
परमेसर लीला नीं हुन्दी, कैकेई ततकाल।
सैह् वर मंगदी बणें वास न, हुन्दा दसरथ काल॥
जालूं जिस वक्तें जे होणां, तालूं हुन्दा आई।
पाप पुन्न दा छावा ठौकर, दिक्खै तकड़ी लाई॥
गुरुआं दी जां गल्ल सुणीं तां, भरते धीरज होया।
डुबदा तरिया रघुकुल बेड़ा, सागर तीरें छहोया॥

जिस गराएं उल्लू रैंह तां, इक दिन सुन्न मसाण ।
विद्वानां दा आदर नीं तां, तेथूं वी घमसाण ।।
गुरु विसिस्ट तां विसुआमित्तर, विच आयोध्या बस्से ।
ताईं तां अज इसा धरतिया, माह्णूं रस्से बस्से ।।
जे नीं हुन्दे गुरु बसिस्ट, विसुआमित्तर भाई ।
रघुकुल कोई रीत न बचदी, हुन्दी सब्ब सफाई ।।
ऋषियां-मुनियां दोएं भाऊ, थे पूरे समझाए ।
संस्कार अज्ज दसरथ दे हुण, पूरे सब्ब कराए ।।

दो० भरत विलखिया होर हुण, तिसजो था सन्ताप ।
मने च जागी भरत दें, राम मिलण दी आस ।।

भरत गलाऐ, 'मैं समझाणां, अपणां भाऊ जाई ।
राज-ताज मैं नीं सम्हालां, मैं तां निक्का भाई ।।
अपर्णे मुहएं देणीं मैं तां, इक-इक गल्ल गलाई ।
रघुबंस दी रीत न टालां, राम दी अज दुहाई ।।
गुरुआं ने समझाया बोले, राम लखण नीं औणें ।
चौदह्‌ बरियां बणें च कट्टन, धरती पान बछोणें ।।
राजे दी आज्ञा मन्नी कै, राम-राम रघुराई ।
चौदह्‌ वरसां बणें बासा, रघुकुल रीत बचाई ।।
गुरुआं दी गल्लां पर भरतें, नीं कीता विसुआस ।
राम मिलण दी आज्ञा मंग्गी, होया बड़ा उदास ।।
गुरु बिसिस्टें आज्ञा दित्ती, होए भरत तियार ।
आयोध्या दी लोकी सारी, आई भरते आल ।।
लोकी बोलै, 'राम लियोणें असां जंगलें जाई ।
भुल-चुक्का दी माफी मंग्गी, देणें सीस लुआई ।।'
परजा ही जां गल्ल सुणी तां, भरतें बचन उचारे ।
बोलण लग्गा, होन राजियां, परजा बोल पियारे ।।
परजा इच्छा सिरें चढ़ाणीं, रती नईं इनकार ।
परजा इच्छा राज हुकम ऐ, भरत न सकदा टाल़ ।।'

भरते दी जां गल्ल सुणीं तां, परजा खुसी मनाई ।
जय-जय कारे विच आयोध्या, जिय्यां अज्ज चढ़ाई ।''

बच्चे बुड्डे सब्ब जणासां, अज्ज घरां तों आए ।
लंगड़े रोऽल् नीं चलोऐ, सैह्मनें पछताए ।।

विच्च आयोध्या गर-गर होई, गासें वद्दल छाया ।
परजा दा दल राम मिलण जो, इक दम उट्ठी आया ।।

सो० छम-छम नीर बहान, गल् लमकाई डंग्गरे ।
जय-जय भरत सुजान, परजा सारी बोल्दी ।।

षष्ठ सर्ग

सो॰ धरती योग वियोग, ठौकरें मेल् कराए ।
करम विछोड़े सोग, मत्थियां लेख लखाए ॥

दो॰ आसा तृस्ना नी मिटै, करै योग संयोग ।
ठ़ौकर अप्पूं मेल्दा, अप्पूं करै वियोग ॥

इक वक्खें तां राम मिलण जो, परजा होई त्यार ।
दूए वक्खें राम लखण थे, सीता सरयू पार ॥
सरयू दा जल छाल्ी मारै, गज-गज ऊची जाई ।
सीता दा मन धक-धक डोल्ै सरयू बन्ने आई ॥
पाणी छुल्लै धरती पासै, पैर राम दे धोऐ ।
सीता डरदी मारी कंडें, जाई दूर खड़ोऐ ॥
केवट ने जां वन्ने आई, अपणीं बेड़ी पाई ।
राम गुसाईं जो दिक्खी कै, केवट जिन्द सुकाई ॥
केवट दिक्खै पैरां पासें, मूंडें तीर कमाण ।
थर-थर कंब्बै हत्थां बन्ही, केवट लगा गलाण ॥
केवट बोल्ै, 'मेरी किस्ती, लकड़ी दी ऐ भाई ।
मेरे बच्चे पुस्तां तो ई, खान्दे इसा कमाई ॥
तेरे पैरां छूऐ पत्थर, जादू टूणा होऐ ।
पत्थर विच्चा माह्णूं निकली, आई झट्ट खड़ोए ॥
किय्यां रखणें पैर इमा पर, किस्ती माह्णूं बणना ।
मेरे टबरें हे रघुराई, भुख तरिहायां मरना ॥
माह्णुआं दे पत्थर बणाएं, किस्ती टोटे होन ।
मेरे बच्चे छम-छम करदे, इसजो दिक्खी रोन ॥'

राम चन्द्रां वोल उचारे, केवट था समझाया ।
पैरां दा तां असर न होऐ, धूड़ी असर सुणाग्रा ।
बोलण लग्गे पैर पैर हन, धूड़ी असर करान ।
पैरां दी धूड़ी धोणें दा, केवट करैं समान ।।
पैरां दी धूड़ी धोई कैं, दित्ती मैल गुआई ।
निर्मल होया मन केवट दा, बेड़ी तिस मंगाई ।।

दो० राम चरण दी ध्हूड़ तों, होया बेड़ा पार ।
सणें कटुंबें केवटें कीता अज उद्धार ।।

दूएं बन्नें राम ने मिलण, आए राज निषाद ।
परजा सारी कन्नें आई, गासें गूंजे नाद ।।
भीलां दा राजा निषाद हुण, लैण राम जो आया ।
परजा जय-जयकारे बोलैं, बणें च बोल सुहाया ।।
जंगल दे सब जीव-जन्तु हुण, मिलण राम जो आए ।
मोर पपीये करन कलोलां, अपणें बोल सुणाए ।।
कोयल रुक्खां उप्पर अपणां, कू-कू सब्द सुणाऐ ।
चिड़ू-पखेरू विच्च बर्णों दे, मिट्ठे गीतां गाऐ ।।
हिरनां दे हुण निक्के बच्चे, वन्ह कतारां आए ।
रुक्खां उप्पर नौएं कुंबल, करदे अपणें साए ।।
फुल्ल बर्णों दे लैन हिलोरां, मस्ती सबनां छाई ।
जंगल दी हुण पतझड़ मुक्की, अज्ज वसन्त मनाई ।।
जीव जन्त कनैं सब पखेरू, आई गीत सुणान ।
जीब बणें दे अपणीं भासा, विच जय राम गलान ।।
अज निषाद दी धरती उप्पर, किछ दिन कट्टे आई ।
राजधानियां पैर न पाया, जंगल कुटी बणाई ।।
जगा जगा दे भील बणें विच, मिलण राम जो आए ।
जंगल दे विच मौज बहारां, भीलां मेले लाए ।।
विच्च वर्णों दे मंगल होया, लोकी सब्ब गलान ।
कन्द-मूल सब लई बर्णों दे, राम जो अज चढ़ान ।।
भिल्लणियां सीता जो दिक्खन, विच्च जंगलें आई ।
बोलन इतणां कोमल पिड्डा, कैंह जंगलें आई ।।

कूल् हत्थां पैरां दिक्खी, सब्बो ई पछतान ।
सीता दे चरनां पर आई, अपणां सीस नुआन ॥

दो० किछ दिन कटटे राम ने, हुण निषाद दे पास ।
भिल्लण थी इक भगतणी, राम मिलण दी आस ॥

दो० राम जपै निसकपट तां, तिसजो दरसन होन ।
भगती राम पछाणदे, अप्पूं पापां ध्होन ॥

राम दे ताईं सुणीं भिलणी, खुसिया विच फणसोई ।
मिट्ठे-मिट्ठे बैर पछाणीं, रक्खे तिन्नां ध्होई ॥
चऊं घड़ियां दे तड़के उठी, बैरां लैणां जाऐ ।
अप्पूं चक्खै इक-इक बैरे, चक्खी ढेर लगाऐ ॥
मिट्ठे-मिट्ठे बैर चुगी कै, तिन्नां कोठा भरिया ।
किट्ठा कीता सब किछ तिन्नां, जे किछ होया सरिया ॥
अपणें बैरां संझ-भियागा, भिल्लण दिक्खै जाई ।
भगती पूरी होई भिल्लण, राम मनें जतलाई ॥
छेड़ा पर हुण दौड़ै दिक्खै, भिल्लण रती न सौऐ ।
धड़कै जी धुड़-धुड़ करदा हुण, पत्तर धरती पौऐ ॥
सोचण लग्गी इस रस्तें जां, राम गुसाईं जाणां ।
मैं उट्ठी कै हार परोई, गल्ें राम दें पाणां ॥
कदीं तां बोलै मनें अप्पणें, मैं गरीब हां भाई ।
'राम राजियां दे घर' सोची, मनें गई घबराई ॥
अणमुक सोचां सोचै अज तां, भिल्लण पागल होई !
दिक्खै दूरे तें रस्ते जो, ऊची जगह खड़ोई ॥
न सैह खाऐ न सैह पीयै, नीं निन्दर नीं राम ।
अट-पट बोली बोलै भिल्लण, राम-राम हे राम ॥
राम नाम दा जप जाई कै, राम दे कन सणोया ।
विच्च हवा दें गल्ल उड़ी तां, गासें गुंबद होया ॥
भाव भगतिया दिक्खी आई, गुंबद दी आवाज ।
अपणें भगतें राम पछाणैं, अप्पूं करदा याद ॥
चुगली मैंजर चोरी छप्पा, हौल्ें-हौल्ें होऐ ।
भगती बिन्है तीर काल्जे, राम दे कन सणोऐ ॥

दो० भगत राम दे आसरें, जय-जय राम सुजान ।
भिल्लण पासें राम दा, होया आई ध्यान ॥

जितणी जिसदी भगती होऐ, तितणां ई फल पाऐ ।
ठौकर वैकुण्ठे तों आई, भगते दिक्खण जाऐ ॥
परमेसर चली के औऐ, भगत करैं विसराम ।
नेईं लोड़ जाणें दी तिसजो, जिसदें घट-घट राम ॥
भगती दिक्खी भिल्लण दी तां, खुलियां तणियां आए ।
भीलां दे राजे जो इक दिन, राम बोल समझाए ॥
बोलण लग्गे, हे राजा हुण. भगती पूरी होई ।
जंगल अन्दर भिल्लण दिक्खै, मिजो दूर खड़ोई ॥
इक्क दिले दी दूए कन्नें. जुड़ियो पक्की तार ।
मन चित लाई याद करै तां, मिलदा ऐ करतार ॥
बन्दे दी वी जिसदे कन्नें, पूरी भगती होऐ ।
माह्णू वी परमेसर साईं, अग्गें झट्ट खड़ोऐ ॥
धरती दे जीबां विच होऐ, परमेसर दा अंस ।
माड़े दा माड़ा ई होऐ, खरा खरे दा बंस ॥
सीता राम लखण चल्ली कै, भिलणीं पासें आए ।
भिलणीं दे मन गिया जताई, कोएं सब्द सुणाए ॥
हार लई कै निकली भिल्लण, रस्ते कंडें आई ।
गद-गद कण्ठ गलाऐ गल्लां, हार राम गल पाई ।
बोलै भिल्लण कई जुगा दे, मैं तां पाप धुआए ।
धन-धन मेरे भाग राम अज अप्पूं उट्ठी आए ॥
होर कोई नीं जाणीं सकिया, लए पछाणीं राम ।
भिल्लण दी परमेसर कन्नें, इक्क जिन्द इक जान ॥
भिल्लण दौड़ी दौड़ी अपणें, छप्पर अन्दर आई ।
नौईं बुणियों पन्द नकाली, अंगण विच्च वछाई ॥

दो० इक बन्नें थी भिल्लणीं, दूएं सीता राम ।
भिल्लणीं दा अंगण था, वैकुण्ठे दा धाम ॥

दो० वैकुण्ठे दे देवते, भिल्लण दे घर जान ।
अवतारी कै धरतिया, भगतां पाप धुआन ॥

भिल्लणीं बोलै युगां-युगां तों, किट्ठे कीते आई।
मिट्ठें-मिट्ठे (बैंर) राम मैं, रक्खे सब्ब सुकाई।
भरी टोकरू बेरां दे हुण, भिल्लणीं आणी रक्खे।
ढेर मारिया विच्च अंगणें, लछमण दिक्खी थक्के।।
दौड़ी-दौड़ी भरी छाबड़ू, भिलणी वैर लियोऐ।।
इक-इक पाप तिसादा सारा, अपणें आप धियोए।।
अंगणें चादर हुण बछाई, बैरां मारे ढेर।
बोलै भिल्लण खा राम तूं, रती करैं मत देर।।
इक-इक वैरे चुक्की चक्खी, लगी हत्थ पकड़ाण।
सणें गुठलियां जूठे वैरां, राम लगे हुण खाण।।
भाव भगतिया सीता दिक्खै, अपणां मुंह लुकाऐ।
लछमण दिक्खै भिलणीं पासे, विच्च मनें पछताऐ।।
भिलण दे अंगणें विच लग्गा, अज वैरां दा ढेर।
भील वणें दे दिक्खण आए, रती न कीती देर।।
चऊं पासियां लोकी दिक्खन, लछमण सीता राम।
भिलणीं दे घर अप्पूं आए, वैर खाण भगवान।।
किछ घड़ियां विच्च राम चन्द्रा, सारा ढेर मुकाया।
इक-इक जूठा वैर भिल्लणीं, दा मुहएं विच पाया।।
भिलणीं दे घर अणमुक सोभा, जमघट लग्गा भारी।
जूठे वैर राम खाई कै, अज भिलणी थी तारी।।
सीता सोचै भिलणी दा अज, सारा पाप धियोया।
भिलणीं दी भगदी दिक्खी कै, लक्षमण अज संगोया।।
मोह जाल जो छड्डी माहूणू, राम नाम चित लाऐ।
तिसदे जूठे वैरां ठौकर, सणें गुठलियां खाऐ।।

दो० **लोक उसारन माड़िया, भगतां दे धन राम।**
पापी दा मन तड़फदा, भगत खुमारी नाम।।

भिलणीं दे पापां जो ध्होई, पंचवटी विच आए।
कुटी बणाई ऊचे टिल्लें, आसण राम न लाए।।
वारी-वारी सब पखेरू, कुटिया फेरे पान।
मिरग बणें दे राम लखण जो, सीता दिक्खण जान।।

ऊचे टिल्लें राम गुसाईं, अपणीं कुटी बणाई।
कुटिया अग्गें सीता ने हुण, फुलवाड़ी इक लाई॥
फुल्लां उप्पर भौरे आई, अपणां गीत सुणाऽन।
गुण-गुण करदे सीता जो हुण, कोई गल्ल गलाऽन॥
कन्द मूल लछमण आणी कै, सीता राम खुआऐ॥
खबरदार धनुषे जो चुक्की, रातीं दिनें गलाऐ॥
लछमण दा जत पूरा भाई, धनुष-बाण नित धारै।
रात दिनें नीं सीऐ लछमण, पैऽरेदार पुकारै॥
पंचवटी विच डेरे लाए, लछमण सीता राम।
विच आयोध्या परजा बोलै, जय जय भरत सुजान॥
सारी परजा भरते कन्नें, अज्ज बणें जो आई।
जोरें जोरें बोलन सारे, राम! राम रघुराई॥
जंगल होया धूड़-धूड़ैना, परजा चल्ली सारी।
गासे उप्पर धुंद उडी कै, छाई बदली काली॥
बच्चे-बुड्डे कई जणासां, पैदल चल्ले भाई।
धरती दी हुण धूड़ उडी कै, उप्पर अंबर छाई॥
बणें च होया न्हेर गुबारा, लछमण करै बचार।
कुस राजे दा चढ़ी कै आया, सेना दल्ल अपार॥
लछमण ने धनुषें दे उप्पर, पैने तीर चढ़ाए।
कुटिया विच्चा राम निक्कली, लछमण पासें आऐ॥

दो० लछमण मन विच सोचदा, राजा ऐ बलवान।
धूड धुड़ैना दिक्खया, कस्से तीर कमान॥

दो० छैड़ा उप्पर कदी नीं, कसिए तीर कमान।
पता नईं कुस रूप विच, मिलणे हन भगवान्॥

भरते दे दूते ने आई, सारी गल्ल सुणाई।
भरत सत्रुघुन मिल्लण आए, कन्नें परजा आई॥
दूते दी जां गल्ल सुणीं तां, लछमण करै बचार।
जे भरते ने मिलणा था तां, कजो चढाई चाढ़॥
सेना दा दल कजो लियोन्दा, हाथी घोड़े रत्थ।
ली लशकर जो दिक्खी मिज्जो, मने च पौऐ शक्क॥

जे मिलणा था तिन्नी सांजो, किल्ला मिलदा आई।
कजो लियोन्दी परजा सारी, लछमण गल्ल गलाई ।।
माऊ ने बणवास दुआया, भरते दिया सलाई ।
किलियां दिक्खी जंगल अन्दर, आई करै चढ़ाई ।।
भरते जो मैं सबनां गल्लां, दा अज मजा चखाणां ।
तीरे कन्नें तिलक चढ़ाई, राजा अज्ज बणाणां ।।
अज बठह्ालां तख्ते उप्पर, राजा दियां बणाई ।
नीत बुरी जे भरतें, होऐ, धरती दियां सुआई ।।
इतणीं गल्ल गलाई लछमण, सांबै तीर कमाण ।
लछमण दे गुस्से जो दिक्खी, राम लगें समझाण ।।
राम गलाया, 'सुणैं लछमणां, भरत धरम दा थम्म ।
कदीं न करदा मेरा भाऊ, इतणां होछा कम्म ।।
मन दे अन्दर धीरज धर तूं, किछ तां बुद्ध वचार ।
निरी कलपना उप्पर अपणें, मत कस्सैं हत्थियार ।।
धरमे दी धुर भरत प्यारा, धरती धुरी खड़ोती ।
विच्च पहाड़ां हीरे मिलदे, डूगे सागर मोती ।।
हीरे मोती दी तां जौरी, करदे किच्छ पछाण ।
मोती खाई जिन्द बचै तां, हीरा हेठ वछाण ।।

दो० धरती दी चिक उग्गलै, साधू चोर फकीर ।
रिस्ते सच्चे खून दे, करदे सच्ची पीड़ ।।

हाखी मीटी रस्ता चलिए, ठेडे लग्गन भाई ।
कन्नां सुणिएं हारवीं दिखिए, गल्ला दिलें जमाई ।।
राम दे बचना सुणीं लछमण, दिलें दलासा आया ।
किछ घड़ियां विच परजा कन्नें, भरत बणें विच आया ।।
राम गुसाई जो दिक्खी कै, चरनां सीस नुआई ।
हाखी दे रोजे ने भरतें, धरती धुरी नुहाई ।।
चुक्की कै हिक्का ने लाया, भाई भरत सुजान ।
जय भरत ! जय राम ! वणें विच्च, लोकी सब्ब गलान ।।
चढ़ी देवते अज्ज बमानां, दिक्खन भरत मलाप ।
लछमण दे सब संसे न्हट्ठे, होया हुण विसुआस ।।

भरतें विलखी बोल उचारे, 'राम-राम रघुराई।
मिज्जो छड्डी विच आयोध्या, वणें च धूणीं लाई ।।
कुस जन्मे दे भुगता करना, मैं हुण अपणें पाप।
राम वियोगें डग-डग कंब्बां, मिज्जो ऐ सन्ताप ।।
भरते दी जां गल्ल सुणीं तां, सैह राम समझाया।
बोलण लग्गे, 'भरत प्यारे, सब ठौकर दी माया ।।
ठौकर अपणां दई भलेखा, ठगें माह्णुआं आई।
राज-ताज तां जंगल-मंगल झूठे सारे भाई ।।
माह्णूं अपणें करमां भुगतन, धरती उप्पर आई।
ठौकर खिज्जै अपणीं रस्सी, माया जाल वछाई ।।
माह्णूं पुट्ठै कम्म कमान्दा, परमेसर निरदोस।
अपणें करमां जालूं भुगतै, माह्णूं औऐ होस ।।
ताज चढ़ाई हुकम चलाऐ, माह्णूं अन्हा होई।
तख्ते बदलें तख्ता मिल्लै, जान्दी जिन्द घटोई ।।

दो० सिर चढ़ाई राज गल्ल, मैं कटणां बणवास।
राज करैं हुण भरत तूं, कजों करैं सन्ताप ।।

दो० माह्णूं अपणां धरतिया. नईं नभाऐ फरज।
सिरें रैह तिसदें सदा, अणमुक्कां दा करज ।।

राम दी जां गल सुणी इतणी, होया भरत अधीर।
सुध-बुद्ध खोई किछ न सज्झै, डोलै हाखीं नीर ।।
भरते दा मन माछिया साईं, विजन पाणिएं तड़फै।
जिय्यां गासें उड़ै पपीया, पी-पी करदा कल्पै ।।
खूह भणैन्दां विच्च सागरें, नईं पपीएं पाणीं।
राम वियोगें डग-डग डोलैं, भरतें जिन्द नमाणीं ।।
आल राम दे रोई परजा, विलखण लग्गी सारी।
'हे राजा ! कैंह सुध बसारी, बोलन बारी-बारी ।।'
परजा दी जां गल्ल सुणीं तां, राम बोल संवारे।
बोलण लग्गे, 'राजे जो हन, परजा वचन प्यारे ।।
जिस वक्ते दा जेऽड़ा राजा, उस दा हुकम अटल।
परजा जो तां मनणां पौऐ, उस राजे दी गल्ल ।।

जे गल्ल न परजा मन्नैं तां, परजा राज दरोई ।
देस द्रोई बोलन लोकी, तिसजो सब्ब खड़ोई ॥
राज आज्ञा सिर भवूती ऐ, परजा लोक प्यारे ।
देस द्रोई मैं नीं बणियां, बोल राम संवारे ॥
दसरथ राजा मैं परजा था, मिज्जो ऐ बणवास ।
राजे दी आज्ञा नीं मन्नां, तां भारी सन्ताप ॥
राजे दी आज्ञा सिर मत्थें, मैं परजा दा अंस ।
दसरथ राजे दी मैं परजा, पिच्छें उस दा वंस ॥
राजे दी आज्ञा नीं मन्नैं, तां परजा दा नास ।
नीं समल्होऐ कोई कुथीं, घर-घर पौऐ लास ॥
जे राजे दी नई मनोऐ, परजा अन्दर गल्ल ।
खिल्ले खेतर पौन उजाड़ीं, हलिएं टुटटै हल्ल ॥

दो० परमेसर दा रूप ऐ, जिसजो चढ़िया ताज ।
जेथूं परजा विलखदी कुत कारी हन राज ॥

इतणी गल गलाई राम ने, परजा जो समझाया ।
भरत करै हुण राज अयोध्या, अपणां बचन सुणाया ॥
दसरथ राजे दी आज्ञा ऐ, भरत अयोध्या राज ।
आज्ञा दे अक्खर जो मनैं, जीन्दा रैह समाज ॥
राजे दी आज्ञा मोड़ी तां, गल नीं समल्होणीं ।
द्वापर सतयुग कलियुग त्रेता, कन्नो सन्न गलोणीं ॥
राज हुकम फेरै जे कोई, अंबर होऐ लाल ।
सब जीवां दा धरती उप्पर, औऐ इक दिन काल ॥
राज हुकम ऐ पहलैं भाई, गल्ला कर बचार ।
मनें अपणैं हुण दे दलासा, इस माया जो मार ॥
इतणीं गल गलाई राम नें, भरते जो समझाया ।
लई खड़ौआं राम दियां हुण, मुड़ी अयोध्या आया ॥
राम खड़ौआं तख्तैं रक्खी, भरतें कीता राज ।
धरती आसन लिया बछाई, नईं चढ़ाया ताज ॥
राज भरत दा विच्च अयोध्या, राम बणै विच वासा ।
राज पलटदें देर न लग्गै, होऐ पुट्ठा पासा ॥

रात दिनें दी इक छिन होऐ, रातीं होऐ सवेर ।
घड़िया-घड़िया पासे पलटन, रती न लग्गै देर ।।
पींग हुलारे खाऐ इक दिन, टुट्टै धरती आई ।
कजो चढ़ाऐ इतणीं ऊची, डुब्बै डूगी खाई ।।
खरे दिनां विच कदी न करिए, आपे दा अभिमान ।
सरदी गरमी धुप्प छौं जो, झलिए इक्क समान ।।
हुण राम चन्द्रां विच कुटी दे. अपणां आसन लाया ।
ध्हुप्प-छौं दा पलटा सारा, सीता जो समझाया ।।

दो० ऋषियां दा लऊ सीता, कुटिया करै निवास ।
मिट्ठी बाणीं कोयला, मेटै भुक्ख पियास ।।

दो० पसु पक्खरू पंचवटी, राम दरसनां पान ।
धन चिक्क तू पंचवटी, आए **राम सुजान ।।**

राम लखण दी सोभा न्यारी, ऋषियां भेस बणाए ।
धनुष वाण हत्थें दौआं दें, पिट्ठी तरकस पाए ।।
इक्क दिन घुमदी सरूप नखा थीं, कुटिया पासें आई ।
व्याह करां इन्हां दौआं ने, मनें तिसा दें आई ।।
कदीं खड़ोऐं कुटिया लागें, छैल़ वणीं मटकोऐ ।
दिक्खै राम लखण जो दूरें. सीता आल खड़ोऐ ।।
सोचै अपणें मन दे अन्दर. इसा जणासा मारां ।
दियां मुकाई करी ढेड़ल़, अपणां कम्म सुआरां ।।
हौल़ें-हौल़ें अन्दर आई, तिन्नां नैन तरेरे ।
पुच्छण लग्गीं सींता तों हुण, के लगदे हन तेरे ।।
राम गुसाईं पासें दिक्खीं, सीता गल्ल गलाई ।
'पति देव हन मेरे लागें, बैंठा निक्का भाई ।।
सीता तों हुण भिरी पुच्छदीं, 'वणें तुसां हन आए ।
सुन्दर गबरू छैल-छबीले, जंगल डेरे लाए ।।
दूर बैठियो राम लखण थे, सीता कुटिया किल्ली ।
सरूप नखा हुण सीता लागें दुद्दे पाऽरें विल्ली ।।
सरूप नखा दे सब्द सुणें तां, सीता भिरी गलाया ।
बोलण लग्गी हुकम पिता दा, मत्थें असां चढ़ाया ।।

चौदह बरियां बणें च बासा, भिरी घरे जो जाणां ।
हुकम बड्डियां दा मन्नी कै, मत्थें सिरें चढ़ाणां ।।
स्रूप नखा दी गल्ल सुणीं तां, लछमण कुटिया आया ।
रावण दी भैणां जो दिक्खी, मत्था बुरा बणाया ।।
पुच्छण लग्गा तूं कुण आई, कुण मापे हन तेरे ।
विच्च जंगलें किल्ली घुम्मैं, अज तूं बड़े सवेरे ।।

दो० स्रूपनखा हुण लछमणें दिक्खी बोले बैन ।
मटकोई सैह अणमुक, फेरे अपणें नैन ।।

लछमण जो दिक्खी कै तिन्नां, सौ-सठ नखरे कीते ।
अपणें फटियो ज़ख़म जिगर दे, लछमण अग्गें सीते ।।
कदी सैह बाऽईं दी बंग्गां, छण-मण छण-छणकाऐ ।
लछमण पासें दिक्खी जीव्हा दन्दां हेठ दवाऐ ।।
लम्मे सुस्कारां हुण छड्डै, जिय्यां रोन वियोगी ।
जां बैंदे जो दिक्खी उट्ठै, कई दिनां दा रोगी ।।
लछमण पासें दिक्खै तिरछी, अपणीं नजर चुराई ।
लछमण सोचै मनें अप्पणें, अज्ज मुसीबत आई ।।
अणमुक पहबट कीते तिन्नां, दन्दां ओठ दवाए ।
लछमण पासें दिक्खी हस्सी, अपणें बोल सुणाए ।।
बोलण लग्गी, 'हे बणवासी, स्रूपनखा ऐ नाम ।
मेरे भाई इस जंगल दे, षर दूषण सुलतान ।।
भैण रावणें दी मैं जिसदा, सब कूटां विच राज ।
गढ़ लंका दा राजा भाई, सिरें चढ़ाऐ ताज ।।
इस बणें विच्च राज हमारा, धरती सारी साड़ी ।
मटकोई कै लछमण लागें, तिन्नां गल्ल उचारी ।।
लछमण दिक्खै स्रूप नखा जो, अपणें मन सरमाऐ ।
सीता दिक्खै लछमण पासें, अपणां मुंह लुकाऐ ।।
स्रूप नखा लछमण जो दिक्खी, रई सकी नीं चुप्प ।
बगै पसीनां सारे पिंडें, जालूं कड़कै ध्हुप्प ।।
बोलण लग्गी हे बणवासी, निरा कुआरा सुज्झैं ।
गल्ल मनैं दी मेरी सारी, तूं तां पुरी बुज्झैं ।।

स्रूप नखा ने गल्ल करदियां, कोई सरम न कीती ।
लगी भखाणां अग्गी भरियो, लाल-गुलाली गीठी ।।

दो० आसे-पासे न दिक्खै, काम बड़ा बदकार ।
मारै बाणां पैनियां, माह्णूं खाऐ मार ।।

दो० 'काम देव दे मणकियां. माला चमकै रंग ।
माह्णू पाऐ गले विच, हर दम होऐ तंग ।।

लगी हस्सणां खिड़-खिड़ करदी लछमण पासें आई ।
बोलण लग्गी, हे बणवासी !' मेरी जिन्द सुकाई ।
इतणीं गल गलाई दन्तणीं, सीता पासें आई ।
सोचण लग्गी इसा जणासा. लैनी झट-पट खाई ।।
सीता जो मारी कै मेरा, रस्ता खुल्ला होणां ।
दऊं साधुआं मेरे अग्गें, पिच्छें आई खड़ोणाँ ।।
इस गल्ला जो सोची तिन्नां, अपणां खेल रचाया ।
सीता उप्पर वार करन जो, अपणां हत्थ वधाया ।।
करतूतां जो दिक्खी कै हुण, लछमण होए लाल ।
बोलण लग्गे, 'खबरदार ! हुण, आया तेरा काल ।।
इतणी गल्ल गलाई लछमण, चुकिया पैना तीर ।
स्रूप नखा दे नक्के उप्पर, लाई इक्क लकीर ।।
नक्क-कन्न हुण छिल्ले लछमण, दुर्गत खरी वणाई ।
स्रूप नखा कुटिया तों निकली, विच्च वणें दे आई ।।
चाल-चलन जिसदा ऊचा ऐ, सैह न खाऐ मारा ।
कई न्हेरियां झक्खड़ झुल्लन, ट्टटै नईं पहाड़ ।
स्रूप नखा दी गल्ला दा हुण, लछमण असर न कोई ।
जैह्र न चढ़दा चन्नण रुक्खें, रैह्न्दे सप लमकोई ।।
गन्दा माह्णूं गन्द खलारै, अपणें पाप छुपाऐ ।
आंड-गुआंडे दिऐ लवेड़ी, छिट्टू सबनां लाऐ ।
अपणां पाप लुकाणें ताईं, खर दूषण कछ आई ।।
स्रूप नखा खर-दूषण अग्गें, दित्ती खड़ी दुहाई ।।
बोलण लग्गी, 'मरी नईं मैं, बाकी सब किछ होया ।
विच्च वणें दे मेरा भाई, सत्त भंग अज होया ।।'

दो० रोई बिलखी दन्तणीं, खादी इक्क पछाड़ ।
धाड़ो धाड़ पटोइकैं, पुट्टे अपणें बल ॥

स्रूप नखा षर-दूषण अग्गें, रोई-रोई बोलै ।
जिय्यां तकड़ी मार झुटारा, बणियां सौदे तोलै ॥
अपणें छावे लै बदहाई, दूए होखे रक्खै ।
स्रूप नखा अपणीं गल्ला जो, दरबारे विच दस्सै ॥
बोलण लग्गी मैं किल्ली थी, बणवासी थे दोऽ ।
विच्च बणें दें घेरी मिज्जो, बोलन जरा खड़ोऽ ॥
जां मैं दौड़ी दौएं दौड़े, घोल घुलाटी होई ।
जोरें जोर रड़ाई मैं जां, पेस न चल्ली कोई ॥
जालूं मैं जां गल्ल गलाई, 'षर दूषण दी भैण ।
नक-कन मेरे तिलछी बोलन, तूं ता पूरी डैण ।।'
जान बचाई न्हट्ठी मैं हुण, आई विच्च दरबार ।
मोड़ा बदला मेरा भाई, मेरा करा उद्धार ॥
स्रूप नखा दी गल्ल सुणीं तां, षर-दूषण विलखाए ।
सारी सेना किट्ठी कीती, दानव सब्ब सदाए ॥
कई खरोणीं दानव सेना, बणें च किट्ठी होई ।
छहूड़ उडी धरती दी सारी, जाई अंबर छहोई ॥
षर-दूषण भट दानव योधे, गए करोधें आई ।
भैणा दा बदला लैणें जो, कीती अज्ज चढ़ाई ॥
भाले बुगदर तीर कमानां, आए योधे कस्सी ।
स्रूप नखा सेना जो दिक्खी, मनें अप्पणें हस्सी ॥
चऊं पासियां काले दानव, वणें च हल-चल होई ।
न्हठी गए सब जीव बणें दे, दिक्खन दूर खड़ोई ॥
दिन चढ़दे नें दानव सेना, कुटियां पासें आई ।
लछमण पुच्छै राम गुसाईं, अज के होया भाई ॥

दो० जीव जन्त सब दौड़दे, आए दुम दबाई ।
गासें बोलन पक्खरू, चीं-चिहाड़ा पाई ॥
न्हेर गुबारा धरतिया, काला होया गास ।
झक्खड़ झांजा न्हेरियां, दानव लैन सुआस ॥

सूरज दी रस्मां दे उप्पर, काला बद्दल छाया ।
धरती हिल्ली धक्के लग्गे, जीव-जन्त घबराया ॥
हा-हा कार बणें विच होई, रुख-बूट सरन्हाए ।
ऋषि-मुनि दौड़े हुण सारे कुटिया पासें आए ॥
ऋषियां राम-लखण दे अग्गें, दित्ती अज्ज दुहाई ।
बोलन सारे खर-दूषण ने, कीती बणें चढ़ाई ॥
खून-खराबा जंगल होया, कोई रिया न अन्त ।
जगा-जगा दे किट्ठे होए, अणमुक सारे दन्त ॥
जीव-जन्त किछ खाऽदे अद्दे, न्हट्ठे जिन्द बचाई ।
ऋषियां-मुनियां दन्त पछाड़ी, गए कच्चियां खाई ।
ऋषियां दे लऊए ने अज्ज, गए भरोई नाल ।
लियां बचाई सांजो आई, दन्त बड़े विकराल ॥
ऋषियां दी जां गल्ल सुणीं तां, तीर तरकसां पाई ।
जटां बन्हियां सस्तर सांबे, लक्कें डोरी पाई ॥
लई कमाना राम लखण ने, कीती इक टंक्कार ।
थर-थर धरती झोले खादे, कंबे रुक्ख पड़ाड़ ॥
धनुषां दी टंक्कारा कन्नें, दानव बोले होए ।
धरती डोली—डग-डग सारी, दानव सब परतोए ॥
चऊं पासियां कुटिया घेरा, खर दूषण जयकार ।
दानव सारे जोरें बोलन, सीता आई बाह्‌र ॥
जनक सुता दानव दल दिक्खी, गई अज्ज डफलोई ।
अक्खें-वक्खें काले दानव धरती गई भरोई ॥
गज-गज लम्मे दन्द कुसी दे, सत गज लम्मे सिंग्ग ।
न्हेर गुबारा चऊं पासियां, सीता कंब्बी जिन्द ॥

दो० दिक्खी दानव धरतिया, सीता अज्ज लचार ।
राम लखण दे तीर थे, गासें अग्गी गार ॥

कई खरोणी दानव सेना, राम लखण दो भाई ।
लस-लस करदे तीर चलाए, धरती गास बणाई ॥
काले दानव इक्को वारी, धरती पर परतोन ।
तीरां दी मारा नीं झल्लन, कई वरी बदलोन ॥

तीरां दी दांनव सेना पर, होई इक्क बुछाड़ ।
धरती उप्पर दानव सुन्ने, जिय्यां कई पहाड़ ॥
रुक्ख-बूट जंगल दे सारे, लउएं गए भरोई ।
लहएं दे गारे ने धरती, चिक्कड़ सारी होई ॥
लोथां लउए उप्पर तरियां, फिरै जंगलें काल ।
धरती सारी गच-गच होई, लउएं होई लाल ॥
गिद्दड़ कुत्ते लोथां ध्हीड़न, इल्लां घेरा पाया ।
खर दूषण दी सेना दा अज, होया सब्ब सफाया ॥
किछ घड़ियां विच दानव सेना, धरती सुत्ती सारी ।
आई देवते गासें दिक्खन, अपणीं चढ़ी सुआरी ॥
राम लखण ने धनुषां उप्पर, पैंने तीर चढाए ।
खर दूषण दे सीस उतारी, धरती देह बछाए ॥
पंच वटी दा इक-इक दानव, धरती लम्मा पाया ।
ऋषियां ने जय कारे बोले, राम लखण गुण गाया ॥
तोता बोलै, 'सुण कंगलिया, राम नाम गुण गाऽ ।
तू वी अपणां हार परोई, राम गले विच पाऽ ॥
खर-दूषण ने नईं पछाणे, सन्मुख आए राम ।
वाझी करमां नीं पछणोन्दे हाखीं टपला खान ॥
जोर जुआनी माया पड़दा, हाखीं अग्गें छाऐ ।
ताईं माहणू लेई सस्त्रां, ठोकर युद्ध रचाए ॥

कुं० **खरे बुरे दी परख नीं होऐ इक दिन हार ।**
तीरां मारैं अंबरें, खाऐ माहणू मार ॥
खाऐ माहणू मार, ठोकरे नईं पछाणै ।
परमेसर अवतार, होऐ तिस जो न जाणै ॥
बोलै हुण 'संसार' एह पकड़ै तेज छुरे ।
दस्सै ताकत जोर, नीं पछाणै खरे बुरे ॥

सप्तम-सर्ग

कुं० फुलंग इक्क अग्गी दी, फूकै पिंड पड़ेस ।
जिसा जुणासा ठौर नीं, बदलै अणमुक भेस ॥
बदलै अणमुक भेस, डराऐ लोकां रोई ।
नीं चल्लै जां पेस, करै नखरे मटकोई ॥
बोलै कवि 'संसार', पहाड़ां लाऐ सुरंग ।
धरती करे सुआह, बुरी बलदी फुलंग ॥

दो० स्रूप नखा हुण बिलखदी, रावण दे दरबार ।
दसकंधर मन सोचदा, कुण साधू बलकार ॥

खर-दूषण दी मौत सुणीं तां, रावण गुस्सा आया ।
बोलण लग्गा, 'कुनां साधुआं, इतणां जुलम कमाया ॥
सजा दियां जुलमें दी भारी, तड़फाई कै मारां ।
मछिया साईं बार पाणिएं, कड्डी करी पछाड़ां ॥
तड़फी-तड़फी साधू मरगे, तां ईं बदला मुड़ना ।
मैं हुण न्हासां तेल दई कै, तगड़ा देणां झुरनां ॥
इतणीं गल्ल गलाई रावण, स्रूप नखा समझाई ।
बोलण लग्गा बदला मोड़ां पंचवटी विच जाई ॥
स्रूप नखा जो दई दिलासा, रावण महलां आया ।
दूत भेजिया मारीचे जो, अपणें पास बुलाया ॥
मायावी मारीचें झट-पट, रावण अग्गें आई ।
मत्था दसकंधर जो टेकी, धरती सीस नुआई ॥
दन्त बोलिया, हे दसकंधर, अपणां हुकम सणाऽ ।
के उलझन मगजे विच आई, गल्ला जो समझाऽ ॥

मारीचे दी गल्ल सुणीं तां, रावण बोल उचारे।
बोलै रावण, 'हे मायावी!' खर दूषण हन मारे॥
दो बणवासी पंचवटी विच, आई जुलम कमान।
सूप नखा दे नक-कन बड्डन रती नईं घबरान॥
भैणां दा तां नक्क वढोऐ, मिजो सरम न औऐ।
तां भाऊ कुत कारी दा मैं, मिजो करक न औऐ॥
दऊं साधुआं कन्नें आई, सुन्दर इक्क जणास।
चोरां तिसा जणासा मैं तां, करनी विध तलास॥
ताईं तां मैं दूत भेजिया, मायावी तू पूरा।
हिरन वणैं सुन्ने दा अज तूं, तां नीं कम्म अधूरा॥

दो० **रावण दी जां गल सुणीं, दानव था हैरान।**
पैरां हेठ जमीन नीं, मुहएं नईं जबान॥

इक पासें हुण तीर कमानां, दूएं थी तलुआर।
जे हां करै तां तीर चुभाऐ, नांह् दी पैनी धार।
दऊं पासियां मौत सिरे पर, सुज्झै तिसजो आई।
जे ठौकर दा सादा होऐ, सैह् न बचदा भाई॥
खर-दूषण दी मौत सुणीं कै, मायावी मन डोलै।
डरदा कंब्बै रावण तों हुण, नांह नुक्कर न बोलै॥
रावण दे हुकमे पर तिन्नी अपणां मन्तर गाया।
हिरन चमकिया सुन्ने साईं छालीं मारी आया॥
पुट्ठा मन्तर भिरी गलाई, बणीं गिया मारीच।
चार वेद छः सास्त्र जाणैं, रावण दा मन नीच॥
असर करै नीं रती पढ़ाई, मन जिसदा कमजोर।
डाकू भगवां चोला पाई, रैह् चोरे दा चोर॥
मारीचे कन्नें दसकंधर, बिच्च वणें दे आया॥
मायावी जो हिरण बणाई भगवां चोला पाया॥
रावण पूरा साधू बणियां अंग भवूत रमाई।
पैर खड़ावां जटां सिरे पर, झोली मूंडें पाई॥
पापी दा मन पाप कमान्दा, रती भरें नीं सग्गै।
पापे दी गठ भारी होऐ तां चुक्की कै कंब्बै॥

राम लखण कुटिया विच बैठे, हिरण नच्चदा आया।
छालीं मारै ऊचे टिल्लें, चम-चम चमकै काया॥
सीता कुटिया बाऽरें निकली, छेड़ बणें बिच होई।
कन्न खड़े दिक्खी कै कीते, नच्चै हिरण खड़ोई॥
हिरण न औऐ कुटिया लागें, दूरें छालीं मारै।
जिय्यां होणी दूर खड़ोई, सीता जो ललकारै॥

दो० जतन करी नीं पलटदे. मत्थे दे हन भाग।
काल्-कलेखां जान सब, जान्दे कदीं न दाग॥

दो० ठौकर आई धरतिया, अप्पूं धोखा खान।
अपणें माया जाल विच, अप्पूं उलझी जान॥

हिरने जो दिक्खी कै सीता, अपणां वचन सुणाया।
राम गुसाईं उप्पर माया, अपणां जाल वछाया॥
सीता बोलै, 'पकड़ा इसजो, झट-पट हिरने जाई।
या इस दी मृग छाला जो हुण, कुटिया दिया बछाई॥
माया दे हिरने नीं समझै, सीता बणीं अयाणीं।
करै बालकां साईं अड़ियां, डोलै हाखीं पाणीं॥
सीता दी जिद्दा जो दिक्खी, राम न समझी माया।
हक्ख झमकणें कन्ने न्हठिया, हिरन नजर नीं आया॥
तिस हिरने दे पिच्छें दौड़े, होए राम शिकारी।
तिरलोकी दे नाथ न समझे, माया चाल न्यारी॥
लछमण सीता कुटिया दे बिच, राम जंगलें आए।
विच्च बणें दें हिरने उप्पर, पैने तीर चलाए॥
मरदी बारी तिस हिरने दा, बणीं गिया मारीच।
कुटिया लागें रावण आया, महानीच मन नीच॥
दानव तड़फै जंगले दे बिच, जोरें दिऐ दुहाई।
'मैं मरिया सुन लछमण वीरा, मेरी सुध लै आई॥'
मारीचे ने मरदी वारी अपणां कम्म कमाया।
राम गुसाईं दी समझा विच, कोई बोल न आया॥
मारीचे दी गल्ल जाई कै, सीता दे कन खड़की।
गस खाई भरनोई धरती, मछिया साईं तड़फी॥

क़िछ घड़ियां दे बाद तिसा जो, होस मुड़ी जां आई ।
ल़छमन पासें दिक्खी सीता, गौ बणीं रड़ाई ।।
बोलण लग्गी 'लछमण वीरा, झट्ट बणें विच जाऽ ।
दन्त दानवां घेरा पाया, जाई राम छुड़ाऽ ।।

दो॰ लछमण जो तां राम पर, पूरा था बिसुआस ।
सीता धक-धक डोलदी, कण्ठें फिरन सुआस ।।

सीता दी गल्ला दा लछमण, रती असर नीं होया ।
न सैह् हिलिया न सैह् झुलिया, न सैह् था सस्तोया ।।
सीता लछमण पासें दिक्खी, होई हब हैरान ।
बोलण लग्गी तेरी मिज्जो, होई अज्ज पछाण ।।
बाऽरे चिट्टा अन्दर मैला, मन तेरा ऐ पापी ।
अन्दर तेरें लोआ लछमण, बाऽरें सुन्नें टाकी ।।
बगला भगत वणी कैं तू तां सांजों कन्नें आया ।
सांज़ो तू ऐं धोखा दित्ता, तगड़ा जुलम कमाया ।
राज करन दी इच्छा तिज्जो, दिन्नी तिलक लगाई ।
जे सीता दी जीब्हा आई, दित्ती गल्ल गलाई ।।
बोलण लग्गी 'सच्च गलान्दे, भाई व्रणन सरीक ।
इक-इक गल्ला गंडी बनदे, पत्थर लान्दे लीक ।।
सीता दी जां गल्ल सुणीं तां, लछमण अचरज होया ।
डोलै हाखीं अणमुक पाणीं, डुस्की डुस्की रोया ।।
लछमण बोलै, साड़े उप्पर, घोर मुसीबत आई ।
बोल नईं हन राम, जंगलें, दानव माया छाई ।।
जे तिज्जो भिस्चा नीं मेरा, बिच्च जंगलें जाना ।
विच्च वणें दे जाई माता, तेरा हुक्म बजाना ।।
इतणीं गल्ल गलाई लछमण, कुटिया रेखा पाई ।
सीता जो कारा टपणें दी कीती सख्त मनाई ।।
ल़छमण बोलै, 'सुण माता हुण, कारा बाह्र न जायां ।
क़ारां अन्दर वक्त कट्टियां, अपणां कम्म कमायां ।।
घ़ोर बणें बिच कुटिया साड़ी, सारें सुन्न-मसाण ।
दन्त दानवां दी ऐ धरती, तिज्जो नईं पछाण ।।

दो० होणी आई घुम्मदी, पलटै मत्थें बुद्ध ।
अकली मेखां ठलदी, मारी जाऐ सुद्ध ॥

दो० खौला पाणीं नालुआं, जालू करदा जोर ।
पाणीं नईं पछाणिएं, दुसमण दी नीं लोड़ ॥

सीता जो समझाई लछमण, रिया वणें विच आई ।
दूएं पासें रावण आया, कुटिया अलख जगाई ॥
अलख सुणी कै बाह्‌रें आई, सीता नईं पछाणैं ।
ऋषिए दे भेसे विच रावण; वैदेही नीं जाणैं ॥
अपणें मतलब ताईं माह्‌णू, अणमुक भेस वणान्दा ।
बहूरूपिया वणीं पखंडी, अपणा आप लुकान्दा ॥
कंदियों वाल़ां लमियां पाल़ै, माह्‌णूं टिंड कराऐ ।
वखरे-वखरे भेस बणाई, लोकां जो भरमाऐ ॥
इक लत्ता दे भार खड़ोई, लमियां भाखां बोलै ।
मढ़ियां मन्दिर धूफ धुखाई, मुट्ठे चौरी झोलै ॥
बाह्‌रे दे पिंडे जो धोऐ अन्दरें मनें दा काल़ा ।
इसदे हिरदें गुंजल़ धागे, जनमां दा गरजाल़ा ॥
तिस नीं धोऐ झाड़ै माह्‌णूं, बाह्‌रें चिट्ट चरेल़ा ।
हिरदें इसदें कालख भरियो, रोज फिरै घमरेल़ा ॥
भोल़ं-भाल़े जान ठगोई, चंट चरेल़े ठगदे ।
झोंपड़ियां दे दीये बुज्झन, महलां लाटू जगदे ॥
जिय्यां दिक्खी छैल़ खलौणां, किट्ठे होन नियाणें ।
रावण दे तां चोल़े कपड़े, सीता नईं पछाणें ॥
जाल़ं होणी घुम्मै उप्पर, अकल कम्म नीं करदी ।
बिड़िया मच्छी नेईं पछाणैं, ताईं तड़फी मरदी ॥
भला करदिया माड़ा होऐ, माह्‌णूं डुस्की रोन्दा ।
बुरे दिनां दा चक्कर चलदा जाई काल़जे छह्‌न्दा ॥
सीता भिछिया पाई थाली, रावण अग्गें वदिया ।
कारा निकले लोऽ-लुआंदे, तेज चुवक्खे जगिया ॥

दो० बिजली चमकी धरतिया, अग्ग लुआंटे गास ।
चिड़गां अग्गी तत्तियां, रावण अज्ज उदास ॥

दसकंधर दे अक्खें-वक्खें, अग्ग भांवड़ें भड़की ।
अंबर उप्पर बिजली वाझी, लो जोरे दी चमकी ।।
सां-सां होई चऊं पासियां, रुख बूट सरन्हाया ।
जीब-जन्त अग्गी जो दिक्खी, जंगल दा डकराया ।।
डालू भज्जे न्हेरी झक्खड़, गासे पर हुण छाया ।
लच्छण अबलच्छण सब होए, फौई बोल सुणाया ।।
बिल्ली ऊच्चे रुक्खें रोई, नौल़ बोलियां बोलै ।
गिद्ड़ कुत्ता दूर खड़ोई, धरती धूड़ खरोलै ।।
कड़-कड़ करदे रुक्खां दे हुण, डाल़ धरती छह्ते ।
मिरग वणें दे दौड़ी आए कुटिया आल खड़ोते ।।
चार वेद दा ज्ञाता रावण, अवलच्छण नी जाणैं ।
सीता लछमी माया धरती, अन्हा नईं पछाणैं ।।
'भिछिया तेरी असां न लैणी, रावण सब्द सुणाया ।
भिछिया देणें ताईं सीता, अपणां पैर वधाया ।।
लछमण दी गल्ला दा सीता, कीता नईं बचार ।
अपणीं कारा टप्पै माह्णूं, खांदा ताईं मार ।।
कारा तों ब्राह्रें निकल़ी कै, जालूं सीता आई ।
रावण ने पकड़ी वैदेही, विच्च बमाने पाई ।।
उडिया उप्पर आकासें हुण, सीता किलकां मारै ।
कई वरी भरनोई विलखी, रामो राम पुकारै ।।
रावण जो उड़दे दिक्खी कै, पखरू सब्ब रड़ान ।
पसू बणें दे डंगर बच्छू, जोरें जोर रमह्‌ान ।।
अल्लोकार दुहाई सारें, जीबां रौल़ा पाया ।
रावण उड़दा उड़न खटोलें, गिध नगरी विच आया ।।

दो० **गासें था गिद्ध जटायु, तिन्नी सुणीं उआज ।**
आया खटोल़ें पासें, जिय्यां कोई बाज ।।
कमजोर दिऐ दुहाई, जोरें करै पुकार ।
नीं छुडाऐ दिक्खी कै तां तिस जो धिक्कार ।।

जटायु ने जां राम नाम दी, गासें सुणी दुहाई ।
पौण खटोल़ें लागें आया, दिक्खै नजर दुड़ाई ।।

फंग खलारी अग्गें बदिया, उड़न खटोल् बन्ने ।
राम नाम सीता दी बोली, पई गई जां कन्नें ॥
पौण खटोल् अग्गें तिन्नी, अपणें फंग्ग खलारे ।
'खबरदा ! अग्गें जे बदिया, तिन्नीं बोल उचारे ॥
रावण बोलै, 'सुणैं पंच्छिया, बिन मौता तू मरनां ।
पौण खटोल् लंग्गण दे हुण, तू न जाणैं लड़ना ॥
इस गल्ला जो सुणीं जटायु, रावण पासें आया ।
बोलण लग्गा राजा होई, तूं के जुलम कमाया ॥
गई पढ़ाई तेरी खूएं, पल्लें किछ नीं रखिया ।
रावण पोथी दिक्ख बचारी, वेदां ने के दसियां ॥
चोर उचक्के राजे जेथू, परजा दा के हाल ।
बिजन सुरें जे बाजा बज्जै, कुसजो चढ़गा ताल ॥
जे राजा ई चोरी करगा, किय्यां चोर पकड़ना ।
बाड़ खेतरे खाण लगै तां, फसला किय्यां फलना ॥
आपा-धापी लुट्ट-प्लुट्टी, कुण सम्हालै राज ।
राजा अन्हा होई चल्लै, धरती पौन्दे ताज ॥
रावण ने जां गल्ल सुणीं तां, होया लालो लाल ।
बोलण लग्गा अज्ज पंछिया, आया तेरा काल ॥
इतणीं गल्ल गलाई रावण, हत्थें थी तलुआर ।
हक्ख झमकणें दी देरा विच, कीते अणमुक वार ॥
हुण जटायु जखमी होया, चुंज पौंचुआं मारै ।
रावण दे मुहएं जो थिग्गै, लउएं धार निकालै ॥

दो० **रावण दा लउ धरतिया, लम्मी लग्गी धार ।**
गिद्ध जटायु रावण पर, करै अनोखे वार ॥

गासे उप्पर रावण कन्नें, छिड़िया युद्ध घमसाण ।
गिद्ध राज दे युद्धे दिक्खी, धन-धन देव गलान ॥
उडी-उडी कै वार करै हुण, रावण जखमी होया ।
विच्च बमाने डिब्बर लग्गा, लउए कनें भरोया ॥
झट-पट गिद्धें फंग्ग खलारे, अपणीं चुंज चलाई ।
ताज रावणें दे मत्थे दा, दित्ता भिरी गुहाई ॥

चुंजा कन्नें ताज पकड़िया, पखरू उड़दा जाऐ ।
रावण विच्च बमानें पुट्ठा, लउएं गोते खाऐ ॥
दसकंधर दा अद्द समाने, सुटिया जाई ताज ।
हीरे मोती विखरे धरती, छण छण हुई उआज ॥
ताजे धरती पौन्दे कन्नें, मणियां डोरे टुट्टे ।
धरती उप्पर इय्यां लग्गै, गासें गारू सुट्टे ॥
विच्च जंगलें चम-चम चमकन, हीरे मोती लाल ।
लौऽ लुआनां चऊं पासियां, सुन्ने लग्गा टाल ॥
पखरू जीव बणें दे सारे, दिक्खी कै घबराए ।
सोचन जंगल दी धरती पर, तारे किय्यां आए ॥
होसा विच आई कै रावण, ताजे चुक्कण आया ।
गिद्ध राज ने धरती उप्पर, रावण पकड़ी ढाया ॥
चुंजा दी मारा जो रावण, रती सई नीं सकिया ।
कई वरी भरनोया धरती, कई वरी हुण हफिया ॥
गिद्ध निहत्था रावण हत्थें, थी पैनी तलुआर ।
क्रोध करी कै गिद्धे उप्पर, कीते अणमुक वार ॥
फंग्ग टकोए पौंचू टुट्टे, फड़-फड़ तड़फै गिद्ध ।
भिरी न छड्डी घोल-घुलाटी, तिन्नीं अपणीं जिद्द ॥

दो० राम नाम जे आसरा, तां कुसदी परबाह ।
जाणैं नीं वीर जटायु, रावण जोर अथाह ॥

डोरी सुट्टी राम पर, के बाकी हुण चाह ।
राम नाम दे जाप ने, ढिल्ला होऐ फाह ॥

बट्टै म्हुच्छी चुंजां खोड़ै, घोलां घौलां दौड़ै ।
सीता दे लागें जाई कै दौएं पौंचू जोड़ै ॥
दिक्खी हालत जटायु दी तां, सीता छम-छम रोई ।
जोरें-जोरें किलकां मारी, वैदेही परतोई ॥
गिद्ध राज अपणें लउए दे, अन्दर गोते खाऐ ।
घड़ी-घड़ी हुण चुंजा खोड़ै, नाम राम दा गाऐ ॥
अदमर पखरू धरती तड़फै, रावण गास बमाने ।
उडन खटोला गासें उडिया, चढ़िया अद्द समाने ॥

उडदा-उडदा दसकंधर हुण, किसकिंधा पर आया।
विच्च जंगलें सुग्रीबे ने, था दरबार लगाया ॥
मते आदमी दिक्खे सीता, गैह्णें बंध उतारे।
पाछे ने धरती पर सुट्टै, लग्गे चमकण तारे ॥
दरबारे विच हलचल होई, गासें दिक्खन लोक।
राम-राम बोली कै सीता, हुण होई बेहोस ॥
महावीर गैह्णें चुक्की कै, सुग्रीवे कछ आया।
गासे पासें दिक्खन सारे किच्छ समझ नीं आया ॥
सीता दे गैह्णें जेवर थे, राम नाम दे साथी।
सारे दिक्खन अज्ज गैह्णियां, सोचन मीटी हाखीं ॥
सुग्रीबे ने दसकंधर दा, लिया बमान पछाणी।
किच्छ समझ नीं आई मगजें, होई क्या कहाणी ॥
उडदा उडदा पौण खटोला, गासे उप्पर जाऐ।
गढ़ लंका दे पासें जाई, घर-घर सब्द सुणाऐ ॥
अपणें जन्तर कन्नें दिक्खै, महावीर बलवान।
न्हीठा होया गढ़ लंका विच जाई भिरी बमान ॥

दो० रावण दी करतूत जो, महावीर बलकार।
सोचै मने च अप्पणें, दसकंधर बदकार ॥

इक पासें रावण लंका विच, सीता आणी पुज्जा।
दूएं पासें विच्च जंगलें, लखण राम जो सुज्झा ॥
राम लखण जो पुच्छण लग्गे, तू हुण आया भाई।
लछमण पुच्छै दस्सा मिज्जो, कजो हक्क ऐ पाई ॥
हक्का दी गल सुणीं राम जों गई उदासी छाई।
बोलण लग्गे लछमण तूं अज, सीता सड़ी गुआई ॥
लच्छण-अबलच्छण सुज्झा दे, फौई सन्मुख बोलै।
तिर-तिर बतरीड़ा रुक्खां पर, मुहएं अपणें खोलै ॥
व्याकुल होए राम बतौरे, लत्तां आया पाणीं।
कुस ने दस्सन दुक्ख दिले दा, कुनीं गल्ल नीं जाणीं ॥
लछमण दी जां गल्ल सुणीं तां, सुध बुद्ध सब बसारी।
बोलन, 'उतरी अज्ज सिरे पर, साड़ें विपता भारी ॥

दन्त दानवां दी धरती पर, गए ठगोई राम ।
आसें पासें चोर लफंगे, नीं होऐ विसराम ॥
चोर लुटेरे अक्खें वक्खें, ठगी झूठ बे अन्त ।
कुस-कुम पासें दिऐ बूजड़ा, जान ठगोई सन्त ॥
तिरलोकी दे नाथ ठगोए, माह्णू दी के पेस ।
हाखीं रखिए चऊं पासियां, घरें बगाने देस ॥
कपटी माह्णूं बस्सन जेथूं, घड़ी न करिए बास ।
जिस धरती पर चाल चलन नीं, जीणें दी के आस ॥
चोर उचक्चा ठौकर दें घर, लाऐ जाई सन्ह ।
पापी धरती दा नी खाओ, कदी बई कै अन्न ॥
अन-जल खादा पंचवटी दा, गए ठगोई राम ।
लछमण पासें तुर बुर दिक्खन, गल न कोई गलान ॥

दो० **पिच्छें बरखा धरतिया, पहलैं न्हेरी बात ।**
बिजली लसकै बद्दलाँ, काला होऐ गास ॥
ठौकर खाऐ ठेडियां, धरती लैं अवतार ।
डेरे जेत्थूं पापियां, भड़कै अग्ग पहाड़ ॥

बुरे दिनां दे लच्छण पहलैं, दुस्सन हाखीं आई ।
अग्गें बिजली चमकै पिच्छे, बद्दल गुड़कन जाई ॥
राम लखण जो धरती गासें, होए लच्छण माड़े ।
दिनें धियाडें धरती न्हेरा, अंबर दुस्सन तारे ॥
ढैन्दे-पौन्दे दौएं भाऊ, पुज्जे कुटिया आल ।
दिक्खी कै खुल्ला दरुआजा, होया माड़ा हाल ॥
अग्गें-पिच्छें कुटिया दें हुण, सीता सारें तोपी ।
चीज तिसा दी इक-इक जाई, सारी सब तल्होफी ॥
कुटिया अन्दर जाणें दा जां, किछ नसाण नीं मिलिया ।
राम गुसाईं जो दिक्खी कै, पत्तर अज नीं हिलिया ॥
कुटिया खाली अज्ज ब्रणें दा, जीव-जन्त नीं बोलै ।
चार-चबक्खें सुन्न-सुनाटा, रुक्ख बात नीं झोलै ॥
ढूण मढूणें दौएं भाऊ, कुटिया सारी खाली ।
उजड़ी फुलवाड़ी दिक्खी कै, फोड़ै मत्थे माली ॥

राम गुसाईं हौका भरिया, बणें च न्हेरी आई ।
रुक्ख बूट हुण झुल्ले सारे, गासें बदली छाई ।।
इक-इक पत्तर झड़िया धरती, सुकी गिया सब घाऽ ।
गासे उप्पर झक्खड़ झांजा, आया बे अथाहऽ ।।
इक पपीया उड़ी कै आया, पी-पी बोलै गासें ।
घोर विपत दे वेलें भाई, किछ नीं बणैं दलासें ।।
राम गुसाईं बोल उचारे, लम्मे भरे सुआस ।
बोलण लग्गे, सीता मिलणें, दी नी कोई आस ।।
राम गलाया सुण लछमण हुण, जा अयोध्या भाई ।
मिज्जो तां हुण उमर मरे दी, लम्मी विपता आई ।।

दो० विच्च अयोध्या दस्सदा, मत तूं मेरा हाल ।
मरते जो मत भेजदा, मिलणां मेरे आल ।।

राजधानियां दे विच जाई, दिखियां गल्ल गलान्दा ।
सीता राम गुआई लछमण, दिखियां गल्ल सुणांदा ।
राजे जनकें पुछणां तिज्जो, वैदेही नीं आई ।
जनके जो तूं टपला लाई, गल्ल-दियां टपलाई ।।
कौसल्या जे माता पुच्छै, तां तू झूठ गलायां ।
भला चंगा राम बणें विच्च, सीता ठीक सुणायां ।।
जे तूं सच्च गलांगा भाई तां रासू दा हीणां ।
सब किछ लछमण झूठ गलाया, तां सबनां ने जीणां ।।
मापे मेरे पुतर बजोगें, तड़फी-तड़फी मरगे ।
किथ्यां मेरे बेड़े भरियो, विच्च सागरें तरगे ।।
सच्च गलाई जेत्थू सुज्झै, पौन्दा बड़ा बगाड़ ।
जीव्ह अन्दर सच्च लुकाई, ढाईए नीं पहाड़ ।।
जे तूं सच्ची गल्ल गलाई, पौणां सारें सोग ।
वैदेही दा नीं झल्होणां, जनकें रती बजोग ।।
साड़े बंसे दा बूटा हुण, धरती उप्पर पौणां ।
सुरगे अन्दर पितरां जागीं, रात दिनें नीं सौणां ।।
राम गुसाईं दी गल्ला पर, लछमण अज पछताऐ ।
"मैं पापी मैं चोर लुटेरा, अपणें मनें गलाऐ ।।

मैं वैदेहो किल्ली छड्डी, मेरे जम्मे पाप ।
छमा करा मिज्जो हुण भाई, मत्त दिया सन्ताप ।।

सीता जो मैं किल्ली छड्डां, घोर जंगलें भाऊ ।
सत जन्मां दे नरके भुंज्जां, मैं तां बड़ा गुआऊ ।।

आया था मैं पैह्‌रा देणां, सेवा करना भाई ।
किलिया छड्डी चली गिया मैं, सीता सड़ी गुआई ।।

दो० **गलती पहरेदार करै, होऐ पूरी हार ।**
ढिल्ला राखा राखिया, करदा दुसमण वार ।।

दो० **ऋषियां दे तप जंगलां, शाप न विरथा जान ।**
नारायण अवतार वी, दर-दर ठोकर खान ।।

सोतड़ ढिल्ला नई बचारै, पहरेदार कहाऐ ।
तिसदे पहरे अन्दर दुसमण, अपणां वार चलाऐ ।।

लछमण बोलै डुस्की मैं तां, ढिल्ला पहरा कीता ।
नईं बचारी गल ताईं तां, अज्ज गुआई सीता ।।

हुण भाऊए धोखा दिग्गा, धोखेबाज कहांगा ।
काले मुहएं कुस पासें मैं, कूंटा कुसा लुकांगा ।।

इस धरती पर रोज जीन्दियां, कुनी न रैह्‌णां भाई ।
मरदी वारी जाणीं सवनाँ, कन्नें नेक कमाई ।।

धोखेबाज लुटेरे सारे, कोह्‌ड़-कलंकी होन ।
जंग्गा बाऽईं दिक्खी झूरन, धरती पर घसटह्‌ोन ।।

चोर चलाकी घड़ी भरे दी, उमर भरे दा धोखा ।
जाणीं बुज्झी बुरा करै तां, पूरै सैह्‌ तरोटा ।।

तिन्न जणें जंगल जो आए, जे किल्ला हुण जांऽ ।
सारे पुच्छन मिज्जो आई, किय्यां झूठ गलांऽ ।।

छड्डा झूरे कनैं बजोगे, तोपा सीता भाई ।
जिन्नी इतणां जुलम कमाया, तिसदी करा सफाई ।।

इस झूरे ने किछ नी बणना, करम कीतियां होणां ।
कस्सा तीर कमानां भाई, छड्डा रोणां धोणां ।।

जितणें मट्ठे कम्म कमांगे, उतणे भटकी जांगे ।
देरा कन्नें पिछड़ी जांगे, पिच्छे तें पछतांगे ॥
इतणीं गल्ल गलाई लछमण, होया भिरी तियार ।
राम गुसाईं तिसजो दिक्खी, ले हत्थें हथियार ॥
लत्तां जो पल़सेटे लग्गन, बाल़ खिल्लरे सारे ।
अपणीं कीती दा फल भुगतन, नारायण अवतारे ॥

दो० तोता बोलै कंगलें, करमा दा सब खेल ।
पिप्पल दा फल़ पिप्पलू, कद्दूं लगदे बेल ॥

छन्द दिक्खी करी हब होया, राम दिया हालता जो,
तोता हुण जाई करी, कंगले जो बोलदा ।
सुण मेरी गल्ल किछ करम करी लै हुण,
ठौकर तां पाप-पुन, सारियां दे तोलदा ।
छडी दे भल्हेखे मोया, कुसी जो सताएं मत,
पासंग नी तक्कड़िया, ठौकर नीं झोलदा ।
जीव-जन्त 'संसार' ऐ, ठौकरे दा माया जाल,
अग्ग पाणीं हौआ गास, धरतिया डोलदा ॥

महाकाव्य माया

अष्टम सर्ग

छन्द करमां दा फल पाऐ, ठीकर वी अप्पूं आई,
अवतार लई दर-दर, खेह छाणदा।
बक्सै न आपूं जो एह, सुख-दुख सब झल्लै,
माह्णूं बणीं रीत आई माह्णुआं दी पालदा।
कई वरी जमदा एह, कई वरी लोप होऐ,
हस्सै रोऐ धरतिया देह जाह्लूं धारदा।
बोलदा एह 'संसार', बाल-बाल बीणी सुट्टै,
दुद्दे कनैं पाणिएं जो, अप्पूं ऐ नतारदा ॥

दो० करमां दा सब खेल ऐ, सब ठीकरें माया।
धुप्प छौंआं दा पलटा, करम गति ऐ काया।
करमां दा फल भुगतै ठीकर, धरती उप्पर आई।
फुल्लां दी क्यारी न जम्मै, दिक्खा कंडे राह्ई ॥
कंडियां जम्मन कंडियाले, फुल्लां लगदे फुल्ल।
ठीकर भुगतै अपणीं करनी, रुक्ख नईं अणझुल्ल ॥
अग्गें अग्गें लछमण चलिया, पिच्छें चल्ले राम।
तिन्न लोक दे स्वामी विलखन, चली गिया विसराम ॥
राम पुच्छदे रुक्खां बूटां सीता कुथूं गुआई।
मिरग मियालें खाऽदी जां क्या, चोरां ने भरमाई ॥
वेल बूटियां पकड़ी पुच्छन, तिन लोकी दे नाथ।
रोई-रोई रात गुजारी, होण लगी परभात ॥
जंगल दा हुण इक-इक डाल, हत्थें पकड़ी पुछिया।
कोई जान्दा कुटिया अन्दर, दस्सा कुसजो दुसिया ॥

शाप सप्प नारद दा जैह्‌री, नारायण भरमाए।
विच्च वियोगें पागल होए, माया खेल रचाए॥
वक्ते पर अवतारां आई, अपणी लीला कीती।
अप्पूं फाड़ी अपणीं चादर, अप्पूं आई सीती॥
लोकां जो तां देन सलाईं, अप्पूं ई डफलोए।
परताका लोकां जो लान्दे, अप्पूं वी परतोए॥
माया दी चक्की विच आई ठौकर हेठ भियोन्दा।
कई वरी तां फट्टै अप्पूं, फौगल भिरी सियोन्दा॥
माहणूं दी जूना विच आई, परमेसर पछताऐ।
अपणीं माया नेईं पछाणै अप्पूं जिसा बणाऐ॥
सीता माया राम भिखारी, राजा कनैं शिकारी।
रोई रोई तोपन सीता, माया चाल न्यारी॥
ढैन्दे पौन्दे राम चले हुण, लछमण पिच्छें आया।
सीता दा खुर-खोज कुथीं नीं, नीं धरती था साया॥
घोर जंगले अन्दर आई, कन्नें पई उआज।
'राम गुसाईं दा नी होया मेथों पूरा काज॥
नईं छुड़ाई सकिया सीता, दुस्ट बड़ा वलकारी।
नईं उतारी सकिया भारे, मैं तां जान्दी वारी॥
नीं कतरोन्दे तलुआरा ने, मेरे लम्मे फंग्ग।
किछ घड़ियां मैं तिस दुस्टे ने, करदा डट्टी जंग्ग॥
मित्तर दसरथ दा ऋण मत्थें, धड़जोगें गल मेरी।
राम गुसाईं औणां काह्‌लूं, होण लगी हुण देरी॥
मित्तर दा तां भार सिरे पर, किय्यां चुक्की जांगा।
तिसजो जाई सुरगे अन्दर, मैं किय्यां पतियांगा॥
राम गुसाईं आई मिलदे, सारी गल्ल सुणांदा।
रावण दी करतूतां दस्सी, अपणां देह लुकान्दा॥
इतणीं गल्ल गलाई गिद्धें, भिरी न्हेरनी आई।
लखण राम जो दिक्खी बोले, गल्ल सुणां कन लाई॥
राम लखण जां अग्गें आए, गिद्ध, राम पुकारै।
वीर जटायु अपणें लऊएं, अप्पूं गोते मारै॥

जखमी गिद्धे जो चुक्की कै, हिक्का कन्ने लाया ।
घुट्टी जप्फी पाई जिय्यां, इक माऊ दा जाया ।।
राम गुसाईं दी गोदा विच, जान मुड़ी कै आई ।
बोलै पंछी हाखीं मीटी, 'मेरे राम दुहाई ।।
पखरू हाखीं खोड़ी दिक्खै, राम गुसाईं पासें ।
लई गिया रावण सीता जो, गढ़ लंका जो गासें ।।

दो० **राम चन्द्रां दे जखमां, ठंडां पई फुहार ।**
बंदे दिक्खी जुमसदा, रोगी बड़ा लचार ।।
होणी बरतै ठौंकरें, माह्णू दी के पेस ।
ताज उतारै राजियां, राज करन दरबेस ।।

हाखीं जो हुण खोड़ी गिद्धें, इक इक गल्ल सुणाई ।
सारी विपता सीता दी तिस, राम दे कन च पाई ।।
गिद्ध गलाऐ इस बणें विच्च, मैं करना हां राज ।
गासे उप्पर उडदें मेरें, कन्नें पई उआज ।।
मैं जां गासे पासें उडिया रावण दिखिया जाई ।
सीता मिज्जो दिक्खी दित्ती जोरें जोर दुहाई ।।
दसकंधर दे अग्गें मैं थे, अपणें फंग खलारे ।
दसरथ दे मैं लगा चुकाणां अपणें सारे भारे ।।
नीं रुक्किया दुस्टे ने खिज्जी अपणीं थी तलुआर ।
चन्द्रहास दे मेरे उप्पर कीते अणमुक वार ।।
मैं वी चुंज चलाई अपणीं, लऊ-लुहाण बणाया ।
पींचू मारे मत्थे उप्पर, तिसदा ताज गुहाया ।।
ताजे धरती पौन्दे कन्नें, दानव थल्लै आया ।
मैं वी धरती आई तिसनें, तगड़ा युद्ध रचाया ।'
मैं निहथा तिसदे हत्थें, थीं पैनी किरपाण ।
वारे उप्पर वार करै जां, मिज्जो लगा उडाण ।।
तलुआरा दी पैनी धारा, फंग गए कतरोई ।
मिज्जो दिक्खी ढूण मढ़ूणीं, सीता डुस्की रोई ।।
घोलां-घोलां भिरी धड़ोया, गिया बमाने लागी ।
कोई पेस न चल्ली मेरी, पिंड्डां होया दागी ।।

सीता मिज्जो दिक्खी इक-दम, गस खाई परतोई ।
मछिया साई मैं वी तड़फां, पेश न चल्लै कोई ।।
विच्च बमाने पाई सीता. रावण उडिया, गासें ।
चली गिया तां पौण खटोला, गढ लंका दे पासें ।।

दो० **मोह माया सब झूठी, झूठा ऐ संसार ।**
रात बसेरा धरतिया, गासें दिनें उडार ।।

पंछी इतणीं गल्ल सुणाई, डुस्की डुस्की रोया ।
राम गुसाईं दी गोदा विच सत्त दिनां दा मोया ।।
दिक्खी हालत वीर गिद्ध दी, राम गए डफ्लोई ।
बोलन वीरा, बोल बोल तूं, पुच्छन राम खड़ोई ।।
लछमण राम दिलासा दित्ता सब किछ था समझाया ।
तिसदे संस्कार करन ताईं, हूण था कम्म रचाया ।।
राम लखण ने गिद्धे जो हुण, अग्गी दे विच मेली ।
चिता बली जां लट-लट करदी, दित्ती अपणीं फेरी ।।
संस्कार पंछी दा करी कै, उठी खड़ोते राम ।
बोलण लग्गे, हे लछमण हुण, चली गिया विसराम ।।
तीर तरकसा लई कमानां, विच्च जंगलें आए ।
क्रोध राम दा दिक्खी सारे, जीव-जन्त घबराए ।।
राम गुसाईं दे हौके ने, रुक्खां पत्तर झाड़िया ।
डरदा कंब्बै उल्लू पंछी, ढोंडे दे विच बड़िया ।।
कई पर्वतां जो टप्पी कै, घोर जंगलें आए ।
खड्डां नालू अणमुक टप्पे, राम बड़े पछताए ।।
चलदे-चलदे दौएं भाऊ, जां किसकिन्धा पुज्जे ।
जंगल दे विच हनुमान थे, राम लखण जो सुज्झे ।।
राम लखण जो पुच्छन आई, तुसां कुथू तें आए ।
गलें जनेऊ पैर खड़ावां, धनुष तीर लटकाए ।।
इक पासें तां तुसां वणाया, अपणां साधू भेस ।
तीर तरकसां कस्सी आए, नईं रए दरबेस ।।
हनूमान दी गल्ल सुणीं तां, लछमण वचन सुणाया ।
राम कहाणी सुणी राम दी, महावीर विलखाया ।।

दो० दो दुखिए जां फोलदे, अपणे अपणे हाल ।
दुख अपणें हन रोड़दे, घटदा मनें उबाल़ ॥

दो० मायाँ जालें धरतिया, फसदे जीव अनन्त ।
माह्णूं अणमुक भटकदे, राम वियोगें सन्त ॥

सुखिया दुखिए नईं पछाणैं, मतलव दा संसार।
दुखिया ई दुखिए दे मन दी, बुझै डूगी सार ॥
राम अप्पणीं गल्ल सुणाई, हनूमान हुण बोले ।
सुग्रीवे दे दुक्ख राम दे, अग्गें सारे फोले ॥
महावीर ने सब्द सुणाया, 'बाली बल बलकार।
सुग्रीवे दी लई गिया था, खोह्ई तिसतो नार ॥
राज-पाट तिसदा खोह्ई कै, सीना जोर कहाऐ।
तिसदा भाऊ डरदा तिसतों, अपणां आप लुकाऐ ॥
दर-दर दी ठोकर हुण खाऐ. राजा अज्ज भखारी।
बाली ने वरदानां पाई. त्रिपदा धरत उतारी ॥
हनूमान ने बोल सुणाया, सारा भेत गलाया ।
सुग्रीवे दे वणवासे दा, सारा हाल सुणाया ॥
सुग्रीवे ने अग्गें आई, अपणी गल्ल सुणाई ।
राम लखण दे चरनां अपणां, मत्था लिया नुआई ॥
सीता दे हुण गैह्णें सारे, सुग्रीवें मंगाए ।
राम गुसाईं अग्गें रक्खी, अपणें बोल सुणाए ॥
बोलण लग्गा, 'इक दिन जंगल, मैं दरवार लगाया।
उडदा पौण खटोला ऊचा, गासे उप्पर आया ॥
इक्क जनाना पौण खटोले, अन्दर किलकां मारैं।
पौण खटोला उडदा जाऐ घर-घर सब्द उचारै ॥
गासे पासें जां दिखिया तां, गल्ल समझ नीं आई।
सांजो दिक्खी तिसा जणासा; दित्ती इक्क दुहाई ॥
भिरी जणासा साड़े अग्गें, अपणें गैह्णें सुट्टे।
लगे चमकणां धरती उप्पर, हीरे मोती सुच्चे ॥

दो० लिया पछाणीं ज़ेबरां, बान्दर सब्ब गलान ।
ज़ेबर दिक्खी हब्ब थे, लगे विलखणा राम ॥

राम लखण इक दूए दिक्खन, हाखीं आया पाणीं ।
नारायण दी नोखी लीला, कदी कुनीं नीं जाणीं ॥
राम गलाया, 'वीर लछमणां, ज़ेवर करैं पछाण ।
कम्म करै नी अकल रती वी, होई बन्द ज़बान ॥
लछमण ज़ेवर चुक्की दिक्खै, हाखीं आया पाणीं ।
बोलै सब मत्थे दे गैह्णें, मैं नीं सकां पछाणीं ॥
बाऽई नक्के हत्थे पर तां, कदीं नजर नीं पाई ।
पैरां दा जे ज़ेवर होऐ, लियां पछाणीं भाई ॥
लछमण दी जां गल्ल सुणीं तां, होए सब हैरान ।
बान्दर दल जोरे ने बोलै, लछमण जती महान ॥
पैरां दे सुग्रीवें ज़ेबर, लछमण अग्गें रक्खे ।
लछमण तुर-बुर दिक्खण लग्गा, पकड़ीं अपणें मत्थे ॥
लछमण बोलै सब ज़ेवर तां, सीता दे हन सारे ।
अज्ज जेवरा दिक्खी मेरें, चलन कलेजें आरे ॥
राम लखन ने किछ घड़ियां विच, कीती सब्ब पछाण ।
सुग्रीबे दे पासें दिक्खी राम लगे समझाण ॥
इक दूए ने करी मित्तरी, कौल करार कराए ।
इक दूए दी मददा ताईं, अग्गी हत्थ तपाए ॥
राम गुसाईं सुग्रीवे जो, अपणां सब्द सुणाया ।
बोलण लग्गे, 'काल बालिए, दा गासे तो आया ॥
सुग्रीबे जो दई दिलासा, कीता भिरी तियार ।
राम गुसाई ने हुण सांवे, अपणें सब हथियार ॥
सुग्रीवे जो मिली तसल्ली, दिलें दिलासा आया ।
गुर्ज चुक्किया अपणें मूंडें, चरनां सीस नुआया ॥

दो० उठी खड़ोता जंगलें, मारी इक्क दहाड़ ।
गासें चमकन बिजलियां, सां सां करन पहाड़ ॥
जिसदे साथी राम हन, तिसजो के परुआह ।
राम नाम दा आसरा, तां दूणां उत्साह ।

सुग्रीव जाई हुण बालिए, दे अंगण ललकारै ।
शेरे दी डुड्डी दे अग्गें, भालू मुहएं फाड़ै ॥

सुग्रीबे दी गल्ल सुणीं तां, बाली आया बाह्र ।
बोलण लग्गा 'अज सुग्रीबा. भुलिया पिछली मार ॥'
बाली ने जां गल्ल गलाई, अपणां गुर्ज चलाया ।
सुग्रीबे ने वार थम्मिया, अपणां आप बचाया ॥
दऊं भाउआं दा छिड़ी पिया, घोर भयंकर युद्ध ।
अपणें आपें रई कुसी जो, कोई रती भरनीं सुध ॥
गुर्जां दे टकराणें कन्नें, लोअ्-लुआंटे होए ।
अग्गी पूले गासे उप्पर, चिड़गां तारे छह्रोए ॥
करन लग्गा बाली हुण अपणां, वारे उप्पर वार ।
जिय्यां इक दूए जो टक्कर, मारन दो पहाड़ ॥
इक शकला दे दौएं भाऊ, इक्को देए जुआन ।
इक दूए जो गुर्जां मारी, तगड़ी आफत ढान ॥
गुर्जां दी टंक्कारा ने हुण, जीब गए बकलोई ।
रुक्खां पिच्छें राम पछाणन, दिक्खन दूर खड़ोई ॥
राम भलेखा हाखीं लग्गा, बाली नीं पछणोया ।
सुग्रीबे ने मार न झल्ली, धरती पर परतोया ॥
बाली ने सुग्रीब चुक्किया, दौं हत्थां पर आई ।
सत्त पर्वतां पार सुट्टिया, जंगल दे विच जाई ॥
मारी-कुट्टी सुग्रीबे जो, पूरा फाह् मुकाया ।
तिसजो सुट्टी दूर जंगलें, बाली महलां आया ॥
सुग्रीबे दे हाले दिक्खी, राम गए डफल्रोई ।
लछमण पुच्छै राम गुसाईं, अज के होणी होई ॥

दो० देवते वरदान दई, अप्पूं ई पछतान ।
दई ताकतां दानवां, अपणां जोर घटान ॥

वाली ने था वरदानां ने, अपणां जोर वधाया ।
परमेसर ने लुकी-छुपी कै, तिसने युद्ध रचाया ॥
जोरे दिक्खी सब घबरान्दे. नीं सामणें जान ।
ठौकर वी जोरे दे अग्गें, अपणां आप लुकान ॥
संझा जो सुग्रीवें आई. अपणां दुखड़ा रोया ।
बोलण लग्गा मरिया नीं मैं, वाकी सब किछ होया ॥

राम गुसाईं अग्गें रोई. दस्से जखम उघाड़ी ।
लगा गलाणां अज्ज राम था, मिज्जो सड़िया मारी ॥
राम गुसाईं सुग्रीबे जो. इक दम था पतियाया ।
फुल्लां दा हुण हार परोई. तिसदे गलें पुआया ॥
बोलण लग्गे 'इस हारे ने. होणी अज्ज पछाण ।
बाली दी हिक्का विच चुभणां. मेरा तत्ता बाण ॥'
दूए दिन सुग्रीबे ने थी, दित्ती इक ललकार ।
बोलण लग्गा, 'अज्ज वालिया, निकल़ घरे तों बाह्‌र ॥'
सुग्रीबे दी गल्ल सुणीं तां, बाली होया लाल ।
बोलै वाली. 'कजो बुलाना, सुग्रीबा तूं काल ॥'
बाली जो हुण बोलै तिसदी, राणीं करै पुकार ।
तारा बोलै, 'हे स्वामी अज, नीं जाणा हुण बाह्‌र ॥
लच्छण अवलच्छण दुस्सा दे सुपने माड़े होए ।
भ्यागा तड़कें महले अग्गें, कुत्ते आई रोए ॥
सुपने दे विच महले उप्पर, इल्लां घेरा पाया ।
भगवां चोल़ा पाई साधू, स्हाड़े अन्दर आया ॥
औन्दे जान्दे महले अन्दर, कई जनाने दुस्से ।
गैह्‌णें-बन्धे सुपने दे विच सारे मेरे टुट्टे ॥

दो० पुच्छल़ तारे आकासें, टुट्टा कै परतोन ।
सुपने दे विच चलदिया, अग्गें उल्लू रोन ॥

लच्छण सन्मुख माह्‌णुएं खरे बुरे दे होन ।
नच्चै अग्गें करम गति, लेखे भूत खड़ोन ॥

हाथी कदीं मकोड़े फूका, कन्नें दिए उड़ाई ।
इक्क दिन सैह्‌ तां काल बणीं. तिसजो सुट्टै ढाई ॥
दुसमण जो निक्का समझै तां. माह्‌णू वी तां भुक्का ।
जे खंजोऐ रस्सा ताणा, समझ इक दिन टुट्टा ॥
विषय भोग दा भुक्खा माह्‌णूं, सदा कमौती मरदा ।
पापें भरिया बेड़ा ल्हफ्फां, उप्पर कदी न तरदा ॥
जालूं घुम्मै मौत सिरे पर, तौर बतौरा होऐ ।
सीता दे पंजे विच माह्‌णूं. छैलकरी जकड़ोऐ ॥

तारा दी गल्ला दा बाली, कीता नईं बचार ।
मौता घेरा पाया कीता, बाली अज्ज लचार ॥
महले बाह्‌रें आया बाली, सुग्रीवे ललकारै ।
खाड़े दे विच जाई जोरें, तिसजो हुण दुतकारै ॥
हक्ख झमकणें दी देरा ने, होई टल्ल पटाक ।
भजी गए बुगदर दोआं दे, बिजली चमकी गास ॥
घोल घुलाटी होई जालूं, बाली उप्पर आया ।
राम गुसाईं रुक्खां ओटा, पैना तीर चलाया ॥
तीरे चलदे कन्नें धरती, लोअ् लुआंटे छुट्टे ।
इय्यां लग्गा गासे उप्पर, अणमुक तारे टुट्टे ॥
चऊं पासियां चानण होया, लोअ् बिजलिया साईं ।
दौड़ी आई महले बाह्‌रें, तारा मारै ढाईं ॥
वाली होया रत्त वरत्ता, लउएं छुट्टी धार ।
महावली बाली दी रोऐ, तिसदे अग्गें नार ॥
अदमर बाली जोरें बोलै, तूं तां जुलम कमाया ।
औऐ सामणे चोर कोई, जिन्नी तीर चलाया ॥

दो० **मरदी वारी बालिएं दरसन कीते राम ।**
बाली बोलै मारिया, मिज्जो तूं भगवान ॥

राम न बकसै पापियां, कस्सै तीर कमान ।
जोरावर दा जोर तां, भगतां दा भगवान ॥

राम गुसाईं जो दिक्खीं कै, बाली गिया पछाणीं ।
बोलण लग्गा, 'नारायण मैं, इक्क गल्ल नीं जाणीं ॥
लुकी-छुपी कै तीर चलाया, सन्मुख नईं खड़ोते ।
बाज मारिया जोरे आला, पाले निर्बल तोते ॥
असां लड़ोए भाऊ-भाऊ, बंडणीं राज जगीर ।
तुसां चलाया मेरे किल्ले, उप्पर अप्पणां तीर ॥
दस्सा मैं के गल्ल बगाड़ी, जा थी पिछली खार ।
दित्ती मिज्जो आई कै हुण, इतणीं गुज्झी मार ॥
सीता दे ताईं मेरे पर, पैना तीर चलाया ।
या रावण दा मित्तर समझी, मिज्जो अज्ज मुकाया ॥

जे लैणीं थी सीता तां वी, मिज्जो दसदे आई ।
हक्ख झमकणें कन्नें दिन्दा, हत्थो हथ मंगाई ॥
छः म्हीने किस्सिधा दे विच, रावण कैदा कट्टे ।
मेरे पासें दिक्खी कै तां, दुम्म दबाई न्हट्ठै ॥
चोरी मेरे कन्ने रक्खी, मैं वी बदला लैणा ।
इक दिन मेरे तीरे दा वी, पौणा दुखड़ा सैह्णां ॥
मेरे दुखियो दिल दे अन्दर, तत्ती फिरै हुआड़ ।
इक दिन इन्नां रंग लियोणा, जालू जाणां बाह्र ॥
इतणीं गल्ल करी कै बाली, पिया मूरछा खाई ।
अग्गें तिसदें राम खड़ोते, पैरां पासें जाई ॥
हाखीं खोड़ी बाली दिक्खै, राम लगे समझाण ।
बाली दी करनी हुण सारी, तिसजो लगे सुणाण ॥
निक्का भाऊ पुत्तर कन्नैं, जे दौआं दी नार ।
भैणां धीयां साईं समझै, तां नीं खाऐ भार ॥

दो० बदचलनां नी बकसदा, अप्पू मारै राम ।
पापे दिक्खी छड्डदा, वैकुंठे दा धाम ॥

लई वरदानां दानव बुद्धि, माह्णू मैं-मैं करदा ।
आफत ढाऐ चऊं पासियां, मौता तों नीं डरदा ॥
ठोकर धरती उप्पर मारै, तिसदे अग्गें धरना ।
पुट्ठा तारू दिक्खी लोकीं, सब्ब गलान्दे मरना ॥
अपणें ताईं माह्णू उखणै, जोरें डूगी खाई ।
बकरू छुरियां लई खड़ोऐ, रोऐ भिरी कसाई ॥
पापे झल्लै हाखीं मीटी, तिसजो लग्गै पाप ।
पैरे हेठ मकोड़ी आई, मारै डूगा टाक ॥
सच्चाई दे अग्गें आई, तीर कदी नीं चलदे ।
सच्चाई दे ठंडे झोले, अग्ग लाई न बलदे ॥
आंच नी लग्गै सच्चे जो, अग्गी उप्पर आई ।
खबल् दी जड़ नईं सुक्कदी, दिक्खा सेक तपाई ॥
इतणीं गल्ल सुणीं बाली ने, हाखीं रोज बगाया ।
बोलण लग्गा, 'हे नारायण, मैं था पाप कमाया ॥

भरदी वारी सन्मुख आए, मेरे मत्थें भाग ।
मेरी चादर कालख भरियो, धोऐ अंगद दाग ॥
अंगद जो सेवा विच रक्खा, लंका करा चढ़ाई ।
बाली दिक्खै अंगद पासें, भिरी न्हेरनी आई ॥
राम-राम दा जाप करदियां, बाली छड्डे सास ।
रोन्दा-रोन्दा अंगद आया, राम गुसाईं पास ॥
अंगद डुस्की रोणा लग्गा, राम ने हिका लाया ।
जे जमियां तां इक दिन मरना, तिसजो था समझाया ॥
एह सृष्टि सब्ब इक दिन मुक्कै, आई परलै होऐ ।
पाणीं पौऐ पापां भरियो, सारी धरती धोऐ ॥

दो० **पत्थर बणदे पाणिएं, बणदे भिरी पहाड़ ।**
झग्ग जम्मदी धरतिया, बणदे रुक्ख सवाल ॥

धरत वायु अग पाणिएं, बणदा भिरी अकास ।
सच्चा सिब दिगमंडलें, माह्णू देव पिसाच ॥

जीव-जन्त पाणी दी माया बणदा पाणीं सिब्ब ।
तां ब्रह्म देवता भिरी सृष्टि, दी हुण करदा जिद्द ॥
पाणी दी लहप्फां दे विच्चा, बिजली पैदा होऐ ।
अग्ग अंबरें गासे उप्पर, चऊं पासिया छह्ऐ ॥
इस चमकारे कन्नें सूरज, चन्दर पैदा होन ।
अंबर उप्पर ऊचे गासें, अणमुक तारे छह्न ॥
लोअ-लुआंटे अग्गी कन्नें, पाणी सेकें औऐ ।
सेके कन्नें सुक्कै पाणी, भ्हाफ अंबरें छह्ऐ ॥
भ्हाफा कन्ने वायु वणदी, तारे उप्पर जान ॥
चमकन चन्दरमें दी लोई, सूरज तों सरमान ॥
कई करोड़ा बरिया बीतन, पाणीं भिरी ठंडह्ऐ ।
पाणीं बिच्चा बरफा दा इक, बड्डा पिंड सरोऐ ॥
तिस गोल दी कई करोड़ां, वरसां धरती बणदी ।
ब्रह्मा दी माया दी उप्पर, धरती चादर तणदी ॥
बरफा दे गोले दी धरती, चऊं पासियां घुम्मै ।
वायु दे वेगे बिच जाई, आकासे जो चुम्मै ॥

घुमदे-घुमदे इस गोल् दे, गब्हें गर्मी औऐ ।
कई करोड़ा बरियां गोला, भिरी पाणिएं पौऐ ॥
पाणीं जाई दूर खड़ोन्दा, वणदा इक्क पताल् ।
उप्पर धरती इय्यां सुज्झै, जिय्यां चौड़ा थाल् ॥
बरफा दे किछ निक्के छिग्गड़, हीरे मोती बणदे ।
छिट्टी-छिट्टी पाणी होऐ, अणमुक सागर तरदे ॥
पाणी अग्ग हवा तां धरती, खुल्ला वणैं अकास ।
ब्रह्मा विसणूं नेड़ें आई, भिरी करै अरदास ॥

दो० ब्रह्मा आई धरतिया, अपणां लाऐ जाग ।
हक्ख झमाका बिसणुएं, करदा रात भियाग ॥

जीजू कंडू घाअ् जम्मदा, बान्दर कुत्ते बाघ ।
अणमुक कीड़े किरले वणदे, धरती लग्गै जाग ॥
रुक्खां जाड़ां बणां बसूटां, सप्प बड़े सरन्ह्ान ।
ब्रह्मा विसणूं सिब आई कै, अपणें खेल रचान ॥
पाणीं अन्दर मच्छी तन्दू, मगरमच्छ वी तरदे ।
पाणीं जम्मै कई करोड़ां, वरियां पर्वत वणदे ॥
प्हाड़ां उप्पर वर्फ चोटियां, जाई चमकै जमदी ।
मच्छी किरली बन्दरिया तों, भिरी जवानी वणदी ॥
ब्रह्मा दे पेटे दे विच्चा, मनू होऐ तियार ।
मनुए दा ईड़ा दे कन्नें, गल्लो-गल्ल पियार ॥
पहलैं ईड़ा बणीं जनानी, भिरी पिंगला औऐ ।
सोभा नियारी सुसमना दी, मनुएं निन्दर पौऐ ॥
ईड़ा पिंगला सुसमना हुण, धरतीं उप्पर आई ।
माया अपणीं सागर धरती, अंवर देन बणाई ॥
तिन भान्ती दे तिन गुण पूरे, सिब विसणू दी सक्ति ।
मनु तेज ब्रह्मा दा सारा, रचदा आई सृष्टि ॥
तिन्नां दे पेटे दे विच्चा, त्रै गुण माह्णूं होन ।
उत्तम मद्धम निम्न बणी कै, धरती धुरी खड़ोन ॥
उत्तम दी औलाद इक्क थी, मद्धम दूणी कीती ।
निम्न माह्णुआं सृष्टि दे बिच्च, चादर आई सीती ॥

उत्तम वर्ग अकलीं कन्नें, सारे कम्म कमाए ।
मद्धम माह्‌णू हुकम करैं हुण, धरती राज चलाए ॥
जालू उत्तम मद्धम होऐ, निम्न रौलियां पान ।
धरती पर घमचोल चौंदियां, चौं पासें घमसाण ॥

दो० सृष्टि होऐ अणमुक्कां, जीव-जन्त बे अन्त ।
चऊं पासियां धरतिया, किछ माह्‌णूं किछ दन्त ।

दो० सृष्टि नई समल्होऐ, धरती पौऐ भार ।
विसणू आई धरतिया, अपणा लै अवतार ॥

साकल राजस तामस माह्‌णू, कई वरी तां होन ।
उत्तम मद्धम निम्न लड़ी कै, धरती अंगण धोन ।
त्रेता द्वापर सतयुग कलियुग, अणमुक पलटे खान ॥
भान्त-भान्त दे माह्‌णू आई अपणें कम्म कमान ॥
माह्‌णू मौता अप्पूं सद्दै, सस्तर भिरी बणाऐ ।
इक्क माह्‌णुएं उप्पर दूआ, लस-लस करी चलाऐ ॥
जोरे वाला जोरे कन्ने, अपणां हुकम चलान्दा ।
दिक्खी कै कमजोर माह्‌णुआं, ठौकर वी पछतान्दा ॥
कमजोरां दे ताईं अप्पूं, ठौकर लै अवतार ।
ठौकर औऐ धरती उप्पर, घटै धरतिया भार ॥
इक दिन ऐसा औऐ माह्‌णू, परमेसर भुलि जाऐ ।
सारी धरती टुकड़े टोटे, गज-गज हिस्सा पाऐ ॥
नी समल्होन्दे राजियां तो, जोरे कन्ने राज ।
जुतियां दे तिले तां बणदे, हीरे मोती ताज ॥
जीव-जन्त दे भारें धरती, हेठो हेठ दबोऐ ।
न्हीठी जाऐ गासे तों तां, विच्च पतालें छह्‌ोऐ ॥
जालूं धरती हेठें जाणीं, चन्द सूरजें झुकणां ।
सब्ब तारियां गासे उपरा, धरती उप्पर टुटणां ॥
इक दूएं दी खिज घटै तां, अंबर भुइयां पौऐ ।
धरती उप्पर इक-इक माह्‌णूं, सुसरी साईं सौऐ ॥
कोप ठौकरे दा जीवां पर, लई कुहाड़ा नच्चै ।
न्हेर गुवारा चऊ पासियां, माया दिक्खी हस्सै ॥

हा-हा कार दुहाई सारें, आपा धापी पौऐ ।
डंगर बच्छू जीव-जन्त तां, माह्णू धरती सौऐ ।।

दो० सिबजी डमरू डोलदा, होऐ डम डम नाच ।
सागर औऐ धरतिया, अणमुक चल्लै वात ।।

कई वरी तां परलै होऐ, धरती तारे बणदे ।
कई वरी तां जीव-जन्त वी. आई जमदे मरदे ।।

कई वरी तां राछस माह्णूं, कई वरी अवतार ।
इय्यां ई तां चलदा रैह्न्दा, धरती पर व्योपार ।।

चन्दर सूरज तारे धरती, कई वरी आकास ।
जीव धरतिया उप्पर आई, लैन बधाई रास ।।

जो जमिया सो इक दिन मरना, जो बणिया सो भज्जै ।
बाजे व्याह्‌ए दे वी बज्जन, ढड-मुकाण वी वज्जै ।।

माया जो तां ठौकर जाणै, माह्णूं अकली अन्हा ।
परमेसर दी बोली इसदे, नईं सणोऐ कन्नां ।।

जालूं माह्णूं सिरखुद होऐ, परमेसर अवतारै ।
सिरखुद माह्णू वरदानी जो, ठौकर अप्पूं मारै ।।

मारै धरती उप्पर आई, ठौकर लै अवतार ।
अपणें सस्तर लई कमानां, कई रूप करतार ।।'

इतणीं गल्ल सुणीं जां अंगद, मिटिया पश्चाताप ।
तारा दे हिरदे दे विच्चा, चली गिया सन्ताप ।।

बाली दा संस्कार करी जां, अंगद महलां आया ।
राम गुसाईं सुग्रीबे जो, मत्थें तिलक चढ़ाया ।,

सुग्रीबे दे राज्जे अन्दर, अंगद था युवराज़ ।
कसमां बीड़े सबनां चुक्के, राम गुसाईं काज ।।

हनूमान ने किट्ठे कीते; बान्दर फौज बणाई ।
जामवन्त रिच्छां दी वखरी, करन लगा सखलाई ।।

अणमुक्के दे बान्दर भालू, किसकिंधा विच आए ।
जय कारे सुग्रीव अंगदे. राम लखण दे लाए ।

दो० किसकिंधा विच राम दी, होई जय जय कार ।
सीता पासें हुण चले. हनूमान बलकार ।।

सो० गासे उडदा तेज, योधा बलकारी बड़ा ।
महावीर इक देव, सोभा धरती सुरग दी ।।

नवम सर्ग

सो० गढ़ लंका दा दूर, सागरें डूगी खाई ।
सीता थी मजबूर, रावणें कैदा पाई ॥

दो० तोता बचन उचारदा, सुण कंगलिया हाल ।
लंका नगरी चमकदी, सुन्नें रूपें लाल ॥

राम गुसाईं गूठी दित्ती, अपणीं इक्क नसाणीं ।
गद-गद होया कण्ठ राम दा, हाखीं आया पाणीं ॥
राम गलाया महावीर तू, गढ़ लंका विच जायां ।
दई नसाणीं सीता जो तां, सारी गल्ल सुणायां ॥
इसा गूठिया दिक्खी सीता, तिज्जो लैंग पछाणीं ।
नीं तां तिन्नां तेथों डरना, कोई गल्ल गलाणीं ॥
राम गुसाईं हनूमान जो, सब गल्ला समझाया ।
महावीर ने भरी उडारी, गढ़ लंका विच आया ॥
सोक बाटिका फुल्लां भरियो, सीता ओथूं कैद ।
कक्खे तों वी हौली होई, के करदे थे बैद ॥
बड्डे ऊचे रुक्खे उप्पर, हनूमान हुण लुकिया ।
गूठी सुट्टी सीता अग्गें, जिय्यां पत्तर टुटिया ॥
सीता ने गूठी चुक्की कै, झट-पट लई पछाणी ।
डूगे सुस्कारां हुण छड्डै, हाखीं आया पाणीं ॥
रुक्ख बूटियां सीता दिक्खै, सारें नजर घुमाई ।
नई पखेरू नजरी आया, गूठी किय्यां आई ॥
हिक्का लाई गूठी सीता, लम्मे भरे सुआस ।
हनूमान हुण निक्के रूपें, आए सीता पास ॥

रावण दूत पछाणीं तिसजो, सीता मुहएं ढक्कै ।
गई ढकोई चऊं पासियां, कोई गल्ल न दस्सै ।।
थोड़ी देरा बाद पवन सुत, मिट्ठे बोल उचारे ।
मैं पुत्तर तू माता मेरी, इतणें पड़दे चाह्ड़े ।।
इस गल्ला जो सुणियां सीता, अणमुक अचरज होया ।
कदूं जम्मिया जाया पुत्तर, बड्डा इतणां होया ।।

दो० घोर मुसीबत सारदी. जालूं आई बुद्ध ।
मारैं फूकां लस्सिया, माह्णू समझी दुद्द ।।

हनूमान दी गल्ल सुणीं तां, सीता किछ नीं बोली ।
महावीर ने तरले कीते, तिन्नां जीव्ह न खोली ।।
हारी थक्की बोलण लग्गा, 'महावीर सुण माए ।
राम चन्द्रां भेजिया मिज्जो, तिन्नीं सब्द सुणाए ।।
अपणीं गूठी मिज्जो देई, दित्ती राम नसाणीं ।
बोलण लग्गे गूठी दिक्खी, सीता लैंग पछाणीं ।।
किछ दिनां दा दुख एह माता, लंका अग्गी जल़ना ।
रावण दे सारे बंसे ने, भल़-भल़ करदें बल़ना ।।
बड़े-बडे तां दानव योधे, लउएं आलीं तरने ।
इक लख पुत्तर सौ लख नाते, रावण दे सब मरने ।।
सुन्ने दी लंका तां सारी, विच्च सागरें डुवणीं ।
डूगी धरत पताल़ें जाणीं, नईं कुसी जो सुझणीं ।।
गढ़ लंका पर इल्ल पखेरू, रातधियाड़ें फिरने ।
बान्दर भालू लंका दे विच, नईं घेरियो घिरने ।।
पार समुन्दर राम गुसाईं, अणमुक फौज बणाई ।
किच्छ दिनां विच गढ़ लंका पर, करनी राम चढ़ाई ।।
राम गुसाईं दे वाणें ने, रावण सीस कटोणा ।
तिसजो आई युद्ध मदाने, रणवासें ने रोणां ।।
रावण महलां दिय्या बत्ती, कदीं काल़ नीं बल़ना ।
गढ़ लंका दा इक-इक पत्थर, विच्च पाणिएं गल़ना ।।'
हनूमान दी गल्ला उप्पर, सीता आया हासा ।
बोलण लग्गी, 'रावण जितणां, नीं ऐ खेल तमासा ।।

गढ़ लंका दे दन्त वहादर, रावण दे सरदार ।
पिड्डे उप्पर नईं खुब्बदी, कोई पैनी धार ॥

दो० वरदानी हन रावणें, दन्त बड़े बलकार ।
धरत पतालें सागरें गासे जय-जय कार ॥

दो० चारे कूटां डरदियां, डरदे हन दिकपाल ।
अट्ठ ग्रैह हन झूरदे, किलकां मारै काल ॥

गढ़ लंका दे दानव योधे, तीरां असर न होऐ ।
किलकां मारन जोरे जालू, सागर न्हीठा होऐ ॥
सूरज दी रसमां जो ढक्कै, फौज वड़ी वे-अन्त ।
जीब जंगलें जाई लुक्कन, डूगें पाणीं जन्त ॥
कुम्भकरण नाएं दा योधा, युद्ध मदाने जाऐ ।
कई करोड़ां जांबां मारै, लक्खां चुक्की खाऐ ॥
मदियो हाथी दन्त पुराणें, रावण तेज अपार ।
वानरभालू किय्यां लड़ग, बेटा बुद्ध बचार ॥
तेरे साऽईं निक्के बान्दर, गढ़ लंका पर चढ़गे ।
मेरे साऽईं सैंह वी एथूं, तड़फी-तड़फी मरगे ॥
तेरे जिसमें दिक्खी कै मैं, होआनी हैरान ।
अग्गी दे विच्च छाल लाई, मत हुन्दे कुरबान ॥
राम गुसाईं अग्गें जाई, मेरी गल्ल सुणायां ।
गढ़ लंका दे भट्ट योधियां, दा सब हाल सुणायां ॥
महावीर ने गल्ल सुणीं तां, इक दम गुस्सा आया ।
बद्दा-बद्दा बदी गिया हुण, अणमुक देह वधाया ॥
सीता दिक्खी हब्ब हुई हुण, महावीर मुस्काए ।
सीता माता दे अग्गें हुण, अंग-अंग दरसाए ॥
हनूमान दा पिंड्डा सुज्झै, वड्डा इक्क पहाड़ ।
सीता मनें तसल्ली होई, महावीर बलकार ॥
सीता दे हुकमे दे कन्ने, निक्का रूप बणाया ।
हनूमान ने राम-राम दा, मन्तर भिरी गलाया ॥
भुक्खा मैं तां कई दिनां दा, माता मेरी राणीं ।
फला फरूटा रुक्खां दिक्खी, जीब्हा आया पाणीं ॥

दो० हनूमान दी गल सुणीं, सीता होई हब्ब ।
गुञ्जल् पेच मुकद्दमां, सोचां सोचै जज्ज ।।

किछ घड़ियां हुण मनें बचारी, सीता सब्द सुणाया ।
सोक वाटिका दे पहरे दा, इक-इक भेत गलाया ।।
सीता बोलै, 'दानव योधे, इस बागे दे पाऽरी ।
फलां तोड़ने वाल् जो तां. जिन्दू दिन्दे मारी ।।
किय्यां बोलां क्या दस्सा मैं, मन मेरा घबराऐ ।
इस बागे दा माली इस जो, घड़ी न छड्डी जाऐ ।
जालूं होऐ पत्तर टुटणें, दी रती भर छेड़ ।
अणमुक्के दे दन्त दौड़दे, हक्ख झमकणे देर ।
नईं पखेरू इस बागे विच, फंग उडाई सकदा ।
बूटियां पत्तर तोड़ै सैह, कदीं बची नीं सकदा ।।
बागे दे विच पहरा दिन्दे, कई सपाई फिरदे ।
छेड़ रती भर होऐ दौड़न, दिक्खन पत्तर किरदे ।
जे तूं बागे अन्दर जाई, छेड़ जरा वी कीती ।
भिरी दानवां पकड़ी लैणां. तिज्जो हाखीं मीटी ।।
तूं इक्क एह कई खरोणें. पतां नईं के होणां ।
जे तिज्जो एह किछ गलांगे, मेथो नईं झलोणां ।।
इक्की वक्खें डूगा खातर, दूएं दुस्सै खाई ।
वैदेही दी अकली अन्दर, कोई गल्ल न आई ।।
इक पासें था भुक्खा सेवक लई सनेआ आया ।
दूएं वक्खें दुसमण ने था, चप्पा-चप्पा छाया ।।
फल् खाणें दी आज्ञा दिन्दी, तां मौता दा डर था ।
हनूमान था पखला लंका, दन्त दानवां घर था ।।
हनूमान सीता जो दिक्खै, अपणे आपे तोलै ।
आज्ञा दे हुण मिज्जो माता, पलें-पलें हुण बोलै ।।

दो० हनूमान जो दिक्खिया, सीता भरे सुआस ।
बोलण लग्गी बेटिया, मनें नईं बिसुआस ।।

दो० चऊ पासियां अग्ग ऐ. लपटां मारन सेक ।
छालीं मारैं ऊचियां, रई बगाने देस ।।

तूं किल्ला एह अणमुक्क हन, गढ़ लंका परदेस ।
जे मैं भुक्खा भेजां तिज्जो, मेरे मनें कलेस ॥
दऊं पासियां जिन्द धड़ोऐ, जिय्यां सप्पें गाला ।
जे खाऐ तां कोह्ड़ी होऐ, जे गुल्लै मुख काला ॥
सीता दी गल जाणीं बुज्झी, महावीर हण बोले ।
अपणें मन दे धागे डोरे, इक दम सारे खोले ॥
बोलण लग्गे, 'माता दानव, चिड़ू-पखेरू सारे ॥
मेरे अग्गें किछ नीं करदे, पैने सस्तर सारे ॥
बज्जर देह मेरी माता सुण, तीरां असर न होऐ ।
किरपाणां दा फट्ट न बज्जै, बरछा नईं खड़ोऐ ॥
नीं मैं जलदा अग्गी अन्दर, नईं पाणिएं डुबदा ।
मेरे पिड्डे उप्पर आई, तीर रत्ती नीं खुबदा ॥
जे तूं बोलैं तां लंका दा, धूड़ धुड़ैनां पुट्टां ।
मेघनाथ तां कुम्भकरण जो, सणें रावणें जुट्टां ॥
आज्ञा होऐ इक घड़िया विच, गढ़ लंका जो ढाना ।
जे तूं बोलैं तां रावण दी, इट्टा इट्ट बजाना ॥
स्वामी दी आज्ञा जो होऐ, सणें आसनें चुक्कां ।
गढ़ लंका जो सणें रावणें, विच्च पतालें सुट्टां ॥
दन्त दानवां दी घड़िया विच, सारी करां सफाई ।
राम गुसाई आल गलाऐं, तिज्जो दियां पुजाई ॥
स्वामी दी आज्ञा नीं माता, तां मैं ढूण-मढूणां ।
मत समझैं तू मिज्जो किल्ला, मैं जोरे विच दूणां ॥
कई दिनां दा मैं तां भुक्खा, माता गल सुण मेरी ।
फल खाणे दी आज्ञा दे हुण, कजो करा नीं देरी ।

दो० **सीता सोचां सोचदी, अपणें मनें बचार ।**
फल खायां मत तोड़दा, डालू तूं बलकार ॥

हनूमान ने सीता जो हुण, चरनां सीस नुआया ।
सीरबाद ठंडा देई कै, सीता ने समझाया ॥
'फल खायां पर छेड़ रती भर, रुक्खां पर मत करदा ।
न्हीठे-न्हीठे तोड़ी खायां, तूं उप्पर मत चढ़दा ॥

जय हुणराम लखण दी बोली, हनूमान जे आया ।
लाल गुच्छियां फल दिक्खी कै, जीं तिसदा ललचाया ।।
फल खाई कै डालू भन्ने, बान्दर वुद्ध बचारी ।
इक रुक्खे तों दूएं जाई, लगा मारनां छालीं ।।
रौला रप्पा चऊं पासियां हनूमान ललकारै ।
अद्दे खाए अद्दे सुट्टै, अद्दे भुइयां झाड़ै ।।
किछ घड़ियां विच कच्चे पक्के, तोड़ी धरती सुट्टे !
पहरेदारां जो ललकारी, सारे तिन्नी कुट्टे ।।
सोक बाटिका खाली सुज्झै डालू सारे भज्जे ।
माहावीर किलकारी मारै, फलां बूटियां गव्हे ।।
अक्षय दे अग्गें जाई कै, पहरेदार पटोए ।
इक-इक गल्ल गलाई सारी ज़ार-ज़ार हुण रोए ।।
बोलण लग्गे महाराज इक बान्दर भारी अया ।
सोक बाटिका उजड़ी सारी, तिन्नी रौला पाया ।
कच्चे-पक्के फल तोड़ी कै, धरती उप्पर सुट्टे ।
पहरेदारां जो धमकाया, सारे तिन्नी कुट्टे ।।
इक-इक बूटा खाली सुज्झै डालू सारे तोड़ें ।
बड़े-बड़े सब रुक्ख पुराणे, तिन्नीं सब्ब मरोड़े ।।
इक बूटे तों दूएं जाऐ, अणमुक छाली मारै ।
पत्तर सारे तोड़ी सुट्टै, फलां धरतिया झाड़ै ।।

दो० कदीं तां वान्दर निक्का, कदीं बडोऐ भूत ।
लग्गै जियां गरजदा, यमराजे दा दूत ।।

दो० सोक बाटिका उजड़दी, दानव करन पुकार ।
देव कोप जिस धरतिया, इक दिन बणै उजाड़ ।।

सेना दा दल भेजा कोई, वान्दर ऐ बलवान ।
तिसदे पिड्डे नईं खुब्बदे, भाले तां किरपाण ।।
निक्का सुज्झै बान्दर सांजो, कदीं पहाड़े साईं ।
बड़े-बड़े तां रुक्ख मरोड़ै लमियां-लमियां बाऽईं ।।
जालूं तां किलकारी मारै, धरत बणें दी कब्बै ।
डर डुक्कर नीं जाणै किछ बी, न सैह वान्दर संग्गै ।।

पहरेदारां दी गल्ला पर, सारी फौज सदाई ।
महावीर दे उप्पर आई, अक्षय करै चढ़ाई ॥
दानव योधे दन्त पुराणे, तिन्नी सारे सद्दे ।
घड़िया दे विच अणमुक्कां दे, काल् दानव सज्जे ॥
चऊं पासियां न्हेरा सुज्झै, दानव सारे आए ।
सोक वाटिका चप्पे-चप्पे, जगा-जगा पर छाए ।
तिन्हां जो दिक्खी महावीर, अपणा देह् वधाऐ ।
राम-राम दा अपणें हिरदें, मन्तर जाप कराऐ ।
सीता दिक्खी न्हेर गुबारे, ढूण-मढूणीं होई ।
सीता हिरदे अन्दर न्हेरी, छुरिया साई छहोई ॥
सोचण लग्गी नीं खान्दा फल्, भुक्खा-भाणा जान्दा ।
राम गुसाईं अग्गें जाई, मेरा हाल सुणान्दा ॥
हुण ता मेरे साईं बान्दर, हुंगा एथू कैद ।
विना दुआई मरगा सेवक, नीं मिलणां हुण वैद ॥
सीता झूरै फल् खाणें जो, इसजो कजो गलाया ।
उमर भरे दा झूरा-झेड़ा, मेरे मत्थें आया ।
दानव गर्जे चऊं पासियां, महावीर ललकारै ।
पंज सत लत्तां तों पकड़ी कै, धरती दई पछाड़ै ॥

दो० **होन आसरे राम दे, तां नीं ढेरा बाल ।**
टल्दे दुक्ख मुसीबतां, किछ नीं करदा काल ॥

अल्लोकार दुहाई न्हेरा, चऊं पासियां धूड़ ।
दानव धरती गए भियोई, गए पटोई जूड़ ॥
हनूमान ने इक-इक दानव, धरती लम्मा पाया ।
राम-राम जय सीता बोली महावीर किलकाया ॥
अक्षय जो दौं हत्थां चुक्की, खिन्नू भिरी बणाया ।
गासें दित्ता दन्त उछाली, धरती पर पटकाया ।
अक्षय जो मरदे दिक्खी कै, दानव दौड़े सारे ।
सोक वाटिका दे विच छुट्टे, खूने दे परनाले ।
अद्दे दानव धरती सुत्ते, न्हट्ठें दौड़े जाई ।
रावण दे दरबारे अन्दर, सारी गल्ल सुणाई ॥

पहरेदारां दी गल्ला पर, रावण गुस्सा आया ।
तिन्नीं अपणां दूत भेजिया. मेघनाथ बुलवाया ॥
बोलै रावण जाअ वान्दरे, मुश्कां बन्ही आण ।
मैं दिक्खां कुण बान्दर आया, तिसदी करां पछाण ॥
गढ़ लंका विच आई बान्दर, मेरा बाग उजाड़ै ।
मेरे पहरेदारां पुत्तर, जिन्दू तें ई मारै ॥
कुनी भेजिया वान्दर एथूं, कितणें जोरे वाला ।
पकड़ी लिय्या जीन्दे तिसजो, मेरे हुकमें पाला ॥
मेघनाथ ने आज्ञा मन्नी, सस्तर अपणें धारे ।
चली पिया हुण गरजी-गुड़की, अपणें लई दुधारे ॥
हनूमान दे कन्नें आई, दानव युद्ध रचाया ।
अस्तर-सस्तर सारे वरते, किच्छ समझ नीं आया ।
महावीर दे पिंड्डे उप्पर, तीरां असर न होऐ ।
तिसदे जिसमे उप्पर कोई, सस्तर नईं खड़ोऐ ॥

दो० मेघनाथ ललकारिया. वरते सब हथियार ।
राम नाम दे जाप ने, होई तिसदी हार ॥

दो० गढ़ लंका दा सूरमां, मेघनाथ बलवान ।
वरतै अपणें बरछियां, चाढ़ै तीर कमाण ॥

सुरग पुरी जो जित्ती आया, मेघनाथ वलकारी ।
महावीर दे अग्गें आई, दिक्खै हत्थ उघाड़ी ॥
नईं पछाणैं राम दूत जो, मेघनाथ बलवान ।
बार-बार हुण तीर चढ़ाऐ, खिज्जै भिरी कमान ॥
राम नाम जिसदे हिरदे विच, तिसदा जोर अपार ।
मेघनाथ दे महावीर पर, झूठे सब्र हथियार ॥
ब्रह्म-अस्त्र दा लई सहारा दानव दौड़ी आया ।
महावीर सोचै नीं मन्नां, तां मिटणीं सब माया ॥
महावीर ने गल्ल बचारी, ब्रह्म फांस विच फसिया ।
दानव अपणां कम्म कमाई, खिड़-खिड़ करदा हसिया ॥
ब्रह्मा दी रस्सी विच वज्झा, महावीर बलकार ।
सुरगे उप्पर हनुमान दी, होई जय-जय कार ॥

महावीर जो बन्ही दानव, दरवारे विच आया।
बोलै बान्दर अप्पूं बोलग, एह कुथूं तें आया॥
महावीर जो दिक्खी रावण, लाल गुलाला होया।
पुच्छण लग्गा, 'दस्स वान्दरा, तूं कैहं अज भतोया॥
कुनीं भेजिया एथूं तिज्जो, जा तूं अप्पूं आया।
सोक वाटिका भरी उजाड़ी, इतणां जुलम कमाया॥
सप्पे दे मुहएं विच औंगल दित्ती एथूं आई।
बड़े-बड़े अजगर लंका दे, तिज्जो सड़ना खाई॥
इतणां तेरा जिगरा बदिया, गढ़ लंका विच आया।
मेरे पहरेदारां जो तूं, आई कै धमकाया॥
अक्षय मारी कै हुण तू वी, जीन्दा बची न सकदा।
सोक वाटिका दा फल् तेरे, ढिड्डें पची न सकदा॥

दो० माह्णू दानव देवते, दिक्खी के घबरान।
गास पतालें धरतिया, गढ़ लंका दी शान॥

ग्रैह अट्ठ मेरे नाएं जो, सुणीं करी गस खान्दे।
देव-देवते सांजो दिक्खी, अपणां आप लुकान्दे॥
मेघनाथ सुरगे जो जित्ती, गासें करै चढ़ाई।
अंबर दे तारे सब तोड़ै, चन्दर धरती जाई॥
दानव योधे खान बतूंगी, बाल्-बाल् नीं रैऽणा।
कुम्भकरण जो दिक्खी कै तूं, इक दम खड़ें रड़ाणां॥
चीरी सुट्टां खड़े-खड़े जो, हाखीं डेले कड्डां।
इक इक अंग मरोड़ां तेरा, लई कटारे बड्डां॥
इतणीं गल्ल गलाई रावण, इक दम होया लाल।
चन्द्रहास चुक्की कै आया, हनूमान दे वाल॥
दरवारे दे अन्दर सारे, सुन्न सुनाटा छाया।
हक्ख झमकणें दी देरा ने, उठी वभीषण आया॥
वोलण लग्गा, 'हे दसकंधर, दिक्खा बुद्ध बचारी।
दूत मारना मत्थें कालख, राजे दें ऐ भारी॥
बन्ही मुश्कां दरवारे दे, अन्दर इसजो जुट्टां।
भिरी खड़ोई इसदे अग्गें, इक-इक गल्ला पुच्छां॥

एह न बान्दर अप्पूं आया, कुनी भेजिया भाई ।
मारी दिग्गे तुसां बान्दरे, कुस्तों पुछगे जाई ॥
मरी गिया बान्दर तां सारी, गल्ल अधूरी रैह्णीं ।
उतणीं मार दिया हुण इसजो, जितनीं इन्नीं सैह्णीं ॥
जिन्दू तें मारी कै इसजो, गल्ल सिरें नीं चढ़नी ।
पाणीं दिग्गे तुसां सुकाई, किस्ती किय्यां तरनीं ॥
चार वेद छः सास्तर दिक्खा, अपणें मनें बचारी ।
बान्दर सुज्झै दूत कुमी दा, हाखीं लिया उघाड़ी ॥

दो० करी हौसला मार कुट, कीती अज्ज महान ।
सुज्झै बान्दर देवता, जा इसजो वरदान ॥

दो० कड्डा पोथी अप्पणीं, वान्दर करा पछाण ।
जाचा इसदे करम सब, होआ मत हैरान ॥

मौता तों बान्दर घवरान्दा, तां एथूं नीं पुजदा ।
हुन्दा चोर उचक्का कोई, तां सांजो नीं सुझदा ॥
जाणीं बुज्झी लंका आया मौता तों नीं डरिया ।
पहरे दारां अक्षय कन्नें, डट्टी-डट्टी लड़िया ॥
अक्षय जो मारी कैं इन्नी, अणमुक दानव मारे ।
सोक वाटिका सुन्नी कीती, बूटे सब्ब उजाड़े ॥
जां तां अवतारी ऐ बान्दर, या योधा ऐ भारी ।
सोची समझी मारा इसजो, हाखीं लिया उघाड़ी ॥
सुणीं बभीषण दी गल्ला जो, रावण वापस आया ।
हुण सिंहासन उप्पर तिन्नी, अपणां हुकम सुणाया ॥
महावीर दे पासें दिक्खी, रावण बोल उचारे ।
हनूमान मन अपणे सोचै, धन वभीषण प्यारे ॥
रावण बोलै, 'अज्ज बान्दरा, बड़ा उधारा सुज्झैं ।
गढ़ लंका विच छालीं मारैं, बली बक्करा कुद्दै ॥
मौता जो तूं जप्फी पाई, गढ़ लंका विच आया ।
कुन्नीं भेजिया एथू तिज्जो, पिंजरे विच फसाया ॥
चिड़ी न फड़कै आई एथूं, तूं तां फंग खलारे ।
चऊं पासियां सागर पाणीं, गासें जान हुलारे ॥

क्या तूं तरिया इतणां सागर, गास उडी कै आया ।
पहरे दारें कुनी मिकी कै, तिज्जो पार टपाया ॥
जा सुतियो थे चादर ताणीं, मेरे पहरेदार ।
कुनी न कीती तिज्जो दिक्खी, ओए खब्बरदार ॥
चिड़ू पखेरू डरदे सारे, कोई फल न खान्दा ।
सोक वाटिका दे पासें तां, नईं मकोड़ा खान्दा ॥

दो० किय्यां आयां बान्दरा, होया मैं हैरान ।
खुन्ने होए योधियां, दे अज तीर कमाण ॥

रावण दे अभिमाने दिक्खी, महावीर मुस्काए ।
दसकंधर जो दिक्खी बोले, रती नईं घबराए ॥
बोलण लग्गे महावीर 'मैं, गढ़ लंका विच आया ।
राम चरण दा सेवक जिसदी, धरत अकासें माया ॥
जिसदे हुकमे कन्नें धरती, चक्कर धुरी घुमान्दी ।
सत्त खण्ड नौ भवना अन्दर, चानण लोअ पुजान्दी ॥
चन्द सूरजें लोअ राम दी, तारे गासें चमकन ।
हत्थें तिसदें डोरी सारी, माह्णू हाखीं झमकन ॥
जिसदे हुकमे वाझी रुक्खां, पत्तर इक न किरदा ।
बागां अन्दर नईं बहारां, कोई फुंल्ल न खिड़दा ॥
राम गुसाईं दी लो सारें. रावण कर विसुआस ।
सच्च मनियां सीता माया, एह तां नीं जणास ॥
तूं चोरी जिसदें घर लाई, अवतारी हन राम ।
बाली दी हिक्का विच खोवन. अपणां तत्ता बाण ॥
तड़फी तड़फी बाली मोया, धरती दा बलकारी ।
राम गुसाईं दे परतापे, रावण दिक्ख बचारी ॥
खरा करैं तूं जा दसकन्धर, चरनां सीस नुआऽ ।
सीता माया घरें पुजाई, अपणीं जिन्द बचाऽ ॥
नीं तां गढ़ लंका दे उप्पर, इल्लां घेरा पाणा ।
मिरग मियाल्ला सब्ब दानवां, जो छिब्बी कै खाणा ॥
गल्ला मन्नैं तां खरा रैंह, नीं मन्नैं तां होणीं ।
काल गरजिया उप्पर होऐ तां नीं गल्ल मनोणीं ॥

ऋषियां द वरदाने रावण, दिक्खैं बुद्ध बचारी ।
सीता माया महा लच्छमी, राम निरंजन नारी ॥

दो० खरी गल्ल जां खुब्बदी, ठौकर हुंदा कोप ।
अपणीं करनी घूरदी, नईं कुसी दा दोस ॥
जोरे दे विच माह्णुएं, नईं गलोऐ राम ।
माह्णू जोर जुआनियां, नीं जाणैं भगवान ॥

महावीर दी गल्ला उप्पर, रावण गुस्सा आया ।
बोलण लग्गा, 'अज्ज बान्दरा, तू ऐं गल् लमकाया ॥
जे तूं इसतो होर चढ़ी कै, जीब्हा चा गल कड्डी ।
मुंड्डी तेरी दियां मरोड़ी, जीब्हा सुटगा बड्डी ॥
मेरे जीन्दे राम साधुएं, सीता तां नी थ्होणीं ।
गल्ल तिसादी मेरे जीन्दें, तिसजो नईं सणोणीं ॥
तिसदा भाऊ मेरी भैणां, दे नक्के जो वड्डै ।
बान्दर दस तूं सीता जो हुण, रावण किय्यां छड्डै ॥
इट्टा दा पत्थर ने देणां, मैं तां जाई जवाब ।
चिड़ी सिरे पर ठुंग्गा मारै, नईं चुप रैन्दा बाज ॥
जिय्यां मेरी करी बेजती, तिय्यां मैं वी करगा ।
अपणीं करनी दा फल् लंका, राम-राम हुण भरगा ॥
दूए दें शिर भांवड़ भड़कै, तां हसदे हन सारे ।
ढिड्ड अपणे पीड़ पौऐ तां, बोलन बुरे धियाड़े ॥
सैह राम दा भाऊ पहलैं, छिड़तड़ आई छेड़ै ।
मेरी चुक्कै पग्ग सिरे दी, धूड़ी विच्च लवेड़ै ॥
दूत बणीं कै तिसदा आयां, तूं हुण एथूं मरगा ।
दियां बढाई लत्ता बाईं, बणीं ढेडला सड़गा ॥
दसकंधर ने गल्ल गलाई, अपनां सब्द सुणाया ।
हनूमान दे अंग-भंग दा, अपणां हुकम चढ़ाया ॥
रावण दी आज्ञा जो मन्नी, दानव हुण उठि आए ।
चऊं पासियां घेरा पाया, महावीर मुस्काए ॥
भगत वभीषण सब्द उचारे, तूं के कीता भाई ।
अंग-भंग दूते दा करना, वेदां विच्च मनाई ॥

दो० बीर वभीषण बोलदा, रावण करै बचार ।
राम नाम जपदा मनें, हनूमान बलकार ॥

वीर वभीषण बोलण लग्गा, दिक्खा बुद्ध बचारी ।
बान्दर जो जिन्दू तें भाई, अपणी पूछ पियारी ॥
इसदी पूछा रली मिली कै, अग्ग दिया भड़काई ।
बान्दर दी पूछा जो फूका, दुर्गत दिया बणाई ॥
झलसोयो बान्दर जो दिक्खी, दूआ बान्दर हस्सै ।
मालक अग्गें अपणीं गल्ला, अप्पूं जाई दस्सै ॥
गिद्दड़ कुत्ते दिक्खी हस्सन, दुर्गत इसदी होऐ ।
बान्दर अपणें पासें दिक्खी, झूरी-झूरी रोऐ ॥
इस्स निहत्थे जो मारी कै, असां वीर नीं बणना ।
गुड़े ढेलुएं मारां इसजो, कजो तीर हुण तणना ॥
दूत सनेआ लेई आया, इसदा नईं कसूर ।
बान्दर बुद्धि बाग उजाड़ै, आदत तों मजबूर ॥
अंग-भंग करने दे इसदे, तुसां वचारे छड्डा ।
पूछ भांबड़ें अग्गी वाला, गढ़ लंका तों कड्डा ॥
गल्ल मनोई वीर बभीषण, तेल घियो मंगाया ।
रूं गुद्दड़ सब किट्ठा कीता, बड्डा ढेर लगाया ॥
हनूमान ने रूएं दिक्खी, अपणीं पूछ बधाई ।
राम नाम दा लई आसरा, बज्जर दई बणाई ॥
अणमुक्के दा गुद्दड़ गाला, पूछा उप्पर छाया ।
सब्ब दानवां पूछा उप्पर, तेल घियो छिड़काया ॥
दरबारे विच्च हनूमान ने, कौतक कीता भारी ।
लम्मा ल्यूंगण धरती उप्पर, रक्खै झाड़ी-झाड़ी ॥
गुद्दड़ गाला तेल घियो जां, पूछा उप्पर आया ।
दऊं दानवां अग्गी पूला, पूछा जो भड़काया ॥

दो० हनूमान दी पूछ ने, जलन लगा दरबार ।
न्हट्ठे दानव दौड़दे, होया हा-हा कार ॥
रली मिली सब फूकदे, गुद्दड़ अग्ग लगान ।
पाप रावणें भांबड़ां, बलदे तां घबरान ॥

भांबड़ पूले पूछा भड़के, हनूमान किलकाए ।
सारे दरबारे जो फूकी, महलां उप्पर आए ॥
लोऽ-लुआंटे बल्दे दिक्खी, डरी गिया रणवास ।
धूंऽ-धुआंखड़ लंका अन्दर, काला होया गास ॥
रावण दे महलां दे उप्पर, महावीर किलकारैं ।
इक पासे तें दूए जाई, लमियां छालीं मारैं ॥
लम्मी पूछ वधाई लंका, इट्टा-इट्ट बजाई ।
दानव दिक्खन दूर खडोई, हा हा कार दुहाई ॥
बली गए दरुआजे कोठे, अणमुक होई लोअ् ।
पूछा उप्पर गुद्दड़ गाला, भड़की अग्ग घियोऽ ॥
हनूमान पूछा लमकाई, चऊं पासिया ल्हेरैं ।
अपणीं पूछा दिऐ वधाईं, सिदिया कदीं खडेरैं ॥
दूरे तों दानव सब दिक्खन, नेड़े नीं हुण आया ।
मेघनाथ तां कुम्भकरण सब, रावण मन घबराया ॥
कुम्भकरण निन्दर विच बिलसै, गढ़ लंका विच सेक ।
ठौकर दे कोपे दे अग्गें, नईं कुसी दी पेस ॥
दौं घड़ियां विच लंका फूकी होई सारी काली ।
सागर पाणीं तत्ता होया, ऊची मारै छाली ॥
बड़े-बड़े दानव झलसोए, अग्गी विच्च फकोए ।
महल रावणें सुन्नें रूपें, इक दम काले होए ॥
रावण दे महलां विच कालख दानव देन दुहाई ।
महावीर ने वीर वभीषण, दा घर लिया वचाई ॥
जिसजो होऐ राम आसरा, तां अग्गी नी बलदा ।
डुब्बै भरिया पापें बेड़ा धरम पाणिएं तरदा ॥

दो० कमजोरां दे हौकियां, धुखै धुआंखड़-धूंअ् ।
फूकै महलां ऊचियां, पूछा बलदा रूंअ ॥

जे दुखाऐ कोई कुसी जो, इक दिनें सैह दुखदा ।
वड़ा खिज्जिया रस्सा भाई, इक दिन आई टुटदा ॥
रावण दी जेला अग भड़की, ग्रैह अट्ठ हुण न्हट्ठे ।
वलदे दिक्खी पहरे दारां, दूर खड़ोई हस्से ॥

राहूऊ-केतु कनै सनीचर, मंगल लए छुड़ाई ।
महावीर ने रावण कैदा. दी सब खिल्ल उड़ाई ॥
लंका दे विच अग्गी गावड़, धूंअ् अंबरें चढ़िया ।
हनूमान लंका जो फूकी, विच्च सागरें तरिया ॥
महावीर दे मत्थे छुट्टी, इक्क पसीने धार ।
मछिया दे मुहएं विच आई, महावीर बलकार ॥
पस्सीने दा मछिया ढिड्डें, पुत्तर इक्क सरोया ।
मच्छी मारी डूगी डुबकी, जां था जरा बडोया ॥
मछुए ने मच्छी जां पकड़ी, विच्च पताल़ें जाई ।
अहिरावण दी नगरी विच्च, पेटें छुरी लगाई ॥
अवतारे मछिया दे पेटें आई वीर मछन्दर ।
हनूमान दे साईं लग्गै, विच्च पतालें वन्दर ॥
अहिरावण दे पहरेदारें लिया खरीदी जाई ।
वीर मछन्दर विच्च परौल़ी, दिन्दा पहरा आई ॥
निक्का वान्दर छाल़ी मारै, चऊं पासिया जाऐ ।
अहिरावण दी विच्च परौल़ी, जोरे ने किलकाऐ ॥
चिड़ू पखेरू विच्च डगोढी, कदी न फड़कै आई ।
चऊं पासियां वीर मछन्दर, छाल़ीं मारै जाई ॥
ठौकर दी ऐ वखरी लीला, वीर मछन्दर जाया ।
मछिया दे पेटे चा निकली, विच पतालें आया ॥

कुं० अहिरावणें डयोडिया. होया पहरेदार ।
वीर मछन्दर वीर इक, धरती पर बलकार ॥
धरती पर बलकार, ठौकरे दी सब माया ।
जांणै कोई सन्त, पछाणैं तिसदी छाया ॥
बोलै कवि संसार', कटुंबी बड़े रावणें ।
दन्त बड़े बलकार, सणें सब्ब अहिरावणें ॥

दशम-सर्ग

कुं० जाड़ बसूटां पूजदे, राम न पूजन लोक ।
माह्‌णू करदा हैंकड़ी, बरतै ठौकर कोप ।।
बरतै ठौकर कोप, अकल -ां मारी जाऐ ।
मूरख वाचै वेद, पढ़ी लोकां समझाए ।।
बोलै कवि 'संसार', करै पुट्ठी करतूतां ।
हिरदे विच करतार, फरोलै जाड़ वसूटां ।।

दो० अवतारी कै देवते, अपणें कम्म कमान ।
माह्‌णूं नई पछाणदा, सब करतव भगवान ।।

पूछा अग्ग बुझाई आया, महावीर बलवान ।
सीता अग्गें मत्थे टेकै, बोलै जय-जयराम ।।
अपणां चूड़ा दित्ता तिसजो, सीता इक्क नसाणीं ।
बोलै सीता चूड़े ने हुण, अप्पूं गल्ल गलाणीं ।।
कनैं गलाया दियां सुणाई, हाखीं दिखिया हाल ।
मेरी इक-इक गल्ल गलायां, रघूवीर दे आल ।।
हनूमान ने सीस नुआया, सीता हाखीं पाणीं ।
चली पिया बलकारी योधा, चूड़ामणीं नसाणीं ।
दूए वक्खें मेघनाथ था, गासें उप्पर आया ।
बरुण देव तों लंका उप्पर, पाणीं था वरसाया ।।
रावण दे हुकमें ने इक दम, विसकर्मा बुलवाया ।
भज्जी टुट्टी लंका जो था, भिरी मुड़ी बणुआया ।।
हनूमान दा कौतक दिक्खी, रावण अचरज होया ।
पत्थे पकड़ी महलां दे बिच, किल्ला जाई रोया ।।

दसकंधर जो दिऐ दिलासा, मेघनाथ बलवान ।
पार सांगरें जय-जय कारे, जय अंगद हनूमान ॥
महावीर ने राम-राम जो, सारा हाल सुणाया ।
सीता दा दुख झूरा-झेड़ा, इक-इक करी गलाया ॥
सीता दे दुखड़े जो जाणीं, राम बड़े विलखाए ।
हनूमान सुग्रीव अंगदें, लछमण ने समझाए ॥
नल नील जो हुकम होया हुण, सेतू वन्ध बणाया ।
सागर उप्पर पत्थर वन्हें, सप्पड़ें सब्ब तराया ॥
भालू वान्दर वड़े-वड़े हुण, सपड़ां लैन उखाड़ी ।
राम लखण दे जयकारे ने, सिल्लां देन उतारी ॥

दो॰ सेतु-बन्ध जां सागरें, होया बणीं तियार ।
गढ़ लंका विच रावणें, होई-हा हा कार ॥

नल-नील ने लाई मसाला, पत्थर सिल्ल तराए ।
सागर दा जल ठाठा मारै, भालू बान्दर आए ॥
दसकंधर ने गल्ल सुणी तां, तिसजो अचरज होया ।
सागर सारा सूईया ने, इक दम सव्व सियोया ॥
रावण दे सिर सारे बोले, सागर सेतू-वन्ध ।
गढ़ लंका अवलच्छण होए, हव होया दसकंध ॥
सोचै रावण हुण के होया, सारे सिर अज बोले ।
गढ़ लंका हुण कंब्बी सारी, धरती खादे झोले ॥
सुपने रातीं माड़े होए, रावण पल नीं सुत्ता ।
गासे उप्पर पुच्छल़ तारा, पूला बल़दा छुट्टा ॥
वद्दल़ गुड़के गढ़ लंका पर, दानव जागे सारे ।
कुत्ते बोले कोअ् रड़ाए, उल्लू दिने धियाड़े ॥
मुंह मुन्हेरें रावण उठी, कैलासे पर आया ।
भोले शंकर अग्गें आई, अपणां दुक्ख सुणाया ॥
पंड भरोई पापें सारी, रावण नईं वचारै ।
सिब दे धूणें अग्गें रोई, हाखीं भार उतारै ॥
सिब संकर ने ताड़ी खोली, तां पुछिया दसकंधर ।
बोलण लग्गे, 'तू रोया हुण, आई मेरे मन्दर ॥

अज्ज आयां मुंह मुन्हेरें, के विपता सिर आई ।
इतणां बलशाली होई कै, जोरें दिऐं दुहाई ॥
मेघनाथ देए पुत्तर हन, कुम्भकरण ऐ भाई ।
गढ़ लंका दें चऊं पासियां, सागर डूगी खाई ॥
सब्ब ग्रह बसे विच्च तेरे, काल कीतिया कैद ।
मरियां जो जिन्दू जे पाऐ, तेरा सुखणू बैद ॥

दो॰ कई खरोणी दानवी, सेना ऐ बलवान ।
सुरगे दे सब देवते, दन्दां जीब्ह दबा'न ॥

दो॰ तिन्न लोक हन जाणदे, भगत अटल विद्वान ।
दानव माह्‌णूं देवते, तेरे तों घबरान ॥

चार वेद छः सास्तर जाणैं, इतणीं सिक्खिया पाई ।
रोआ करना बणीं नियाणां. तूं तां अकल गुआई ॥
भोले शंकर दी गल्ला पर, रावण सब्द उचारे ।
बोलण लग्गा, 'हे सिब संभू, होए सुपने माड़े ॥
रातीं होया इक्क सुनन्दर, लंका आफत आई ।
अग्गी गासें गारे छाए. दानव देन दुहाई ॥
सुपने दे विच दऊं साधुआं, मेरे सीस उतारे ।
कुंभकरण दे टोटे कीते, मेघनाथ बी मारे ।
दन्त दानवां दा लउ धरती, गढ़ लंका दा टुट्टा ।
सागर पाणीं महलां चढ़िया. लोथां धीड़ै कुत्ता ॥
रणवासे ने चूड़े भन्नी, रोई सोग मनाया ।
सुपने होए माड़े महलां, इल्लां घेरा पाया ॥
विच्च सुनन्दर सारी लंका, भल़-भल़ बल़दी दिक्खी ।
हक्ख खुड़ी तां चन्दर डुब्बा, भ्याग-सारथी चिट्टी ॥
सुपने दी गल चेतें औऐ, चैन दिलें नीं औन्दी ।
होयां मैं हुण तौर बतौरा, जिय्यां भखियो तौन्दी ।
रावण दी गल सुणीं संभुआं, हाखीं मीटी बोले ।
दसकंधर दे पाप-पुन्न सब, लई छाबियां तोले ॥
पुन्नां दा छाबा था गासें, पाप पतालें छह्‌ोता ।
सिव संभू ने सणें रावणें, डूगा खादा गोता ॥

कैलासे पर आए झोले, धड़ रावणें कंबिया ।
चरन सिवां दे सीस नुआई, वर रावणें मंगिया ॥
झुलदे कैलासे जो दिक्खी, रावण था हैरान ।
चिट्टा रंग्ग कपाई साईं, नईं सरीरें जान ॥

दो० **पाप बडोऐ इक्क दिन, बणदा पावें भूत ।**
घेरा पाऐ पासियां, माह्‌णू दी करतूत ॥

पुन्ने दी धरती पर आई, डंड बैठकां कड्डै ।
पापे दा जां भूत बड़ोऐ, नई माह्‌णुएं छड्डै ॥
दिऐ मरोड़ी मुंड्डी आई, माह्‌णूं विलसै धरती ।
अपणीं करतूतां नीं दिक्खै, पुच्छै गल्ला परती ॥
रावण पुच्छै. हुण के होया, नन्दी गण विलखाए ।
अज कैलासें हिल्लण होया, झोले अणमुक आए ॥
सिब जी बोले, 'दसकंधर अज, कैलासें तू आया ।
मैली धरती होई इसदी, डग मग कंबी काया ॥
पापे दे भारे ने धरती, ऊची न्हीठी जाऐ ।
कई योजनां डूगी डुब्बै, सागर विच्च समाऐ ॥
माह्‌णूं वी पापे दे भारें, इक दिन झोले खान्दा ।
पाप सिरे पर वई हस्सदा दूणां ढोल बजान्दा ॥
माया दे चक्कर विच माह्‌णूं, पाप पुन्न नीं जाणैं ।
जिय्यां आटे दिक्खी मच्छी, बिड़िया नईं पछाणैं ॥
ढैन्दा-पौन्दा पापी माह्‌णूं. नेड़ गुआंडे लैन्दा ।
रिस्ते नातें छिट्टू लग्गैं, लोकां जो वी लैन्दा ॥
पापें चिक्कड़ दिऐ चमेड़ी, सबनां चिक्कड़ लगदा ।
जिय्यां ढोली-ढोल बजाई, कई घुलाटे सददा ॥
तेरे पापे चुकणें ताईं, मैं तां न्हीठा होया ।
पापे दी गठ भारी रावण, मैं वी हेठ दबोया ॥
कैलासे पर झटके झोले, हिल्लण झूटे आए ।
नन्दी गण वी उठी खड़ोता, सब दिक्खी घबराए ॥
पुन्ने दा छाबा आकासें, पापे दी गठ डुब्बी ।
लगा पुट्टणां पापे तेरे, गिया चिक्कड़ें खुब्बी ॥

दो० नई चकोऐ ठौकरें, भारा होऐ पाप ।
माह्णूं जे पुठ कमाऐ, किछ नी करदे जाप ॥

दो० जीव सताऐ धरतिया, झिल्लां करै बछाण ।
बाग उजाड़ै ठौकरें, नीं बकसन भगवान ॥

रावण दे पापे दे छिट्टू हुण कैलासें आए ।
कैलासे दे ऊचे टिल्ले योजन थल्लै आए ।
सिवसंभू दी गल्ला उप्पर, रावण खिड़-खिड़ हसिया ।
पापे चुक्की दस सिर बोले, पुन्न अकासे न्हसिया ॥
रावण बोलै, भोले शंकर तुसां भलेखा खादा ।
चार वेद छः सास्तर जाणां, मैं नीं कीता बादा ॥
पंचवटी विच हे सिव संकर, दो बणवासी आए ।
मेरी इज्जत लुट्टी आई पुट्ठे कम्म कमाए ॥
सूप नखा दे कन्नां नक्के, लई कटारे बडिया ।
लऊ वगाया अणमुक मुहएं दन्द कोई न छडिया ॥
सैह् पुकारी षर-दूषण दें, अग्गें भैण पियारी ।
दऊं साधुआं षर दूषण दी कीती जिन्द उधारी ॥
हारी-हुट्टी गढ़ लंका विच, आई मेरी भैण ।
नईं पछाणीं दरबारे विच, लग्गै पूरी डैण ॥
मेरे दरवारे विच रोई, दुखडा मिज्जो दसिया ।
दिक्खी दुर्गत भैणां दी मैं, हत्थ कालजें रखिया ।
उठी खड़ोता चैन गुआई गिया मरीचे आल ।
हुकम सुणाया तिसजो जाई, अपणां मैं तत्काल ॥
मारीचे जो हिरन बणाई, विच्च जंगलें छडिया ।
छल कपटे ने राम नठाया, लछमण था मैं सदिया ॥
ख़ाली कुटिया दिक्खी कै मैं, जोरें अलख जगाया ।
सीता जो मैं दई भलेखा, विच्च वमाने पाया ॥
उडी गिया गासे पर ऊचा, इल्ल पक्खरू आया ।
कई ढेडल् तिसदे कीते, धरती लम्मा पाया ॥

दो० सोक बाटिका राम दी, सीता कीती बन्द ।
लिया चुकाई भार मैं, पई कालजें ठंड ॥

इतणीं गल्ल गलाई रावण, मत्थे पकड़ी रोया ।
हाखीं डुलिया अणमुक पाणीं, पर्वत सब्ब धियोया ।।
सिबजी बोले, 'हे दसकंधर कजो जणासां लुट्टें ।
कैलासे दे उप्पर आई, अपणें मत्थे कुट्टें ।।
जाल् अपणां वदला माह्णूं, अप्पूं लैणां चाह्न्दा ।
धरती खाली करदा ठौकर, उप्पर गासें जान्दा ।।
माह्णूं मूरख नईं पछाणैं, ठौकर जीब पियारे ।
खरे-बुरे जो देन नतारी, पत्थर पाणीं तारे ।।
भैणां दा वदला मुड़िया तूं, पाई कालजें ठंड ।
राम गुसाईं दी छाती पर, उठी खड़ोता गंड ।
सीता वाझी विलखी होए, तौर बतौरे राम ।
रिच्छ बान्दरां दी भरती दी, लाई तगड़ी लाम ।।
विच्च सागरें पुल् बणाई, पत्थर सप्पड़ तारे ।
रिच्छ बान्दरां दे सब योधे, सेतू पार उतारे ।।
गढ़ लंका पर आफत आई, रावण बुद्ध बचार ।
सणें कटुंबें भला चाइदा, छड्ड बगानी नार ।
मैं दिखिया मीटी कै हाखीं, पापे दी गठ भारी ।
दिखियां हत्थ इसा जो लान्दा, तत्ती भखियो गारी ।।
रिच्छ बान्दरां दी फौजा ने, लंका करन चढ़ाई ।
माह्णू नीं अवतार राम ऐ, नजरा दिक्ख दुड़ाई ।।
रावण बोलै, 'भोले शंकर, बणवासी हन राम ।
धनुष तोड़िया भिरी तुहाड़ा, तुसां करा गुणगान ।।
इक-इक गल्ला दा मैं लैणां, बदला युद्ध रचाई ।
लुकी चलाया तीर वालिए, दी वी जिन्द गुआई ।।

दो० **दुर्बल दे सुस्कार दा, बणदा बड्डा रुक्ख ।**
खून खराबा इक्क दिन, बुरा धरतिया दुक्ख ।।

दो० **पापी माह्णू दे मनें, किय्यां बस्सन राम ।**
घट-घट जिसदें पाप ऐ, तिसजो नी विसराम ।।

रावण बोलै दसरथ मरिया, लकड़ी राम न पाई ।
लई जणासा जंगल आया, अपणीं मौज उड़ाई ।।

दसरथ ने वी खरा न कीता, चोरी तीर चलाया ।
मरी गिया सरवण तड़फी कै, इक माऊ दा जाया ।।
कैकेई ने दो वर मंग्गे, वंस होया वदनाम ।
दसरथ मरिया विच्च बजोगें, नी अवतारी राम ।।
दूतां जो भेजी कै लंका, राम बणां दा सच्चा ।
हे सिब संभू लिया वचारी, रावण नीं ऐ वच्चा ।।"
रावण दी गल्ला पर सिब जी, अणमुक हासा आया ।
अट्टहास भोले शंकर दा, विच्च अकासें छाया ।
गड़-गड़ होई आसें-पासें, न्हेरी झक्खड झुल्लै ।
रावण अंध-गुवारे दिक्खी, गल्ल गलाई भुल्लै ।।
चऊं पासियां लोअ्-लुआंटे, विजली दे चमकारे ।
ऊचा न्हीठा रावण डोलै, धरती पींग हुलारे ।।
सिव जी दे इस हासे कन्नें, सागर छाली आई ।
गढ़ लंका विच पाणी चढ़िया, हा-हा-कार दुहाई ।।
रावण बोलै, 'हे सिब संभू, छमा करो हे नाथ ।
बार-बार मैं मत्था टेकां, करी दिया हुण माफ ।।
सिब दे अग्गें दसकंधर ने, अपणां सीस नुआया ।
माला पकड़ी सिब-सिब बोलै, दसकंधर भरमाया ।।
रावण दे जापे ने आई, सिब दी ताड़ी लग्गी ।
मन्तर दसकंधर हुण बोलै, वुझियो धूणी जग्गी ।।
दसकंधर हुण सिब-सिब बोलै, कैलासे पर आई ।
अग्न देव दौड़ी कै आए, धूणी अग्ग जगाई ।।

दो० मन्तर पूरा करी कै, हत्थें लइ किरपाण ।
अपणां सीस उतारिया, जय सिब लगा गलाण ।।

दसकंधर ने सीस उतारे, हवन कुण्ड विच पाए ।
भोले शंकर आसन छड्डी, रावण पासें आए ।।
कैलासे दे उप्पर रावण, सिरां उतारै जाई ।
सिब जी वोलन हे दसकंधर, तेरी बड़ी कमाई ।।
सच दस मिज्जे अज कैलासें के तूं तोपा करना ।
मेरे अग्गें सिरां चढ़ाई, मिज्जो घोखा करना ।।

हवन कुंड विच सिर रावण दा, खिड़-खिड़ करदा हसिया।
बोलण लग्गा युद्ध करन दा, असां अखाड़ा रचिया ॥
युद्धे जितणें ताई उप्पर, मैं कैलासें आया।
लई कटारा सीस उतारी, हवन कुण्ड विच पाया ॥
युद्ध मदाने अन्दर होऐ, हे सिब ताण्डव नाच।
दऊं साधुआं दिया मुकाई, ताईं कीता जाप ॥
मैं जित्तां हुण इस युद्धे जो, दई दिया वरदान।
मैं वर मंग्गां सीस चढ़ाई, पूरी करा जबान ॥
दसकंधर दी गल्ल सुणीं तां, सिब संभू मुस्काए।
दानव ने हुण दस सिर बड्डी, अग्गी दे विच पाए ॥
सिब जी सोचन नीं मन्नां गल, भगती फिरना पाणीं।
जे मन्नां तां सब्ब दानवां, सारी दुनिया खाणीं ॥
कनैं गलोणां राम द्रोई, नारायण ने वैर।
देव शक्तियां माया मिटणीं, चौं कूटां विच कैह्र ॥
दानव दल्ल मिटाणें ताईं, राम-राम अवतार।
बिमणूं राम वणीं कै आए, धरती सुणीं पुकार ॥
भोले शंकर भुल्ल-भुलेखड़, रावण मन्तर बोलै।
कैलासे जो हुण हत्थां पर, चुक्की ऊचा झोलै ॥

दो० रावण जोरें बोलदा, दई दिया वरदान।
सिव जी मन विच सोचदे, जीब्हा लगें गलाण ॥

दो० नईं पछाणन पापियां, देव-देवते सिद्ध।
भगती कीती रावणें, लगे ठगोणां सिब्ब ॥

वैकुंठे विच विसणू दे मन, आई हल-चल होई।
सिब जी दे मन जे किछ आया, कन्नां गिया सणोई ॥
झट-पट सरसुतिया जो भेजी, सिब दें हिरदें पाया।
तारां कन्नें तार जुड़ाई, गल्लो गल समझाया ॥
रावण बोलै हे सिब संभू गढ़ लंका विच जाणां।
मिज्जो तां वरदान दई कै, सारा युद्ध जताणां ॥
भोले शंकर रावण अग्गें, नांह-नुक्कर न कीती।
बोलण लग्गे चल हो अग्गें तूं हुण भगती कीती ॥

जे उतारैं रस्ते दे विच्च, पत्थर होई जाणां ।
गढ़ लंका विच दिऐं पुंजाई, तां मैं युद्ध जताणां ।।
शिव शकर दा वाक सुणीं कै, रावण देर न लाई ।
उठी खड़ोता रावण संभू, पिट्ठी लिया चढ़ाई ।।
चली पिया कैलासे तों, अद्धे रस्तें पुज्जा ।
सिब ने अपणा भार वधाया, रावण होया कुब्बा ।।
सिब संभू दे भारे कन्नें, रावण गिया पथोई ।
नीं उतारै तां साह् फुल्लै, रावण जिन्द घटोई ।।
सेतु बंध दे इक्की पासें, लए उतारी, सिब्ब ।
मुक्की हुण रावण दी सारी, शंकर अग्गें जिद्द ।।
धरती दे उप्पर जां आएं, होए पत्थर सैल ।
रावण धाड़ो-धाड़ पटोऐ नईं धियोई मैल ।।
दसकंधर दी हाखीं पड़दा, जे सिव सैह्ई राम ।
ठौकर कन्नें वैर कमाई, होऐ जिन्द हराम ।।
माया सपणीं मुहएं बाकै, फसदा माह्णू आई ।
लछमी समझी नईं पछाणै, माया डूगी खाई ।।

दो० माह्णूं अपणीं करनिया, आपूं खाऐ मार ।
नीं पछणोए कर्म गति, नईं ठौकरें सार ।।

दसकंधर हुण खाल मखूली, गढ़ लंका विच आया ।
मत्थे पकड़ी झूरै अणमुक, किच्छ समझ नीं आया ।।
दूएं पासें राम गुसाईं अंगद लिया सदाई ।
बोलन युद्ध सनेआ देणां, गढ़ लंका विच जाई ।।
राम गुसाईं दी गल्ला पर, चरनां सीस नुआया ।
युद्ध सनेआ देणें ताईं, अंगद पैर वधाया ।।
सेतु बंध दे आसें पासें सागर छाली मारै ।
अंगद लंका दे विच आई, अपणें मने बचारै ।।
गढ़ लंका विच सुन्दर नगरी, सुन्नें रूपें लाल ।
रावण दे महलां लसकारे, हीरे मोती लाल ।।
सूरज दी रस्मां ने चमकन, लंका छैल चबारे ।
अंगद दिक्खै अग्गें जाई, रावण दे दरबारे ।।

सन्तरी दी हुण लई आज्ञा, दरबारे विच आया ।
अंगद दरबारे जो दिक्खै, दिक्खी कै भरमाया ॥
चऊं पासिया तिसजो सुज्झै, रावण दा दरबार ।
इक भवनें तो दूए जाऐ, कदियों औऐ बाह्र ॥
अंगद भवनां अन्दर घुम्मी, होया तौर बतौरा ।
इक-इक भवनें अन्दर सुज्झै, दरबारे दा छौरा ॥
रावण दे दरबाने जाई, अन्दर गल्ल सुणाई ।
महाराज इक बान्दर भवनां, अन्दर दिक्खै आई ॥
कदियों बान्दर अन्दर जाऐ, कदियों निकलै बाह्र ।
जा तां बान्दर पूरा पागल, जा कोई ऐ चाल ॥
रावण दे हुकमे पर अंगद अन्दर भिरी सदाया ।
दूत बणीं वाली दा पुत्तर, रावण, अग्गें आया ॥

दो० सोर मसोरा सुणदियां, डरी गए सब लोक ।
कन्नो-सन्नीं बोलदे. आया बान्दर कोप ॥

दो० तोता बोलै माह्णुआं, सब माया दी चाल ।
धुखियो लकड़ी फूकदी, बड्डा लक्कड़ टाल ॥

दरबारे विच रावण ने हुण, अंगद लिया पछाणीं ।
दसकंधर अंगद तों पुच्छै, हुण के बणीं कहाणीं ॥
रावण बोलै, 'ओए अंगद, तूं के कम्म कमाया ।
बाली दा पुत्तर होई कै, दूत बणी कै आया ॥
अपणें बब्बे दे हतियारे, दा तूं बणियां दूत ।
इस धरती पर तेरे साईं, जम्मै नईं कपूत ॥
माऊ जो रंड्डी दिक्खी कै, तिज्जो करक न आई ।
मेरे अग्गें कजो खड़ोतां, तूं तां नक्क बढाई ॥
जे तू मेरा पुत्तर हुन्दा, बड़ी देर नीं लान्दा ।
बड्डी टुक्की टोटे करदा, डूगे गत्तें पान्दा ॥
बाली जो तां रुक्खां पिच्छें, लुकी चलाऐ तीर ।
तूं अज छाती तणीं खड़ोऐं, बणीं ठणीं कै वीर ॥
मरुआया तूं मेरा मित्तर, कालख मुहएं लाई ।
तूं तां जीन्दा बचिया अंगद, मरिया नीं किछ खाई ॥

जे तूं लैणां था बदला तां, मिज्जो कनें गलान्दा ।
दुसमण दा तूं दूत बणीं नी, घटिया कम्म कमान्दा ।।
तेरे साईं पुत्तर जम्मन, कैंह न धरती कंब्बै ।
बाली दी अम्मा वी दर-दर, कैंह न भिखिया मंग्गै ।।
इतणीं गल्ल सुणीं जां अंगद, इक्क दम गुस्सा आया ।
जोरे कन्नें पैर अप्पणां, धरती पर पटकाया ।।
दसां सिरां दे मुकट किरी कै धरती उप्पर आए ।
रावण दे दरवारी सारे, हब्ब होई पछताए ।।
इक दूए दे पासें दिक्खन, रावण दे दरबारी ।
घोर धमाका धरती कंब्बै, सब्बनां दी मत मारी ।।

दो० **इक्क फूकदा नगरिया, दूआ मारै लत्त ।**
इकनीं ताज उघाड़िया, दूआ तोड़ै लक्क ।।

लई सोठुए कुब्बा चल्लै, माह्णू किछ नीं दिखै ।
इक रावण दे हाले दिक्खी, दूआ किछ नीं सिक्खै ।।
काल सामणें नजरी औऐ माह्णू तिस नीं मन्नै ।
खड़े कियाड़े चुक्की चल्लै, नीं मुंड्डिया भन्नै ।।
धरती घोर धमाका लंका, थर-थर कंब्बी सारी ।
कन्नो सन्नी बोलन दानव, गल्ल बड़ी ऐ माड़ी ।।
कोई बोलै दूआ बान्दर, दरबारे विच आया ।
इकनी आई लंका फूकी, कीता सब्ब सफाया ।।
दरबारी हुण सब घबराए रावण दा हठ पूरा ।
हां ने हां रावण ने मेली, दिन्दे सब हंगूरा ।।
दसकंधर दा भयकारा था, सच्च कोई न बोलै ।
बिलिया दे गल् घंटी बन्ही, मौता जो कुण टोलै ।।
इक पासें था रावण पापी, दूएं पासें राम ।
इकसी हत्थें छुरी कटारी, दूएं तीर कमाण ।।
रावण दे दरबारे अन्दर, अंगद सब्द सुणाया ।
बोलण लग्गा हे दसकंधर, मैं सन्देसा लाया ।।
राम भेजिया लंका मिज्जो, युद्ध सनेहे ताईं ।
बाली पुत्तर दूत राम दा, राम सिरा दा साईं ।।

सीता जो तूं मोड़ैं रावण, तां समझौता होणां।
नीं तां लंका लउएं तरनीं, सागर पाप धियोणां ॥
सुन्ने रूपे जड़ियो लंका, कुर्सी कम्म नीं औणीं।
ढई-डुली कै चूर-चूर तां. धरती उप्पर पौणीं ॥
चढ़ी चबारे ऊचे महलां, रिच्छ वान्दरां नचाणां।
तेरी अकला उप्पर लोकां, खिड़-खिड़ चारें हसणां ॥'

दो० गल्ल गलाई अंगदें. रावण होया लाल।
गुस्सा खाई बोलदा, तेरा अंगद काल ॥

दो० जिस पर ठौकर कोपदा मारै तिसदी बुद्ध।
अक्खर वेद उचारदा मतलब दी नईं सुध ॥

रावण बोलै, 'ओए अंगद, जीव्हा लैंऽगा कड्डी।
दियां धड़ाई खल्ल उतारां, जल्लादां जो सद्दी ॥'
अंगद बोलै, 'तेरा कोई, योधा ऐ बलवान।
धरती उपरा पैरे ल्हेरै, मैं हौआं कुरबान ॥
अंगद ने था पैर जमाया, गढ़ लंका विच जाई।
सब्ब योधियां जो ललकारै, पैरे पुट्टा आई ॥
नईं पटोया पैर जाणियों लंका ढेई जाणां।
इक दिन रावण मत्थे पकड़ी, तूं फिल्लें पछताणां ॥
अंगद दी गल्ला पर आए, हुण योधे बलुआन।
बारी-बारी न्हीठे होई, अपणां जोर लगान ॥
सब्ब योधियां जोर जाचिया, नईं पटोई लत्त।
कईं दानवां दे अंगद दें, अग्गें हारे हत्थ ॥
हारी हुट्टी रावण उठिया, आया अंगद आल।
न्हीठा होया, अगद ल्हेरी, लत्त लई ततकाल ॥
बोलै अंगद, 'हे दसकंधर, मैं बालक बुद्ध निक्की।
हारी जांगा मेथों जे तूं, मिज्जो लगणीं छिट्टी ॥
जे तूं लैणीं माफी रावण, राम दे पैरां पौऽ।
राम बड़े परतापी तिज्जो. करगे सैह निरभौ ॥
इतणीं गल्ल करी कै अंगद, अपणां पैर हटाया।
रावण झूरै अपणें आपे, उट्ठी कै पछताया ॥

बोलै रावण, 'नट्ट मरासी, करदे अपणें खेल ।
वीर योधियां दा नट्टां ने नईं रती भर मेल् ।।
युद्ध भूम विच पैर न जम्मै, बान्दर नईं खड़ोन ।
भंड मरासी युद्धे दिक्खी, डाडां मारी रोन ।।

दो० बान्दर रिछ नचाई कै, छालीं मारन भंड ।
विच्च मदाने सूरमे, लड़दे योधे जंग ।।

जादू टूणे धूण पलीते, योधियां नीं पछाण ।
चेले जोगी कनै मदारी, धरती पैर जमान ।।
अंगद दी गल्ला दा रावण रती असर नीं जाणैं ।
काल सिरे पर सनमुख औऐ, ठौकर नईं पछाणैं ।।
नईं समझिया रावण अणमुक, अंगद ने समझाया ।
गढ़ लंका विच दई सनेआ, पार सागरें आया ।।
राम पुच्छिया अंगद तों, दसकंधर दा हाल ।
बोलै अंगद, 'गढ़ लंका विच, चऊं पासियां काल ।।
आसें-पासें गासें उडदे, इल्ल पक्खरू दिक्खे ।
गिद्दड़ दिनें धियाड़े बोलन, रोन कतूरू निक्के ।।
ऊल्लू साईं संझा बोलै, गड़ लंका दे अंदर ।
पुच्छल् तारे बल्दे टुट्टन, काला दुस्सै चन्दर ।।
फौई बिल्ली नौल् रड़ाऐ, महलां नेंड़ें आई ।
खाए माह्णूं लंका विच नीं, अपणीं नेक कमाई ।।
हटियां अन्दर खोह घसींटी, मन मरजी दे भाऽ ।
फरियादी जो हाकम कुट्टै, जे सैह गल्ल सुणाऽ ।।
रावण दे दरवारी सारे, जीऽ हजूरे दिक्खे ।
झूठो-झूठ गलोऐ सारें, झूठे कागद चिट्ठे ।।
बिजन कसूरें फांसी चढ़दे, कातल होन मुआफ ।
रावण दे दरबारे अन्दर, उडी गिया इनसाफ ।।
मास-सराबे दी दुरगंधी, डंगर विग्ला-खिरला ।
जीव-जन्त सब देन दुहाई, जान बचाऐ किरला ।।
सीना जोरी चऊं पासिया, कमजोरां जो धक्के ।
इग्यां लग्गै सब्ब जुआरी, आई लंका बस्से ।।

दो० रावण दे दरबारियां, हर-दम मौज बहार ।
सदा हजूरे नौकरां, होया कम्म बगार ॥

दो० विषय विकारां मेलिया, भुल्ले ठौकर लोक ।
डाकू चोर लुटेरिया, पर नीं लंका रोक ॥

पूजा पाठ करै नीं कोई, नीं ठौकर जो जाणैं ।
कोई सुरियाखा हाखीं ने, अन्हे नईं पछाणैं ॥

गलियां अन्दर रातीं पहरा, जोरें खब्बर दार ।
गढ़ लंका विच रात धियाड़ें, रावण दी जयकार ॥

भोगी कनैं विलासी दानव, नईं कुसी जो पुच्छै ।
गढ़ लंका विच धरम-करम दा, कोई कम्म न दुस्सै ॥

इक-मिक सारे लंका अन्दर, दानव योधे भट्ट ।
गल्ला परती नईं गुजरदे, बाऽणें तों वी फट्ट ॥

तौर बतीरा रावण दिखिया, विच दरबारें जाई ।
गल्ल करन दी दसकंधर दे, मगजें नईं समाई ॥

सब्ब जणासां खुल्ले मुहएं, बोल-वगाड़ां दिखियां ।
हर वेलें तां करन लड़ाई, छन्नी मारन गिटियां ।

वेदां दी बाणीं नीं ओथूं, चुगली मैंऽजर तेज ।
सबनां ऐश परस्ती लंका, कनै पियारी सेज ॥

हाकम दे हुकमे जो थप्पड़, हूरा मुक्की लत्त ।
नईं मन्नदे लोक कनूने, सब कैसी दी बस्स ॥

जे दिखिया मैं सच्च गलाया, हे तिरलोकी नाथ ।
गढ़ लंका विच खरे बुरे दी, नीं पछणोऐ जात ॥

इतणीं गल्ल गलाई अंगद, चरनां सीस नुआया ।
राम नाम दा अपणें हिरदें, मन्तर जाप कराया ॥

अंगद दी जां गल्ल सुणीं ता, हाखीं मीटन राम ।
तिरलोकी दे नाथ राम हुण, करन लगे विसराम ॥

सारी गल्ल बचारी समझी, भगवन बोल उचारे ।
करम करै नीं माह्णूं सोची, तां समझा दिन माड़े ॥

दो० दिक्खै न हाखीं खोड़ी, बुद्धि न करै विचार ।
सदा हजूरे साथियां, माह्णूं खाऐ मार ॥

सो० नईं ठौकरें दोस, फलै माह्णूं दी करनी ।
होऐ जां बेहोस, डुबै डूगी बैतरनी ॥

महाकाव्य 'माया'

एकादश सर्ग

सो० ठौकर माया जाल्, धरतिया धागे डोरे ।
बिड़ियां पंज बकार, चुबक्खे तुबकां तोड़े ।

दो० टौकर छाबा तोलदा, तिस छाबें नीं काण ।
जीव ठौकरें रूप सब माह्णू नईं पछाण ।।

लछमण पासे दिक्खी बोलै, राम पियारे बोल ।
उट्ठ लछमणां वीर पियारे, हाखीं अपणीं खोल ।।
गढ़ लंका विच रावण पण्डत, चार वेद दा ज्ञाता ।
सेतु-बन्ध प्रतिष्ठा करनी, सदणां कल्ल प्रातः ।।
शिब शंकर दी पूजा पूरी, असां आरती करनीं ।
कई खरोणी सेना आई, बंधे उप्पर चढ़नी ।।
गढ़ लंका विच लछमण जायां, रावण कल्ल पुजाणां ।
दिन चढ़दे ने पूजा पाठें, दा सब कम्म मुकाणां ।।
करी आरती पूजा पूरी, असां चढ़ाई करनी ।
चौं घड़ियां दे तड़कें सदणां, रावण देणीं बरनी ।।
राम गुसाई दी गल्ला पर, लछमण करै बचार ।
उट्ठै बौऐ कई वरी हुण, जिय्यां कोई बमार ।।
बोलै लछमण, 'अकली कन्नें, कम्म करा किछ भाई ।
इस हुकमे जो मोड़ा हिरदे, अन्दर लिया लुकाई ।।
रावण बैरी युद्ध मदाने, असां लड़ाई करनी ।
किय्यां देणीं तिस रावण जो, पाठ करन हीं बरनी ।।
'पूजा पाठ तपे दे कन्नें, स्हाड़ी नईं लड़ाई ।
रावण दे माड़े करमां पर, करनी असां चढ़ाई ।।

गल्ला दो गल लैणीं देणीं, बोले हुण रघुवीर ।
युद्ध मदाने असां बरतणें, अपणें तरकस तीर ॥
छः सासतरां दा नीं ज्ञाता, रावण साईं कोई ।
ब्रह्मा वी लागें नीं फड़कै, दिक्खै दूर खड़ोई ॥
रावण पूरा पण्डत लछमण, बुद्धि कनें बचार ।
तिसदे कण्ठें गट-गट बोलन, वेद बणीं कै चार ॥

दो० **खोटी करनी काल ऐ भुलदे वेद पुराण ।**
अठ कूटां विच धरतिया, रावण इक बिदुआन ॥

राम गुसाईं दी गल्ला दा, लछमण पार न पाया ।
बोलण लग्गा, 'बड़ी अनोखी, राम गुसाईं माया ॥
लछमण दी जां गल्ल सुणीं तां, बोल उचारे राम ।
रावण-रावण दियै नठाई, तां ऐ पूरा राम ॥
रावण नीं था जमिया धरती, था सैह् पूरा राम ।
रावण दे पुटठे कम्मां ने, कीता सैह् बदनाम ॥
जोरे दिक्खी भुली गिया हुण, अकली अन्हा होया ।
ठीकर कन्ने बई बराबर, छावे विच्च तलोया ॥
सद्दी लिय्या मत पुच्छैं हुण, करनी असां चढ़ाई ।
रावण जो बन्ने लाणें दी, माया सब्ब रचाई ॥
इतणीं गल्ल सुणीं कै लछमण, गढ़ लंका विच आया ।
रावण दे महलां विच आई, पण्डत करी कुआया ॥
बोलै लछमण, 'हे दसकंधर, चार वेद दे माली ।
सेतु-बन्ध दे आसें पासें, सागर मारै छाली ॥
सेतु बन्ध प्रतिष्ठा ताईं, मैं लंका विच आया ।
राम चन्द्रां मुंह्-मुन्हेरें, पण्डत करी सदाया ॥
रावण बोलै, हे लछमण हुण, धर्म संकटें गल्ल ।
सीता बाझी पूजा किय्यां, पूरी होऐ कल्ल ॥
इक पासें हुण कर्म कांड ऐ, दूएं राम द्रोह ।
रात दिने दा अन्तर लछमण, छूईं दुद्द घियोअ् ॥
कर्म काण्ड मैं कदी न छड्डां, ब्रह्म डोरिया बदिया ।
पुल प्रतिष्ठा दा कम करना, जे राम नें सद्दिया ॥

चौं घड़ियां दे तड़कें सीता, पार सागरें जांग ।
खब्बे अंग्गें बई राम दे, सारा कम्म कमांग ॥

दो० **गल्ल सुणीं जां लछमणे, इक दम होया सुन्न ।**
पाप बिसारे रावणें, आए चेतें पुन्न ॥

दो० **रावण पण्डत धरतिया, वेद उचारै चार ।**
खोटी करनी नित करै, खाऐ तिसतों मार ॥

लछमण जो दिक्खी कै रावण अपणां बोल सुणाया ।
सेतु-बंध दी परतिष्ठा दे, ताईं था समझाया ॥
'परतिष्ठा दा कम्म करी कै, गढ़ लंका विच आई ।
लछमण सीता सोकबाटिका, दे विच दियां पुजाई ॥
जे लछमण तूं बचन दिऐं तां, पूरा होऐ कम्म ।
दिखियां झूठ गलान्दा नीं तां, भरना पौणां डन्न ॥
इतणीं गल्ल सुणीं कै लछमण, होया हक्का-बक्का ।
सोचण लग्गा रावण ज्ञानी, नीं ऐ चोर उचक्का ॥
रावण दी एह गल सुणीं तां, लछमण सब्द सुणाया ।
बचन दई कै पूरा पक्का, पार सागरें आया ॥
दौं घड़ियां विच रावण आया, सीता लई सदाई ।
खब्बे पासें राम गुसाईं, माया लई बठाईं ॥
सेतु बन्ध दी पूजा कीती, रावण मन्तर बोलै ।
चार वेद दा ज्ञाता अपणें, सुरबे हत्थें तोलै ॥
हुई आरती पूरी रावण, आया उडी उडारी ।
वचनां बदिया लछमण सीता, लंका भिरी उतारी ॥
अपणे हत्थें लछमण सीता, कैदां विच हुण छड्डी ।
सागर तीरें आया लछमण, तरकस लक्कें बद्दी ॥
परतिष्टा पूरी होणें पर, जोरें बिगल बजाया ।
गरजे योधे जोरें जोरें, धरती पलटी काया ॥
जामवन्त नल-नील चले हुण, सांबी सब्ब कमाण ।
सुग्रीव चले सेना सारी, अंगद तां हनुमान ॥
उठी खड़ोते सारे योधा, सेना गरजी सारी ।
रिच्छां दी चिघाड़ चुबक्खें, वान्दर दी किलकारी ॥

दो० धरत पतालें गर्जनां, होया सब्द अकास ।
देव देवते दिक्खणां, चढ़ी खड़ोते गास ॥
सेतु बन्ध दे अक्खें-बक्खें, सागर हत्थ पसारै ।
कई योजनां विखरी सेना, जय-जयकार पुकारै ॥
खरब खरोणीं बान्दर सेना, रिच्छ चढ़ी कै आए ।
बड़े-बड़े बलकारी योधा, युद्ध वीर किलकाए ।
गासें उडिया धूड़ धुड़ैना, सूरज रती न सुज्झै ।
दिन चढ़दे ने न्हेर गुबारा, गल्ला जो कुण बुज्झै ॥
सस्तर-अस्तर तीर कमानां, चम-चम चमकन सारे ।
बड़े-बड़े बुगदर परसे सब, दुस्सन इक्क कनारे ॥
भालू बान्दर जोरें बोलन, राम लखण दी जयऽ ।
महादेव जय हनूमान जय, अंगद करन अभैऽ ॥
अग्गें चल्ले राम लखण हुण, सेना दी अगुआई ।
जटा-जूट सिर तिलक चढ़ाए, धनुष वाण लमकाई ॥
सेतु-बन्ध दे पारें उतरे, हनूमान सुग्रीव ।
कई खरोणी सेना आई, जामवन्त नल नील ॥
गढ़ लंका विच बिजली चमकी, हल-चल गई अकास ।
मन्दोदरी चैन चली गई, होया चित्त उदास ॥
सोचै राणीं अज के होया, सज्जी हक्ख फणाकै ।
बिल्ली रोऐ उप्पर महलां, उल्लू आई झाकै ॥
कुत्ता रोऐ बई दुआरें, कौब्बा बुरा पुकारै ।
भिरल उडै हुण भरै उडारी, हाखीं खूब उगालै ॥
सुपने रातीं माड़े होए, न्हठी गया सब चैन ।
रावण दे अग्गें आई कै, बोलै राणी बैन ॥
बोलण लग्गी 'पति देव अज, अबलच्छण सब होए ।
रातीं पुच्छल तारे टुट्टे, बलदे धरती छहोए ॥

दो० छड्डा कैदा जानकी, अपणीं मन्ना हार ।
लंका उप्पर सुज्झदा, कोई खूनी वार ॥

दो० पटराणी दसकंधरें अरज करै अरदास ।
हे नाथ ! अबलच्छण हुण, होए धरती गास ॥

सीता कोई नईं जनानी, लंका होणी सुज्झै ।
इस गल्ला जो विरला-खिरला, कोई माह्‌णू बुज्झै ।।
जनके ने धरती चा पुट्टी, आफत तिस पर आई ।
धरती दे अन्दर जाई कै इन्नां धरत सुकाई ।
जितणें दिन धरती दे अन्दर, सीता दा लउ लाल ।
उतणें दिन तां जनक पुरी विच, होया नईं सुकाल ।।
धरती चा पुट्टी कै पाली, होई जदूं जुआन ।
सिब जी दे धनुषे जो चुक्कै, होया जनक हरान ।।
सीता दे व्याए दी जनकें, अपणीं शर्त सुणाई ।
सब देसां दे राजें सद्दे, अपणीं गल्ल जताई ।।
सिब जी दे धनुषे जो चुक्कै, सीता सैह्‌ बियांग ।
सीता वी तिसदें गल जाई, जय माला जो पांग ।।
सब्ब राजियां जोर लगाया, अपणां बारो-बारी ।
नईं चकोया धनुष कुसी तों, बाजी सबनां हारी ।।
लंका दा राजा जां पुज्जा, ऊची हक्क सुणाई ।
'गढ़ लंका विच अग्ग चुबक्खें, आई लिया बुझाई ।।''
नईं चकोया धनुष कुसी तों, था तोले दा भारी ।
आखर वेलें राम गुसाईं, दी आई थी बारी ।।
इकसी हत्थें धनुष चुक्किया, लस-लस विजली चमकी ।
धक्के अणमुक खाऽदे धरती धुंद अकासें रणकी ।।
राम-राम जय जय कारे थे, सिव दा धनुष उठाया ।
अणमुक टोटे धनुषें होए, खिज्जी डोर चढ़ाया ।।
सीता ने जय माला चुक्की, राम गले विच पाई ।
बाजे गाजे ढोल नगारे, सीता राम विआई ।।

दो० पुज्जी विच्च आयोध्या, राम गया बणवास ।
दसरथ मोया विलखदा, रोया सब रणवास ।।

सीता पंचवटी विच आई, षर-दूणण संहारे ।
गिद्ध जटायू जान गुआई, सीता दरसन माड़े ।।
गढ़ लंका विच आई सीता, न्हठी गिया सुख चैन ।
छडी दिया इस माया होणीं, मेरे मन्ना बैन ।।

धरती उप्पर सीता होणी, माया ठीकर आई ।
जगा-जगा जाई कै इन्नां, कीती खरी सफाई ।।
पटराणी दे वचनां उप्पर, रावण हासा आया ।
दसकंधर राणी जो पुच्छै, तूं के वचन सुणाया ।।
मरदां दा तां कम ऐ राणीं, गल नीं घिरदी-फिरदी ।
माया ऐ जा सीता होणी, दिक्खां ताकत इसदी ।।
नौ ग्रैह सेवा विच्च मेरी, काल कैद मैं कीता ।
सुरगें जाई लड़ी लड़ाई, अंबर सारा सीता ।।
बान्दर भालू किट्ठे कीते, लंका करन चढ़ाई ।
दन्त-दानवां खाणें चब्बी, लैणी मौज उड़ाई ।।
कुथीं दी जोड़ी इट राम ने, पाया अद्दा रोड़ा ।
गोटे दी अग निस्सल् जाणीं, कदीं न भखणां तोड़ा ।।
इतणीं गल्ल गलाई रावण, दरबारे विच आया ।
मन्तरियां ने करी मशवरा, घोषित युद्ध कराया ।।
बड़े-बड़े भट दानव योधा, करन लगे सखलाई ।
रावण ने गढ़ लंका अन्दर, सारी फौज सदाई ।।
परसे भाले तीर लई कै, सारे दानव आए ।
दसकंधर ने सबना अग्गें, अपणें सब्द सुणाए ।
बोलै रावण 'सुरगे पर वी, मेरी फौज न हारी ।
धरती उप्पर युद्ध करन दी, आई साड़ी बारी ।।

दो० **मैं जाणनां योधा हन, दावन सब बलवान ।**
तोड़न गासें तारियां धरती हेठ लगान ।।
दसकंधर हुण फौज दा, मन बल लगा जगाण ।
अपणीं ताकत जोर हुण, अप्पू लगा जताण ।।

सुरग पुरी दा राजा इन्दर, थर-थर करदा कंब्बै ।
काल कंब्बदा मेरे अग्गें, हर-दम माफी मंग्गै ।।
पवन देव जो मैं बस कीता, अगनी ठंडी कीती ।
राहू-केतू जुट्टी बन्नें, भरदे अपणीं कीती ।।
राम लखण दे कन्नें वीरों, मैं हुण युद्ध रचाणां ।
गढ़ लंका पासें दिखणें दा, सारा मजा चखाणां ।।

अन्हे होए वणवासी हन, गढ़ लंका विच आए।
मौता कन्नें करन मखौलां, पुट्ठे कम्म कमाए ।।
कुम्भ करण जो दिक्खी कै तां, फौजा ने घवराणा।
बान्दर भालू कई करोड़ां, तिन्नीं किल्लें खाणां ।।
नईं सुखाला कोई करनां मेघनाथ ने युद्ध ।
राम लखण दी पूरी मारी, गेई दिक्खा बुद्ध ।।
बची रिया सुग्रीव वालिए, तौं मेथो नीं वचणां।
अंगद नल नीले ने वीरो, दुम्म दवाई नठणां ।।
जामवन्त रिच्छां दा राजा, सैंह् कुत्थूं दा वीर।
लस-लस करदे तिसजो चुभणें जाई हिक्का तीर ।।
मरनी सारी फौज राम ने, देणीं खड़ी दुहाई।
ओए लछमणां लियां बचाई, नीं तां जिन्द गुआई ।।
राम लखण दोआं ने रोणां, चुक्की खड़ियां बाऽईं।
सीता कैदा अन्दर मरना, मारनियां हन ढाईं ।।
इतणीं गल्ल सुणीं रावण दी, मेघनाथ बलवान ।
जयकारा रावण दा बोली, कस्सै तीर कमाण ।।
लक्के जो तिस दई भलेरां, तीर तरकसां पाई ।
अस्तर-सस्तर सारे चुक्के, खड़गां दो लमकाई ।।

दो० मेघनाथ हुण **फौज दा. बणियां** अज **सरदार ।**
गढ़ लंका विच रावणें, होई जय-जय कार ।।

रावण ने जां फौज सजाई, कीती खरी तियारी।
वीर बभीषण मत्थे पकड़ै, मत्त रावणें मारी ।।
करी हौसला अग्गें आया, अपणां सब्द सुणाया।
हत्थां बन्ही बोलै 'भाई, सब ठौकर दी माया ।।
लिया पछाणीं हाखीं खोड़ी नारायण अवातारे ।'
अग्गें आई वीर बभीषण, अपणें बोल उचारे ।।
चार बेद छः सास्तर दिक्खा, त्रेता दा अवतार।
सीस नुआई राम लखण जो मन्ना अपणीं हार ।।
गढ़ लंका जो लिया बचाई, होणी ऐ बलवान।
मैं मूरख मेरी मत मारी, तू पण्डत बिदुआन ।।

वीर बभीषण दी गल्ला पर, रावण गुस्सा आया ।
बोलण लग्गा वड़े पापिया, गल् तां तूं लमकाया ॥
दुसमण दी तूं करै बड़ाई, मन मेरा भरमाऐं ।
मिज्जो हौल़ा दस्सी सारी, फौजा अज्ज डराऐ ॥
दरवारे दे अन्दर लुकिया, देस दरोई सप्प ।
इतणीं गल्ल गलाई रावण, उट्ठी मारी लत्त ॥
धरती उप्पर पिया बभीषण, अपणें मुहएं भार ॥
रावण ने लत्ता दा कीता, तिसदे उप्पर वार ॥
वीर वभीषण जोरें बोलै, 'रावण नईं कसूर ।
अकल फिरै मरने तों पहलैं, कुदरत दा दसतूर ॥
तीर-बतीरा होऐ माह्णूं, अपणें नईं पछाणैं ।
इक दिन ठौकर दियै मरोड़ी, धरती करै बछाणैं ॥
जीं हजूरां दी गल्ल मन्नै, अक्ल करी नीं सोचै ।
सुन्ने हीरे नईं पछाणैं, पत्थर लोआ तोपै ॥

दो० तां समझणां माह्णू दें, सिरें गजिया काल ।
वीर बभीषण बोलदा, उठी गया ततकाल ॥

दो० राम भगत जो रावणें, दित्ती हुण दुतकार ।
धक्कें मारी कड्डिया, सुन होया दरबार ॥
रावण दे दरबारे छड्डी, कैंप राम दें आया ।
राम गुसाईं अग्गें आई सारा हाल सुणाया ॥
विलखी बोलै वीर वभीषण, चरनां सीस नुआई ।
राम गुसाईं हिक्का लाया, जिय्यां सक्का भाई ॥
संकट वेलें कदीं न कडिए, अपणें माह्णूं बाह्र ।
नीं तां जाई बणदे पक्के, दुसमण दे हथियार ॥
वीर वभीषण राम लखण दें, अग्गें आई रोया ।
दसकंधर जो इस गल्ला दा, रती असर नीं होया ॥
रावण ने हुण मेघनाथ जो, सारी गल्ल सुणाई ।
गढ़ लंका दी बाग-डोर हुण, तिसदें हथ फड़ाई ॥
लंका दे विच मारू बाजे, बजण लगे ततकाल ।
चऊं पासियां मुहएं बाकी, बैठा आई काल ॥

दसकंधर दी सारी सेना, युद्ध मदाने चल्ली ।
गासें होया न्हेर-गुबारा जिय्यां काली मल्ली ॥
दानव गर्जे एक पासे तों, दूएं वान्दर रिच्छ ।
कन्नां दे पड़दे सब फट्टे, नईं सणोऐ किच्छ ॥
इक पासे तों युद्धे डोरी, लछमण आई खिज्जै ।
दूए बक्खें मेघनाथ तिस, रूएं साईं पिज्जै ॥
दिन चढ़दे ने लोअ् लुआंटे, चानण सारें होया ।
धरती विच्चा अग्ग निक्कली, भांबड़ गासें छह्‌ोया ॥
सूरज दी रसमां दे साईं, तीरां दी चमकार ।
चऊं पासियां युद्ध मदाने, होई-हा-हा कार ॥
गढ़ लंका बिच अंध गुबारा, युद्धे दा घमसाण ।
सुरगे उप्पर सब्ब देवते, दिक्खन चढ़ी बमान ॥

दो० पूरब पच्छम दक्खणें, उत्तर बरछे तीर ।
बुगदर प·से भालियां, तणीं खड़ोते वीर ॥

देवतियां हुण गासे उप्पर, तगड़ी सभा सदाई ।
अपणां-अपणां कम्म सारियां, जो दित्ता समझाई ॥
धरत पतालें सागर गासें, देव शक्तियां जान ।
दानव दल दे मूल नास दा, सारा कम्म कमान ॥
यम राजे ने लए सदाई, अपणें सारे दूत ।
गढ़ लंका विच भेस बटाई, फिरन लगे यम दूत ॥
अग्नी इन्दर सूरज चन्दर, वायू वरुण अकास ।
पुच्छल् तारे गासें छाए, गई जीण दी आस ॥
बिजली दे चमकारे गासें, अदिया रातीं लोअ ।
भांबड़-पूले चऊं पासियां, नच्चन भूत दियोऽ ॥
डैणां कनैं चुड़ैलां आई, लंका घेरा पाया ।
भूत-मसाणां कनैं बताला, चप्पा-चप्पा छाया ॥
गासे उप्पर सुरगण इल्लां, फौई कुत्ते आए ।
भेस वटाई यम राजे दे, दूत धरतिया छाए ॥
वायू दे वेगे ने सागर, लहरां गासें छह्‌ोन ।
रुक्खां दे डाल् टुट्टी कै, धरती नईं खड़ोन ॥

पासुपात ब्रह्मास्त्र चक्कर, कनैं गदा दा तेज ।
सेस नाग दा जैर चुबक्खें, डग-मग विसणू सेज ।।
बड़े-बड़े दानव भट योधे, होए सब्ब अधीर ।
गासे उप्पर चकर सुदर्शन, दी इक बणीं लकीर ।।
राहु-केतु तां काल सनीचर, ग्रैह सब उठी आए ।
देव-देवते गासे उप्पर, लई बमानां आए ।।
दुर्गा लच्छमी महा कालका, काली युद्धें आई ।
दानव माया देव शक्तियां, नें गासें टकराई ।।

दो० कंगला बोल उचारै, तोतिया गल्ल सुणां ।
जा तूं लई कटारियां, हुण दानव दल हरा ।।
चारे कूंटां रोकियां, गरजे भालू वीर ।
पटराणी मन्दोदरी, होई अज्ज अधीर ।।

गासे उप्पर गई गर्जना सीता मन घबराया ।
डग-मग धरती डोलै सारी, दानव दल सब आया ।।
जय रावण जय मेघनाथ हुण, बोलन लंका अन्दर ।
गढ़ लंका दे चऊं फाटका, उप्पर गर्जे बन्दर ।।
देवान्तक प्रहस्त नरान्तक, वीर बड़ा अतिकाय ।
दुर्मुख दैत्य बड़ा बलशाली, सीता चैन गुआय ।।
इक पासें ता चऊं फाटकां, उप्पर पहरा भारी ।
दूएं पासें गढ़ दे अन्दर, मेघनाथ बलकारी ।।
बान्दर भालू रुक्ख बूट हुण, पत्थर सिल बरसान ।
बरछे भाले तीर चलाई, राकस धुंध मचान ।।
गढ़ लंका दे चऊं पासियां कोट समुन्दर खाई ।
गढ़ दे अन्दर चिड़ी न फड़कै, देव न करै समाई ।।
देव-देवते गासे उप्पर, दिक्खी होए दंग ।
गढ़ लंका दे चऊं फाटकां, खूनी होली जंग ।।
रावण ने सुक-सारण भेती, कैंप राम दें भेजे ।
भेत लैण इक-इक गल्ला दा, रूप बटाई खेदे ।।
सुक-सारण ने रूप बटाया, बान्दर दा बदलाया ।
राकस गुपत चरां दा जोड़ा, कैंप राम दें आया ।।

चऊं पासियां फौजा दिक्खी, राम लखण कछ आए।
वीर बभीषण जो दिक्खी कै, सुक-सारण घबराए ।।
वीर बभीषण ने सुक सारण, इक दम लए पछाणीं।
सेना होई अक्खें बक्खे, बुगदर दित्ते ताणीं ।।
पकड़ो-पकड़ो! चऊं पासियां, होया इक दम सोर।
घर दा भेती होऐ जेथूं, दुस्मण दी नीं लोड़ ।।

दो० **अपणां अपणें मारदा, लोकी मारन घट्ट।**
अपणां हक्ख उगालदा अदुसमण मारैं फट्ट ।।

सुक-सारण दे अक्खें बक्खें, फौजा घेरा पाया।
राम गुसाईं लागें आई दूतां सीस नुआया।।
लगे बोलणां, 'नाथ! राम हुण. गलती साड़ी भारी।
रावण दा अन-जल खाई कै, अकल असां दी मारी।।
छमा दान हुण दिया असां जो, बुरी चाकरी नाथ।
बुरा-बुरे दा अन जल खाणां, बुरा बुरे दा साथ ।।
सुक सारण ने भेस बटाया, असली रूपें आए।
राम गुसाईं सुक सारण हुण, अपणें गलें लगाए ।।
बोलण लग्गे 'तुसां गुपत चर, गल्ल गलत नी कीती।
हुकम मन्नणां अफसर दा तां, चाकर दी एह नीति ।।
होर भेत जे कोई लैणां, दस्सा मिंज्जो भाई।
रावण जो एथूं दी जाई गल्ल दिया समझाई ।।
अकल करै तां खून खराबे, तों लंका ने बचणां।
नीं तां इक दिन भूत-मसाणां, गढ लंका विच नचणां ।।
निरदोसां दा लऊ बगाणां, धरती पाप चढ़ाणां।
अपणीं करतूतां दे ताईं, सेना जो मरुआणां ।।
रावण तां दोसी ऐ पूरा, जन्ता ऐ निरदोस।
पाप पुन्न राजे दे तोलै, तां जन्तां जो होस ।।
रावण जो गल पूरी दस्सा, तुसां जाई समझा।
लोकां जो इस खून खराबे, तों हुण तुसां बचाऽ ।।
साथ दिऐ जे पापी दा तां, तिस सिर चढ़दा पाप।
डुब्बै वेड़ा पाप भरोऐ, मरदे मित्तर साख ।।

जाई कै गढ़ लंका अन्दर, घर-घर सब्द सुणाऽ।
रावण दे कन्नां विच जाई, मेरी गल्ल पुजाऽ॥

दो० सुक-सारण ने राम दी, कीती जय-जय कार।
आए राम उचारदे, रावण दें दरबार॥

दो० रावण दे दरबार विच, भेते करन वखान।
बोलन दौएं भेतिए, राम-राम भगवान॥

वीर वभीषण लए पछाणीं, सुक ने सब्द सुणाया।
सारण बोलै राम गुसाईं, ने सांजो छुड़काया॥
कैंपे अन्दर राम न हुन्दे, बान्दर सड़दे मारी।
बड़े-बड़े बलकारी योधे, राम-राम अवतारी॥
इतणीं गल्ल सुणीं सारण दी, रावण गुस्सा आया।
सुक सारण जो दुतकारी कै, मालवान कछ आया॥
माल्यवान मायावी दानव, राजनीत परबीन।
अपणें भवने अन्दर विच था, पूजा पाठे लीन॥
पूजा पाठ करी कै दानव, रावण जो समझाऐ।
राम लखण अवतारी धरती, गल्लो गल्ल गलाऐ॥
सीता माया महा लच्छमी, रावण अकल बचार।
योग साधना कन्नें अपणीं, तीजी हक्ख उघाड़॥
मैं अज योग साधनां कन्ने, दिखिया सब किछ जाई।
देव देवते बान्दर भेसें, सेना राम सजाई॥
वैकुण्ठे विच हल चल दिक्खी, नीं ब्रह्मां नीं सिव्व।
देवातियां ने युद्ध रचाणें, दी मोड़ी लै जिद्द॥
जे तूं मन्नैं तां खरां रैहं, रावण बुद्ध बचार।
तू ज्ञानी पण्डत सास्त्रां दा, वेद बसे विच चार॥
माल्यवान दी गल्ल सुणीं कै, रावण खिड़-खिड़ हसिया।
गूढ़ ज्ञान तिसदे हिरदे दा, इक दम सारा न्हसिया॥
राम लखण तां बणवासी हन, लंका करन चढ़ाई।
रावण बोलै माल्यवान जो, एह के मति मताई॥
मेरे दानव योधे दिक्खी, विसणूं वी घबराऐ।
मेघनाथ तो डरदा मारा, इन्दर गुफा समाऐ॥

दो॰ कुम्भकरण तां भूत ऐ, गढ़ लंका दा वीर।
तिसदे पिड्डें असर नी, करदे बरछी तीर।।

मालयवान ने दसकंधर जो, अणमुक था समझाया।
रावण दी समझा विच तिसदा कोई बोल न आया।।
हारी हुट्टी बोलण लग्गा, महामन्तरी बोल।
हे दसकंधर राम लखण दी, सेना दा बल तोल।।
तोड़-फोड़ जे करी सकैं तां, सुग्रीबे कछ जाअ्।
किछ लालच देई कै तिसजो, अपणां भिरी वणाअ्।।
फौज राम दी तिसदे हत्थे, सैह खिज्जदा डोर।
सुग्रीबे जो लालच देई, अपणें पासें जोड़।।
जे टुट्टै सुग्रीब राम ने, हत्थां झस्सी रोणां।
सुग्रीवे दे बाझी सेना, युद्धें नईं खड़ोणां।।
माल्यवान दी इस गल्ला पर, रावण करै बचार।
सुक सारण जो भिरी भेजणें, जो कीता तैय्यार।।
सुक सारण रावण दी गल्ला, सुणीं गए डफलोई।
बुरी चाकरी जासूसां दी, नांह-नुक्कर न होई।।
अदिया रातीं चली गए हुण, अपणां भेस वटाई।
सुग्रीवे दे कैंपें जाई, सारी गल्ल सुणाई।।
सुग्रीबें जां गल्ल सुणीं तां, होया लालो लाल।
सुक सारण ने सच्च समझिया, आया काला़ काल।।
वोलै, 'रावण राम दरोई, मैं राम दा पियारा।
यद्ध भूम विच इस गल्ला दा, होणा सब निपटारा।।
रावण दे कन्नां विच जाई, मेरी गल्ल पुजाअ्।
जे वचणां तूं तां सीता दे, चरनां सीस नुआअ्।।
तोड़-फोड़ दी राजनीत पर, कजो करैं बिशुआस।
किसकिन्धा दी सारी सेना, राम चरन दी दास।।

दो॰ राजदूत दो भेतिए, राज नीत परबीन।
सुग्रीव दे अग्गें हुण, बणीं खड़ोते दीन।।

दो॰ छिमा लई सुग्रीव तों, जय-जय राम गलान।
रावण अग्गें अप्पणीं सारी गल्ल सुणान।।

बोलण लग्गे, सुग्रीबे दी, मत रक्खा किछ आस ।
सारे बान्दर राम भक्त, हन, तुसां करा बिसुआस ।।
सुक सारण दी गल्ल सुणीं तां, रावण गुस्सा आया ।
सेनापति प्रहस्त अकम्पन, मेघनाथ बुलवाया ।।
देवान्तक नरान्तक त्रिसरा, दुर्मुख वीर सदाए ।
मेघनाथ दी गर्ज सुणीं कै, दिग्गज गज डकराए ।।
गढ़ लंका दे चारें फाटक, करी लए मजबूत ।
दौं सेनां विच भेस बटाई, फिरन लगे जासूस ।।
बान्दर भालू प्हाड़ां चुक्की, गढ़ लंका दा ढान ।
बड़े-बड़े हुण रुक्ख उखाड़ी, टल्ला-टल्ल मचान ।।
हनुमान सुग्रीब तां अंगद, योधे वड़े अपार ।
उडी गए जां दुर्गे अन्दर, पाई मारो-मार ।।
जामवन्त रिच्छां दा राजा, बाह्रे तो लल्कारै ।
हनूमान अंगद अन्दरे तों, दन्तां जो परछाड़ै ।।
नल-नील ने जोर-तोर करी, पच्छम फाटक ढाया ।
टुटी गिया गढ़ दा दरुआजा, कड़-कड़ धरती आया ।।
प्रहस्त आई कै गुस्से जो, सेना उप्पर झाड़ै ।
हनूमान हुण गुर्ज चलाई सिरे तिदे जो फाड़ै ।।
सेनापति प्रहस्ते मरदें, देवान्तक जां आया ।
अंगद ने लत्तां तों चुक्की, गासें खड़ा घुमाया ।।
छिट्टी-छिट्टी टोटे टुकड़े, देवान्तक दे होए ।
त्रिशरा कनैं नरान्तक राछस, अंगद जो सद्होए ।।
हनूमान ने गुर्ज चलाया, दौएं लम्मे पाए ।
सुग्रीबे ने दुरमुख दे हुण, टोटे चार बणाए ।।

दो० **मरी गए सब सूरमें, गढ़ लंका विच सोग ।**
रावण दा मन डुब्बिया, तगड़ा लग्गा रोग ।।

तोता बोलै सुण कंगलिया, अकल रावणें मारी ।
अप्पुं ई हुण युद्ध करन दी, करन लगा तैय्यारी ।।
अस्तर-सस्तर लई कमानां, अपणां रत्थ सजाया ।
महलां तो निकली कै रावण, गढ़ दे अन्दर आया ।।

रणसिंहे बाजे सब बज्जे, गूंज गई आकास ।
मेघनाथ रावण दे अग्गें, अरज करै अरदास ॥
हत्थां जोड़ी इन्द्र जीत ने, अपणीं अरज सुणाई ।
राम करा महलां दे अन्दर, करनी असां चढ़ाई ॥
हुकम दिया तां राम लखण जो, बन्ही जकड़ी जुट्टां ।
नल नीले सुग्रीव अंगदे, जो सागर विच सुट्टां ॥
जामवन्त दी पूछा पकड़ी, गास जाई घुमक्हां ।
इक्को तीरें बान्दर रिच्छां, जो मारी कै खांऽ ॥
मेरे जीन्दें राम लखण पर, अप्पूं करा चढाई ।
कजो जित्तिया इन्दर गासें, कीती असां लड़ाई ॥
मेघनाथ दी गल्ल सुणी कै, माल्यवान था आया ।
राजा दी रखिया करने दा, परजा फरज सुणाया ॥
अप्पूं राजा पहल करै तां, योधे सब कुत कारी ॥
के करनी राजे दे वाझी, परजा करमां मारी ।
माल्यवान ने गल्ल सुणाई, रावण तू विदुआन ॥
सिंह सूरमें तेरे पुत्तर, गासें धुंध मचान ।
तिलक चढ़ाई मेघनाथ जो, सेना डोर फड़ाऽ ॥
राम लखण जो लंका चढ़ने, दा सब मजा चखाऽ ।
मेघनाथ तां माल्यवान दी, मगजें बैठी गल्ल ।
सारथिए जो हुकम सुणाया, मुड़ महलां जो चल्ल ॥

दो० रावण महलां मोड़िया, मेघनाथ रणधीर ।
अस्तर-सस्तर करसदा, दानव योधा वीर ॥

दो० मेघनाथ बलकार जां, चलिया युद्ध मदान ।
करी सलोचन आरती तिलके लगी चढ़ाणा ॥

मेघनाथ ने युद्ध भूम विच, दित्ती हुण ललकार ।
इक पासें रावण दी दूएं, राम लखण जयकार ।
मायावी दानव हुण इक-दम, चढ़ी गिया आकास ।
धरत पतालें सागर गासें, गई जीण दी आस ॥
लछमण ने गासे जो दिक्खी, अस्तर सब्ब चलाऐ ।
मेघनाथ गासे तों अपणें, अग्न वाण बरसाऐ ॥

दऊं पासियां सेना दे विच, हा-हाकार दुहाई ।
राम लखण गासे जो दिक्खन, दानव देह लुकाई ॥
राम लखण जो किठियां दिक्खी, नागपाश बरसाया ।
दौएं भाऊ गे जकड़ोई, हनुमान घबराया ॥
नागपाश दी शक्ति भारी, गई मूरछा आई ।
युद्ध-भूम विच निन्दर पाई, सुत्ते दौएं भाई ॥
रावण दे जयकारे युद्धें, सारी पलटी काया ।
मेघनाथ हुण बिगल बजाई, महलां पासें आया ॥
गढ़ लंका विच घर-घर सारें, अणमुक जशन मनोए ।
नल नील सुग्रीव तां अंगद, कौतुक दिक्खी रोए ॥
हनूमान जो जामवन्त ने, सद्दी था समझाया ।
वीर बभीषण भेते खोलें, गासें वीर चढ़ाया ॥
गरुड़देव जो हनूमान ने, युद्धे विच उतारी ।
नाग-पाश दी सारी ताकत, गरुड़ देव तो हारी ॥
अपणीं चुंजा कन्नें, आई, इक-इक टुकिया नाग ।
राम लखण दी गई मूरछा, इक दम आई जाग ॥
गई मूरछा उठी खड़ोते, राम लखण दो वीर ।
रावण इस गल्ला जो जाणीं, होया बड़ा अधीर ॥

कुं० **तोता जोरें बोलदा, कंगलिया अवतार ।**
धरती लीला राम दी, सैह राम करतार ॥
सैहराम करतार, रावणै अकल गुआई ।
मरुआया परिवार, बगानी नार चुराई ॥
बोलै कवि 'संसार' पापियां हिरदा खोटा ।
जाऐ हरीदुआर, उचारै राम न तोता ॥

द्वादश-सर्ग

कुं० लंका गढ़ दे सूरमे, सुत्ते युद्ध मदान ।
उट्ठे हार्खीं खोड़दे, लखण राम भगवान ।।
लखण राम भगवान, धरतिया खेल रचाया ।
सेस नाग दे सणें, उतारी अपणीं माया ।।
बोलै कवि संसार, बजाया युद्धें डंका ।
विसणू दा अवतार, चढ़ी कै आया लंका ।।

पापी माह्‌णू लई डुब्बदा, सारे आंड-गुआंडे ।
सच्चाई दी अग्ग बल्‌ तां, फाड़ै पक्के भांडे ।।
तौर बतौरा पापी माह्‌णू, धक्के ठेडे खाऐ ।
लिया बचाई मिज्जो आई जोरें जोर गलाऐ ।।
नईं छड्डदा माह्‌णू करना, अपणीं खोट कमाई ।
जालू आई पाप दबोचै, दिन्दा खड़ी दुहाई ।।
अपणें महलां छड्डी रावण, कुंभकरण कश आया ।
तिसदे लागें आई तिन्नीं, जोरें रौला पाया ।।
कुंभकरण भट दानव योधा, गाढ़ी निन्दर आणीं ।
घुड़का दा था मार खुरांटे, लमियां लत्तां ताणीं ।।
तिसदा घुड़कण गरजण लग्गै, जिय्यां गासें बद्दल ।
तिसदी सूंकां कन्ने जाऐ, डूगा धरती खब्बल ।।
रावण ने हुण जतन कराए, राछस हक्ख न खोलै ।
ढोल नगारे संख बजाए, कुंभकरण नीं बोलै ।।
लम्मे रस्से निग्गर बट्टी, न्हासां विच्च चढ़ाए ।
कई राछसां जोर लगाई, तिसदे अंग हिलाए ।।

भूते जो किछ भक्ख पकाया, दानव भिरी जगाया ।
अपणें आऊणें दा मतलब, रावण ने समझाया ।।
सूप नखा दे नक-कन बडणें तों सब कथा सुणाई ।
षर-दूषण अक्षय दे मरने, दी सब खबर कराई ।।
सीता दी कैंदा दे कन्ने, दो बणवासी आए ।
सेतु-बंध सागर पर वणियां, पत्थर सिल्ल तराए ।।
रिच्छ बान्दरां दी फौजा ने, लंका करन चढ़ाई ।
दन्त दानवां रली मिली कै, कीती खूब लड़ाई ।।

दो० दानव दल वी मारिया, दुरमुख बची न जान ।
प्रहस्त नरान्तक न बचे, दवान्तक कुरबान ।।

'तेरे द्वारे कुंभकरण मैं, आया मेरे भाई ।
गढ़ लंका पर काले वद्दल, दुख दी न्हेरी आई ।।
वीर योधियां दे मरने पर, घर-घर सोग मनाया ।
देवान्तक नारान्तक मुक्के, लंका पलटी काया ।।
लियां बचाई लंका नगरी, नीं तां टुटणीं ताणीं ।
विच्च सागरे गोते खाणें, हेठें उप्पर पाणीं ।।'
रावण दी गल्लां पर होया, कुंभकरण दलगीर ।
वीरां दा तां सुणीं वछोड़ा, आया हाखीं नीर ।।
बोलै दानव, 'हे भाई तूं, वेद सास्तरां पढ़िया ।
मेतों अकल बड़ी ऐ तेरी, अणमुक तूं ऐं कड़िया ।।
राम पाणिएं पत्थर तारे, बाली जिन्द गुआई ।
माह्णू नीं ऐं दसकंधर तू, दिक्ख पोथिया जाई ।।
सौणं नीं दित्ता तूं मिज्जो कजो जगाया आई ।
मढ़गा मेरे मत्थें रावण, अपणीं खोट कमाई ।।
नक-कन बडणें दी गल थी तां, ताऽलूं आई दसदा ।
मैं जाई कै दिखदा मेंथों, लछमण किय्यां बचदा ।।
दौं हत्थां ने बज्जै ताड़ी, इक हत्थें न खड़कै ।
लगदी अग्गी दिया बुझाई, भाबड़ कदी न भड़कै ।।
लछमण दी गलती थी थोड़ी, तेरी बणीं पहाड़ ।
गठड़ी पापें भारी लग्गै, नई चकोऐ भार ।।

पिंड पड़ेंसें रौला पाऐ, लोकां जो समझाऐ ।
अपणें मंज्जे हेठ कदी नीं, सोत जूड़िया लाऐ ॥
लोकां दे घर लाऐ सन्हां, बोलै खब्बर दार ।
चिट्ट चरेला नीं पकड़ोऐ, डाकू पहरे दार ॥

दो० धरती होया राम तां, त्रेता दा अवतार ।
मारे लंका सूरमे, रावण बुद्ध बचार ॥

दो० जाऐ पढ़ाई खूएं, जे नीं होऐ ज्ञान ।
हवन करी नीं किछ ऽणें, जे रुस्सै भगवान ॥

सन्ह डाकियां मारी लोकां, जो हाखीं नीं दसिए ।
लागी शागी उज्जड़ पाई, उल्लू दणीं न बसिए ॥
किलियां दा वी जीणां खोटा, भाई वंध न होऐ ।
लोकी हस्सन तिसदे मरनें, कोई नीं तिस रोऐ ॥
मरियो सरपे जाचन लोकी, अग्ग तालुएं रखदे ।
अदमर अजगर मुहएं बाकन. माड़ा करी न थकदे ॥
माड़े करमां दा फल माड़ा, नेड़ गुआंडे लैन्दा ।
धरती कंडे दिऐ चुभाई. रुक्ख कांडिया ढैन्दा ॥
मिज्जो तां लग्गै दसकंधर, लंका दे दिन माड़े ।
उकली जाऐ बूटा छूईं, दा तां थोड़ धियाड़े ॥
तूं दसकंधर सक्का भाई, सत्त पाणियां धोता ।
मिज्जो दस हुण के कम करना. मैं हुण उठी खड़ोता ॥
इस धरती जो खिनुएं साईं, गासें दियां चढ़ाई ।
चन्द सूरजे विच्च पतालें, पकड़ी दियां पुजाई ॥
सत्त सागरां इक्क गरुड़ा, पी करी सोका पांऽ ।
पर्वत ऊचे ढेर करां मैं, सुरमा भिरी बणांअं ॥
जे पैरे धरती पर पटकां सत दिन हिल्लण होऐ ।
धरती न्हीठी जाऐ योजन, विच्च पतालें छ्होऐ ॥
जितणें राजे इस धरती दे, सब दे ताजां खोड़ां ।
हे रावण नदियां दे मुहएं, विच्च पर्वतां मोड़ां ॥
जे अवतारी राम न होए तां निसचय जित होणीं ।
स्हाड़ी उडणीं ऊची झंडी, जाई गासें छ्होणीं ॥

बिन अवतारें कोई माह्णूं, मारी असां न सकदा ।
ईसबरे ने टक्कर लेई कोई नी एं बचदा ॥

दो० जे विसणूं अवतार तां, साड़े जागे भाग ।
दसकंधर के सोचनां, हार्खों खोड़ी जाग ॥

जिन्नीं दित्ती जोर जुआनी, जिन्द सरीरें पाई ।
तिसदे कन्नें किय्यां करनी, भाई असां लड़ाई ॥
ठौकर जाणैं सारे मन्तर, जिन्नी खेल रचाया ।
माया दे विच बन्ही माह्णूं, जाल्दे विच पाया ॥
जालू माऽणू जाल्दे खिज्जै, ध्हागे कई धड़ोन्दे ।
लत्तां वाऽईं तड़छां मारै, हृथ-पैर संगड़ोन्दे ॥
जिय्यां जालें उलझै माह्णूं, विच्च चक्करें औऐ ।
अणमुक धागे जालें उलझैं, दूणां ई लपटोऐ ॥
जाल्दे विच अन्हा होई, माह्णू माया जोड़ै ।
मदियो झोटे साईं रींगै मुंड्डे वड़े मरोड़ैं ॥
लागी-शागी दई टक्करां, हा-हाकार मचान्दा ।
धीय्यां पुत्तर सब झम्हेले, अपणें गल्नें फसान्दा ॥
ठौकर उप्पर करै चढ़ाई, अंबर तीर चलाऐ ।
माया दे जाल्दे जो चुक्की, अपण गल्नें फसाऐ ॥
जाल्ा उलझै चऊं पासियां, गल्नें घरीरी फिरदी ।
अकल खोपरें मारी जाऐ, मुंड्डी भिरी न घिरदी ॥
जिन्नी जाल् वणाया धागे, इक दम खिजी लैन्दा ।
रूएं साईं दिऐ उड़ाई, माह्णूं दा गढ़ ढैन्दा ॥
जे हुण मुंह लुकाना तां मैं, कुत कूंटा जो जाणां ।
नीं लड़दा तां सबनां लोकां, बुजदिल करी गलाणां ॥
लंका दी धरती दा खाऽदा, हे रावण ! अन पाणीं ।
जन्म भूम लंका दी नगरी, करनी नईं नमाणीं ॥
कोई अपणीं जन्म भूम दे, कन्नें द्रोह कमाऐ ।
सत जन्मां तिस भला न होऐ, नरक कुण्ड विच जाऐ ॥

दो० इस धरती ने पालिया, इक इक दानव वीर ।
पाणी दित्ता रोटियां, अपणां सीनां चीर ॥

दो० अन-जल खाऐ धरतिया, चढ़ै सिरे पर भार ।
जान लुकाऐ संकटें तिसजो तां फटकार ॥

माऊ माह्‌णूं पैदा कीते, धरती पाल्‌-वडेरे ।
जे गल्ला जो नईं पछाणैं, डुब्बन भरियो बेड़े ॥
अन्न-जल वायु धरती दिन्दी, माह्‌णूं बददा फुलदा ।
रुक्ख बूट वी रखिया करदे, माह्‌णूं झंडा झुलदा ॥
रुक्ख बडोऐ वणां वाड़ियां, मातर भूम पछाणीं ।
न्हेरी झक्खड़ तौन्दी झल्लै, बरखा थम्मै पाणीं ॥
माह्‌णू तां ऐ रुक्ख वूटियां, तो वी माड़ा भाई ।
जिसदे अग्गें जन्म भूम दी, दुरगत होऐ आई ॥
मातर भूम ने दगा कमाई, देस द्रोई हुन्दे ।
सत-जन्मां दे कोढ़-कलंकी, नरकें कीड़े छह्‌न्दें ॥
होन्द-सरोन्दी लउएं बून्दां, नी लड़दा जो भाई ।
जन्म-भूम दुरलानत दिन्दीं, वेदां गल्ल गलाई ॥
विलखै धरती जिय्यां तिसदी, तिय्यां माह्‌णूं रोऐ ।
तिसदे काल्‌े पापे खारा, सागर वी नीं धोऐ ॥
कई जुगां तां तिसदी चरचा, सारे माह्‌णूं करदे ।
तिसदे रिस्ते नाते सारे, सरमां डुब्बी मरदे ॥
परमेसर वी होऐ अप्पूं, तां वी युद्ध रचाणां ।
जन्म-भूम दा भार उतारी, सारा अज्ज चुकाणां ।
इतणीं गल्ल गल्‌ाई योधा, कुंभकरण बलकार ।
उठी खड़ोता ज़ोरें गरजै, काला न्हेर गुवार ॥
तिसदे चलणें कन्नें धरती, न्हीठी योजन आई ।
चऊं पासियां न्हेरी झक्खड़, काली बदल्‌ी छाई ॥
अणमुक झोटे डंग्गर निगल्‌ी, सुरापान तिस कीता ।
थर-थर कंब्बी सारी धरती, तुर-बुर दिक्खै सीता ॥

दो० राछस जोरें गरजिया, कुम्भकरण बलवान ।
सस्तर अपणे सांबदा, तोपै तीर कमाण ॥

दिन चढ़दे ने न्हेरा होया, सूरज गिआ ढकोई ।
रसमां अग्गें काला पर्वत, इक-दम गिया खड़ोई ॥

धरती दी लो मद्धम होई, सूरज रसम न सुज्झै ।
न्हेरे दिक्खी सब घबराए, गल्ला जो कुण बुज्झै ॥
इक पासें थी न्हेरी झक्खड़, दूएं जय-जयकार ।
कुंभकरण ने हत्थां पकड़े, अणमुक्कां हथियार ॥
सेना दे विच हल चल होई, रिछ बान्दर घबराए ।
राम बभीषण पासें उट्ठी, गल्ला बुज्झण आए ॥
बोलण लग्गे, हुण के होया, सेना सब्ब अधीर ।
दिन चढ़दे ने न्हेरा होया, कैंह बभीषण वीर ।
गासें सुज्झै न्हेर गुबारा, थर-थर धरती कंब्बै ।
जां तां अंबर गरजै ऊचा, दानव माया खंग्गै ॥
धरती ऊची न्हीठी जाऐ, सारी डग-मग डोलै ।
इय्यां लग्गै जिय्यां कोई, इसा धरतिया तोलै ॥
धरती लग्गे अणमुक धक्के, रिछ बान्दर डफलोए ।
कई मूरछा खाई सुत्ते, खड़े-खड़े परतोए ॥
जां तां होया जादू टोणां, दानव माया आई ।
किय्यां लड़ना रिच्छ बान्दरां, युद्ध भूम विच जाई ॥
वीर बभीषण जो अज पुच्छन, होए राम अजाण ।
जिय्यां दाई अप्पूं पुच्छै, कुण जमिया बलवान ॥
हत्थां बन्हीं मत्था टेकी, राम दे कश खड़ोई ।
बोलण लग्गा वीर बभीषण, जीब्ह गई थथलोई ॥
वीर बभीषण बोल उचारै, मेरा वीर जुआन ।
गढ़ लंका भट दानव योधा, कुंभकरण बलवान ॥

दो० द्यो धरतिया कुंभकरण, योधा इक बलवान ।
चल्लै धरती डोलदी, दिग्गज वी डकरान ॥

दो० लंका गढ़ दा सूरमा, एह परबती दन्त ।
मार करै हुण योजनां, बलशाली बे अन्त ॥

छः म्हीने तां निन्दर गालै, भोजन खूब पचाऐ ।
इक दिन राती रैह जागदा, लोकी अणमुक खाऐ ।
सौण न दित्ता रावण ने तां, सुतिया दन्त जगाया ।
इसदे सुसकारां ने न्हेरी, झक्कड़ गासें छाया ॥

उठी खड़ोता दानव योधा, सूरज रसमां ढकियां ।
इसदे भारें धरती हिल्ली, गासें फिरियां चकियां ।।
कई योजनां मुहएं बाकै, दन्त बड़ा बलकारी ।
अणमुक्के दे जीव-जन्त तां, खाऐ इक्को बारी ।।
गढ़ लंका दी आन बान तां, पर्वत वड़ा सरीर ।
इसदे पिंडें असर न करदे, अस्तर-सस्तर तीर ।।
दानव दे ललकारे कन्नें, पर्वत न्हीठे जान्दे ।
पाणीं पीन्दा जालूं राछस, सागर जीव रड़ान्दे ।।
धरती उप्पर पटकै पैरै, धरती खाऐ झोले ।
कई वरी इस बड्डे पर्वत, हत्थां रक्खी तोले ।।
हे नाथ ! एह कुंभकरण ऐ, योधा इक बलकार ।
बिन अवतारें एह न खाऐ, कदीं कुसी तों मार ।
कई करोड़ा मट्ट सरावे, दे पी अन्हा होया ।
सुत-न्यून्दरा उठी खड़ोता, उप्पर गासे छहोया ।।
बान्दर भालू जीन्दे पकड़ी, इन्नी मुहएं पाणें ।
कई करोड़ां इक्को वारी, कुल-बुल् करदे खाणें ।।
दऊं दिनां विच नाथ दानवें, पूरी सेना खाणीं ।
कुंभकरण ने युद्ध मदाने मारो-धाड़ मचाणीं ।।
मत्त भेजदे वीर लछमणें, नीं पिच्छें पछताणां ।
सूप नखा दा सारा बदला, इन्नीं अज्ज चुकाणां ।।

दो० हुण नीं मोड़िया मुड़नां, कुंभकरण वलकार ।
धरत पतालें अंबरें, पौणीं मारो मार ।।

हे राम ! धरती दा दियो ऐ, कुंभकरण बलवान ।
इस तों डरदे देव देवते, अपणीं जिन्द लुकान ।।
ब्रह्मा दी इस दादव ने थी, पूरी भगती कीती ।
इक राती दी निन्दर तांईं, भिरी वेनती कीती ।।
विसणू ने इसदी जीव्हा पर, सरसुतिया जो आणीं ।
इक्क छमाई निन्दर दित्ती, दानव लिया बुहाणीं ।।
जे तां इक राती सौणे दा, वर पूरा जे लैन्दा ।
जान्दा खाई सारे जीवां, ब्रह्मा दा गढ़ ढैन्दा ।।

सारी गल तां कुंभकरण दी, दित्ती मैं समझाई ।
सोच करा हुण इसदे उप्पर, राम-राम रघुराई ।।
कुंभकरण दे मरने दा हुण, मन्तर था समझाया ।
भिरी वभीषण अपणें कैंपे, डोल मुड़ी के आया ।।
तिन्न लोक दे स्वामी ने हुण, कस्से सब हथियार ।
गढ़ लंका विच रावण दा दल, बोलै जय-जयकार ।।
युद्ध भूम विच कई खरोणीं, बान्दर सेना आई ।
राम गुसाईं अप्पूं कीती, फौजा दी अगुआई ।।
कुंभकरण जो दिक्खी बान्दर, युद्ध भूम चा न्हट्ठे ।
कई करोड़ां पकड़े तिन्नीं, मारे मुहएं फक्के ।।
सल्-सल् करदे न्हासां कन्नां, रस्तें निकली आए ।
इय्यां लग्गै प्हाड़े उप्पर, भेड बक्करू छाए ।।
राम गुसाईं अग्गें जाई, बान्दर देन दुहाई ।
दानव ने मारी कुट्टी कै, अद्दी फौज नठाई ।।
छीछा होया अद्दी फौजा, पैरां हेठ मलोई ।
हनूमान सुग्रीव अंगदे, तों नीं मार झलोई ।।

दो० गासें बोलन देवते, दानव बली अपार ।
किय्यां लड़ना फौज ने, अग्गें दुस्सै प्हाड़ ।।

दो० बद्दल भरदे हौकियां, गासें दूर खड़ोन ।
सूरज रसमां लुक्कियां, रिछ बान्दर बकलोन ।।

जिय्यां-जिय्यां चढ़ै तिहाड़ा, दानव वददा जाऐ ।
रिच्छ बान्दरां दी फौजा पर, इक दम चढ़दा जाऐ ।।
हनूमान ने बड्डे पर्वत, सुट्टे जोर लगाया ।
कुंभकरण दे प्हाड़ सरीरें रती असर नीं आया ।।
सब योधियां मिली कै सुटटै, तिस पर कई पहाड़ ।
कुंभकरण दे उप्पर इय्यां, लग्गै पई फुहार ।।
जिय्यां आणीं दे किछ गोले, धरती असर न करदे ।
किछ घड़ियां दे अन्दर अप्पूं, बगी गलीं कै ढल्दे ।।
तिय्यां ई तां कुंभकरण पर, कोई असर न होऐ ।
तणीं तणोई युद्ध भूम विच, दानवभिरी खड़ोऐ ।।

कई वरी तां हनूमान जो, अज्ज मूरछा आई ।
वीर नील-नल अंगद दित्ती, राम दी हुण दुहाई ॥
जामवन्त रिच्छां दा राजा, इक खूंजे जो आया ।
राम गुसाईं आल खड़ोई, तिन्नीं दुःख सुणाया ॥
बोलण लग्गा, 'हे नाथ अज्ज, रिच्छां ने मर जाणां ।
लिया बचाई नईं दानवें, सारा बंस मुकाणां ॥
कुंभकरण पर राम गुसाईं, पैने तीर चलाए ।
लउए दे परनाले छुट्टे, रिच्छ सब तरी आए ॥
दानव दे काले पिंडे पर, होए अणमुक घाव ।
दूणी मार करै हुण युद्धें, जिय्या जखमी बाघ ॥
काला पिड्डा कुंभकरण दा, होया लालो-लाल ।
रूप-करूपा लउएं न्हौता, होया हुण विकराल ॥
दौं हत्थां ने बुक्कां-बुक्कां, बान्दर सागर सुट्टै ।
रिच्छां जो पूछा ते पकड़ी, धरती उप्पर कुट्टै ॥

दो० खूने दे परनालियां, होया लाल सरीर ।
औऐ प्हाड़ां चीरदी, जिय्यां खूनी सीर ॥

कुम्भकरण दे चढ़ी सरीरें, बान्दर छालीं मारन ।
जिय्यां पर्वत टिल्लें जाई, गद्दी भेडां चारन ॥
गढ़ लंका दा दानव योधा, कुम्भकरण अवधूत ।
युद्ध मदाने पीन धम्हालां, जिय्यां नच्चै भूत ॥
राम गुसाईं दी सेना हुण, सुरमा बणीं भियोई ।
देव-देवते चढ़ी समाने, दिक्खन दूर खड़ोई ॥
दिऐ पछाड़ी कई करोड़ा, लउएं गोते मारन ।
ऊचे घाएं जोरें जोरें, राम दा नां पुकारन ॥
कुम्भकरण दे ललकारे ने, सूरज ऊचा जाऐ ।
सागर पाणीं गास हिलोरे, जीव-जन्त डकराऐ ॥
कुम्भकरण दे युद्धे दिक्खण, सुरग पुरी हुण आई ।
देव-देवते चढ़ी बमानां, बोलन जय रघुराई ॥
राम गुसाईं धनुषे उप्पर, पैने तीर चढ़ाए ।
कई करोड़ां अग्गी पूले, कुम्भकरण पर छाए ॥

कोई जगह ऐसी न सुज्झै, जेत्थूं तीर न खुब्बा ।
लउए दे सागर विच लग्गै, कुंभकरण हुण डब्बा ।।
गढ़ लंका दा सिंह सूरमा, लउए कनें नुहाया ।
लंका नगरी लउएं डुब्बी, दसकंधर पछताया ।।
कुंभकरण दे प्हाड़ सरीरें खूनी नाल़ वगाए ।
तिसदे उप्पर सिरें तालुएं, रिछ-बान्दर चढ़ी छाए ।।
झुड़की दानव धरती सुट्टै, बान्दर चढ़न सरीरें ।
उप्पर जाई कुद्दन सारे पिट्ठी जान पचीरें ।।
धरत पतालें कई धमाके, अंबर होई लोअ ।
हा-हा कार दुहाई सारें, मारो मार दियोअ् ।।

दो० दानव दल सब बोलदा, जय रावण जयकार ।
दूएं बक्खें धनुष दी, डोर तणैं करतार ।।
विसणूं दा अवतार हुण, खिज्जै धरती तीर ।
बरदान दई राछसां, होए देव अधीर ।।

लाल सूरजे दिक्खी कै हुण, पैने तीर चलाए ।
कुंभकरण दी बाऽईं वडियां, गासें ढोल वजाए ।।
इय्यां लग्गा जिय्यां धरती, रिड़के कई पहाड़ ।
अणमुक नदियां लउएं बगियां, कई भरोए नाल़ ।।
लंका दे सब खड्डां नाल़ू, लउएं सूंकां मारन ।
युद्ध भूम विच दानव योधे, जोरे ने ललकारन ।।
दिन डुबदे ने राम गुसाईं, पैना तीर चलाया ।
कुंभकरण दा धड़ धरती पर, गासें सीस चढ़ाया ।।
कुंभकरण दे प्हाड़ सरीरें, पौन्दें हिल्लण होया ।
कई खरोणें रिच्छ बान्दरां, दा वी नास पटोया ।।
कुंभकरण धरती पर सुत्ता, जिय्यां बड़ा पहाड़ ।
पई मूरछा दसकंधर जो, होई हा-हा कार ।।
लंका नगरी दे विच सारें, होई सुन्न मसाण ।
लोकी घर-घर रावण जो हुण, सारे बुरा गलान ।।
कोई बोलै, 'रावण पापी, भाई सब मरुआए ।
कोई बोलै, वेदां पढ़िया, अक्खर सब्ब भुलाए ।।'

ठौकर दी माया ने रावण, दी सब अकल भुलाई ।।
सारे बंसे लई घरोती, तिसदी खोट कमाई ।।
जालूं परमेसर हुख माड़ी, माह्णूं पर ऐ करदा ।
पुट्ठे कम्म कमाई माह्णूं, खाई ठोकर मरदा ।।
बिजन कसूरें मार न खाऐ, माहूणू माया चक्कर ।
धुखदा भल् भल् बलॅ मियाल् , इक दिन बल्दा लक्कड़ ।।
रावण दी पटराणी रोई. रावण अग्गें आई ।
बोलै, 'स्वामी, गढ़ लंका पर, घोर मुसीबत आई ।।

दो० कुम्भकरण था सूरमा. धरती दा इक बीर ।
नी होया नीं होंग हुण, इतणा बड़ा सरीर ।।

वीरां बाझी धरती सुन्नी, गढ लंका दी सारी ।
चार वेद छः सास्तर भुल्ले, दिक्खा बुद्ध बचारी ।।
वीर बहादर पुत्तर मोए, कुम्भकरण हुण भाई ।
डुब्बण लग्गी सारी लंका, बचदी लिया बचाई ।।
सारा जाऐ अद्दा रखिये, बोलन सब्द सुजान ।
अद्दी लंका लिया बचाई, छड्डा युद्ध मदान ।।
सीता जो कैदा चा छड्डा, झगड़ा दिया मुकाई ।
हे स्वामी मत बंसे गाला, मेरी करा सुणाई ।।
पटराणी दी इस गल्ला पर, रावण गुस्सा आया ।
बोलण लग्गा, 'हे पटराणी, तूं के सब्द सुणाया ।।
नईं समझदा माह्णू जालूं, उप्पर गर्जै काल ।
इतणीं गल्ल गलाई रावण, चली गिया ततकाल ।।
रावण दी हाखीं दे अग्गें, झाकमलोके आए ।
हाखीं दे रोजे दे डोरे, मुच्छां विच्च समाए ।।
मत्थे पकड़ी लगा सोचणां, रावण था दलगीर ।
मेघनाथ ने गल्ल सुणीं तां, आया झटपट वीर ।।
बोलण लग्गा दिया आज्ञा, मैं युद्धे विच्च जाऊं ।
बदला मोड़ां सारा जाई, राम लखण जो ढांऊं ।।
मेरे अग्गें देव-देवते, जीन्दे नईं खड़ोन ।
जालूं करां चढ़ाई गासें, धाड़ो-धाड़ पटोन ।।

उस्सी बेलें आया पुत्तर, अतिकाए बलवीर ।
कुंभकरण दे साऊई लम्मा, तगड़ा चुट्ट सरीर ॥
तीर तरकसां भाले बुगदर, सस्तर अस्तर पाये ।
रावण अग्गैं मत्था टेकी, अपणें सब्द सुणाए ॥

दो॰ हुकम दिया मैं राम ने, युद्ध करां घनघोर ।
नीं तोपां मैं आसरा, नीं सेना दी लोड़ ॥

पौण अग्ग जल धरतिया, परलै ताण्डव नाच ।
युद्ध करां घनघोर मैं, तां हटणां सन्ताप ॥

रिच्छ बान्दरां दी ताकत नीं, मेरे आल खड़ोन ।
देव-देवते मिज्जो दिक्खी, डुस्की डड्डी रोन ॥
राम लखण दोआं जो पकड़ी, कैदा विच्च पुजांअ् ।
मिज्जो हुकम दिया हुण अपणां, मैं तां युद्ध रचांअ् ॥
तप कीता मैं साल हजारां, सिब ब्रह्मा दा जाई ।
अपणें वरदानां जो जाचां, युद्ध भूम विच जाई ॥
लउएं धरती लाल करां मैं इक्को तीर चलाई ।
मेरे अग्गें दऊं साधुआं, दी नीं रती समाई ॥
राम लखग जो सणें इन्दरें, जुट्टी जकड़ी सुट्ठां ।
सुरग पुरी विच जाई पूरा, धूड़-धुड़ैना पुट्टां ॥
मेरू कनैं हिमालय पर्वत, दौं मत्थां पर चुक्की ।
हुकम दिया तां सत्त सागरां, पारें औआं सुट्टी ॥
मैं गासे दे तारे तोड़ा, विच्च पतालें लांअ् ।
सेसनाग जो चीरी सुट्टां, विसणूं सेज हिलांअं ॥
यम कुबेर काले जो पकड़ी, कैदा विच्च पुजांअ् ।
जन्तर-मन्तर तन्तर सारे, युद्धे विच्च चलांअ् ॥
सूरज चन्दर दियां बुझाई, न्हेर गुबारा पांअं ।
गासे जो धरती पर आणीं, हा-हा कार मचांअं ॥
इतणीं गल्ल गलाई योधा, अतिकाए बलवीर ।
चौं घड़ियां दे तड़के गरजै, कंब्वै सागर नीर ॥
अतिकाय दी गर्ज सुणी कै, बान्दर सब घबराये ।
तिसदे हासे कन्नें गासें, पुच्छल तारे छाए ॥

अतिकाए दी गल्ल सुणीं तां, रावण बोल सुणाया ।
युद्ध करन दी आज्ञा दित्ती, अतिकाए गल् लाया ।।

दो० दशकंधर दे हुकम ने, उठी खड़ोता वीर ।
सूरज रसमां ढकियां, लगे बरसणां तीर ।।
युद्ध भूम विच गर्जिया, सूरज बुज्झी लोअ ।
बान्दर दिक्खी दौड़दे, आया भूत द्रोअ ।।

कोई बोलै दानव माया, कुंभकरण ऐ आया ।
युद्ध मदानें काल़ा बद्दल़, मुड़ी घिरी कै छाया ।।
कुथूं गिया तां राम लुकीं हुण, अतिकाये ललकारै ।
बाली जो तां लुको छिपी कै, तीर चलाई मारै ।।
खर दूषण तां कुंभकरण दा, सारा बदला मोड़ां ।
राम लखण दे लउए दी मैं, इक-इक वून्द नचोड़ां ।।
रिच्छ बान्दरां कन्नें मेरी, होणीं नईं लड़ाई ।
मैं नां करनी राम लखण दी, युद्धे विच्च सफाई ।।
अतिकाय हुण युद्ध भूम विच, खिड़-खिड़ करदा हसिया ।
अग्ग बल़ी हुण भांबड़ पूले, सूरज डरदा न्हसिया ।।
अतिकाए दे हामे कन्नें, सागर लहरां वन्द ।
जीब-जन्त डकराये सारे, गासें लुकिया चन्द ।।
धूड़ धुआखड़ चऊं पासियां, न्हेर गुबारा छाया ।
राम बभीषण जो हुण पुच्छन, राछस कुण हुण आया ।।
वीर बभीषण बोल उचारै, लंका वीर नियारे ।
इक दूए तों वदी-चढ़ी कै, बरदानी भट भारे ।।
अतिकाय रावण दा पुत्तर, युद्ध मदानें आया ।
दूआ कुंभकरण लंका दा, सिव ब्रह्मा वर पाया ।।
बड़ा तपी जोरे आला ऐ, हे नाथ ! हुण दन्त ।
इसतो डरदे देव-देवते, दानव माहणूं सन्त ।।
जन्तर-मन्तर-तन्तर जाणै, मायावी ऐ पूरा ।
अस्तर ब्रह्मा सिव तों पाई, बल नीं कुथीं अधूरा ।।
रावण जो इस दन्ते उप्पर, पूरा ऐ बिसुआस ।
इसदे साईं नईं सूरमा, धरत पतालें गास ।।

दो० भेत बभीषण खोलदा, सुणैं राम भगवान ।
सीता माया धरतिया, नारायण हन राम ॥

नारायण ने माया जालें, सारे दन्त फसाए ।
अतिकाए दे वीर बभीषण, ने सब भेत गलाए ॥
ललकार सुणीं कै राछस दी, लछमण गासें आया ।
अपणें धनुषे उप्पर तिन्नीं, सौ सठ तीर चढ़ाया ॥
लप-लप करदे काल़े अजगर, गासे उप्पर छाए ।
निस्सल़ सारे इक-दम कीते, वीर दन्त अतिकाए ॥
दानव ने हुण वीर घातणीं, सक्ति इक चलाई ।
परतोया लछमण धरती पर, मुड़ी होस जां आई ॥
तुरबुर दिक्खै चऊं पासियां, अतिकाए दी माया ।
जाम-वन्त जो कौतुक दिक्खी, अणमुक गुस्सा आया ॥
तणीं तणोईं जामवन्त ने, मुक्का इक्क चलाया ।
दानव गड़-गड़ करदा धरती, रिड़की इक-दम आया ॥
किछ घड़ियां हुण रिया मूरछित उठी खड़ोता वीर ।
जन्तर-मन्तर कनैं सक्तियां, लगा चलाणां तीर ॥
चऊं पासियां रिछ वान्दरां, दी थी मारो-मार ।
युद्ध भूम विच राम दुहाई, राम-राम करतार ॥
सुग्रीब नील नल अंगद दी, पेस चलै नी कोई ।
दानव दी माया दिक्खी कै, सेना थी डफल़ोई ॥
हुण लछमण होस सम्हालदा; महावीर बलवान ।
युद्ध भूम विच लछमण आया, चाढ़े धनुषें बाण ॥
लछमण दिक्खी अतिकाए ने, पैने तीर चलाए ।
दिब्ब सक्तियां दानव अस्तर, गासे उप्पर छाए ॥
लछमण ने धनुषे दी कीती, जोरें इक टंक्कार ।
लंका नगरी थर-थर कंब्बी, दानव दल हा कार ॥

दो० देव दानवी शक्तियां, अस्तर छाए गास ।
जीव-जन्त ने जीण दी, छड्डी पूरी आस ॥

अतिकाए ललकारिया, कुथूं गया हुण राम ।
कुंभकरण दा मोड़ना, ददला युद्ध मदान ।।
इतणीं गल्ल गलाई दानव, अणमुक तीर चलाए ।
महावीर ने गुरज चलाई, निस्सल सब्ब बणाए ।।
बरछे भाले कनैं शक्तियां, अणमुक वरती माया ।
लछमण उप्पर अस्तर-सस्तर, दानव सब्ब चलाया ।।
दानव माया सारी वरती, अतिकाए रणधीर ।
महावीर ने निस्सल कीते, बरछे भाले तीर ।।
अतिकाए भट दानव योधा, महावीर बलवान ।
गढ़ लंका विच चऊं पासिया, राछस दा घमसाण ।।
कदीं धरतिया गासे उप्पर, दानव युद्ध रचाऐ ।
खेलैं माया दानव पूरी, बान्दर दल घबराऐ ।।
लछमण ने हुण धनुषे उप्पर, पैने तीर चढ़ाए ।
अस्तर सस्तर सारे तिसदे, फिरी रथे चा आए ।।
दानव जन्तर मन्तर वरतै, कोई असर न होऐ ।
युद्ध भूम विच तिसदा अस्तर, छिन भर नईं खड़ोऐ ।।
हुण बड्डी सक्ति ब्रह्मास्त्र दी, दानव फिरी चलाई ।
लछमण ने विसणू अस्तर ने, बलदी अग्ग बुझाई ।।
लछमण ने हुण धनुषे उप्पर, बरछी दिब्ब चढ़ाई ।
अतिकाए दे पासैं लस-लस, करदी बलदी आई ।।
शक्ति दे चलणें ने गासैं, चानण अणमुक होया ।
चानण चुब्भा विच्च कालजें, अतिकाए परतोया ।।
अतिकाए दे मरने कन्नें, दानव दौड़े सारे ।
राम गुसाईं दी सेना विच, वज्जे ढोल नगारे ।।
दानव दल दी चऊं पासियां, होई तगड़ी हार ।
रिच्छ बान्दरां राम लखण दी, कीती जय-जय कार ।।

दो० साथ पापियां दा बुरा, कर कंगलिया होस ।
तोता बोलै रावणें, मरुआए निरदोस ।।

छन्द : पापियां दा साथ बुरा, तिन्हां कन्नें साख बुरा ।
बुरे दी बुराई कन्नें, ठौकरे दा बैर ऐ ॥
वरदान पाई सिरें ताज वी चाढ़ाऐ कोई ।
करै बे अपराध नईं, तिसदीं वी खैर ऐ ॥
पढ़ै भौएं पोथियां जो गट-गट वेद बोलै ।
निसफल पापियां ने तीरथां दी सैर ऐ ॥
बोलदा ऐ 'संसार' राम न उचारै कोई ।
तिसदा तां हर दम चिक्कड़े च पैर ऐ ॥

'महाकाव्य माया'

त्रयोदश सर्ग

छन्द : रावणे दे पाप बदे सिरे पर भार पिया ।
पागलां दे साईं मन धक-धक डोलदा ।।
जाई करी हुण कारीगरे जो गलाऐ अप्पूं ।
सिर जे बणाऐं नाम पाऐं मुंह बोलदा ।।
राम तां लखण दियां मुंडियां दा जोड़ा होऐ ।
कारीगर करामात अप्पणीं ऐं तोलदा ।।
बोलदा ऐ 'संसार' ठौकरे दा माया जाल़ ।
पिल़चियां धागियां जो रावण ऐ खोलदा ।

दो० तोता बचन उचारदा, सुण कंगलिया बात ।
अक्ल फिरी हुण रावणें, झोलै मुट्ठे वात ।।
इक पासें तां गढ़ लंका विच, होया सोर मसोरा ।
दूए पासें रावण चलिया, लई सिरां दा जोड़ा ।।
कारीगर मायावी लंका, ऐसे सीस बणाए ।
राम लखण दे नैंण नक्ख सब, पूरे करी सजाए ।।
रावण सीसां थालें रक्खी, सोक वाटिका आया ।
थाले च मुंडियां दा जोड़ा, धरती पर रखुआया ।।
राम लखण दे सिरां दिक्खदी, सीता थी परतोई ।
त्रिजटा कीते लक्ख जतन थे सीता होस न कोई ।।
सीता जो बेहोस दिक्खिया, रावण महलां आया ।
त्रिजटा ने सीता दे कन्नां, राम नाम गुण गाया ।।

राम नाम दा सब्द गलाई, छिट्टू मुहएं मारे ।
सीता बजलोई कै उट्ठी, अपणें नैन उघाड़े ।।
त्रिजटा ने मायावी रावण, दी माया समझाई ।
झूठ-मूठ दे कारीगर दी, सारी कथा सुणाई ।।
त्रिजटा दी गल्ला पर सीता, जो आया बिसुआस ।
विच्च सरीरे आए अन्दर, सीता जिन्द सुआस ।।
सोकवाटिका तों रावण जां, महलां अन्दर आया ।
युद्ध भूम दा हाल सुणी कै, तिसदा मन घबराया ।।
मत्थें हत्थ दई कै बैठा, किल्ला हौके मारै ।
दसकंधर अपणीं करनी पर, बार-बार सुस्कारै ।।
मेघनाथ हुण वीर खड़ोता, तीर तरकसां पाई ।
बोलण लग्गा करा हुकम हुण, युद्ध करां मैं जाई ।।
सती सलोचन तिलक चढ़ाया, मेघनाथ बलवान ।
सीस रावणें दित्ती तिसजो, देव लगे घबराण ।।

दो॰ वीर बभीषण बोलदा, सुणैं राम भगवान ।
युद्धभूम विच गरजदा, मेघनाथ बलवान ।।

अणमुक्के दे धनुष चढ़ाई, लछमण तीर चलाए ।
मेघनाथ ने पासा परती, निस्सल सब्ब बणाए ।।
लउएं लासां तरनां लगियां, धड़ा मुंड कतरोए ।
कई करोड़ां तड़फे दानव, हत्थ पैर मरकोए ।।
महावीर ने गुर्ज चलाई, अणमुक दानव फाड़े ।
जामवन्त ने दानव पकड़ी, धरती दई पछाड़े ।।
अंगद नल नीले ने पाई, तगड़ी मारो मार ।
न्हट्ठण लग्गी दानव सेना, जालूं चढ़ी दबाड़ ।।
मेघनाथ ने दिखिया आई सेना दा जां हाल ।
अग्न बाण बरसाया अस्तर, धरती होई लाल ।।
भल-भल बलदी अग्ग धरतिया, बान्दर लगे फकोण ।
अदझलसोए न्हठी गए किछ, रिच्छ लगे परतोण ।।
अग्न बाण दे सेके दिक्खी, लछमण गुस्सा आया ।
धनुषें डोरी जोरें खिज्जी, मेघवाण बरसाया ।।

गासें काल् बद्दल छाए, बरखा मूसल-धार ।
न्हेरी झक्खड़ कनैं गुबारा, बिजली दी चमकार ।।
अणमुक्के दे तीर चलाए, मेघनाथ बलवान ।
धरती उप्पर चानण होया, रिच्छ लगे घबराण ।।
दानव अणमुक तीर चलाई, चढ़ी अकासें उडिया ।
उप्पर जाई इक्को वारी, विच्च बान्दरा कुदिया ।
मेघनाथ ने बान्दर सेना, उप्पर सुटिया जाल् ।
उडी गिया दानव आकासें, अबंर होया लाल ।।
डोरी जां जाल् दी खिज्जी, बान्दर गए घटोई ।
रिच्छ तड़फणां मरना लग्गे, सारे गए बतोई ।।

दो० सेना दा मन डोलिया, हनूमान बलकार ।
आया जोरें बोलदा, लखण राम जयकार ।।

दो० गासें जाई दानवें, कीते अणमुक खेल ।
जिय्यां तेली पीड़दा, घिरी फिरी कै तेल ।।

महावीर दिक्खै गासे पर, गल्ल समझ नीं आई ।
अग्गें पिच्छें बिलखन बान्दर, सुम्मैं रिच्छ दुहाई ।।
वीर बभीषण जाई पुच्छै, 'महावीर, के चर्ज ।
गासे उप्पर दानव गर्जै, घोर भयंकर सब्द ।।
गए घटोई बान्दर सारे, गस खाई भरनोए ।
रिच्छां तों वी नईं चलोऐ, हत्थ पैर मरड़ोए ।।
गासे तों तीरां दी बरखा, बान्दर बेसुध सारे ।
लछमण वीर कुथीं नीं सुज्झै, धरती दुस्सन तारे ।।
जामवन्त नल नील सणें हुण, अंगद थे घबराए ।
मेघनाथ ने गासे उपरा, अणमुक तीर चलाए ।।
इक पासें जाल् दा पंज्जा, दूएं दानव वीर ।
बुगदर भाले परसे दुस्सन, सेना सब्ब अधीर ।।
दौं घड़ियां दे अन्दर सेना, अदमर होई सारी ।
दानव ने हुण युद्ध मदाने, दित्ता जाल् उतारी ।।
हनूमान हुण वीर बभीषण, अग्गें बोलै जाई ।
'झट-पट बोला युद्ध मदाने, हुण के आफत आई ।।'

वीर बभीषण सोची समझी, अपणें सब्द उचारे।
बोलण लग्गा मेघनाथ दे, युद्धें खेल नियारे ॥
चढ़ी गिया हुण दानव ऊचा, बई गिया आकास।
उप्पर जाई जाल् उतारै, सेना होया नास ॥
इस जाल् दे अणमुक धागे, डोरी तिसदे हत्थें ।
जाऐ गासे उप्पर कोई, लग्गैं तिसदे मत्थें ॥
धरती उप्पर नईं युद्ध हुण, आकासे पर होणां ।
जाई कोई गासें चढ़गा, ताईं जाल् कटोणा ॥

दो० गल सुणीं कै उडी गिया, गासें पवन कुमार ।
मेघनाथ जो चाढ़दा, तगड़ी जाई मार ॥

गासे उप्पर गड़-गड़ होई, दानव झट परतोया।
मेघनाथ धरती पर आई, गस खाई भरनोया ॥
सस्तोई कै चुक्के तिन्नीं, अपणें सब हथियार ।
महावीर पर आई कीते, अणमुक तगड़े वार ॥
मेघनाथ धरती पर आया, बान्दर खुल्ले सारे ।
न्हठी गई दानव दी माया, नीं थे सब्ब उधारे ॥
मेघनाथ ने महावीर दा, पिया युद्ध घमसाण ।
दानव दे सब निस्सल् होए, अस्तर तीर कमाण ॥
हनुमान दे उप्पर तीरां, कोई असर न होऐ ।
अस्तर-सस्तर मेघनाथ दा, तिस पर नईं खड़ोऐ ॥
दानव हारी हुट्टी उप्पर, आकासे दें आया ।
हनूमान पर पूरा पर्वत, चुक्की कै परताया ॥
महावीर ने गुरज चलाया, पर्वत टोटे कीते ।
मेघनाथ ने गासे उप्पर, सुट्टे धूण-पलीते ॥
जन्तर मन्तर तन्तर आए, सब सेना परतोई ।
हनूमान जो धक्के लग्गे, दिक्खै वीर खड़ोई ॥
महावीर सोचै मन अपणें, दानव ऐ बलकार ।
सिमरै राम मनें दे अन्दर, होण लगी ऐ हार ॥
लछमण ने दूरे तों जालूं, राम दुहाई जाणीं ।
घाबर दिक्खी सेना दे विच्च, होया पाणीं-पाणीं ॥

धनुषे दी डोरी खिज्जी कै, पैने छड्डे तीर ।
मेघनाथ धरती परतोया, विलसै अणमुक वीर ॥
दानव माया कटणें ताईं, पैना तीर चढ़ाई ।
चम-चम करदा माया पिच्छें, दित्ता भिरी चलाई ॥

दो० आसें पासें राम दी, होई जय-जयकार ।
दानव सारे दौड़दे, समझी अपणीं हार ॥

दो० जन्तर मन्तर वरतदा, मेघनाथ बलवान ।
लछमण माया मेटदा, खिज्जै तीर कमाण ॥

अग्न बाण जो बलदे दिक्खी, दानव माया न्हट्ठी ।
मेघनाथ दी धुखी गई अज, धूफे दी सब गट्ठी ॥
माया जाल् कटोणें कन्नें, दानव ढूण मढूणां ।
तिसदी माया उप्पर कीता, लछमण आई टूणां ॥
मेघनाथ हुण जोरें बोलै, टूणें निस्सल् होणें ।
लछमण तेरी लोथा उप्पर, इल्ल पक्खरू रोणें ॥
सुरगे दे राजे जो जकड़ी, मैं था काठ चढ़ाया ।
धरती उप्पर नईं सूरमा, कदीं नजर वी आया ॥
तूं बच्चा ऐं युद्ध मदाने, घड़िया दा महमान ।
सद्दी लिय्या भाऊ अपणें, तेरी जिन्द बचान ॥
जे तूं जीणां चाऽनां लछमण, तां कर खड़ियां बाईं ।
कुनी न रोणां बई घड़ी भर, लछमण तेरे ताईं ॥
इतणीं गल्ल गलाई दानव, अपणां लई दुधारा ।
टुटी पिया लछमण दे उप्पर, जिय्यां अजगर काला ॥
लछमण ने तीरां दे कन्नें, तिसदे अस्तर भन्ने ।
पुट्ठा होया मेघनाथ हुण, आया धरती बन्ने ॥
संझ होई तां दानव पई, कन्नां इक्क उआज ।
'मेघनाथ तूं लछमण उप्पर, सिब दी बरछी दाग ॥
तिसा सक्तिया नईं चलाऐं, तां तूं अज्ज उधारा ।
चौदह साल जती ऐ लछमण, धरती वीर नियारा ॥
म्हीने बारह रिया जागदा, वीर बड़ा बलकार ।
अमोघ अस्तर दे चलाई, इसदे सीने मार ॥

इस उआजा कन्नें दानव, वरछी हत्थे चुक्की ।
हनूमान तों हक्ख बचाई, लछमण उप्पर सुट्टी ॥

दो० आकासे पर अग्ग थी, धरती पर चमकार ।
डग मग दिग्गज डोलदे, होई हा हाकार ॥

सिब्ब सक्तिया दी मारा ने, लछमण था परतोया ।
लछमण जो ढैन्दे दिक्खी कै, इक-इक बान्दर रोया ॥
धार वगी लउए दी, बरछी, खुब्बी हिक्का जाई ।
हनूमान हुण जोरें विलखै, होई राम दुहाई ॥
अपणां कम्म कमाई बरछी, उडी गई आकास ।
विच्च झोलिया सिब दे जाई, तिन्नां लिया सुआस ॥
चौं भांतां दे वात चले हुण, थर-थर धरती हिल्ली ।
राम गुसाईं अग्गें जाई, जोरें रोई बिल्ली ॥
दिनें धियाड़ें तारे टुट्टे, सबना लिया पछाणीं ।
युद्ध भूम विच अज्ज दानवें, लछमण लिया बुहाणीं ॥
राम गुसाईं दे कैंपे त्रिच, पई गिया अज सोग ।
गढ़ लंका विच नाच रंग था, नच्चे दानव लोग ॥
ढोल-नगारे रणसिंहे थे, मेघनाथ बलवान ।
दानव सारे इक दूए जो, घुट्टी जप्फी पान ॥
हनूमान चुक्कै लछमण जो, लछमण था बेहोस ।
विलखी बोलै महावीर हुण, मेरे जिम्मे दोस ॥
नीं छडदा मैं किल्ले इसजो, नईं घड़ी भर जान्दा ।
मेघनाथ इस उप्पर बरछी, किय्यां करी चलान्दा ॥
किय्यां जांगा मैं कैंपे जो, किय्यां मुंह लुकांगा ।
राम गुसाईं अग्गें जाई, के किछ गल्ल सुणांगा ॥
बेहोस एह् लछमण पूरा, पता नीं जिन्द रैह्णीं ।
राम गुसाईं इसदे मरने, दी तां खबर न सैह्णीं ॥
नईं चलोऐ नईं चकोऐ, जामवन्त सुण भाई ।
राम गुसाईं अग्गें लोथा, चुक्की दिया पुजाई ॥

दो० लछमण सुत्ता धरतिया, योधे सब्ब अधीर ।
जामवन्त नल नील सब, डोलन हाखीं नीर ॥

दो॰ शिव भोले दी शक्तियां. दन्तां दा वरदान ।
राछस पाई ताकतां, देवां जो धमकान ॥

सुग्रीबे जो चैन न कोई, हनूमान सुसकारै ।
इक-इक योधा लछमण दिक्खी खड़ियां ढाईं मारै ॥
इतणें योधे होन्द सरोन्दे, लछमण अज्ज मरोया ।
हनूमान जो रोंदे दिक्खी, बान्दर इक-इक रोया ॥
राम गुसाईं दी सेना विच, होई हा-हाकार ।
सारे योधे धरती रक्खी, रोण लगे हथियार ॥
न्हेरा होया युद्ध भूम विच, सूरज रसमां ढकियां ।
सारी सेना इय्यां विलखै पाणीं दे विन मछियां ॥
कुनी आई कै राम चन्द्रां, जो जां गल्ल सुणाई ।
ढैन्दे-पौन्दे उट्ठी दौड़े, बोलन, 'लछमण भाई ॥
राम गुसाईं पासें दिक्खी, सारी सेना रोई ।
हाखीं दे रोजे ने धरती, चिक्कड़ सारी होई ॥
राम गलाया, 'अज्ज असां तां, दित्ती बाजी हारी ।
भागां चक्कर पुट्ठा आया. साड़ी किस्मत माड़ी ॥
कजो चढ़ाई कीती लंका, कजो सियापे पिट्टे ।
लछमण दे लडऐ दे धरती, नईं धियोणें छिट्टे ॥
तिन्न जणें आए घर छड्डी, किल्ला किय्यां जांगा ।
कुस कूंटा कुस गुफा च जाई, अपणां मुंह लुकांगा ॥
कुनीं गलाणां सीता ताईं, भाऊ इस मरुआया ।
कुनीं गलाणं राज ताज दे, ताईं कम्म कमाया ॥
लछमण दा सिर गोदा रक्खी, विलखे अगमुक राम ।
मत्था पकड़ी इक हत्थे ने, घड़ी-घड़ी पछतान ।
सारी सेना ढुकी खड़ोती, हुण थी आल दुआलें ।
धुड़कू बोलै गल नीं होऐ. जिय्यां खड़े कुआलें ॥

दो॰ लछमण आई मूरछा, होए राम अधीर ।
पक्की पत्थर लीक ऐ, मत्थें भाग लकीर ॥

राज-पाट घर-घाट छड्डिया, बणां च डेरा लाया ।
मेरे पिच्छे लछमण भाऊ, जिद्द करी कै आया ॥

म्हीने बारह तूं नीं सुत्ता, अणमुक झल्ले फाके ।
लछमण वाझी कदी न होणे, पूरे घाटे घापे ॥
महलां दे विच सौणें आला अज धरती पर सुत्ता ।
अदवचकालें दई गियां तूं, लछमण मिज्जो बुत्ता ॥
लोकां घर-घर गल्ल गलाणीं, होया राम कपूत ।
गई जनानी भाऊ मुक्का, देणा एह् सबूत ॥
उड़दी उड़दी गल जां सारी, विच आयोध्या जाणीं ।
लोका घर-घर लई ढोलकी, कन्नो सन्न सुणाणीं ॥
दिन चढ़दें सब मत्थे टेकन, डुब्बै सेई जान्दे ।
रातीं न्हेरें कई अचक्कै चोरी सन्ह लगान्दे ॥
दिनां माड़ियां नईं खड़ोऐ, लागें संग्गी साथी ।
नई समल्होऐ बिन जोरें, अपणां मदिया हाथी ॥
पता नईं हुण कुस घड़िया दे, पाप सामणें आए ।
राम बोलियां अप्पूं गल्लां, अप्पूं ई पछताए ॥
सीता ने रावण दी कैदा, गली सड़ी कै मरना ।
तेरे वाझी मैं हुण, लछमण, कुस दे जोरें लड़ना ॥
मिलदे सब्ब पदारथ धरतीं, नीं खरदोन्दे भाई ।
अम्मां जाए मुड़ी न मिल्लन, जान बछोड़े पाई ॥
मेरी करतूतां जो जालूं, माऊ सुमित्रा सुणनां ।
भरी पछाड़ां धरती पौणां, विलसी तड़फी मरनां ॥
त्रेता दी तां गल नीं मिटणीं, लीक पत्थरें पौणीं ।
द्वापर कलियुग सतयुग भाई, मिज्जो चैन न औणीं ॥

दो० **धरती गासें घुम्मणीं, जाणीं गल्ल पताल् ।**
खूने बून्दां तेरियां फिरने पाणी लाल ॥

दो० **करम गति जां खेल करै, विसणू लै अवतार ।**
माया चक्कर धरतिया, मोह दा सब बपार ॥

राम गलाऐ भरतें सुणनां, विलखी धरती पौणां ।
शत्रूघुन दा हौका लछमाण, मेथों नेईं झलोणां ॥
विच आयोध्या नई झलोणां, तेरा वीर वियोग ।
उमर भरे दा मेरी जिन्दू, लग्गी जाणां रोग ॥

चन्द सूरजें मिज्जो दिक्खी अपणां मुंह लुकाणां ।
मेरा नांऽ सुणीं कै लोका, मिज्जो बुरा गलाणां ।।
रुक्ख बूटियां हसणां मिज्जो, फल फुल्लां झड़ जाणां ।
भाई जो मरुआणें आला, सबनां एह गलाणां ।।
इस कालखू कुस्स पाणिएं, कुस्स सागरें धोंगा ।
कुस कूंटा कुस डुड्डी अन्दर, किल्ला बैठी रोंगा ।।
इतणीं गल्ल गलाई रोए, तिरलोकी दे नाथ ।
विलखन बचियां साईं बोलन, होए अज्ज अनाथ ।।
रोई-रोई राम पुकारन, भजी गई अज बांह ।
इकसी बाईं ने हुण लछमण, किय्यां कम्म कमांऊं ।।
रोए विलखी होए बतौरै, पूरे राम सुदाई ।
बोलन लछमण किय्यां झलणीं, तेरी असां जुदाई ।।
राम गुसाईं रोन्दे दिक्खी, हनूमान बलकार ।
बोलण लग्गे' 'नाथ ! राम हुग, छड्डा हा-हा कार ।।
नेड़े दूरे दे हुण बैदे, झट-पट लिया सदाई ।
दस्सा इसदी नवज कुसी जो, लछमण करा दुआई ।।
साह सरीरें पूरा चल्लै, तपस सरीरें आस ।
कोई बैद गती दा होऐ, मुड़ने झट्ट सुआस ।।
मन दी हारा कन्नें होणीं, सच-मुच साड़ी हार ।
नईं हारिया मन तां साड़ा, समझा बेड़ा पार ।।

दो० योधे युद्धें मूरछत, होयो उठी खड़ोन ।
झक्खड़ झुल्लन सूंकदे, पर्वत नीं बदलोन ।।

दो० जालूं औन मुसीबतां, टुट्टन वर्णी पहाड़ ।
मन जो काबू रक्खिए, किछ नीं करदा काल ।।

युद्ध भूम विच कई वरी तां, जित कई वरी हार ।
कई वरी तां पाणीं वेड़े, कक्खां दे पतवार ।।
कई वरी तां रात डरौणीं होऐ भिरी भियाग ।
कई वरी तां फिटदा अप्पूं दुद्दें जम्मै जाग ।।
रोई-धोई जिन्द घटोऐ, जतनां जान खड़ोऐ ।
फटिया टल्लू छींडा फौगल, सूई लाई सियोऐ ।।

हनूमान दी गल्ला उप्पर, होए राम सहारे ।
गढ लंका विच वैद सियाणां, दस्स बभीषण प्यारे ।।
राज वैद सुखणू दे ताईं. अज्ज बभीषण दस्सै ।
जिसजो दिऐ दुआई सुखणूं, रोणें आला हस्सै ।।
गईयां नवजां जो चढ़ाऐ, जान सरीरें पान्दा ।
तिसतों डरदा काल बचारा, अपणां मुंह लुकान्दा ।।
राज वैद लंका दा सुखणू कम्म अनोखे करदा ।
अंग कटोयो सारे जोड़ै, रोगी कदीं न मरदा ।।
जड़ी बूटियां कन्नें करदा, सुखणू सब्ब इलाज ।
सिरा कटोयां जोड़ै सुखणूं, करै अनोखे काज ।।
जड़ी बूटियां दिऐ नचोड़ी, बुड्डे करै जुआन ।
दानव तिसदी करन दुआई, अपणां रूप बटान ।।
जन्तर मन्तर तन्तर जाणैं, तीर बरछियां गालैं ।
विच्च सरीरे लोए जो तां, दई दुआई ढालैं ।।
रावण दे महले विच सुखणूं, कुनी लियोणां वैद ।
जे पकड़ोया रातीं कोई, होणां तिन्नी कैद ।।
इस गल्ला जो सुणी पवन सुत, होया लालो लाल ।
बोलण लग्गा अज्ज बभीषण, कीता तुसां कमाल ।।

दो० हुकम लई कै राम दा चली गए हनुमान ।
सणे बछाणें आणियां, सुखणू युद्ध मदान ।।

महावीर ने घड़िया विच था, सारा कम्म कमाया ।
गढ़ लंका तो सुखणूं चुक्की, लछमण आल पुलाया ।।
हाखीं खोड़ी सुखणू दिक्खै, राम-राम रघुराई ।
बोलै, मिज्जो रावण, दिक्खै, जिन्दू दिऐ मुकाई ।।
जे पुज्जी गल महलां अन्दर, तां हुण जिन्द उधारी ।
जीन्दा होई जाणां लछमण, औणीं मेरी वारी ।।
राम गुसाईं दई, दिलासा, सुखणू था समझाया ।
निरभै तिसजो कीता पूरा, अगला कम्म गलाया ।।
राम गलाया, सुखणू गल सुण, लछमण राजी करना ।
जिस मुल्लें जिस भाएं दस्सैं, कम्म असां दा करना ।।

लछमण दी जिन्दू दे बदलें, मैं होआं कुरबान ।
काले जो टपला दे लाई, जिसतों सब घबरान ।।
राम गुसाईं दी गल्ला पर, सुखणूं नेड़ें आया ।
लछमण दी नबजा जो पकड़ी, हत्थ सिरे जो लाया ।।
सुखणू बोलै, 'हे नाथ ऐह, किय्यां बचणां बीर ।
इकसी बाईं नबज चला दी, राम-राम रघुबीर ।।
सिव दी बरछीं लग्गी इसजो, होया बिल्कुल ठंडा ।
दिन चढ़दे ने मरना इन्नीं, चढ़ना लंका झंडा ।।
बूटी जाई कुन्नीं लियोणीं, घड़ी भरे बिच जाई ।
सप्पां ने पर्वत ऐ भरियां. अजगर सड़दे खाई ।।
पर्वत उप्पर बूटी बलदी, फणियर फूकां मारन ।
अपणां बिष पर्वत दे उप्पर, सारे आई झाड़न ।।
सप्पां दे तिस जैऽरे कन्नें, बूटी दै चमकारे ।
रातीं लोअ्-लुआना दुस्सै, दिनें दुस्सदे तारे ।।

दो० **जाणां लागें पर्वतें. राम नईं ऐ खेल ।।**
कुनीं लियोणीं औषधी, कड्डी अपणां तेल ।।

दो० **बिच्च हिमालय बूटियां, मरियां मुड़ी जियान ।**
त्रेता द्वापर सतयुगें, कलियुग उडी पछाण ।।

बड़ा हिमालय पर्वत ऊचा, ऊबड़-खाबड़ धरती ।
कई योजनां ढेरा पैंडा, किय्यां औणां परती ।।
चऊं पासियां घोर जंगलां, खाई पर्वत ऊच्चे ।
तिसदे उप्पर बलदी बूटी, जिय्यां अग्गी कूचे ।।
घणें बणां बिच गैंडे रैन्दे, हाथी तां भगियाड़ ।
राम-राम कुण जाऐ तेथूं, खाऐ जाई मार ।।
दिन चढ़दे तों पहलैं कोई, बूटी पुट्टी औऐ ।
लछमण दे घावे पर सुट्टां, तां ई जीन्दा होऐ ।।
लोअ् लगादिया पुज्जै बूटी, तां किछ होणी देर ।
नीं बचणां लछमण ने जिन्दू, चिक्कां होणां ढेर ।।
राम गुसाईं वैदे दी गल, सारी जाणीं बुज्झी ।
हनूमान दे पासें दिक्खन, होर कोई न सुज्झी ।।

पवन सुते दे पासें दिक्खी, होए राम अधीर ।
बोलण लग्गे देर करैं मत, महावीर बलवीर ॥
राम गुसाइं दे हुक्मे पर, उडी अकासें आया ।
महावीर बलकार पवन सुत, निक्का देह बणाया ।
उडदा-उडदा किछ घड़ियां विच, जद्दूं हिमालय पुज्जा ।
आसें पासें बैदे दा हुण, पर्वत कुथीं न सुज्झा ॥
सोचण लग्गा पता नईं किछ, असां भलेखा खादा ।
लछमण दे मरुआणें ताईं, बैदें कीता वादा ॥
झूठ गलाया बैदें बलदा, टिल्ला कुथीं न सुज्झै ।
चऊं पासियां जीव जीव-जन्त नीं, गल्ला हुण कुण बुज्झै ॥
गासे पासें दिक्खै उप्पर, होई अद्दी रात ।
लछमण ने नीं बचणां सोचै, होणीं ऐ परभात ॥

दो० **खरा-बुरा सब ठौकरें, जस अपजस तां भाग ।**
तोता बोल उचारदा, उठ कंगलिया जाग ॥

इक पासें तां हनूमान था, चढ़िया गासें जाई ।
दूए पासे रावण जो हुण, दूतें गल्ल सुणाई ॥
बूटी लैणा हनूमान दा, सारा भेत गलाया ।
महावीर जो मरुआणें दा, रावण मता मताया ॥
कालनेमि था नां दानव दा, माया जाल़ रचाऐ ।
तिसजो सद्दी दसकंधर हुण, गल्लो गल्ल गलाऐ ॥
बोलै तिसजो रावण, 'जा तूं, हनूमान जो मार ।
माया जाल़ बछाई रस्तें, महावीर जो ताड़ ॥
मेघनाथ दी बरछी अज तां, निसफल नईं बणाणीं ।
दिन चढ़दे ने राम-लखण दी, सारी फौज नठाणीं ॥
देर करैं मत रती भरें तूं, गासे उप्पर जाअ् ।
हनूमान जो मारी कुट्टी, तिसदा फाह् मुकाअ् ॥
दानव ने हुण सीस नुआया, गासें उडदा आया ।
हनूमान दे रस्ते अन्दर, सुन्दर बाग सजाया ॥
राम नाम दा जाप जपै हुण, दानव मुनी सुहाऐ ।
सुन्दर इक्क तल़ाए कंडें, राम नाम गुण गाऐ ॥

हनूमान जां उडदा-उडदा, तिस पासे जो आया ।
राम-नाम दा जाप सुणी कै, तिसदा मन भरमाया ।।
ऋषिए लागी आया झट-पट हनूमान बलकार ।
पुच्छण लग्गा राम जित्तगे या रावण बदकार ।।
दानव-ऋषिए भेसें बैठा, राम नाम हुण बोलै ।
ताड़ी लाऐ राछस अपणीं, हाखीं देरा खोलै ।।
बोलण लग्गा, 'बेटा मैं तां, सारें नजर दुड़ाई ।
रावण दी मुंड्डी तां मिज्जो, कुथीं नजर नीं आई ।।

दो० परसण मेरा बोलदा, रावण दी ऐ हार ।
मरना सारे राछसां, बचै राम करतार ।।

हनूमान ने गल्ल सुणीं तां, चरनां सीस नुआया ।।
दानव ऋषिए दे भेसे विच, महावीर भरमाया ।।
दानव बोलै परसण पूरा, कदी न होऐ झूठ ।
रावण जो हुण सीस बचाणें, दी नीं मिलणीं छूट ।।
दानव बोलै हनूमान तू, विच्च तलाएं जाअ् ।
हत्थ पैर धोई कै ओथूं, परसादे जो खाअ् ।।
दानव दी गल्ला जो मन्नी, विच्च तलाएं आया ।
मछिया ने मुहएं दे अन्दर, महावीर जो ढाया ।।
हनूमान ने चीरी सुट्टी, मच्छी थी दो फाड़ ।
विच्चे दी इक परी निक्कली, होया तिसा उद्धार ।।
परी गलाऐ ऋषिए भेसें, दानव दी ऐ माया ।
रावण ने दानव जो सद्दी, सारा खेल रचाया ।।
इतणीं गल्ल गलाई परिया, उडी गई आकास ।
हनूमान हुण रूप करूपें, आया दानव पास ।।
हनूमान ने गुर्ज चलाई, फाड़े तिसदे कीते ।
गासें होई घोर गर्जना, जिय्यां बोलन चीते ।।
कालनेमि दे मरने कन्नें, नई बाग नीं बूटा ।
महावीर चौं पासें दिक्खै, सब किछ था हुण झूठा ।।
महावीर ने आसें-पासें, गासें नजर दुड़ाई ।
उडी गिया गासे दे उप्पर, महावीर रघुराई ।।

अक्खें वक्खें गासें धरती, चऊं पासियां दिक्खै ।
जिय्यां माह्णू दे करमां पर, ठौकर लेखां लिक्खै ॥
कुसी पहाड़ें नजर न औऐ, बूटिया बलदी लोअ् ।
सुखणूं वैदें झूठ गलाया, हनूमान मन दोअ् ॥

दो० जालूं गल्ल न उप्पड़ै, लग्गै झूठो झूठ ।
माया जाल़े उलझदे, राम नाम दे दूत ॥

बो० राम नाम दा जाप वी, नईं सुखाल़ी गल्ल ।
कई वरी तां भगत दी, उतरै पूरी खल्ल ॥

हनूमान थे सेवक जिसदे, राम मुसीवत आई ।
तोता बोलै, 'सुण कंगलिया, साड़ी के वडियाईं ॥
इक पासें थी राम उदासी, हनूमान भरमाए ।
बद्दल छाया गासे उप्पर, तारियां नक लुकाए ॥
सोची कै किछ मन दे अन्दर, उडिया भिरी अकासें ।
दूरे तों लो दुस्सण लग्गी, गिया तिसा दे पासें ॥
इकसी टिल्ले उप्पर दिक्खी, बूटी जग-मग बल़दी ।
जिय्यां पैनी रसम सूरजें, चमकै संझा ढल़दी ॥
उतरी आया टिल्ले उप्पर, महावीर बलवीर ।
जोरें जोरें जय-जय बोलै, राम-राम रघुवीर ॥
जां हुण बूटी पुटणें ताईं, थोड़ा अग्गें होया ।
बड्डा अजगर आई तिस पर, इकदम था लपटोया ॥
तिसजो दिक्खी अणमुक्कां दे, सप्प सूंकदे आए ।
मुहएं विच्चा अग्गी गुल्लन, चऊं पासियां छाए ॥
हक्ख झमकणें कन्नें सारे, फणियर गे लपटोई ।
महावीर दे पिड्डे उप्पर, इक-दम गए खड़ोई ॥
हनूमान सिव संभू लग्गै, सप्प सब्ब लपटोए ।
हुण के होया राम दुहाई, महावीर डफल़ोए ॥
राम दुहाई दे सब्दे पर, गरज अकासें होई ।
भोले शंकर महावीर दे, अग्गें गए खड़ोई ॥
बोलन, 'मेरी बरछी निसफल, कदी काल़ नीं जाणीं ।
तूं कुण आया बुटीं पुट्टण, मिज्जो लियां पछाणीं ॥

मेघनाथ ने बारह बरियां, कीती घोर तपस्या ।
दानव अस्तर लई अमोघ था, खिड़-खिड़ करदा हसिया ।।

दो० बरछी निसफल न होऐ मेरा ऐ वरदान ।
तू मत पुट्टैं बूटिया, हे बीर हनूमान ।।

दो० बूटी सूंका मारदी, अग्ग बलै आकास ।
फणियर झूजन टिल्लियां, गुल्लन कौड़ा बात ।।

घोर तपे दे कन्नें अस्तर, मेघनाथ ने पाया ।
युद्ध भूम बिच लछमण उप्पर, जय सिव करी चलाया ।।
सूप नखा दे नक कन बड्डे तिसदा ऐ सन्ताप ।
हत्थ उठाया उपर जणासा, मैं नीं करना माफ ।।
सिब संभू दे बचन सुणें तां, महावीर घबराए ।
मार उडारी चुप्प चुपीते, गौरां पासें आए ।।
बोलण लग्गे, 'तू सुण देवी, मेरी अज फरियाद ।
घोर मुसीबत आई उप्पर, तिज्जो करना याद ।।
सिब ने मिज्जो रोकी रखिया, मरना लछमण बीर ।
विलखी-विलखी दिन चढ़दे ने, नीं बचणें रघुवीर ।।
सिब दे घेरे तों हे माता, मिज्जों लियां छुड़ाई ।
सणें बूटिया गढ़ लंका विच, राती दियां पजांई ।।
नीं तां इस धरती दे उप्पर, होणां बड़ा अनर्थ ।
सिब दी गल्ला दा समझा विच, किछ नीं आया अर्थ ।।
हनूमान दी सुणीं बेनती, उमा पर्वतें आई ।
सिब संभू जो आई तिन्नां, गल्लो गल्ल सुणाई ।।
बोलण लग्गी हे सिब संकर, हे भूतां दे नाथ ।
दानव बंसे दे विच होया, सिब भगत मेघनाथ ।।
भगती कीती वर पाया तिस, युद्ध भूम विच आया ।
बैरी समझी लछमण तिन्नी, अस्तर लई चलाया ।।
अस्तर निसफल नईं गिया हुण, नी होया निसतेज ।
मुकी गिया बल भगती दा हुण, नईं रिया किछ तेज ।।
हनूमान आया पर्वत पर, इसदा बल ऐ घटणा ।
हे सिव भोले दया करो हुण, तां लछमण ने बचणां ।।

दो० होणीं लछमण मौत तों, रावण दी जयकार ।
राम-राम दी फौज जो, मिलणीं पूरी हार ॥

राम गुसाईं हारा कन्नें, सुरगें खाली होणां ।
देव पुरी ने विच्च पतालें, जाई हेठ खड़ोणां ॥
सुरगे उप्पर जय बोली कै, दानव दल जां जाऐ ।
गासें टोटे टुकड़े अंबर, धरती उप्पर छाऐ ॥
धरत पतालें गासें दानव, दल दी मारो-मार ।
जीव जन्तुआं दी सब पासें, मचणी हा-हा कार ॥
दन्त दानवां जन्तु निगली, सब किछ खाई जाणां ।
हे सिव भोले समा वचारा, नीं पिच्छें पछताणां ॥
भस्मासुर दे तिस वरदाने, रक्खा संभू याद ।
महावीर जो जाण दिया हुण, नीं तां कम्म खराब ॥
भस्मासुर दे तिस वरदाने, ने थे व्याकुल होए ।
नईं बचान्दे विसणू आई, तां थे सिब्ब मरोए ॥
बोलन सिब, तूं गौरां मिज्जो, चेता खरा भुलाया ।
देवतियां जो लिया बचाई, दानव बंस मुकाया ॥
अप्पूं ई वर दई असां थे, जान बचाणां दौड़े ।
भस्मासुर दे घेरे अन्दर, होए असां नयौड़े ॥
जे लछमी आपूं नीं नचदी, तां सिव बचदे नाईं ।
सच्चा सिव सुन्दर नीं रैन्दा, तिन्न लोक दा साईं ॥
सिब दी गल्ला सुणीं उमां जो, अणमुक हासा आया ।
बोलण लग्गी, 'हे सिव भोले, अज्ज के कम्म कमाया ॥
मेघनाथ तां दानव पूरा, भस्मासुर अवतार ।
हे सिव संभू अपणीं बरछी झोलिया विच्च सम्हाल ॥
इतणीं गल्ल सुणीं भोले ने, अपणां कम्म कमाया ।
हनूमान जो निर्भय कीता, सप्पां जो समझाया ॥

दो० बरछी आई झोलिया, बिजली दी चमकार ।
पर्वत टिल्ला चमकिया, बरछी तेज अपार ॥

दो० घोर विपत विच देवियां, देन खरे वरदान ।
मार मुकाई दानवां, धरती धुरी बचान ॥

पर्वत फटिया डुड्डीं अन्दर, सारे सप्प समाए ।
हनूमान ऊचे टिल्ले पर, बूटी दिक्खण आए ॥
सोचण लग्गे किछ नीं दसिया, बैदें औन्दी वारी ।
जड़ां डालियां पत्तर इसदे, औणां के-के कारी ॥
महावीर ने सारे टिल्ले, जो हुण जप्फी मारी ।
सणें बूटिया सारा पर्वत, ढक्कों लिया उखाड़ी ॥
बलदा पर्वत हत्थें चुक्की, उडी गए महावीर ।
राम-नाम दी माला हिरदें, बोलन जय रघुवीर ॥
महावीर पर्वत जो चुक्की, उडी अयोध्या आया ।
लोथ् लुआना गासें दिक्खी, भरतें तीर चढ़ाया ॥
हनूमान जो दानव समझी, दित्ता तीर चलाई ।
गासें होई घोर गर्जनां, जय वीर रघुराई ॥
विच्च अयोध्या भरत सुणीं जां, राम-राम आवाज ।
हनूमान बेहोस पिया हण, राम गुसाईं काज ॥
राम नाम दा सब्द सुणी कै, दौड़े भरत सुजान ।
हनूमान जो दई दिलासा, अपणें गलें लगान ॥
बोलण लग्गे असां समझिया, दानव कोई आया ।
विच्च अयोध्या पर्वत सुट्टी, स्हाड़ा करग सफाया ॥
महावीर ने भगत भरत जो, सारी गल्ल सुणाई ।
लछमण जो बरछी लगणें दी, सारी कथा गलाई ॥
बोलण लग्गे बरछी लग्गी, लछमण ऐ बेहोस ।
रातो रात पुजाणीं बूटी, तां औणीं तिस होस ॥
दिन चढ़दे ने न्हेरा होणां, गढ़ लंका विच्च भाई ।
लछमण मरना बिजन बूटिया, बैद न सकै बचाई ॥

दो० राम नाम दा आसरा, राम सहारें जिंद ।
अप्पूं हरिहट फेरदा, भरदा पाणीं टिंड ॥

भरतें देर न लाई मुहएं, कोई सब्द न आया ।
सणें पर्वतें बाणें उप्पर, महावीर विठलाया ॥
भरत गलाऐ दौं घड़ियां विच, गढ़ लंका विच जाई ।
लियां बचाई लछमण वीरे, बूटी दियां पुजाई ॥

डोरी खिज्जी धनुषे दी जां, राम नाम गुण गाया ।
सर्पें पहाड़ें महावीर हुण, गढ़ लंका विच आया ॥
लंका होया लोअ् लुआना, बुटी पुज्जी आई ।
सुखणूं बैदें झट्ट नचोड़ी, लछमण जिन्द बचाई ॥
लछमण हाखीं खोड़ी उट्ठें, होई जय रघुवीर ।
घुट्टी जप्फी पाई रोए, विलखी राम अधीर ॥
बोलण लग्गे इतणीं निन्दर, किय्यां आई भाई ।
सुखणू बैदें खरी बदंग्गी, सबना बड़ी सराई ॥
सुखणूं दी हुण चऊं पासियां, होई जय-जयकार ।
बैदे जो महलां विच छड्डी, हनूमान वलकार ॥
वर अमरता राम ने दित्ता, जय राम करतार ।
लछमण उट्ठे लई कमानां, सेसनाग अवतार ॥
दूएं पासे मेघनाथ नीं, सुत्ता पूरी रात ।
हवन पाठ तिस पूरा कीता, होण लगी परभात ॥
राम गुसाईं दे कैंपे विच, दूतें बोल सुणाया ।
हे नाथ अज्ज मेघनाथ ने, पूरा पाठ कराया ॥
दिन चढ़दे ने तिसदे हवने, पौणी औहुत पूरी ।
मेघनाथ ने कदीं न मरना, रैणीं आस अधूरी ॥
दूते दी गल सुणीं राम ने, कैंपे हलचल होई ।
दूणा बल दानव दा सुणियां, सब्ब गए डफलोई ॥

दो० दूते दी गल सुणदियां, भेजे पवन कुमार ।
हवनें पाणीं सुट्टिया, हनूमान बलकार ॥

दो० काज सुआरे राम दे, महा वीर बजरंग ।
दूणां बल जां दिक्खिया, अप्पूं होए दंग ॥

महावीर ने अग्ग बुझाई, हवनें पाणीं सुटिया ।
पाठी पण्डत रस्सें वन्ही, हवन कुण्ड विच जुटिया ॥
हाखीं खोड़ी दिक्खै दानव, किच्छ नजर नीं आया ।
हनूमान सब कम्म कमाई, अपणें कैंपें आया ॥
मेघनाथ दे लागें जाई, अज्ज सलोचन बोलै ।
'पति देव नीं जाणां युद्धें, अपणें दुखड़े फोलै ॥

महले उप्पर चढ़ी चवारें, बिल्ली अज्ज रड़ाई ।
सुपने माड़े होए रातीं, रती चैन नीं आई ॥
चऊं पासियां रोए कुत्ते, तड़कें फौई भौंकी ।
उल्लू महले उप्पर बोलै, पुट्ठी पाठें चौंकी ॥
इतणीं गल्ल गलाई डुस्की, मेघनाथ दी नार ।
पई मूरछा धरती सुत्ती, होया दुःख अपार ॥
मेघनाथ ने तिसा उठाली, सब किछ था समझाया ।
बोलण लग्गा, 'कल युद्धे विच, लछमण असां हराया ॥
सिब दी बरछी मारी हिक्का, हिल्ली धरती सारी ।
लछमण हुण जीन्दा नीं होणां, अज्ज राम दी बारी ॥
राम लखण जां मरी मुक्कणें, रिच्छ बान्दरां जाणां ।
इक-इक बान्दर रिच्छ राकसां, पकड़ी मुहएं पाणां ॥
राजा इन्दर तों नीं हारे, असां देवते जित्ते ।
बणवासी तां रिच्छ बान्दरां, लई नचाणां सिक्खे ॥
रावण दे बंसे ने लड़ना, नीं एैं खेल तमासा ।
रिच्छ बान्दरां जो दिक्खी कै, लंका छाया हासा ॥
लड़ना खेल तमासा नीं ऐ, नीं एैं नाच कलन्दर ।
रिच्छां जो तां दिऐ नचाई, लोक हसाऐ बन्दर ॥

दो० राम नचाऐ बन्दरां, मारी तिसदी मत्त ।
अजगर रैन्दे बामियां, तेथूं मारै लत्त ॥

घरे तों कड्डे वणां च आए, लंका करन चढ़ाई ।
अकल खोपरें रती भरें नीं, मुक्की ठोकर खाई ॥
अवसगुणां जो सोधन पण्डत, दिलें भलेखे लान ।
चन्द सूरजे ढेरे दस्सी, अणमुक जतन करान ॥
भूत भरम दे बणदे राणीं, माह्णूं देन मुकाई ।
बैऽमें दा तां लाज न होऐ, काट न करै दुआई ॥
भरमे दे भूते मत दिक्खैं, राणीं अकल बचार ।
मत्थें मेरें टिक्का ला हुण, हत्थें दे हथियार ॥
युद्ध भूम तां वीर बछौणां, स्हाड़ा खेल मदान ।
अवसगुणां तो वीर न रुकदे, चढ़ियो तीर कमान ॥

जिय्यां ऊचे पर्वत झक्खड़, अग्गें कदीं न झुकदे ।
तिय्यां तीरां दी बरखा विच, वीर कदी नीं रुकदे ।।
ऊचे रुक्ख कदी न लफदे, चीर चरोई जाऽन ।
बिजन मुंड्डियां वीरां दे धड़, लड़दे अग्गें जान ।।
लोआ करड़ा होऐ जालूं, चढ़दी अग्गी आव ।
वीर बहादर दे पिड्डे पर, कई सैंकड़े घाव ।।
इतणीं गल्ल गलाई दानव, कस्से तरकस तीर ।
अस्तर सस्तर लई कमानां, उठी खड़ोता वीर ।।
बेबस होई अज्ज सलोचन, मत्थें तिलक चढ़ाया ।
मेघनाथ महलां तों निकली, युद्ध मदाने आया ।।
दिन चढ़दे ने गढ़ लंका विच, युद्धे दा घमसाण ।
लछमण ने जय राम गलाई, छड्डें पैंने बाण ।।
न्हेरा होया धरती उप्पर, सूरज रसमां ढकियां ।
गासे पर गरणत्त सणोऐ, अस्तर घुम्मन चकियां ।।

दो० अस्तर तोड़न तारियां, गई सूरजें लोअ ।
धरती बल्दी भांबड़ा, जिय्यां अग्ग घियोअ ।।

दो० लंका धरती डोलदी, देवासुर संग्राम ।
बल दानव जय रावणें, भालू जय जय राम ।।

कदीं अंबरें अग्ग बलै तां, युद्ध मदाने छहोऐ ।
भांबड़ पूला बल्दा कोई, सागर व्विच खड़ोऐ ।।
तीरां दे धक्के ने धरती, डग-मग सारी डोलै ।
इय्यां लग्गै जिय्यां कोई, घाटे बाधे तोलै ।।
धूं-धुआंखड़ चऊं पासियां, न्हेर गुबारा छाया ।
जिय्यां सारा काल़ा बद्दल़ धरती उप्पर आया ।।
इक पासें लछमण ललकारै, अंबरें मेघनाथ ।
रिच्छ बान्दरां दन्तां छड्डी, जीणे दी अज आस ।।
हनूमान दे गुर्ज धमाके, धरती हिल्लै सारी ।
बड़े-बड़े भट दानव योधा, लड़दे इक्को वारी ।।
बान्दर कदीं पहाड़े चुक्की, गड़-गड़ करदा सुट्टै ।
रिच्छ दानवां दे घोलां ने, धरती टुकड़े टुट्टै ।।

अद्दे दानव रिच्छां फाड़े, रिच्छ दानवां मारे ।
मेघनाथ लछमण पर टुट्टा, अपणें लई दुधारे ॥
लछमण पैना तीर चलाया, दानव भुजा कटोई ।
पई सलोचन अग्गे महलां, दिक्खन सब्ब खड़ोई ॥
बांह बढोई मेघनाथ दी, महलां न्हेरा छाया ।
बाऽईं दिक्खण रणवासे दा, बच्चा-बच्चा आया ॥
किछ घड़ियां दे बाद सलोचन, हथ लिया पछाणीं ।
इय्यां बिलखी जिय्यां जलकी, धरती पर विन पाणीं ॥
वाऽईं जो हुण लई गोदिया, अणमुक करै वलाप ।
कुण इतणां बलकारी योधा, जिन्नीं कीता घात ॥
किय्यां कतरी कुन्नीं तीरें, कुस लोए दा बणियां ।
कुनीं चलाया तीर तेज था, किय्या चिल्ला तणियां ॥

दो० **महलां रौला शोर था, लंका सुन्न मसाण ।**
बगदा लउ परनालियां, युद्धे बिच घमसाण ॥

मेघनाथ इक बाऽईं कन्नें, अणमुक करै लड़ाई ।
तरकस चा तीरां कड्डी कै, धनुषें दिऐ चढ़ाई ॥
दन्दां ने धनुषे दी डोरी, खिज्जै तीर चलाऐ ।
मेघनाथ लंका दा योधा, रती नईं घबराऐ ॥
चऊं पासियां मेघनाथ ने, पाई मारो मार ।
पच्छम पासें सूरज तिसजो, दिक्खी होया लाल ॥
हनूमान लछमण दे पासें, दिक्खी करी अधीर ।
बोलण लग्गे के दिक्खा दे, पैना मारा तीर ॥
मत छड्डा इस अदमरियो जो, दानव ऐ बलकार ।
मायावी पूरा ऐ माया, दे हत्थें हथियार ॥
गासे तो वी पौण लगे हुण, धरती तत्तें गार ।
हे लछमण मत देर करैं हुण, दानव जो संहार ॥
नीं मरिया जां दानव तां अज, धरती अचरज होणां ।
चढ़ी अकासें जाणां इन्नीं, भिरी पतालें छह्णां ॥
इतणीं गल्ल सुणीं कै लछमण, अस्तर धनुष चढ़ाया ।
मेघनाथ दा धड़ धरती पर, सिर गासें गरनाया ॥

गासे उप्पर उडी गिया सिर, पिया सलोचन गोद ।
महलां होया न्हेर गुबारा, गढ़ लंका विच सोग ॥
अज्ज सलोचन रोई बोलै, 'मेघनाथ हन मारे ।
कुण एडा बलकारी योधा, जिन्नीं सीस उतारे ॥
कुण सतवन्ती नार कुथू दा, जती-सती ऐ वीर ।
सुरगें जाई इन्दर जित्तै, कुनीं मारिया तीर ॥
जत-सत इतणं किय्यां आया, धरती पर अवतारी ।
देव सुरग दा दिक्खी कंब्बै, मेघनाथ बलकारी ॥

दो० टपला लग्गा काल जो, होया धरती न्हेर ।
अज्ज सलोचन विलखदी, दिक्खी चिक्कू ढेर ॥

दो० मेघनाथ बलकार इक, सती सलोचन नार ।
पापें छिट्टू रावणें, लग्गे होई हार ॥

गई सलोचन वणीं सुदाई, हार गले दे तोड़ै ।
मोती हीरे लाल जबाहर, धरती उप्पर फोड़ै ॥
वालां दी लट आई धरती, उठी सलोचन नार ।
युद्ध मदाने दिक्खण चल्ली, के लीला करतार ॥
राम गुसाईं आल खड़ोती, मुहएं मत्थे ढक्की ।
खड़-खड़ करदी विजन दाणियां, जिय्यां खाली चक्की ॥
गल्ल कोई न जीव्हा आई, पई पछाड़ां खाई ।
गोदा दा सिर धरती डुल्ला, इक-टक गल्ल गलाई ॥
सीस गलाऐ, 'मैं नीं मरिया, अमर सदा मैं वीर ।
युद्ध मदाने मिज्जो लग्गा, लछमण तत्ता तीर ॥'
इतणीं गल्ल गलाई दानव, खिड़-खिड़ करदा हसिया ।
गासें तारे चम-चम चमके, बद्दल डरदा न्हसिया ॥
तिस दे हासें होई धरती, डूगी घोर उआज ।
इय्यां लग्गै जिय्यां चिड़ियां, उप्पर आया बाज ॥
मेघनाथ दे हासे कन्नें, धूं-धुआंखड़ छाया ।
युद्ध मदाने अन्दर सारी, इक-दम पलटी काया ।
कई करोड़ां मेघनाथ हुण, गासे उप्पर आए ।
मरिया दानव माया खेलै, अग्गी गार सुटाए ॥

गासे उप्पर अग्ग बलै तां, हेठें धरती डोलै ।
राम गुसाईं आल खड़ोई, अज्ज बभीषण बोलै ॥
'राम ! राम ! रावण दा पुत्तर, मेघनाथ बलकार ।
मरिया वी दिक्खी नीं सकिया, रोन्दी अपणीं नार ॥
गासें होई घोर गरजनां, बिजली दा चमकारा ।
धूं-धुआंखड़ इसदे हासें, होया न्हेर गुबारा ॥'

दो० चन्द सूरजें लो घटै, तारे वी भरमान ।
मेघनाथ तो कंबदे, देव गुफां जो जान ॥

कई करोड़ां मेघनाथ हुण, गासे उप्पर दुस्सन ।
गासे दे तोड़ी कै तारे, धरती उप्पर सुट्टन ॥
मरिया दानव माया दस्सै, मेघनाथ बलवान ।
इस दे मगजे अमृत कूंड्डू, देवां दा वरदान ॥
जे हसणां सिर बन्द न होया, तां राम एह होणीं ।
धड़ें सिरे दे कन्ने जुड़ना, जिन्द सरीरे छह्ोणीं ॥
मेघनाथ ने जीन्दें होणां, अमृत कुड्डू पीअ् ।
देवतियां दा धरत अंबरें, मुसकल बचणां बीअ् ।
जे हुण दानव जीन्दा होया, तां इन्नीं नीं मरनां ।
नईं पाणिए डुब्बै दानव. अग्गी विच नीं बलनां ॥
अजर-अमर तां दानव होणां, इसजो तां वरदान ।
हासे इसदे दिया मुकाई, कस्सा तीर कमाण ॥
जे तां राछस जीन्दा होया, धरती परलै होणीं ।
विच्च पतालें अग्ग निक्कली, धरती उप्पर छह्ोणीं ॥
इस हासे दी चमक धरतियां, अग्गी होणां तेज ।
रिच्छ बान्दरां सौणां सबनां, युद्ध मदाने सेज ॥
सिर इसदा हुण लई सलोचन, युद्धभूम विच आई ।
होर कोई न जाणैं गल्ला, राम-राम रघुराई ॥
धड़ें सिरे ने आई जुड़ना, तां बखरा नीं होणां ।
अस्तर-सस्तर इसदे पिड्डें, कदीं काल नीं छहोणां ॥
दानव तां बलकारी योधा, मेघनाथ बलवान ।
अमृत कुंड्ड इसदे मगजें, भसम करा भगवान ॥

घड़ी भरे दी देरा कन्नें, इन्नीं जीन्दें होणां ।
सती सलोचन दा सत जाई, उप्पर गासें छह्‌णां ॥

दो० **मरिया माया खेलदा मेघनाथ बलवान ।**
गारे सुट्टै धरतिया, भल-भल बलदे जान ॥

दो० **पक्के गढ़ वी टुट्टदे, दस्सै कोई भेत ।**
भेती जेत्थूं बस्सदे, करै गुलामी देस ॥

अपणां भेत गलाऐ ताईं, दूआ मारै चोट ।
विजन भेतिएं कदीं न टुटदे, गढ़ लंका दे कोट ॥
नी समल्होऐ गल कुसी तों, दानव भारी तेज ।
गल्ल बिगड़ियो सूत न औऐ, देर करा मत देव ॥
सुणी बभीषण दी गल्ला जो, बाण राम बरसाया ।
मेघनाथ दे मगजे दा हुण, अमृत कुण्ड सुकाया ॥
अमृत कुंड्डू दे सुकणें ने, सिरें मूरछा आई ।
सती सलोचन ने सिर चुक्की, लिया छातिया लाई ॥
सती सलोचन रोई बोलै, 'मेघनाथ हन मारे ।
जती वीर सैह् कुण सूरमा, जिन्नी सीस उतारे ॥'
इतणीं गल्ल सुणीं जां लछमण, नजरीं न्हीठी आया ।
बोलण लग्गा, 'सती सलोचन, मैं ऐ कम्म कमाया ॥'
लछमण धरती पासें दिक्खै, रई सलोचन दंग ।
बोलण लग्गी, 'महा जती तू, ताईं जितिया जंग ॥
तेरे जत जो दिक्खी मेरा, सत होया कुरबान ।
हे लछमण धड़ पति दा लैणां, आई युद्ध मदान ॥
दईं दे धड़ हुण पति देव दा, मैं अग्गी पर सौणां ।
चिता बणाई ऊची महलां, अग्गी छैल बछौणां ॥
इतणीं गल्ल सुणीं लछमण ने, चुक्की वीर पुजाया ।
रोण सलोचन युद्ध भूम विच, नीर चढ़ी कै आया ॥
गढ़ लंका विच चिता चणोई, सती सलोचन होई ।
सोक बाटिका विच्च सुणीं गल, सीता अणमुक रोई ॥
रावण दे करमां दा छिट्टू, मेघनाथ पर आया ।
सती सलोचन दा सत घटिया, सब ठौकर दी माया ॥

दो० मेघनाथ था सूरमा, सती सलोचन नार ।
सुरगे जित्तै अम्बरें, घटै तेज तां हार ।।

गढ़ लंका दा वीर बहादर, इन्द्रजीत बलवान ।
युद्ध भूम विच जाई सुत्ता, देव गती भगवान ।।
जप तप सत सब पूरे होए, पुन पंघूड़ा टुट्टा ।
सती सलोचन दी गोदा विच, मेघनाथ अज सुत्ता ।।
रावण दे पापे दी लपटां, जप तप गिया फकोई ।
सत्त चिता पर ऊचा चढ़िया, दिक्खन सब्ब खड़ोई ।।
गढ़ लंका दा सत्त अंबरें, गासें जाई छह्‌या ।
मेघनाथ दे मरने पर हुण, रावण था डफलोया ।।
चार चफेरे चऊं पासियां, रावण फेरी फिरिया ।
मत्था टेकी मेघनाथ जो, भिरी कुथीं जो घिरिया ।।
पटराणी हुण विलखी रोऐ, गढ़ लंका विच सोग ।
रावण दे सिर माया चक्कर, डूगा लग्गा रोग ।।
पटराणी रावण जो बोलै, 'छड्डा युद्ध मदान ।
नाथ ! नाथ किछ बुद्ध वचारा राम ! राम भगवान ।।'
रावण बोलै 'पटराणीं तूं', 'हुण के गल्ल गलाई ।
मेंरे अग्गें देव देवते, दी नीं रती समाई ।।
पुत्तर भाई मरुआई कै, मैं हुण चुप नी बौणां ।
चार दिनां दा राम-राम जो, तू हुण समझ परौणा ।।
अहिरावण-महिरावण पुत्तर, विच्च पतालें मेरे ।
राम लखण दी फौजा उप्पर, पान लड़ाई घेरे ।।
मायावी दानव हन पूरे योधे हन बलवान ।
दौं घड़ियां विच खून खरावे, दा सब मजा चखान ।।
दिन चढ़दे ने राम लखण पर, पूरी परलै होणीं ।
दऊं साधुआं नईं सुज्झणां, सीता कैदा रोणीं ।।

दो० चल्लै कोई पेस नीं, करमां होऐ फेर ।
पुट्ठा चक्कर चलदियां, घड़ी न लग्गै देर ।।
बुरे माह्‌णुआं असर नीं, लक्ख करा उपदेस ।
माला फेरी चोर नीं, कदीं बणैं दरबेस ।।

बुद्ध रावणें खुन्नी होई, तिसजो असर न होऐ।
मन्दोदरी वेई कनारें, अन्दरो अन्दर घटोऐ ॥
चोरे दी मां गुग्गल़घुटुआं, अन्दर जाई रोन्दी।
बाह्रें चिट्ट चरेल़ली सुज्झै, अन्दरो अन्दर झसोन्दी ॥
दसकंधर हुण महलां अन्दर, दो घड़ियां ससतोया।
पटराणी दी इस गल्ला दा, तिस पर असर न होया ॥
विच्च पतालें दसकंधर हुण, दिन डुबदे ने आया।
अहिरावण-महिरावण अग्गें, आई हाल सुणाया ॥
बोलै रावण गढ़ लंका विच, युद्धे दा घमसाण।
मेघनाथ धरती पर सुत्ता, कुम्भकरण कुरबान ॥
फौज बणाई रिच्छ बांदरां, दो बणवासी आए।
गढ़ लंका दे सारे योधे, मेरे भिरी मुकाए ॥
रिच्छ बांदरां गढ़ लंका पर, कीती बड़ी चढ़ाई।
दियां दुहाई विच्च पतालें, लंका लिया बचाई ॥
अक्षय घर दूषण सब्ब मारे, दानव भट संहारें।
गढ़ लंका विच चऊं पासियां, लउए दे परनाल़ें ॥
दसकंधर ने गल्ल गलाई, रौल़ा पिया पताल़।
अहिरावण जोरे ने बोलै, नीं दसिया ततकाल ॥
महिरावण हुण उठी खड़ोता, गर्जै जोरें वीर।
दसकंधर दी गल्ल बिन्हदी, गई कल़जे चीर ॥
बोलै दानव देर करा मत, उठी खड़ोआ तात।
देवी भुक्खी कई दिनां दी, देणीं बल़ परभात ॥
दऊं साधुआं चुक्की आणां, गढ़ लंका विच जाई।
विच्च पतालें लई जलादां, मुंड्डी दियां उडाई ॥

दो० राम लखण पर सुट्टणां, जादू भरिया जाल़।
गल्ल गलाई दानवें, होया लालो लाल ॥

कुं० आंड गुआंडे मारदा, पापी रिस्तेदार।
छिट्टू लग्गै पाप दा, जितणा जिसजो प्यार ॥
जितणां जिसजो प्यार, पापिआं नाता खोटा।
हर दम खाऐ मार, बुरा अकली दा मोटा ॥
बोलै कवि संसार, बुरे पापे दे भांडे।
फुट्टन पौऐ भार, लबेड़न आंड गुआंडे ॥

महाकाव्य-माया

चतुर्दश सर्ग

कुं० महिरावण बलुआन इक, राछस बिच्च पताल ।
धरै बभीषण रूप तां, धोखा खाऐ काल ।।
धोखा खाऐ काल, तिदा अहिरावण भाई ।।
डरदा कोई देव, पतालैं करै चढ़ाई ।।
बोलै कवि 'संसार', बड़ा योधा अहिरावण ।
जाणैं माया जाल' उडै गासैं महिरावण ।।

दो० पापी दा मन डोलदा, पापैं होऐ हार ।
पापी आई डोबदा, बेड़ियां मंझधार ।।

महिरावण हुण गल्ल गलाई, गढ़ लंका विच आया ।
रावण ने था युद्ध भूम दा, दाऽ पंज्जा समझांया ।।
महिरावण ने रूप बटाया, निरा बभीषण लग्गै ।
राम गुसाईं दे कैंपे विच, महावीर जो ठग्गै ।।
महावीर ने दई भलेरां, अपणीं पूछा अन्दर ।
राम लखण थे विच्च सुआयो, पूछा दा था मन्दर ।।
महिरावण हुण चऊं पासियां, फिरिया कैंपें आया ।
महावीर दे अग्गें आई, अपणां बोल सुणाया ।।
बोलै दानव, 'महावीर मैं, राम ने गल सुणाणीं ।
रावण ने कल युद्ध रचाणां, सारी गल्ल जताणीं ।।'
हनुमान दी नांह नुक्कर पर, दानव सिरे हिलाऐ ।
करै बभीषण साईं नखरे, मुहएं राम गलाऐ ।।
दानव माया नईं पछाणीं, महावीर बलवान ।
माया फेरै अकल सिरे दी, के करदे विदुआन ।।

महावीर ने आज्ञा दित्ती, दानव अन्दर आया।
पूछा अन्दर लोअ् लुआना, इक-दम पलटी काया ॥
डूगा छींडा पूछा अन्दर, धुर-धरती विच होया।
राम लखण जो चुक्की दानव, विच्च पतालें छह्‌ोया ॥
रिच्छ बांदरां निन्दर आई, छाया जादू जाल् ।
हनूमान वी घुड़कण लग्गा, सई गिया ततकाल ॥
किछ देरा दे बाद बभीषण, हनूमान कछ आई।
बोलण लग्गा, 'खबरदार ! हुण, रैंऽणां मेरे भाई ॥'
वीर बभीषण बोलै जोरें, 'महिरावण अज आया।
दानव खेलै माया अणमुक, मेरा भेस बणाया ॥'

दो० महावीर जो खड़कदी, डूगी इक्क उआज ।
चानण होया धरतिया, जिय्यां चिट्ट भियाग ॥

अंबर तारे डुब्बे सारे, सूरज गासें आए ।
महावीर माया जो दिक्खी, अपणें मन घबराए ॥
वीर बभीषण पासें दिक्खी, हनूमान पछताए।
पुच्छण लग्गे सच दस्सा हुण, तुसां कुथूं तें आए ॥
पूछा दे घेरे तों निकली, राम-राम रघुराई ।
कुस पासे तों चली खड़ोते, मेरे अग्गें भाई ॥
वीर बभीषण गल्ल सुणीं तां, होया बड़ा हरान।
बोलण लग्गा, 'महावीर अज, ठौकर झूठ करान ॥'
महावीर ने गल्ल सुणीं तां, खोले पूछ भलेर।
सावधान होई कै बोलै, रती न कीती देर ॥
महावीर विलखी कै बोलै, महिरावण दी चाल ।
राम लखण जो दई भलेखा, पुज्जा दन्त पताल् ॥
वीर बभीषण चढ़ी उदासी, अपणां बचन सुणाया।
अहिरावण-महिरावण दा था, सारा भेत गलाया ॥
महावीर मत देर करैं हुण, विच्च पतालें जाअ्।
राम लखण जो दन्त दानवां, तों जाई छुड़काअ् ॥
बची-बची कै जायां ओथूं, दानव सब बलुआन।
अहिरावण-महिरावण योधे, माया जाल् बछान ॥

दऊं दानवां इक्क वरी थी, जंगल अग्ग वुझाई।
मधू-मक्खियां दे परवारे, जो था लिया बचाई॥
मधू-मक्खियां दे राजे ने, दित्ता बचन अमोल।
जालूं औऐ घोर मुसीबत, अपणां कडियां बोल॥
मधूराज बोलै अहिरावण, तूं तां वंस बचाया।
संकट वेलें तेरे उप्पर, करनी पूरी छाया॥

दो० मधू मक्खियां उडी कै, अमृत कण्ड लियोन।
अहिरावण महिरावणें, छिड़कन जीन्दे होन॥
ताकत पाई सोचदा, माह्णूं मैं भगवान।
गासे लत्तां मारदा, नीं सुज्झन समसाण॥

मधूराज बोलै धरती पर, लख महिरावण बणने।
अहिरावण-महिरावण जीन्दे, कदी काल नीं मरने॥
मधूराज ने बचन दई कै, अपणी गल्ल गलाई।
अहिरावण-महिरावण जो मैं, मरियां दियां जियाई॥
इतणीं गल्ल गलाई सुरगें, उडी गिया मधुराज।
रावण दे पुत्तर हुण करदे, विच्च पतालें राज॥
तिन्हां भौरिया ने तिज्जो तां, युद्ध रचाणां पौणां।
गल्ल सुखाली नीं ऐ कोई, कंड्डे सेज बछौणां॥
अहिरावण दी विच्च परौली, रात दिनें दरबान।
पहरा दिन्दे चऊं पासियां, राछस हन बलुआन॥
अन्दर जाणां नईं सुखाला, अग्गें पिच्छें काल।
महिरावण दे गुप्तचरां दा, विच्च पतालें जाल॥
महिरावण मायाबी पूरा, अहिराबण बलुआन।
सारी गल्लां लिया बचारी, महावीर हनुमान॥
वीर बभीषण दी गल मन्नी, विच्च पतालें आया।
महावीर दे उप्पर टुट्टे, दानव घेरा पाया॥
अद्दे मारे किछ भरनोए, इकनीं बस्स कराई।
महावीर दी पेस रई नीं, दित्ती राम दुहाई॥
वोलै अपणें हिरदे अन्दर, 'दानव तां बलकार।
किय्यां जाणां अन्दर मैं हुण, हे मेरे करतार॥'

मकरध्वज मछिया दा पुत्तर, बोलै वीर मछन्दर।
कुनी भेजिया विच्च पतालें, आया मरना बन्दर॥
महावीर जो इस गल्ला पर, अणमुक गुस्सा आया।
दौं हत्थां ने चुक्की दानव, धरती पर पटकाया॥

दो० वीर मछन्दर चुक्किया, सुटिया उप्पर गास।
विच्च पतालें चानणां, बिजली चमक अकास॥

धरती आया मकरध्वज हुण, इक-दम पलटी काया।
विच्च मूरछा वीर मछन्दर, अपणां सब्द सुणाया॥
बोलण लग्गा 'महावीर सुत, मच्छी मेरी माई।
पवन देव दा पोता मैं तां, हे सिव! दियां दुहाई॥
ठाकर दी माया जो ठाकर, अप्पूं नईं पछाणैं।
अप्पूं भुल्लै माया दें विच, सिव ब्रह्मा नीं जाणैं॥
हनूमान ने गल्ल सुणीं तां, अणमुक अचरज होया।
कद्दूं जम्मिया मेरा पुत्तर किय्यां बड्डा होया॥
इतणीं गल्ल सुणीं कै मच्छी, परगट तेथूं होई।
मच्छी दा परछौआं बोलै, 'मेरी जिन्द घटोई॥
उडदा-उडदा महावीर था, सागर उप्पर आया।
मत्थें तिसदें पिया पसीना, अंग-अंग ढल आया॥
लम्मी इक्क तरूडी लग्गी, सागर धार समाई।
मेरे मुहएं किच्छ बून्दां ने, आई खल़-बल़ पाई॥
किछ घड़ियां विच पेटे अन्दर, पुत्तर इक्क सरोया।
किछ दिनां विच्च बड्डा होई, गबरू छैल़ बडोया॥
विच्च पताल़ें डुबकी मारी, मैं डूगी चली आई।
महिरावण दे महलां अन्दर, मछुएं छुरी लगाई॥
मेरे पेटें वीर मछन्दर, पुत्तर था बलुआन।
मकरध्वज दूआ नांऽ इसदा, जय वीर हनूमान॥
महिरावण दी विच्च परौल़ी, पहरेदार कहाऐ।
हनूमान दा पुत्तर लग्गै, सच्ची गल्ल गलाऐ॥'
इतणीं गल्ल गलाई मच्छी, धरती विच्च समाई।
हनूमान तुरबुर हुण दिक्खै, गल्ल समझ नीं आई॥

दो० ठौकर माया जाणदा, जा कोई विदुआन ।
विच्च पतालें चरज था, जय वीर हनूमान ॥
वीर मछन्दर हारिया, होई जद्दूं पछाण ।
गासें बाणीं गूंजदी, जय वीर हनूमान ॥

वीर मछन्दर घुट्टी बनियां, लम्मी रस्सी पाई ।
हनूमान जो मकरध्वज ने, सारी गल्ल सुणाई ॥
अन्दर जाणें दी गल सारी, तिन्नी थी समझाई ।
महावीर ने बिलकुल हलकी, निक्की देह बणाई ॥
बड्डे तड़कें बड़ें सवेरें, मालण महलां औऐ ।
महावीर हुण भरै उडारी, फुल्लां दे विच बौऐ ॥
हनूमान जो चुक्की मालण, सणें टोकरें आणीं ।
फुल्लां दे विच महावीर था, मालण गल नीं जाणीं ॥
दानव फुल्लां लई टोकरा, देवी अग्गें आए ।
बुक्कां-बुक्कां फुल्ल सारियां, देवी सिरें चढ़ाए ॥
हनूमान फुल्लां विच भौरा, मन्दर अन्दर आया ।
अन्दर जाई खूब गरजिया, अपणां देह वधाया ॥
महावीर जोरे ने बोलें, 'अज मैं परगट होई ।
भुक्खी मैं तां कई दिनां दी, फाकें मैं संगोई ॥'
पवन सुते दे ललकारे ने, राम भरोसा आया ।
महावीर हुण करन कौतके, विच्च पतालें आया ॥
हनूमान दी गरज सुणीं कै, मन्दर हिलिया सारा ।
जालूं तिन्नीं मुंह बाकिया, लग्गै सौ सठ खारा ॥
महावीर दे मुहएं दिक्खी, दानव दौड़े सारे ।
अहिरावण महिरावण आए, अपणें लई दुधारे ॥
दिक्खी वक्ते हनूमान ने, अपणी गल्ल सुणाई ।
बिच्च पतालें भुक्खी-भाणीं, मैं लउएं तरिहाई ॥
अणमुक फाके डंगे झल्ले, अन-जल नी मैं कीता ।
दुद्द घियो डोऽला मुहएं विच, मैं पीता के पीता ॥

दो० अहिरावण दी कैद विच, तिन लोकी दे नाथ ।
करैं पतालें कौतकां, राम-राम रघुनाथ ॥

मन्दर दे विच हनूमान हुण, देवी भेसें आया।
महावीर ने विच्च पतालें, अपणां खेल रचाया।
हनूमान जो देवी समझी, सारे दानव आए।
मन्दर आई मत्थे टेकन, फल़ पकुआन चढ़ाए॥
हनूमान ने देवी रूपें, अपणां सब्द सुणाया।
अहिरावण महिरावण जो हुण, अगला कम्म गलाया॥
देवी बोलै, 'राम लखण जो, अग्गें दिया खडेरी।
मेरे मुहएं पक्के मिट्ठे, सब फल़ सुट्टा चेड़ी॥
अहिरावण ने गल्ल सुणीं तां, अपणां हुकम सुणाया।
दुद्द घियो सारा नगरी दा, मन्दर विच्च मंगाया॥
फल़ बागां दे तोड़ी अन्दे, अणमुक मारे ढेर।
दौड़े दानव चऊं पासियां, रती न कीती देर॥
पवन सुते जो देवी समझी, महिरावण बलवान।
दुद्द घियो मुहएं विच पाया, जय वीर हनूमान॥
विच्च पताल़ें कौतक कीता, फल़ां फरूटां खाई।
दुद्द घियो गट-गट पीयै हुण महावीर रघुराई॥
रज्जी-पुज्जी महावीर ने, अपणां देह वधाया।
फटी गिया देवी दा मन्दर, गड़-गड़ धरती आया॥
पवन सुते दे पिंड्डे दिक्खी, दानव थे हैरान।
ऊप्पर गासें ऊचा अणमुक, जय वीर हनूमान॥
महावीर गरजी कै बोलै, 'देवी परगट होई।
मेरी सारी गल्ल सुणां हुण, मेरे आल खड़ोई॥
राम लखण जो झट्ट लियोआ, सौंगल़ बेड़ी खोला।
मेरे अग्गें दिया खड़ेरी, जय देवी दी बोला॥

दो० लैंगीं बल़नीं बज्जियो, गल्लां करा बचार।
दिया उतारी सस्तरां, देवी दा दरबार॥

दो० महावीर विच दानवां, कौतक करै पताल़।
करै भरोसा राम पर, कट्टै माया जाल़॥

अस्तर सस्तर युद्ध मदाने, मन्दर चढ़दे फुल्ल।
सस्तर मन्दर दे विच जाऐ, तां माहणूं दी भुल्ल॥

राम लखण जो मेरे अग्गें, झट-पट दिया खड़ेरी।
हुकमें मेरे सारे मन्ना, कजो करा दे देरी ॥
हनूमान जो देवी समझी, दानव कम्म कमान।
जिय्यां-जिय्यां गल्ल गलोऐ, तिय्यां करदे जान ॥
राम लखण दे सौंगल खोड़ी, कीता झट्ट अजाद।
हनूमान दा हुकम मनोया, मुड़ी गए जल्लाद ॥
इतणां कम्म कमाई योधा, हनूमान बलवीर।
जोरें ललकारी कै बोलै, जय-जय-जय रघुवीर ॥
तीर कमानां राम लखण जो, दितियां हुण सम्हाली।
अप्पूं हत्थे गुरज लई कै, मारी इक ललकारी ॥
तिस किलका ने बिच्च पतालें, लस-लस बिजली चमकी।
अज्ज पतालें हिल्लण झूटे, धरती दी धुर धमकी ॥
महावीर बलकारी योधा, अणमुक दानव मारे।
अहिरावण-महिरावण दौड़े, अपणे लई दुधारे ॥
खांडे भाले बरछे तीरां, गुरजां असर न होऐ।
महावीर दे पिंडें कोई, अस्तर नईं खड़ोऐ ॥
इक पासें तां राम लखण थे, दूएं पवन कुमार।
अहिरावण महिरावण गब्हें, राछस लोक अपार ॥
घमासाण युद्ध घोर लड़ाई, लोथां ढेर लगाए।
महाबीर ने विच्च पतालें, लउएं नाल व ाए ॥
दानव घेरे अन्दर आए, होई हा-हा कार।
हनूमान ने विच्च पतालें, पाई मारो-मार ॥

दो० **खूनी नदियां बगदियां, देवी दें दरबार।**
अहिरावण था अंबरें, मऊराज दे आल ॥

वोलण लग्गा बिच्च पतालें, सांजो आफ़त आई।
लउए दे हन नाल भरोए, मारो-मार दुहाई ॥
दानव लोथां विच्च पतालें, अणमुक लग्गे ढेर।
अमृत कुंड्डू सुंज्जी आणां, कजो करा दे देर ॥
देवी दे रूपे विच आया, बान्दर इक बलकार।
दई भलेखा सांजो दित्ती, तिन्नीं तगड़ी मार ॥

मधूराज ने गल्ल सुणीं तां, भौरे सब्ब सदाए।
अमृत आणां गासें जाई, अपणें सब्द सुणाए॥
भण-भण करदी कई खरोणी, मधूराज दी फौज।
उडी गई गासे दे उप्पर, अमृतकुंड्डू हौज॥
अमृत सारा सुंज्जी अन्दा, न्हेरा गासें छाया।
हनूमान गुरजे जो चुक्की, उडदा गासें आया॥
गासे उप्पर मधु मक्खियां, दे झुंड्ड हुण मारे।
मधुराज दे अग्गें जाई, भौरे सब्ब पुकारे॥
मधुमक्खियां दा राजा हुण, गासे उप्पर आया।
हनुमान ने गुरज चलाई, मधूराज पटकाया॥
मधूराज दे मरने कन्नें, महावीर हनूमान।
गासे उप्पर घुम्मन भौरे, धरती पर नीं जान॥
घुम्मी-घम्मी भिरी घड़ी पर, लम्मी भरी उडारी।
अमृत सारा गासें जाई, मखियां लिया उतारी॥
मधूराज दी लोथा दिक्खी, अहिरावण घबराया।
महावीर ने विच्च पतालें, आई युद्ध रचाया॥
मधूराज दे मरने कन्नें, दानव टुट्टी आस।
मधु मक्खियां दे दल हारे, निर्मल होया गास॥

दो० अहिरावण महिरावणें, सणें दन्त बलवान।
राम लखण दी मार ने, होए लहू लुहान।

दो० अस्तर सस्तर वरतदा, अहिरावण बलुआन।
महिरावण रघुवीर ने, युद्ध करुं घमासान॥

राम गुसाई धनुषे उप्पर, अस्तर भिरी चढ़ाए।
अहिरावण महिरावण मारे, धरती देह बछाए॥
दऊं दानवां दे मरने पर, हा-हा कार दुहाई।
हनूमान ने मारी कुट्टी, सारी फौज नठाई॥
विच्च पतालें कीता कौतक, हनूमान बलकार।
वीर मछन्दर मकरध्वज ने, कीती जय-जयकार॥
विच्च पतालें नगरीं अन्दर, कीता इक दरबार।
राम गुसाईं मकरध्वज दे, गले च पाया हार॥

हुण आई कै मकरध्वज जो, तिलक राम ने लाया ।
राम लखण जो मूंडे चुक्की, हनूमान हुण आया ।।
वीर खड़ोता गढ़ लंका विच, महावीर बलवीर ।
रातो रात पताल् जित्ती, हनूमान रणधीर ।।
महावीर जो दिक्खी लंका, जिन्द बभीषण आई ।
बान्दर सेना जोरें बोलै, जय-जय-जय रघुराई ।।
दूएं पासें रावण सोचै, भारी अचरज होया ।
सिरे हत्थ दसकंधर पटकी, धाड़ो-धाड़ पटोया ।।
'अहिरावण महिरावण पुत्तर, मेरे थम्म जुआन ।
विच्च पतालें गढ़ लंका विच, सारे सुन्न मसाण ।।'
रावण उट्ठी गासें दिक्खै, चौं घड़ियां दा तड़का ।
गढ़ लका पर धूड़ धुड़ैता, काला बद्दल् फड़का ।।
इल्ल पक्खरू चऊं पासियां, कुत्ते अज्ज रड़ान ।
उल्लू अपणीं भासा बोलन, गल्लो गल समझान ।।
काल् कोआं ढक्की लंका, विलियां रौला पाया ।
फौई फैऽकै अक्खें वक्खें, दानव दल घबराया ।।

दो० गढ़ लंका दी धरतिया, यम राजे दे दूत ।
रावण दे सिर पौन्दिया, चऊं पासियां भूत ।।

फौई फैऽकै अक्खें-वक्खें, दानव दल घबराया ।।
सब्ब पखेरू डंगर बच्छू, जीव जन्त कुरलाए ।
रावण अग्गें पटराणी ने, अपणें बोल सुणाए ।।

रोऐ रावण दी पटराणी । डुस्कै डोऽलै हाखीं पाणीं ।।
बोलै, 'हे पति देव पियारे । साड़े दिन हुण आए माड़े ।।
छडी दिया जिद्दा जो हुण वी । पता नई सीता तां कुण ही ।।
राजे जनके दे घर आई । खेती-पत्ती सब्ब सुकाई ।।
दसरथ मरिया राम वजोगें । जुदिया पूरी खिल्ली पाई ।।
राम लखण बणवासी होए । धूणी आई जंगल लाई ।।
खर दूषण बलकारी योधे । मारे जंगल इन्नां आई ।।
सूपनखा ने जां थी दिक्खी । दुरगत अपणीं खूब कराई ।।

मरीचे ने हिरन बणी कै। तड़फी-तड़फी जिन्द गुआई।
वीर जटायू ने जां दिक्खी। कीती आई घोर लड़ाई॥
नई पछाणीं माया तिन्नीं। वैकुण्ठें विच रीया जाई॥
सीता दे दरसन वी माड़े। लंका इन्नां धूड़ धमाई॥
छडी दिथा सीता जो हुण वी। मेरी मन्ना अज्ज गलाई॥
लिया बचाईं दानव अंसे। इन्नां सड़ना सारा खाई॥
ठीकर माया कन्नें करना। छड्डा अपणी जोर जमाई॥
ग्रह नौ कीते विच्च वसे दें। सुरगें आई फौज चढ़ाई॥
कैलासे जो चुक्की तोला। सिब नीं होया अज्ज सहाई॥
काले जो कैदा विच आणीं। कीती अपणी घोर कमाई॥
नई चकोया धनुष सिबां दा। जय माला सी नीं पाई॥
अज्ज सुनन्दर माड़े होए। साधू ने ऐ अलख जगाई॥
देई मेरी थर-थर कंब्बै। अज्ज मुसीबत कोई आई॥
सब वेदां दे पण्डत पूरे। सीता माया धरती आई॥

दो० गल्ल गलाई राणियां, लगी भरून रोण।
रावण दे मन पापिए, रोज वगाई धोण॥

रावण अग्गें राणियां, भिरी उचारे बोल।
बोलै राणीं नाथहुण, मेरी गल्लां तोल॥

बाली वीर बहादर योधा, सुग्रीवे दा भाई।
दसकंधर जो पकड़ी तिन्नीं, अपणी कैद कटाई॥
तड़फी-तड़फी (कै था) मारिया, थी किछ खोट कमाई।
बाग वगीचे उजड़ी लंका, इन्नां खिल्ली पाई॥
रुक्खां बूटां सोका आया, गढ़ लंका विच आई।
अक्षय पुत्तर जान गुआई, लंका अग्ग फुकाई॥
राजे इन्दर जो जित्तै तां, सुरगें, करै चढ़ाई॥
मेघनाथ जो सीता मारै, धरती लम्मे पाई।
उठी खड़ोता गड़-गड़ करदा, सीता सड़िया खाई॥
कुंभकरन वरदानी योधा, पर्वत देई पाई।
अहिरावण महिरावण पुत्तर, विच्च पतालें जाई।
मरुआए भट दानव योधे, पुत्तर सक्के भाई॥

हे दसकंधर बुद्ध बचारा, मेरी करा सुणाई ।
छडी दिया सीता जो हुण वी, बचदी लिया बचाई ॥
चार वेद दे मालक अप्पूं, धरती धुम्म मचाई ।
ज्ञानी ध्यानी पण्डत पूरे, कैंह बुद्ध भरमाई ॥
तिन लोक विच्च जस्स तुसां दा, शिव दी भगती पाई ॥
गढ़ लंका सुन्ने दी नगरी, हीरियां कन्नें जड़ाई ॥
चऊं पासियां कोट घनेरा, सत्त समुन्दर खाई ॥
जच्छ देवते किन्नर सारे. मत्था देन नुआई ॥
धरत पतालें सागर गासें, जय जय कार सुहाई ।
रिच्छ बान्दरां दी लंका विच, थी के नाथ समाई ॥
तिन्हां चड़ाई कीती लंका, इट्टा इट्ट बजाई ।
हे नाथ कैंह जिद्द करा हुण, जोरें दियां दुहाई ॥

दो० बुरे करम जिस माह्णुएं, असर नईं उपदेस ।
धरती उप्पर भार ऐ, सैंह माह्णुए भेस ॥

इतणीं गल्ल सुणीं रावण ने, दसें सीस़ हुण बोले ।
अद्द समाने बिजली चमकी, धरती लग्गे झोले ॥
दसकंधर बोलै, सुण राणीं, तूं तां बड़ी सिथाणीं ।
बिजन गरमियां कदी न वरदा, गासे उपरा पाणों ॥
ब्रह्मा बिसणू सिव अवतारी, बणदे जमदे मरदे ।
एह सृष्टि तां नासबान ऐ, पत्थर पाणीं बणदे ॥
बुरा करै जे ब्रह्मा बिसणू, तिसने लोआ लोआ लैणां ।
कोई छेड़े छिड़तड़ आई, असां चुप्प नीं रैह्णां ॥
जे सीता सतबन्ती ऐ तां, स्रूप नखा नीं डैण ।
अकल बचारी लै किछ तूं बी, स्रूप नखा नीं भैण ॥
सीता ताईं राम लखण ने, अणमुक फौज बणाई ।
स्रूपनखा दी इजतू ताईं, राछस करन लड़ाई ॥
मरने तो हन ढरदे बुजदिल, शेर कदी नीं डरदे ।
सनमुख काले दें वी गरजन कायर हौके भरदे ॥
लुकी मारिया बाली तिन्नीं, सैंह कुथूं दा वीर ।
विच्च मूरछा लछमण सुत्ता, हाखीं डोलै नीर ॥

तिसदा जिगरा कौडी नीं ऐ, राणीं बुद्ध बचार।
मत्थें मेरें तिलक चढ़ा हुण हत्थें दे हथियार ॥
इतणीं गल्ल सुणीं पटराणीं, हाखीं नीर बहाऐ।
रावण दी पुट्ठी बुद्धा जो, किय्यां हुण समझाऐ ॥
माया कीता अन्हा रावण, हाखीं किछ नीं सुज्झै।
पटराणी जां गल्ल गलाऐ. दसकंधर नीं बुज्झै ॥
परवस कीता काले ने हुण, मौता घेरा पाया।
कन्नां दा हुण बोला रावण, हाखीं न्हेरा छाया ॥

दो॰ जाणैं वेदां सास्तरां, दसकंधर अणजाण।
अवतारां जो भुल्लिया, नईं पछाणें राम ॥

दो॰ रावण खोटे क म थे, लंका उडी तबाह।
धुखदा अग्गी गार इक, फूकी करै सुआह ॥

मरदी वारी माह्णू अन्हा, होऐ तौर-बतौरा।
जमदूतां दा पौऐ तिसदे, उप्पर आई छौरा ॥
हाखीं दी लो मद्धम होऐ, रात दिनें नीं सौऐ।
अल पल बोलै पापी माह्णू, घड़ी चैन नीं औऐ ॥
बुद्ध फिरी मरने तों पहलैं, सारे वेद भुलाए।
रावण दें सिर सारे लच्छण, मौता दे थे आए ॥
उठी खड़ोता दसकंधर हुण, तौर-बतौरा होई ॥
पटराणी रावण जो दिक्खी, इक दम थी डफलोई ॥
पैरां पकड़ी बोलण लग्गी, हे ! नाथ ! दसकंधर।
गढ़ लंका नी जित्ती सकदे, दिक्खा भालू बन्दर ॥
सेतु-बन्ध हुण सागर उप्पर, पत्थर सिल्ल तराए।
इक्क बान्दरें लंका फूकी, गढ़ लंका दे ढाए ॥
सोक बाटिका भरी उजाड़ी, अक्षय जो बी मारै।
किल्ला बान्दर दन्त दानवां, गव्है लंका जालै ॥
दसें सीस अज नाथ बोलदे, लच्छण माड़े होए।
भट दानव बलकारी योधे, युद्ध भूम विच मोए ॥
कुंभकरण (द्यो गढ़) लंका दा, मेघनाथ रणधीर।
लंका नगरी दे विच लोथां, बगदे लउए नीर ॥

अहिरावण महिरावण मारे, बंस मुकाया सारा।
नाथ ! नाथ ! मैं दियां दुहाई, किछ तां बुद्ध बचारा॥
पटराणी दी गल्ल सुणीं तां, रावण होया लाल।
दसकंधर जोरे ने बोलै, 'मैं काले दा काल॥'
पटराणी रोई कै बोलै, 'अवतारी हन राम।
भालू बान्दर लई सहारा, 'कस्से तीर कमान॥'

दो० अग्गें होऐ काल तां, कस्सां तीर कमान।
धरत पतालें गास मैं, युद्ध करां घमसान॥

जिगरा मेरा कजो घटाऐं, हत्थें दे हथियार।
सारे बंसे जो मरुआई, मैं नीं होणां पार॥
पुत्तर भाई मरुआई कै, कालख मत्थे लाऊं।
लउए वाझी नई धियोऐ, मैं हुण युद्ध रचांऽ॥
जे अवतारी राम न होए, मिञ्जों किच्छ नीं होणां।
सच्च मनियां निसचा राणीं, तां सीता ने रोणां॥
इक-इक लउए दी बून्दा दा, लैणां अज्ज हिसाब।
राम लखण जो लंका औणें, दा अज्ज दियां जवाब॥
सारे बंसे जो गाली कै, जे हुण मुंह लुकाना।
बंस दरोई बणीं राणिएं, सिद्दा नरकें जाना॥
जे सीता जो वापस मोड़ां, लोकां थू-थू करनी।
मैं अपणें पापे दी करनी, कुथ्र बई कै भरनी॥
इतणीं गल्ल गलाई रावण, छड्डी महलां आया।
पटराणी हुण डब-डब दिक्खै, हाकीं पाणीं छाया॥
दसकंधर ने हवन कराया, पाठी पण्डत सद्दे।
मन्तरियां ने करै सलाईं, दरबारे दे गब्है॥
रैऽन्दे-खून्दे दानव योधे, सारे लए सदाई।
दसकंधर ने हुकम सुणाया, करनी असां लड़ाई॥
रावण बोलै राम लखण ने, वीरो युद्ध रचाणां।
खूने दी इक-इक बून्दा दा, बदला असां चुकाणां॥
राम लखण जो युद्ध भूम विच, जाई मार चढ़ाणी।
रिच्छ बान्दरां दी अज वीरो, सारी फौज न्हठाणी॥

इतणीं गल्ल गलाई रावण, कस्से सब हथियार ।
गढ़ लंका बिच दसकंधर दी, होई जय-जयकार ॥

दो० लई बमानां देवते, सुरग पुरी दे देव ।
गासें आई दिक्खदे, रावण भुलिया वेद ॥

राम रावण युद्ध

दो० अस्तर-सस्तर रावणें, दसां सिरां पर ताज ।
सोलह घोड़ै हिणकदे, गासें गई उआज ॥

कस्से न तीर तरकस भाले । चल्ले न वीर अज मतवाले ॥
दसकंधर दे मुकट सुहाए । सूरज धरती उप्पर आए ॥
मोती हीरे दा चमकारा । धरती होया चानण भारा ॥
सुन्ने रूपें रत्थ जड़ाया । दसकंधर लड़ने जो आया ॥
सोलह घोड़े हिण-हिण होई । गासे दी लो धरती छहोई ॥
दानव वीरां दा ललकारा । अंबर होया काला-काला ॥
धूड़-धुड़ैना जय जय कारे । गासें छाए बद्दल काले ॥
योजन धरती न्हीठी आई । रावण सेना धुन्ध मचाई ॥
गासें आई बिच्च वमानां । देवते दिखन सब हंगामां ॥
अस्तर चमके न्हेर गुबारा । राछस दल हुण चलिया सारा ॥
ढोल नगारे संख बजाए । रणसिंहे बाजे सब आए ॥
गढ़ लंका दी सेना सारी । सागर ऊची छाली मारी ॥
सागर युद्धे दिक्खण आया । दसकंधर दा रत्थ सुहाया ॥
डैणां भूतां टोले आए । लउए मासे दे तरिहाए ॥
कुत्ते इल्लां घेरा पाया । काले कोआं कीती छाया ॥
दिन चढ़दे ने खरब खरोणी । दानव सेना किट्ठी होणी ॥
बुगदर भाले परसे तीरां । चम-चम चमकन अज शमशीरां ॥
दानव दल बल सब्ब खड़ोता । अम्बर धरती कन्नें छहोता ॥
गरजन राछस गड़-गड चारें । जिय्यां बद्दल गास पहाड़ें ॥
धूड़-धुड़ैना न्हेर गुबारा । सूरज सुज्झै काला-काला ॥

दो० दसकंधर दी फौज हुण, आई युद्ध मदान ।
दूएं पासें राम थे, राम-राम भगवान ॥

दो० जटा जूट सिर तिलक ऐ, गलें जनेऊ माल ।
पिट्ठी तरकस तीर हन, हत्थें धनुष कराल ॥

दूएं बक्खें पैदल आए । तिन लोकी दे नाथ सुहाए ॥
मूडें तरकस तीरां भरियो । सीस जटा भृकुटी ऐ चढ़ियो ॥
लक्कें कमर-पटा ऐ पाया । इकसी हत्थें धनुष चढ़ाया ॥
अग्गें पिच्छें बान्दर बोली । रिच्छां दी वी आई टोली ॥
हत्थें मूडें रुक्खां डाल़ू । कुन्नी लिया वलिया मियाल़ू ॥
सप्पड़ पत्थर सब हत्थियार । भालू बान्दर सब्ब भगियाड़ ॥
रांम खड़ोते तरकस कस्सी । देवतियां दी टोली हस्सी ॥
दिन चढ़दे ने तीरां बरखा । चम चम चमकै भाला बरछा ॥
पवन सुते दी खेल नियारी । जोरें-जोरें थी किलकारी ॥
नल-नीले ने चुक्की प्हाड़ां । गरजी गुड़की जोर दहाड़ां ॥
जामवन्त दी टोली आई । गड़-गड़ रिच्छां गासें पाई ॥
अंगद अपणां गुरज चलाया । दानव दल जो मार बछाया ॥
इक पासें सुग्रीवें आई । तगड़ी कीती मार कुटाई ॥
वीर बभीषण दूर खड़ोऐ । रावण तां हुण नीं पछणोऐ ॥
खड़गां खड़-खड़ रौल़ा रप्पा । दानव रिच्छां लाया जप्फा ॥
मुंडी जाऽनूं लत्त बढोऐ ॥ पिंड्डा पूरा सब्ब छलोऐ ॥
गढ़ लंका दे उप्पर आई । इल्लां दित्ती खूब दुहाई ॥
लोथां धीड़न कुत्ते गिद्दड़ । खूनै बगदे सुक्के डिव्वर ॥
जिय्यां-जिय्यां चढ़ै धियाड़ा ॥ तिय्यां-तिय्यां हा ललकारा ॥
कंब्बै धरती सागर डोलै ॥ दानव दल जय रावण बोल़ै ॥

दो० सूरज गासें लुक्किया, टुट्टी जीणें आस ।
गासें पुच्छल़ तारियां, कीता हियां उदास ॥

दो० युद्धें जन्तर बरतदा, वेदां दा बिदुआन ।
धरत पताल़ें गास हुण, त्राहि ! त्राहि हे राम ॥

राम ने तीर धनुष चढ़ाए । अजगर लप-लप करदे आए ॥
दानव दल विच हा-हा कारा । युद्ध मदाने मारो-धाड़ा ॥

गासे उप्पर तीरां बरखा । युद्धे दा हुण चलिया चरखा ।।
सिल सप्पड़ां दी टल्ल पटाक । कुसी दी लत्त कुसी दी खाख ।।
कुसी दी हक्ख गई मटोई । कोई गिया अज्ज परतोई ।।
लासां उप्पर लास बछाण । कुसी दी रई नईं पछाण ।।
गासे उप्पर लोऽ लुआना । अस्तर सस्तर तीर कमानां ।।
बुगदर परसे भाले चमके । खड़गां दे टंक्कारे रणके ।।
मार कुटाई हाय दुहाई । कुसी दी रई नईं सुणाई ।।
बान्दर योधे दानव भट्टां । रिच्छां पकड़े राछस लत्तां ।।
संझा वेलें न्हेरा होया । दसकंधर गासे ने छहोया ।।
बिय्यां हत्थां अस्तर-सस्तर । अग्गें पिच्छें दानव लसकर ।।
अग्गी दे गोल् तिस सुट्टे । रिच्छ रड़ाए बान्दर टुट्टे ।।
पवन सुते दी पेस न कोई । अंगद वीर गिया परतोई ।।
जामवन्त नीं झल्लै मारा । नल नीले दी दिक्खी हारा ।।
बान्दर दल विच हा-हा कारे । दानव दल रावण जयकारे ।।
सेना दित्ती अज्ज दुहाई । बोलन सारे हे रघुराई ।।
डफलोई जा सेना सारी । राम गुसाईं हक्ख उघाड़ी ।।
राम धनुष पर तीर चढ़ाए । दसकंधर दे सीस उड़ाए ।।
रावण दे सिर आई जम्मन । वान्दर कौतक दिक्खी कंबन ।।

दो० कई वरी सिर धरतिया, दसकंधर बुलआन ।
मुड़ी मुड़ी सिर जम्मदे, जय सिब दा वरदान ।।

दो० गासे उप्पर सोर था, सोचन सोचां देव ।
इन्दर सद्दै सारथी, हुकम करै सुर देव ।।

''लिय्या अपणां रत्थ सजाई, युद्ध भूम विच जाअ् ।
रघूनाथ दे कन्नें जाई, मेरी गल्ल सुणाअ् ।।''
गया मातली रत्थ सजाया, गासे तों गढ़ लंका आया ।।
सोलह घोड़े चिट्टे फर फर । गढ़ लंका विच होई हर-हर ।।
राम गुसाईं लागें जाई । मातलिए ने गल्ल सुणाई ।।
तारा कन्नें तार जुड़ाई । रघुनाथ दे कन्नें पाई ।।
'इस्स रथे दे उप्पर आई । दसकंधर ने करा लड़ाई ।।
हे नाथ रघुनन्दन राई । विनती मेरी सीस नुआई ।।'

गासे उप्पर देव सक्तियां । ब्रह्मा विसणू सिब्ब भक्तियां ॥
लोई दे लसकारे अंबर । गासे जो दिक्खै दसकंधर ॥
अस्तर सस्तर लई कमानां । गासें दूर करै हंगामा ॥
देवते लुक्के जाई गास । जीणें दी न कोई हुण आस ॥
राम गुसाईं तीर चलाया । दानव गड़-गड़ धरती आया ॥
जोगणीं भूत परेत बताल । आई खड़ोते सब ततकाल ॥
रावण दी ताड़ी जां बज्जी । कई खरोणी सेना सज्जी ॥
रावण दी माया बे अन्त । डरी गए सब योगी सन्त ।
भूत परेतां हत्थें तीर । बरछे भाले तां समसीर ॥
ब्रह्म सिब दे लागें जाई । बोलै फौजा लिया सदाई ॥
सिब संभू गासे पर आऐ । अपणें गण सारे सदुआए ॥
रावण अज्ज करोधें आया । सिव संभू पर तीर चलाया ॥
गासे लोअ् लुआना सुज्झै । सिव संभू गल्ला नीं बुज्झै ॥
विसणू अस्तर धनुष चढ़ाया । राम गुसाईं सिब्ब बचाया ॥
राम रथे पर अज्ज सुहाए । देवतियां ने फुल बरह्‌ाए ॥

दो० ब्रह्मा विसणू सक्तियां, दी गासें चमकार ॥
धूड़-धुड़ै ना अम्बरें, दसकंधर जयकार ॥

दो० कौतक दस्सै धरतिया, लोकां जो भगवान ।
तुर-बुर दिक्खन रावणें, बणें राम अणजाण ॥

दिक्खी कै राम होए बतौरे । बान्दर युद्धे छड्डी दौड़े ॥
मगजें राम दें गल न औऐ । दसकंधर सिर धरत न पौऐ ॥
राम गुसाईं दिक्खी हारे । दसकंधर दे खेल नियारे ॥
रावण गरजै गासें जाई । देवते दिक्खन सब लड़ाई ॥
इक बक्खें लंका दा राजा । दूएं राजा राम बराजा ॥
राम गुसाईं बरखा कीती । तीरां ने सब धरती सीती ॥
रावण पिंड्डें असर न होऐ । तिसजो जाई तीर न छह्‌ोऐ ॥
हारी हुट्टी गे डफलोई । दिक्खन अप्पूं दंग खड़ोई ॥
लछमण वीर बड़ा घबराया । भेस बभीषण बदली आया ॥
आई राम बभीषण बोलै । रावण दे अज भेते खोलै ॥

'रावण दी नाभी विच राम। अमृत कुण्डू दा ऐ धाम ।।
अमृत इसदा दिया सुकाई । दानव पौणा धरती आई ।।
वीर बभीषण भेत गलाया । भिरी मुड़ी कै कैंपें आया ।।
बिसले तीरां राम चलाऐ। रावण दी नाभी विच पाऐ ।।
सूरज पच्छम पासें आया । राम गुसाई तीर चढ़ाया ।।
गासे लोई दे लसकारे । रावण दे दस सीस उतारे ।।
रावण दे सिर धरती आए । बान्दर दल ने संख वजाए ।।
रावण दा धड़ धरती सुत्ता । गढ़ लंका दा पूरा टुट्टा ।।
गासें होऐ जय-जयकारे । देवतियां फुल धरत उतारे ।।
गढ़ लंका अज सुन्नी सारी। राणी रावण दी दुखियारी ।।

दो० **दानव दल सब दौड़िया, खाली युद्ध मदान ।**
लोथां लंका धरतिया, देव गती भगवान ।।

सो० **लंका वरसे तीर, साथी रावण दे मरे ।**
भगत बभीषण वीर, इक राम दे नाम तरे ।।

महाकाव्य माया

पंचदश सर्ग

सो॰ लासां युद्ध मदान, गढ़ लंका विच सोग था ।
योधे मरे जुआन, रावण महलां सोर था ॥

दो॰ सुरगें बोलन देवते, लखण राम भगवान ।
योधे अंगद नील नल, जामवन्त हनुमान ॥

रावण दे दस सीस कटोए, तोता विलखी रोया ।
कंगला ताजां धरती दिक्खी, अणमुक अज्ज घटहोया ॥
तोता डुस्की बोल उचारै, अपणी गल्ल गलाऐ ।
बोलै तोता, 'धरती उप्पर, माया खेल रचाऐ ॥
माया दी जड़ बणीं जनानी, रावण था मरुआया ।
घर दे भेतें गढ़ लंका दा, टुट्टी धरती आया ॥
रावण दी पटराणी बोलै, 'के कीता करतार ।
किय्यां मरिया कुनीं मारिया, लंका दा सरदार ॥'
रावण दे हुण आल्-दुआलें, छम-छम नीर बहाऐ ।
दसकंधर दी पटराणी अज, दुखड़े कुजो सुणाऐ ॥
चऊं पासियां गढ़ लंका दे, सागर ठाठां मारै ।
सूप नखा सीता दोआं जो, दूरे तों सुसकारै ॥
सूप नखा कुटिया दे अग्गें, आई नीं मटकोन्दी ।
हिरने जो लैणे दे ताईं, सीता नीं ललचोन्दी ॥
नीं तां चक्कर माया चलदा, नीं तां घिरनू फिरदा ।
रावण दा सिर धरती आई, कदीं काल् नीं किरदा ॥
माया जालें रावण फसिया, डोर राम ने खिज्जी ।
सूप नखा सीता दोआं ने, माया रूपें पिंज्जी ॥

रावण दे सिर पापे दी गठ हिल्ली नईं चकोई ।
दसकंधर दे रिस्ते नाते, पापें गए पथोई ॥
रावण दे घर चारे कूंटां, नीं दीय्या नीं बत्ती ।
माया नच्चै दूर खड़ोई, खिड़-खिड़ करदी हस्सी ॥
रावण दे मरने पर सारे, सोक बाटिका आए ।
सीता दी हाखीं हुण पाणीं, राम नाम गुण गाए ॥

दो० **माया चक्कर घूंकदा, भुलदे सन्त सुजान ।**
माया धागे धरतिया, माह्णूं नईं पछाण ॥

तोता बोलै, 'सुण कंगलिया, माया करैं पछाण ।
माया जाल् जे तोड़ै तां, माह्णू ई भगवान ॥
माया दे चक्कर विच आई, कदी काल् नीं फसिए ।
निरमल धरती उप्पर आई, ताईं रसिए बसिए ॥
माया दे जाल् विच फन्दा, तां माह्णूं पछतान्दा ।
वक्त वीतदा हत्थ नीं औऐ, छिन-छिन घटदा जान्दा ॥
धरती उप्पर चऊं पासियां, माया धागे जाल् ।
तोता बोलै, 'सुण कंगलिया, सब ठौकर दी चाल ॥
माया ने रावण मरुआया, राम करै बणवास ।
रावण जो मरदे दिक्खी कै, सवनां पश्चाताप ॥
सीता दी हाखीं हुण पाणीं, राम-राम दलगीर ।
पुच्छण लग्गे अज्ज जानकी, तूं कैंह अज अधीर ॥
इतणीं गल्ल सुणीं बैदेही, बोली, 'अचरज होया ।
धरती उप्पर ज्ञानी पण्डत, चार बेद दा मोया ॥
ध्यान ज्ञान ने कम्म न कीता, सास्तर होए झूठे ।
चार वेद दा ज्ञानी रावण, उकल् तिसदे बूटे ॥
धरती उप्पर दानव रूपें, पुट्ठे कम्म कमाऐ ।
माया जाले नईं पछाणैं, पढ़ियो वेद भुलाऐ ॥
सारा लांछन लग्गा मिज्जो, लंका सुन्नी सारी ।
किय्यां तरनां नाथ सागरें, पापे दी गठ भारी ॥
मन्दोदरी सती लंका दी, युग सतवन्ती नार ।
रखिया कीती अणमुक मेरी, कीते जतन अपार ॥

सतवन्ती दी सेवा दा मैं, के बदल दई जाणा ।
नाथ ! नाथ ! मैं कुस कूंटा हुण, अपणां मुंह लुकाणा ।।

दो० बिलखन बच्चे नगरिया, लंका हा-हा कार ।
रोन जणासां सारियां, घर-घर नाथ उजाड़ ।।

दो० सीता रोई विलखदी, होए राम अधीर ।
युद्ध मदाने राछसां, लउएं वगदे नीर ।।

इतणें पापां दी पंड्डा जो, किय्यां जाई भरगी ।
किय्यां कितणें गोते खाई, डूगें सागर तरगी ।।
युद्ध भूम विच मैं घवराई, दिक्खे लोथां ढेर ।
सच दस्सा इस पापे गाला, रती करा मत देर ।।
भुली गई सुध अज्ज जानकी, इतणीं गल्ल गलाई ।
सुसकारे डूगे हुण छड्डे, पूरी वणी सुदाई ।।
लोथां दिक्खी कै परतोई, धरती पई पछाड़ ।
इंय्या लग्गा राम गुसाईं, दी अज होई हार ।।
देई दिलासा रामचन्द्र, वैदेही थी व्हाली ।
बोलण लग्गे, 'अज्ज जानकी, तेरी सुध ऐ मारी ।।
दुस्ट दानवां जो मुकाया, धरती भार घटहाया ।
असां कुसी जो नईं मारिया, जिन्नी कीता पाया ।।
जिस बीए जो राह्ऐ माह्णूं, तिसजोई तां बड्है ।
फुल्ला राह्ऐ फुल्लां बड्है, कंडा कंडें लग्गै ।।
रावण ने राह्ए थे कंडे, कंडियाले रुक्ख जम्मे ।
जिन्नी कीती तिन्नी पाई, स्हाड़े नीं किछ जम्मे ।।
दसकंधर वरदानी पूरा, अमृत कुण्डू नाभ ।
मुहएं तो तां वेद उचारै, करनी तिसदी बाघ ।।
अपणें पढ़ियो नईं बचारै, वेद पढ़ी के लैणा ।
तां माह्णूं ऐं पूरा मूरख, पाऐ पैरां गैह्णां ।।
बाह्रें सुज्झै चिट्ट चरेला, अन्दर भरियो मैल ।
जिय्यां जैह्र चड़ैनू डोडी, बाह्रें सुज्झै छैल ।।
जेह्ड़ा माह्णूं अपणें साहई, दूएं नईं पछाणैं ।
नरके दा कीड़ा ऐ किल-बिल, कूड़े ढेरां छाणैं ।।

दो० जाचै जोर जनानियां, तां माह्‌णू बदकार ।
दानव पूरा धरतिया, अणमुक तिसदा भार ॥

लोभी लंपट चोर उचक्का, धोखे धड़े कमाऐ ।
कुतकारी तिसदा जीणा ऐ, मरदा तां मर जाऐ ॥
चार वेद छः सास्तर जाणै, रावण अकली अन्हा ।
माया सागर गोते खाऐ, नईं सुज्झिया बन्ना ॥
ताह्‌ईं तां तिस ऋषियां तों वी, कर लैणे दी सोची ।
अपणें भेजे दूत तिन्हां कछ, अकल रावणें होछी ॥
ऋषियां दे लउए दी बून्दां, पूरा घड़ा भरोया ।
इतणा बदिया पाप रावणें, तों वी नईं चकोया ॥
ऋषि मुनि रावण दे दूतां ने, अणमुक कीते तंग ।
पाप रावणें दे सिर चढ़िया, गई भरोई पंड ॥
पापे दी गठ धरती उप्पर, वणीं जानकी आई ।
रावण दे पापे ने तिसजो, इक दिन सड़िया खाई ॥
पाप कमाई धरती माह्‌णू, अणमुक वददा फुलदा ।
जिय्यां छूह्‌ईं दा बूटा वी, विच्च तौन्दिया झुलदा ॥
न्हेरी झक्खड़ गासें औऐ, तां बूटा परतोन्दा ।
उक्कल मुंडी जाऐ तिसदी, भार नईं समल्होन्दा ॥
धरमे दी जड़ खव्वल् होए, कदी काल् नीं सुकदी ।
पक्की डोरी पुन्ने धागे, जोरे ने नीं टुरदी ॥
पापी माह्‌णू भरी किस्तिया, लई पतालें डुब्बै ।
डूगा जाई विच्च चिक्कड़ें, न्हीठा जाई खुब्बै ॥
जिसदे राज्जें सीना जोरी, राज कदी नीं चलदे ।
भ्रष्टाचारे दी माया दे, दीय्ये कदी न बल्दे ॥
कदर जणासां दी नीं होऐ, सैह राज वी डुब्बै ।
पैंना सस्तर तिस राजे दे, विच्च काल्जें खुब्बै ॥

दो० कमजोरां जो रोज ई, जेत्थूं लोक डरान ।
तेत्थूं धरती डोलदी, खेलन भूत मसाण ॥

दो० जिस राजे दी नगरिया, नीं ऐं किछ इनसाफ ।
ठीकर होणी वरतदी, तेथूं अपणें आप ॥

हाखीं ठौकर कदी न दुस्सै, न कोई तिस पछाणैं ।
जोर जुआनी अन्हा माह्णू, ठौकर जो नीं जाणैं ।।
पापे जितणा डूगा दब्बै, उतणा उप्पर औऐ ।
सत्त सागरां डूगा उफणीं, पाणी उप्पर पौऐ ।।
अपणे पापे अपणे अन्दर, माह्णू दिऐ लुकाई ।
घुण दा कीटू बणी पाप तां, तिसजो सड़दा खाई ।।
माह्णू सोचै कदीं काल वी, भुगतण पाप न पौन्दा ।
अंबर धरती दे पापां ने, रात दिने नीं सौन्दा ।।
अपणीं करनी भरनी पौऐ, एह तां बुद्ध बचार ।
लैणा देणा पौऐ इक दिन, रती न होऐ उधार ।।
घड़ी-घड़ी दा लेखा जोखा, उप्परलें दरबार ।
झूठे दी गल नईं मनोऐ, होऐ सच्च वपार ।।
लच्छण ठौकर दे सब सुज्झन, जालूं चढ़ै बियांग ।
धाड़ो-धाड़ पटोऐ माह्णू, ठौकर मारै डांग ।।
ठौकर झोला नईं पछाणैं, माह्णू अकली अन्हा ।
ठौकर दी बोली पापी दे, नईं सणोऐ कन्नां ।।
अन्हा बोला होई माह्णू, सुरगें करै चढ़ाई ।
मौता जो हाकां तां मारै, ठौंकर करै लड़ाई ।।
नईं कुसी जो मारै कोई, कुसी दा नीं कसूर ।
अपणें करमां मरदा माह्णू, ठौकर वी मजबूर ।।'
इतणी गल्ल राम ने कीती, लाया इक दरबार ।
तिलक बभीषण मत्थें दित्ता, होई जय-जयकार ।।
ताज बभीषण सिर नीं रक्खै, बोलै हे रघुराई ।
गढ़ लंका दी सारी कालख, मेरे मत्थें आई ।।

दसकंधर दे वंस विच, मैं तां बड़ा कपूत ।
मैं पापी आं नाथ इक, काली ऐ करतूत ।।
सतयुग त्रेता द्वापरें, मिटै न कालख राम ।
कलयुग पलटै सब युगां, नां मेरा बदनाम ।।

जे मत्थे पर ताज्जे रक्खां, तां मैं कुलें दरोई ।
किय्यां राज करां मैं लंका, मेरी जिन्द घटोई ।।

जोसें दे विच भर दरबारें, लत्त रावणें मारी ।
मेरे क्रोध कलंकें आई, लंका भरी उजाड़ी ॥
टक्कर थी मेरी रावण दी, परजा नास पटोया ।
गढ़ लंका दा इक-इक योधा, युद्ध मदाने मोया ॥
नाथ ! नाथ मैं देस दरोई, कीता अत्याचार ।
पापे दी गठ भारी होई, सिर मेरें ऐ भार ॥
घड़ी-घड़ी अपणी करनी पर, अज्ज बभीषण झूरै ।
तिसदी करनी दूर खड़ोई, घुड़कै तिसजो घूरै ॥
बुरा करदियां नईं संगदा, पिच्छें तें पछतान्दा ।
समा फराटी मुड़ी न पाऐ, हाखीं रोज गुआन्दा ॥
क्रोधे दे विच आई माह्‌णू, घर जो दिऐ फुकाई ।
जालूं लगदी अग्ग तालुएं, सकदा नईं बुझाई ॥
अपणा अपणे जो मरुआऐ, दूआ ताह्‌ईं मारै ।
घर दे भेतां दस्सै माह्‌णू, अकली नईं बचारै ॥
लोआ ई लोए जो बड्डै, लक्कड़ किछ नी करदा ।
लोए दा ई लई सहारा, लक्कड़ तिसजो वडदा ॥
अज्ज बभीषण सोचां सोचै, हाखी नीर वहाऐ ।
समा वीतिया दूर खड़ोऐ, तिसजो हांका पाऐ ॥
परबारे जो मरुआई कै, लंका अग्ग फुकाई ।
वीर बभीषण हत्थां झस्सै, होया अज्ज सुदाई ॥
राम गुसाईं आल खड़ोई, डुस्की-डुस्की बोलै ।
इक-इक गल्ला अपणे मुहएं, अज्ज बभीषण फोलै ॥

दो० **वीर बभीषण विलखदा, बोलै मिज्जो भार ।**
बंसे जो में डोविया, मैं दानव करतार ॥

रावण धरमी धरम बचारी, युद्ध अन्त तक कीता ।
सीस रक्खिया उस धरती पर, जिस दा अन जल पीता ॥
कुंभकरण 'द्यो' गढ़ लंका दा, मेघनाथ बलवान ।
गढ़ लंका दी धरती ताईं, होए सब कुरबान ॥
देस दरोई नाथ युगां दा, मैं तां कुलें कलंक ।
मिज्जो भेजा उस कूटा विच, जेत्थू जीब न जन्त ॥

सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग, कदीं काल् नीं जाणीं।
कुनी भिरी समझाणा कुसजो, जीव्हो जीव्ह गलाणी ।।
देस दरोई कालख टिक्का, किय्यां चढ़ना ताज।
मेरे मन दी खूनी चिड़िया, मारै सारे बाज ।।
इतणी गल्ल बभीषण सोची, धाड़ो-धाड़ पटोया।
पई मूरछा धरती सुत्ता, इक दम था परतोया ।।
गस खाई हुण पिया बभीषण, रावण-रावण बोलै।
अपणे पापे पुन्ने किल्ला, पाई छाबें तोलै ।।
करदी वारी किछ नी सोचै, पिच्छे तें पछताऐ।
तिसदे पापे दा सप तिसजो, अणमुक डंग चलाऐ ।।
पीड़ कुथीं नीं दस्सै माह्णू, किल्ला ढाईं पाऐ।
मन तिसदा दुतकारै तिसजो, सूंका जिन्द सुकाऐ ।।
पश्चाताप करै जां माह्णू, हवना जाप करान्दा।
कालख मत्थे दी नी हिल्लै, सत जनमां पछतान्दा ।।
अज्ज बभीषण दा मन रोगी, अणमुक लग्गे रोग।
सारे बंसे दा रोई कै, लगा मनाणा सोग ।।
सीता माया जाल् बभीषण, दानव बंस फसाया।
राम शिकारी खिज्जै डोरी, धनुषें तीर चढ़ाया ।।

दो० अज्ज बभीषण वीर तां, करदा पश्चाताप।
सीता दे मन भार था, दूणा था सन्ताप ।।

झो० तोता फंग्गां झोलदा, ठंडा झोलै घात।
कंगला ढूण-मढूणा, होया बड़ा उदास ।।
माया दे जाल् विच आई, कुण सुक्का ऐ बचिया।
दानव बंस मुकाया माया, सागर खिड़-खिड़ हसिया ।।
धरती दा तां घटी गिया था, सारा दानव भार।
राम शिकारी डोरी खिज्जी, किट्ठा कीता जाल् ।।
अज्ज बभीषण दा मन आई, धागा वणी धड़ोऐ।
माया दिक्खी अपणी करनी, जाई दूर खड़ोऐ ।।

अपणें सिर तां गल्ल न ओडन, राम वणें निरदोस ।
सीता रोई अज्ज बभीषण, होया था बेहोस ॥
वीर नील नल अंगद सारे, करदे मनें बचार ।
जामवन्त वी दिक्खै तुर-बुर, हनूमान बलकार ॥
युद्ध मदाने जाई सबनां, अणमुक योधे मारे ।
वीर नील नल कौतक कीते, सागर पत्थर तारे ॥
गढ़ लंका अज्ज सुन्नी होई, रावण महलां न्हेरा ।
खां-खां करदे महल-माड़ियां, पंछी नईं बसेरा ॥
राम बई कै किल्ले सोचन, मन होया धड़जोग ।
किय्यां मेटन गढ़ लंका विच, सारें छाया सोग ॥
विलखन सारे बच्चे बुड्डे, कुसजो चुप्प करान ।
सब्ब जणासां पल्ला पाई, हा-हा कार मचान ॥
कोई बोलै, 'राम-राम थे, रावण जो समझान्दे ।
सुलह सफाई कन्नें सीता, लई घरे जो जान्दे ॥
दोसी था किल्ला दसकंधर, बाकी थे निरदोस ।
जिसदे मुहएं जे गल औऐ, बोलन आई लोक ॥
अपणें मंज्जे हेठ कदी नीं, सोटा फेरन भाई ।
दूए जो दुतकारन सारे, कड्डन नुकसां आई ॥

दो० सीता जो दे हौसला, राम लगे समझाण ।
संकट वीर बभीषणें, दा वी लगे घटाण ॥

राम गलाया वीर वभीषण, तेरा नईं कसूर ।
जो जमिया सो मरना इक दिन, कुदरत दा दस्तूर ॥
धरती उप्पर भार वधाया, रावण बाली बंस ।
मारे पापी दानव सारे, बची भले दी अंस ॥
बाली वरदाना जो पाई, भाऊएं दिऐ नकेल ।
बणां बाड़ियां रुक्ख सुकाए, बधै रंडोली बेल ॥
बाली दिक्खै जिस वीरे जो, तिसदा जोर घटाऐ ।
अपणी आई राजधानियां अणमुक पाप कमाऐ ॥
नईं समझिया जां समझाया, मौता घेरा पाया ।
तीर खुब्बिया विच्च कालजें, जो कीता सो पाया ॥

निक्के भाउए दी जणासा, धीअ् करी नीं दिक्खै ।
नइँ पछाणै भैणा भाऊ, तिमजो लख-लख धिक्कै ।।
तिसदी जिन्द गुआणी कोई, पाप न दसदे वेद ।
इस गल्ला पर वीर वभीषण, कजो करैं तूं खेद ।।
सूप नखा दे नक-कन बड्डे, समझी कै वदकार ।
दूए दे घर आई तिन्ना, कीता था सिंगार ।।
मने तिसा दें पाप भरोया, ताईं दुरगत होई ।
लगी करन थी पंचवटी विच, गल्लां किछ मटकोई ।।
बदकार जणासां मरदां जो, दण्ड दई नीं पाप ।
वीर वभीषण इस गल्ला दा, कजो करैं सन्ताप ।।
रावण साईं मन दी खोटी, दसकंधर दी भैण ।
सैह जणासा दे रूपे विच, इस धरती पर डैण ।।
चाल चलन नीं होऐ जिसदा, सैह तां नीं जणास ।
पाऐ अणमुक गहणे भौएं, ओडै छैल़ लबास ।।

दो० सेवा खसमे दी करै, देवी बणै जणास ।
घर-घर हंड्डै नार जे, तिसा नइँ विसुआस ।।

दो० चबल़ जणासां धरतिगा, कनैं उचक्के लोक ।
तेथूं आई ठौकरें, इक दिन होऐ कोप ।।

जिसा जणासा सरम न होऐ, बड़-बड़ करदी बोलै ।
अपणें बंसे गरक करी कै, धूड़ी अग्ग फरोलै ।।
सूप नखा दी गल्ला उप्पर, रावण अलख जगाई ।
दसकंधर ने वेद भुलाए, सारी बुद्ध गुआई ।।
जिन्द गुआई मारीचे ने, विच्च बणें दे आया ।
रावण ने तां जोर जवतिया, सुन्ने हिरन वणाया ।।
अन जल दसकंधर दा खाई, नांह नुक्कर न होई ।
तीर काल़जें छहोता दानव, हिरन गिया परतोई ।।
बुरी संगती भ्रष्टाचारी, अन खाणा वी पाप ।
भरना पौऐ जिन्नी देणा, पापी दा किछ साथ ।।
पापे दा पकुआन तल़ोया, पुन्ने सुक्की रोटी ।
पुन्ने दी गौ सदा हरी ऐ, संड पाप दी झोटी ।।

बेल बूटियां वणां बाड़ियां, जाई माह्णू दिक्खै ।
पुन्ने दी जड़ सदा हरी तां, खब्बल् तों किछ सिक्खै ॥
वीर जटायू धरम नभाया, होया था कुरबान ।
मित्तरता दी रखिया ताईं, लड़िया युद्ध मदान ॥
मित्तर अंसे मरदे दिक्खी, माह्णू हक्ख चुराऐ ।
सत जन्मा दा कोह्ड़ कलंकी, नरकें गोते खाऐ ॥
अमर जटायू वीर गिद्ध, तां चढ़िया सुरगें जाई ।
मित्तर अंसे ताईं तिन्नी, अपणी जिन्द गुआई ॥
सिंबल् दे फुल लाल गुलाले, रती गंध नीं भाई ।
चार वेद छः सास्तर जाणै, रावण अलख जगाई ॥
चोरे ने तां चोरी करनी, पेसा ऐ बदकार ।
वृद्ध कबुद्धी आई उपजै, जे जिसदे संस्कार ॥

दो० गन्दा माह्णू झाड़दा, चऊं पासियां गन्द ।
अट-पट बोलै बोलियां, बसै गराएं भंड ॥

भले माणसां जो दुख दिन्दा, लुच्चा गुंडा आई ।
रौला पाऐ चऊं पासियां, आई इक्क सुदाई ॥
पापी माह्णू छुरियां चोभी, खिड़-खिड़ करदा हस्सै ।
दिऐ उजाड़ी आंड गुआंडे, आपूं रस्सै बस्सै ॥
जालूं छुरियां पुठियां होई, तिसदे ढिड्डें चुब्बन ।
भले माणसां दे हौके जां भूत वणी कै गुब्बन ॥
रावण उडिया लई बमाने, सोक वाटिका आया ।
पंचवटी दा बूटा बूटा, जोरे ने डकराया ॥
रावण ने अपणे जीवन विच, जितणे पाप कमाए ।
भूत बणी कै तिसजो खाणां. किट्ठे होई आए ॥
सागर दी खाई गढ़ लंका, रावण घर मजबूत ।
बाह्रें सुन्ना अन्दर तिसदें, थी काली करतूत ॥
चार वेद छः सास्तर जाणै, गट-गट वेद उचारै ।
विच्च मने दे कालख भरियो. रावण नईं उतारै ॥
महल माड़ियां अन्दर कोई, फुल्लां सेज बछाऐं ।
पुट्ठे कम्म करै जे माह्णू. ठौकर नईं सुखाऐ ॥

लोकां जो तां दई भलेखा, आपूं बददा फुलदा।
ठीकर हक्ख करैं जां माड़ी, सुक्कै बूटा झुलदा ॥
रावण तों डरदे थे माह्‌णू, कुनी मदद नीं कीती।
असां सुणाई सबनां कन्नें अपणें आपें बीती ॥
बदमासां तों डरदे सारे, नेड़ें जीब न जाऐ।
बदमासे जो दिक्खी लोकी, अपणी हक्ख चुराऐ ॥
माह्‌णू छड्डी जीव जन्त ने, कीती जां फरियाद।
रिच्छ बान्दरां जीबां कीती, डटी करी इमदाद ॥

दो० माह्‌णू दे मन बस्सदे, आई पंज बकार।
जीव जन्त सच बोलदे, नीं छल कपट अपार ॥

दो० सुणदे जन्तु कन लाई, लाह्‌णू दी फरियाद।
माह्‌णू आई धरतिया, करदा वड़े बखाद ॥

रिच्छ बांदरां लिया सहारा, तगड़ी फौज बणाई।
पापी बाली मार मुकाया, रावण होस न आई ॥
छेड़ा पर नीं तीर चलाया, पवन सुते जो भेजी।
पूरा पता लई सीता दा, अपणी सेना खेदी ॥
रावण जो समझाणें ताईं, अंगद लंका आया।
भर दरबारें जोर जाचिया, अपणा पैर जमाया ॥
नईं पटोया पैर कुसी तों, रावण अकल न आई।
सेतुवंध जां सागर बणिया, कीती असां चढ़ाई ॥
रावण दी दुतकार पई तां. भिरी बभीषण आयां।
सक्का भाऊ असां जाणया, तिसजो कंठ लगाया ॥
भेत गलाए आई तिन्नी, पाप न कोई कीता।
इक्क वभीषण दा दिल दुखिया, हौके मारै सीता ॥
विजन बभीषण भेतें लंका, रावण कदी न मरदा।
पापे दा ऊचा झंडा अज, संसारे विच चढ़दा ॥
भले माणसां दा नांऽ मुकदा, धरती दानव बददे।
सच्चे लोकां दे लउए ने, नाल सागरें तरदे ॥
पापी जो मरुआणा कोई, पाप न होऐ भाई।
वीर बभीषण दिक्ख बचारी, तू तां जिन्द सुकाई ॥

उपकारे जो दुस्ट न समझै, दूणा बददा जाऐ ।
डंडा होऐ पीर बुरे दा, खड़कै तां समझाऐ ।।
छल्-बल् दुस्टां कन्नें करना कोई पाप न लगदा ।
लुच्चे गुंड्डे जो मारी कै, नरक कोई न बड़दा ।।
इक्क उडारी मारन पखरू, इक नसला दे होन ।
दुस्टां दे विच लुच्चे बस्सन, भले लोक नी छह्‌ोन ।।

दो० **माह्‌णू ऊची जून ऐ, करमा दा वरदान ।**
बुरे करम ई धरतिया, करी लोक पछतान ।।

वरदानी रावण दे संग्गी, युद्ध भूम विच आए ।
भरिया बेड़ा लई डोबिया, रावण सब्ब डुबाए ।।
दुस्ट पापियां जिन्द गुआई, पापी युद्धें मरिया ।
वीर वभीषण भवसागर दे, उप्पर आई तरिया ।।
दुस्टां जो मरुआणे आला, सुरग पुरी विच जाऐ ।
भले माणसां जिन्द बचाऐ, सैह नरकें न जाऐ ।।
जे वंसे विच पापी जम्मन, तां बिन बंसें रैह्‌णां ।
के करना तां छैल्-छबीला, तोड़ै कन्ना गैह्‌णां ।।
बुरे साथ तों किल्ला माह्‌णू, विच कुटिया दें छैल् ।
होऐ सच्चा मित्तर भाई, जिसदे मनें न मैल ।।
रिस्ता नाता भाई बंधू, करै कुबैड़े कम्म ।
तिसदा साथ कदी न करिए, बखरी करिए छन्न ।।
इक दिन चिकड़ें छिट्टू उड़कै, चादर पौन्दे दाग ।
लागी शागी दिऐ उजाड़ी, भुक्खा होऐ बाघ ।।
बुरे माह्‌णुआं दी मौता पर, रती नईं अफसोस ।
वीर बभीषण मन ऊचा कर, बुद्ध बचारी सोच ।।
जीन्दा रावण धरती रैह्‌न्दा, हा-हा कार मचान्दा ।
भले माणसां जो कुस कूटां, ठौकर भिरी लुकान्दा ।।
धरती दे रावण मन सारे, गल्ला लैन बचारी ।
इक लख पुत्तर सौ लख नाता, रावण जिंद उधारी ।।
बाजां उप्पर काज फिरा दे, काजां खान कजाईं ।
माह्‌णू उप्पर देव देवते, उप्पर इक्क गुसाईं ।।

ज़ोरे आला सोचै कोई, मैं सबनां पर भारी।
जुलम कमाऐ धरती उप्पर. वदै पाप दी खारी॥

दो० पापी कन्ने धरतिया, घोल् करै करतार।
अपणें छाबें तोलदा, ठौकर पूरा भार॥
फणियर डंगा मारदे, दुद्दें दिया सनान।
पापी पाप खलारदे, कौं मोती नी खान॥

जोर जुआनीं दे विच माह्णू, खरे कम्म नी करदा।
पापें भरिया वेड़ा उप्पर, सागर कदी न तरदा॥
विषय बकारां अन्हा रावण, मीता हाकां पाऐ।
न्हेरें चल्लै अप्पूं अन्हा, लोकां जो समझाऐ॥
गढ़ लंका दे चऊं पासियां, सागर डूगी खाई।
इक लख पुत्तर सौ लख नाता, रावण सुध नीं पाई॥
उलकापाते कन्ने होऐ, परमेसर दा वैर।
जा मरड़ोई जालूं पीऐ, ऊचा न्हीठा पैर॥
गल्ल गलाई राम बभीषण, सावधान था कीता।
राम राम दा जाप करै हुण, सीता अमृत पीता॥
गढ़ लंका विच सबर सबूरें, करै बभीषण राज।
राम-राम सिमरै हुण पल छिन, राम गुसाईं काज॥
राम गलाया जीव-जन्त सब, ठौकर वड़े प्यारे।
ठौकर दी ऐ नोखी लीला, पत्थर सिल्ल न्यारे॥
माह्णू दे पुट्ठें कम्मा पर, ठौकर आई कोपै।
तिसदे पापे पुन्ने पाई, दऊं छाबियां जोखै॥
पापे दा छाबा जालूं जे धरती छह्ऐ आई।
धरती डोलै डग-मग सारी, लोकी दिऐ दुहाई॥
धरती दे भारे जो चुक्कै, ठौकर लै अवतार।
जां तां अपणां दूत भेजदा, धरत करै उद्धार॥
दन्त दानवां इस धरती पर, कीती घोर तपस्या।
ठौकर अपणा कम्म कमाई, खिड़-खिड़ करदा हसिया॥

राम गुसाईं लंका दे विच, अपणी सभा बुलाई ।
सबना जो हुण देन दिलासा, गल्लो-गल्ल जताई ॥

दो० दानव आई धरतिया, पुट्ठे कम्म कमान ।
जीव-जन्त जां विलखदे हक्ख खुड़े भगवान ॥

वरदानी भट दानव योधे, सुरगें करन चढ़ाई ।
मीता कन्ने करन मखौलां, वरदाना जो पाई ॥

ईसवरे ने टक्कर लैणी, नईं सुखाला कम्म ।
अपणी करनी दा माह्णू जो, भरना पौऐ डन्त ॥

वीर बभीषण दई दलासा, राम-राम समझाया ।
लंका उप्पर राज करन दा, अपणा हुकम सुणाया ॥

वीर बभीषण मत्थे टेकै, होई जय-जय कार ।
बोलण लग्गा, 'हे राम अज्ज, कीता बेड़ा पार ॥

मन मेरे दा संशय कड्डी, भरमे भूत गुआया ।
सीरवाद ठंडा देई कै, कीती अपणी छाया ॥'

इतणी गल्ल गलाई तिन्नी, महलां जो हुण आया ।
राम गुसाईं सीता जो हुण, दूआ हुकम सुणाया ॥

राम गलाया, 'सुणै जानकी, सिर तेरें ऐ भार ।
अग्गी विच्चा मोड़ां तिज्जो, अग्न देव उपकार ॥

गढ़ लंका दा पाणी पीता, देणा अज्ज उधार ।
अग्गी दे भांबड़ विच मुड़ने, तेरे सब संस्कार ॥

खोटा सुन्ना अग्ग तपाई, जलदा सारा खोट ।
ठोकर पर ठोकर जां लग्गै, पूरी औऐ होस ॥'

गल्ल गलाई राम गुसाईं, अगला हुकम सुणाया ।
सोक बटिका अन्दर ऊचा, लक्कड़ ठला चणाया ॥

लखण राम जो दिक्खी होए, पूरे अज्ज हरान ।
जामवन्त नल नील वीर सब, अंगद तां हनूमान ॥

लछमण पुच्छै राम गुसाईं, के ऐ गल्ल गलाई ।
अन जल खादा गढ़ लंका दा, अकल फिरी ऐ भाई ॥

दो० ठौकर गल्ला जाणदा, लोकां नईं पछाण ।
तोता बोल उचारदा, राम-राम भगवान ।।

छन्द/ धरतिया आई करी मेल् तां बजोग होन,
कबित्त ठौकरे दा अन्त कोई सन्त ई पछाणदा ।
जप तप जोग सब सिद्धियां सधंगियां दी,
माह्‌णुआं पछाण नईं जीब-जन्त जाणदा ।
छोली सुट्टै सागरां जो पाणिएं नचोड़ै आई,
पाणिएं दा पाणी दुद्द वक्खरा एह छाणदा ।
बोलदा एह 'संसार' लछमण वीर-धीर,
समझै न माया जाल् राम जेह्‌ड़ा ताणदा ।।

महाकाव्य माया

षोडश सर्ग

छन्द/ कवित्त

जिसदी न थाह कोई धरती पताल गास,
जल-थल जीब-जन्त विच जिदी छाप ऐ ।
देवते न पार पान सेसनाग सेज जिदी,
ब्रह्म सिब करै दिन रात जिदा जाप ऐ ।
जिसदा न भेत कोई इन्दर गनेस आल,
बेद विच लिखिया न कदी कुनी नाप ऐ ।
बोलदा एह 'संसार' जिसजो न जाणै कोई,
निरगुण गुणी राम अपणे ई पाप ऐ ॥

दो० करन तपस्या देवते, ठौकर भेत न पान ।
ऋषि मुनि तप जप हजारां, तपी भलेखे खान ॥
'अग्गी दे विच आई एथूं', सीता थी अजमाणी ।
मिज्जो कजो बचाया भाई बैद सुखेणे आणी ॥
कत्ती पिज्जी करनी थी जे, सारी तुसां कपाह ।
छैल-छबीली सुन्ने लंका, कीती कजो तबाह ॥
वीर जटायू ने दस्सा थां, अपणी जिन्द गुआई ।
कजो मारिया वाली भाई, अपणी जात घटाई ॥
हनुमान ने कजो सियापे, इतणे आई पिट्टे ।
बांदर भालू लंका दे विच, इतणे कीते किट्ठे ॥
कुम्भकरण बलकारी योधा, मेघनाथ बलवान ।
लंका नगरी कजो उजाड़ी, धरती दी थी शान ॥
वीर नील नल पत्थर तारे, सागर उप्पर आई ।
जामवन्त सुग्रीबें कीती, लंका विच्च लड़ाई ॥

अंगद ने थे कौतक कीते, भेत वभीषण बोलै ।
दसकंधर दे सारे ताल्, साड़े अग्गें खोलै ॥
रिच्छ बान्दरां रली मिली कै, सबनां जोर लगाया ।
गढ़ लंका दा टुट्टा सारा, धरती उप्पर आया ॥
अणमुक जोर लगाई सबनां, ढाए सारे प्हाड़ ।
हे भाई ! मैं दियां दुहाई, अपणें वचने टाल् ॥
इतणी गल्ल गलाई लछमण, धनुषें तीर चढ़ाया ।
विच्च चिता दे लई नसाना, मेघबाण बरसाया ॥
चिता चफेरें अग्ग लुआंटे, होई अणमुक लोअ् ।
अद्द समाने गई लपारी, जिय्यां बल् घियोअ् ॥
अग्गी दे सेके ने धरती, तपी गई जां सारी ।
चऊं पासियां फिरी चफेरें, छाल जानकी मारी ॥

दो० चिता चणाई राम ने, अग्ग लछमणे तीर ।
अगन परीछा जानकी, होए लोक अधीर ॥

लछमण झूरै अपणे बाणे, धोखा कीता राम ।
तुर-बुर करदा दिक्खै सारें, अग्ग गई असमान ॥
लछमण ने बिन सोच बचारें, अग्न बाण बरसाया ।
मेघबाण छोड़ा विच तिसदे, हत्थे विच नीं आया ॥
खरा करदियां होऐ माड़ा, तां मरजी करतार ।
ठौकर दी मरजी बिन धरती, नीं ऐं बेड़ा पार ॥
लछमण तोपै मेघ बाण जो, था धरती पर आया ।
विच्च पताल् गिया समाई, थी ठौकर दी माया ॥
झूरै लछमण अपणी करनी, वड़ा भलेखा खादा ।
बाण चलाई सोचै मैं तां, कीता अग्गी बादा ॥
डफलोया अज्ज लछमण धरती, माया नईं पछाणै ।
नीं सीता नीं राम गुसाईं, जो हुण पूरा जाणै ॥
चिता चूंडिया चढ़ी जानकी, सेक अम्बरें छह्‌ोया ।
सारे पुच्छन इक दूए तों, अज के अचरज होया ॥
रुक्ख बूट सब पसू पखेरू, सुन्न हुई गे सारे ।
धरती छाए चऊं पासियां, अग्गी दे चिंग्गारे ॥

सागर छाली मद्धम होई, पौण फणाके बन्द ।
सूरज दी लोऽ घटी गई हुण, डुबी गिया था चन्द ॥
बान्दर सेना बिलखै सारी, नल नील सुग्रीब ।
हब्ब गए हुण अग्गी दिक्खी, सब बणे दे जीब ॥
जामवन्त अंगद अज सारे, कनै वीर हनुमान ।
डोलन सारे हाखीं पाणी, छम-छम नीर बहान ॥
सिरें हत्थ हुण लछमण रोंऐ, के कीता तकदीर ।
कुथू गुआया कुनी कड्डिया, तरकस विच्चा तीर ॥

दो० धरत पतालें सागरें, अग्ग गई असमान ।
बिलखन सारे जीब हुण, राम भेत नी पान ॥

दो० ठौकर माया खेलदा, माहणू नईं पछाण ।
सीता लछमी धरतिया, राम ईश भगवान ॥

ठौकर माया धरती उप्पर, नईं पछाणै कोई ।
सीता राम उचारन सारे, डुस्कन दूर खड़ोई ॥
गढ़ लंका विच कन्नो सन्नी, दानव सब्ब गलान ।
रावण दानव सीता चोरी, चिता चढ़ाई राम ॥
कोई बोलै, 'खून सिरे पर, राम गुसाईं आया ।'
भेत कोई न जाणै पूरा, नईं पछाणै माया ॥
गल्ल कोई न जाणै सच्ची, बोलन सब्ब सुनन्दर ।
कोई बोलै, 'राम मदारी, कोई बड़ा कलंदर ॥'
कोई बोलै, 'असां भलेखा, सुपना तां नी होया ।
राम ! राम तां रावण जीन्दा, अज्ज मुड़ी कै होया ॥'
कोई बोलै, 'धरती उप्पर, अज के होया बादा ।
सुरगे उप्पर सीता जो तां, आया रावण सादा ॥'
राम रावणें दी गल इक्को, सब्ब दिले दे चोर ।
बाह्‌रे तों तां चिट्ट चरेलें, अन्दर तों किछ होर ॥
अज्ज जणासां दा मुल नीं ऐ, मरद करै तां होऐ ।
सीता सच्ची होणे ताईं, अग्गी विच्च फकोऐ ॥
राम गुसाईं जो जे सीता, पर था नीं बिसुआस ।
धरती कजो नुहाई लउएं, तीरां भरिया गास ॥

सीता दी सच्चाई परखै, राम तां अग बलाई ।
राम गुसाईं कुजो परीछा, दिऐ धरत पर आई ।।
जोरे वाझी रोब-नमाणा, कूली बेल जणास ।
मरदां दा जे लई सहारा, जीणे करदी आस ।।
अप्पूं इन्नां नईं सिक्खिया, अपणा जोर जमाणा ।
मरदां ने तां कीता इस पर आई जोर तंघ्‌णा ।।'

दो० सतयुग त्रेता द्वापरें, कलियुग धरती भार ।
माता नारी भैंण तां, खाऐ आई मार ।।

'कदीं पियाऐ दुद्द छातिया, कदी पियारे झोलैं ।
भैंण वणी कै भाई अग्गें, अपणें दुखड़े फोलैं ।।
सदियां तों तां अपणे आपें, अबला नार कहाई ।
ताईं तां सिब संभू ने वी, गौरां अग्गी पाई ।।
अप्पूं होई मरदां ताईं, कई वरी कुरबान ।
मुल्ल न जाणै कोई इसदा, सब अग्गी विच पान ।।
अपणे पैरां नईं खड़ोऐ, नीं होऐ मजबूत ।
जिन्द इसा दी सदा उधारी, नीं छड्डन जमदूत ।।
राम गुसाईं दा हक बड्डा, सीता हक्क घटाया ।
मरद जणासा उप्पर अपणा, दूणा कहर कमाया ।।
कजो जानकी राम गुसाईं, दे कन्ने थी आई ।
कजो जंगलां दे विच विलखी, भुक्खी तां तरिहाई ।।
कजो राम दे ताईं इन्नां, अपणा हक्क घटाया ।
जिन्नी अपणा हुकम सुणाई, इस जो अग्गी पाया ।।
उपर जनाने मरदां दा हक, राम जताऐ पूरा ।
कनैं जणासां दे हक्के जो, रक्खै राम अधूरा ।।
काणां बंड्डा नई झलोऐ, तकड़ी झोलें होई ।
इन्हां छाबियां धरती पौणां, तन्द गई पलठोई ।।
जालूं तिक्कर इन्हां जणासां, जो नीं औणीं होस ।
तालूं तिक्कर मरद माह्णुआं, दा नीं ढलना जोस ।।
गढ़ लंका विच सोग मनाया, रावण तों वी दूणा ।
दसकंधर दी राणी रोऐ, गल्ल सुणी कै कूणां ।।

हक्क बरावर नईं जणासां, जुग्गां तो ऐ भाई ।
रावण ताऽईं पैदा होया, राम-राम रघुराई ।।

दो० जे हक पूरा सारियां, तां नीं मारो मार ।
तां ठीकर विसराम ऐ, नीं होऐ अवतार ।।

दो० हक्क बराबर होऐ न, धरती पौऐ भार ।
दई देवियां तों सदा, माह्‌णू खाऐ मार ।।

पटराणी दी मरजी विन, रावण पैर न पुटदा ।
गढ़ लंका दा पक्का सप्पड़, कदी काल्‌ नीं टुटदा ।।
रावण दी मरजी विन जान्दी, पंचवटी नीं भैण ।
स्रूप नखा जो लोक कदी नीं, अज्ज गलान्दे डैण ।।
इक दूए दा हक नीं पूरा, इसा धरतिया भाई ।
ताईं तां इस धरती उप्पर, हर दम मार कुटाई ।।
कोई खिज्जै जोरें रस्सी, कोई धागे धीड़ै ।
विच्च कमान्दें कोई जाई, बंज बेलणे पीड़ै ।।
इक दूए जो हाखीं दस्सै, कमजोरे जो तगड़ा ।
दिनें धियाड़ें लुट्ट-पलुट्टी, इक दूए ने झगड़ा ।।
जे सबनां दी पुछ-गिछ होन्दी, राम न चलदी पेस ।
सीता आई चिता न चढ़दी, अज्ज बगाने देस ।।
हुकम मनोन्दा नईं राम दा, चिता न कदीं चणोंदी ।
इकसी दी गल सिरें न चढ़दी, मतियां मती मतोन्दी ।।
इस गल्ला दे ताईं खोटे, इक्क जणें दे राज ।
सबनां दी गल सिरें चढ़ै तां, होऐ खरा समाज ।।
इक आई ने सबना उप्पर, अपणा हुकम चलाऐ ।
जिसदे उप्पर मरजी तिसदी, कहर-जुलम जो ढाऐ ।।
राम गुसाईं खरा न कीता, कीती सबना सुटणी ।
पापे दी गठ भारी होई लोकां तां नीं चुकणी ।।
सीता दी तां घोर परीछा, अग्गी बाल्‌ी कीती ।
अपणी फटियो चादर मरदां, रती भरें नीं सीती ।।
मरियो जो ठीकर वी मारै, जीन्दें हत्थ न लाऐ ।
छुरिया दी नोका पर कोई, जे मरजी गलुआऐ ।।

दो० चलै कुसी दी पेस नीं, ढूण-मढूणे लोक ।
जीव्हां लग्गे बूजड़े, सारें छाया सोक ॥

सीता जो तां रावण कँदा, दा था लांछन लग्गा ।
मरदां दे तां कई ठकाणे, फिरदे जग्गा-जग्गा ॥
राणियां जो कुण वोली सकै, तेरी काणीं हक्ख ।
कंगली जे झूंडे न कड्डै, लोक चढ़ान्दे नक्क ॥
राम गुसाईं जो पुछणे दा, जिगरा कुनीं न कीता ।
कुस्स कसूरें उप्पर चाढ़ी, अज्ज चिता पर सीता ॥
जीब-जन्त सव ढूण मढूणे, दानव माह्.णू सारे ।
पटराणी रावण दी पुच्छै, गासें अग्गी गारे ॥
त्रिजटा जो पुच्छै बकलोई, अंवर होया लाल ।
चऊं पासिया मुहएं बाकी, भिरी फिरा दा काल ॥
के होया अज सोक बाटिका, धूं-धुआंखड़ छाया ।
इय्यां लग्गै गासें उतरी, सेक धरतिया छाया ॥
चिड़ी घुटारी कौं नीं ब्रोलै, चऊं पासियां चुप्प ।
तत्ती लू-तां भुन्नै पिंड्डे, तेज वड़ी अज धुप्प ॥
सूरज गासें काला़ सुज्झै, के होया अज भैण ।
बाह्.र खड़ोई दिक्ख जरा तूं. गास लगा ऐ ढैण ॥
पत्तर रुक्खां दा नीं झुल्लै, दिने ध्रियाड़ें तारे ।
गढ़ लंका विच अज के होया, अवलच्छण हन सारे ॥
वाह्.र जाई कै दिक्ख तरिजटा, नदियां नीर खड़ोता ।
'सीता अग्गी जली़ गई अज, बोलै मेरा तोता ॥
लट-पट पैंछी राम न बोलै, ढूण मढूणा होया ।
पाणी दा डिब्बर धरती पर, तोता तां अज रोया ॥
इस तोते जो सोक-बाटिका, सीता पाऐ चूरी ।
तोता पूरी गल्ल न दस्सै, इस दी गल्ल अधूरी ॥

दोज पसू पखेरू साफ मन, माह्.णू झूठा प्यार ।
सीता वाझी विलखदा, तोता अज्ज लचार ।

दो० 'अबलच्छण हन धरतिया, दिने धियाड़ें न्हेर।
तोते दी गल सुणी कै, कजो करा दे देर॥'

पिंजर दे विच तोता रोऐ, हाखीं नीर बहाऐ।
ढूण मढूणां फंग्गा खोलै, गल बड़े लमकाऐ॥
त्रिजटा देर करैं मत धरती, सारी डग-मग होई।
तोता डुस्की सिसकी रोऐ, इसदी जिन्द घटोई॥
त्रिजटा ने जां गल्ल सुणीं तां, पिंजर लिया उतारी।
पटराणी हुण दुद्द पियाऐ, तोता भरै उडारी॥
हाखीं खोड़ी तोता बोलै, 'पटराणी गल माड़ी।
अग्गी उप्पर चढ़ी गई अज, सीता भैण पियारी॥
राम गुसाईं रावण मारी, पुट्ठा कम्म कमाया।
अंस रावणे दी धरती पर, अपणां वंस मुकाया॥'
सच्चा होऐ राम धरतिया, सीता अग्गी पाई।
मैं पिंज्जर विच कैद राणिएं, भैणां दा था भाई॥
पिंजर दे लोए जो तोड़ी, लई उडारी उडदा।
गासे दे मैं नीर लियाई, अग्गी उप्पर सुटदा॥
सीता तां कैदा विच कड्डी, मिञ्जो पिंज्जर पाया।
राम गुसाईं सीता उप्पर, अपणा जोर जमाया॥
हे राणी ! तूं सतवन्ती ऐं, सत दा मन्तर मार।
अग्गी ठंडा पाणी पाई, सीता बाह्र नकाल॥
जली गई सीता अग्गीं तां, नीं बचणी एह जान।
लट-पट पैंछी कुनी गलाणा, राम-राम भगवान॥
इतणी गल्ल करी कै तोतें, लम्मी भरी उडारी।
पिंज्जर फाटक खोड़ी दित्ता, मन्दोदरी पियारी॥
उडी उडारी चिता उप्परें, तोता ठुंग्गां मारै।
सीता जो अग्गी विच तोपै, भगवन राम पुकारै॥

दो० तोते दिक्खी चिता पर, सारे होए दंग।
हाखीं पाणीं डोलदा, अग्गी पाऐ ठंड॥

पटराणी ने मन्तर मारी, सारी अग्ग बुझाई।
सोक वाटिका सणे तरिजटा, हक्ख झमकणे आई॥

सीता जो अग्गी चा कड्डी, अपणी हिक्का लाया ।
ठौकर इस्स मलापे दिक्खण, सुरगे छड्डी आया ।।
मन्दोदरी राम जो पुच्छै, के कीता रघुराई ।
सतवन्ती ऐ सीता नारी, अग्गी विच्च तपाई ।।
राम गुसाईं दिक्खन धरती, छम-छम डोलन नीर ।
सीता दा सत बल दिक्खी कै, होए राम अधीर ।।
पटराणी दी सेना दे विच, होई जय जय कार ।
हाखीं मल़दे उठी खड़ोते, हनूमान बलकार ।।
लछमण अंगद जामवन्त हुण, सारे होए दंग ।
वीर नील नल सुग्रीवे जो, चढ़ी पिया था जन्द ।।
गढ़ लंका दा बच्चा बुड्डा, जय-जयकारा बोलै ।
वीर बभीषण पटराणी दा, सत-बल आई तोलै ।।
मन्दोदरी अमर होई अज, राम राम रघुराई ।
देव वमाना विच्चा दिक्खन, अंबर उप्पर आई ।।
समय-समय दी गल्ल एह भाई, जहर पियाला मिट्ठा ।
चिरंजीव मन्दोदरिया जो, राम गलाई दित्ता ।।
राम गलाया, 'हे पटराणी !, तू पाई अज ठंड ।
मुकी गई अज पापें भरियो, रावण दें सिर पंड ।।
सतवन्ती नारां दे तप ने, धरती धुरी खड़ोती ।
सती जणासां दे तप दिक्खी, सागर गुल्लै मोती ।।
एह जणासां इस धरती दें, भारे जो नी थम्मन ।
डग-मग दिग्गज डोलन सारे, पर्वत थर-थर कंबन ।।

दो० जेत्थूं रोज जनानियां, जो धक्के दुतकार ।
तेत्थूं उल्लू बोलदा, कोप करै करतार ।।

दो० सीता लछमी गौरजां, धरती दे अवतार ।
माया रूपें धरतिया, ठौकर खाऐ हार ।।
जिस धरती दे माह्णू सारे, पुट्ठे कम्म कमान ।
तिस धरती पर हिल्लण होऐ, बणदी युद्ध मदान ।।
बुरे माह्णुआं दा अपणे पर, धरत न झल्लै भार ।
जेत्थूं लग्गै अग्ग पाणिएं, तेत्थूं लउएं नाल़ ।।

लंका दी धरती पर रावण, दानव जमिया आई ।
मैली धरती कीती तिन्नीं, पुट्ठे कम्म कमाई ।।
गढ़ लंका पर सारें होया, रावण दा संस्कार ।
जो राजा सो परजा होई, धरती बदिया भार ।।
जिस धरती पर माह्णू आई, जे किच्छ कम कमान ।
तिस धरती दी मिट्टी पाणी, तिय्यां बणदे जान ।।
जिस धरती पर खून खराबा, होऐ मार कुटाई ।
तिस धरती दी मिट्टी अपणें, पिंड्डें दिया छुहाई ।।
तिस चिक्का दा असर सरीरें, आई छौरा पौऐ ।
जिस पिंड्डे ने मिट्टी छुहोऐ, रात दिने नीं सौऐ ।।
फुल्लां कन्नें कंडे जम्मन, कुदरत दा दसतूर ।
भले माणसां अक्खें बक्खे, लुच्चे होन जरूर ।।
खरे माह्णुआं जो बुरियां दा, असर रती नीं होऐ ।
कंडे उप्पर खिड़-खिड़ हस्सै, फुल्लें कली सरोऐ ।।
मन्दोदरी फुल्ल जंगल दा, रावण दानव कंड्डां ।
ऊचा झुल्लै गासें जाई, सच्चाई दा झंड्डा ।।
पटराणी दी हिक्का उप्पर, पई गई हुण ठंड ।
चिट्टी होई चौलां साईं, वखरे होए बंड ।।
अमर करी मन्दोदरिया जो, राम दिलासा दित्ता ।
अपणी सारी सेना सद्दी, बचन सुणाया मिट्ठा ।।

दो० सद्दी अपणे फौजियां, राम लगे समझाण ।
सद्दे योधे राम ने, जामवन्त हनुमान ।।

इक-इक योधें दा हुण वखरा, राम ने कम सराह्या ।
बोलण लग्गे, 'हे बीरो हुण, धरती पाप घटाया ।।'
सेना पुच्छै राम गुसाईं, गल्ल समझ नीं आई ।
सीता जो अग्गी विच पाया, राम-राम रघुराई ।।
सेना दी जां गल्ल सुणी तां, राम सब्द समझाया ।
बैदेही जो अग्गी पाणे, दा कारण जतलाया ।।
बोलण लग्गे सीता कन्ने, माया थी लपटोई ।
आल़ दुआल़ें रावण छाया, सीता हेठ ढकोई ।।

ग्यारह् म्हीने दसकंधर दी, छाया आल्-दुआलें ।
सीता जो अज छड्डी वीरो, सिद्दी गई पतालें ॥
रावण दे हिरदे विच सीता, रोम-रोम विच आई ।
ताईं तां अग्गी विच पाई, रावण छाया ढाई ॥
सेक न लाईए सुन्ने जो, सुन्ना खरा न होऐ ।
नक्क ब्राल्ुए कदी न थम्मैं, लबड़े सणें धड़ोऐ ॥
रावण तां रावण था पूरा, सीता हिरदें पाई ।
अन्तकाल मौता दे वेलें, तिन्नी नईं भुलाई ॥
दन्त दानवां बुरे माह्णुआं, दरसन सुपने खोटे ।
सामरतक जे भिरी खड़ोऐ, तां जिन्दू दे धोखे ॥
दौं घड़ियां विच बुरे माह्णुआं, दे चढ़दे संस्कार ।
अग्गी कन्ने हवन करी कै, होऐ भिरी उद्धार ॥
सीता सतवन्ती थी ताईं, अग्गी असर न होया ।
रावण दा छौंटा छौरा था, भल्-भल् करी फकोया ॥
जे सीता जो चिता चणाई, अग्गी विच नीं पान्दे ।
सारे लोकी निक्के बड्डे, सांजो बुरा गलान्दे ॥

दो० अग्नदेव तों मोड़ना, था सीता दा रूप ।
राम गुसाईं फौज जो, दस्सी गल्ल अनूप ॥

दो० जय-जय बोलै फौज सब, राम करै उपदेस ।
माया नच्चं धरतिया, विसणू ब्रह्म महेस ॥

गढ़ लंका विच चिता चणाई, लोक-लाज नीं लग्गै ।
माया छाया भसम करी कै, धरमे धूणी जग्गै ॥
अग्गी दे विच भल्-भल् होए, माड़े सब संस्कार ।
रावण दी अज पूरी होई, धरती उप्पर हार ॥
दसकंधर दी रूह्आ जो हुण, खरी तसल्ली होई ।
रावण छाया सुरगें आई, सीता निर्मल होई ॥
इक फणियर तां डंग चलाई, विच्च बामियां जाऐ ।
दूआ तां सल् धुखदा दिक्खै, अपणा फेरा पाऐ ॥
रावण तां था पूरा खड़पा, छाया थी चंडाल ।
चली गई धरती जो छड्डी, माया कटिया जाल् ॥

मरदी वारी जे माह्णू दे, बणदे हन संस्कार।
गासें जाई रूह फिरै तां, होऐ नीं उद्धार ॥
रावण दे उद्धारे ताईं, सीता अग्गी पाई ।
दसकंधर दी रूह धरत थी, सुरगें अज्ज चढ़ाई ॥
चार वेद छः सास्तर जाणै, रूह रावणें चोर।
पता नईं कुस कूंटां तो तां, कालूं खान्दी मोड़ ॥
दसकंधर जो पार लगाया, जतन कराए पूरे।
रावण छाया निर्मल कीती, सुरग दिऐ हंगूरे ॥
राम गुसाईं सेना जो अज, सारी गल्ल जताई।
धन-धन सारी सेना बोलै, राम-राम रघुराई ॥
राम गुसाईं गल्ल गलाई, सबनां जो समझाया।
बोलण लग्गे हे वीरो था, सबना कम्म कमाया ॥
जीव-जन्त दा लई सहारा, मै था युद्ध रचाया।
दसकंधर तों डरदा माह्णू, नेड़ें नीं था आया ॥

दो० जीव-जन्त दा राम पर, होया ऐ उपकार ।
जीव-जन्त सब धरतिया, ठौकर दा परबार ॥

राम गुसाईं गल्ल गलाई, रिछ बान्दर समझाए।
सीर-बाद अपणा देई कै, जंगल विच्च पुजाए ॥
सेना सारी मुड़ी वणां जो, हाखीं नीर बहाई।
रिच्छ बान्दरां रोई रोई, अपणी जिन्द सुकाई ॥
राम वियोगें सेना रोऐ, करड़ा हुकम मनोया।
हाखीं दे रोजे दे कन्ने, लंका चिक्कड़ होया ॥
रोन्दे धोन्दे जंगल चल्ले, बान्दर रिच्छ अधीर।
राम बछोड़ा नईं झलोऐ, हाखीं डोलन नीर ॥
सारी सेना जंगल भेजी, राम-राम रघुराई।
लई बभीषण ओथूं आया, इक्क वमान सजाई ॥
सीता राम लखण सब बैठे, अंगद तां हनुमान।
नल नील सुग्रीव चले सब्ब, जामवन्त बलवान ॥
मार उडारी गढ़ लंका तों, उडिया छैल वमान।
देव देवते सुरगे उप्पर, आई फुल्ल बरह्‌ान ॥

विच्च अयोध्या लोअ् चानणां, होया भरत अधीर ।
खुसिया दे विच गिया ब्रतोई, हाखीं आया नीर ॥
सत्रृघुन अज राम गुसाई, दा हुण निक्का भाई ।
राम बछोड़ा भुल्ला सबनां, मिल्लन जफियां पाई ॥
विच्च अयोध्या रौणक होई, लोकां दीय्ये बाल़े ।
जग मग जगै दियाल़ी सारें, मुकी गए दिन काल़े ।
अज कौशल्या दी हाखीं विच, लोअ् मुड़ी कै आई ।
मिल्ले राम सौमित्रा कन्नें, कनैं ककेई माई ॥
कैकेई हुण सरमा मारी, जाई दूर खड़ोऐ ।
अपणी करनी जो झूरै हुण, अन्दरो अन्दर घटोऐ ॥

दो० न्हेरा इक दिन मुक्कदा, गासें चढ़दा चन्द ।
सदा न धरती गरमियां, इक दिन औऐ ठंड ॥

दो० ठोकर करमां भुगतदा, कैकेई नीं दोस ।
करमां बणदे भाग हन, ठोकर तां निरदोस ॥

कैकेई दे राम गुसाईं, चरनां सीस नुआया ।
बोलण लग्गे, 'हे माता तूं, मुंह ऐं अज लुकाया ॥
माता तेरी आज्ञा मिज्जो, बणी गई वरदान ।
धरती दा तूं भार घटाया, जाणै सकल जहान ॥
जे माए वणबास न हुन्दा, रावण कदी न मरदा ।
इस धरती पर सच्चाई दा, झंडा कदी न चढ़दा ॥
तेरे वरदाने ने माता, दानव सब संहारे ।
अज्ज धरतिया खुशियां सारें, बज्जन ढोल नगारे ॥'
महलां तों आई कै कीता, राम इक दरबार ।
आयोध्या दी नगरी अन्दर, राम राम जयकार ।
दूएं दिन था राम गुसाईं, अपणा राज चलाया ।
भरत सत्रूघुन लछमण आई, सबनां सीस नुआया ॥
राम राज विच सब लोकां दी, होऐ खरी सुणाई ॥
बाघ बक्करी इक भणैन्दे, पीन्दे पाणी जाई ॥
छल़-छिद्दर नीं करदा कोई, लोकी सच्च गलान ।
अपणे अपणे कम्म घरां दे, रज्जी सब्ब कमान ॥

मैंजर चुगली झूठ डरे हुण, चोरी लुक्की कूणां ।
राम गुसाईं दे राज्जे विच्च, अन-धन होया दूणा ।।

भ्रष्टाचारे दा नां उडिया, चूंड-पचूंडी बन्द ।
पसू पखेरू निरभै होए, पाणीं आई ठंड ।।

लोकी भित्तां खुलियां छड्डी, अणमुक कम्म कमान्दे ।
राम राज विच जीव पाणिएं, दे वी सुख मनान्दे ।।

धरती उप्पर जीवां हत्या, राम हुकम ने बन्द ।
धरत पतालें गासें चढ़िया, राम-राज दा चन्द ।।

कुं० जंगल जाई खेलदा, कोई नइं शिकार ।
धरत पतालें गास थी, जीव जन्त घलियार ।।
जीव जन्त घलियार, सुखी थे लोक सुनक्खे ।
खुल्ले भित्त दुआर, नइं थे चोर उचक्के ।।
बोलै कवि 'संसार', राम दे राज्जें मंगल ।
बधिया खूब बपार, बूटियां छाए जंगल ।।

सप्तदश सर्ग

कुं० तोता जोरें बोलदा, राम राज वरदान।
नीं होया नीं होंग हुण, राजा राम महान ।।
राजा राम महान, न बकसन तिसजो लोकी।
आई बुरा गलान, अकल दुनिया दी मोटी ।।
बोलै कवि 'संसार' राजियां हर इम धोखा।
राजें परजा बाड़, उडै खुल्ला नीं तोता ।।

भेरो बदली रातीं जो थे, राम चक्करां लान्दे।
लोकां दी इक-इक गल्ला दा, अप्पूं पता लगान्दे ।।
इक दिन धोबी धोवण लड़ियो, जोरें जोर सुणान।
सीता जो तां कड्डन गालीं, राजा बुरा गलान ।।
धोवण घाटें कपड़े धोई, देर घरे जो आई।
धोबी ने थी आफत चुक्की, गल्लो गल्ल सुणाई ।।
धोबी बोलै, 'सुणैं धोवणीं, मैं राजा नीं राम।
मैं तां कदी न बकसां तिज्जो, तू होई बदनाम ।।
सैह राम तां राजा जाणै, किय्यां तिन्नीं रह्‌ाई।
ग्यारह महीने रावण दे घर, सीता राम बसाई ।।
पता नईं तूं कुथूं रई कै, माड़ा कम्म कमाया ।।
धोबी-धोवण अणमुक मारी, जोरें जोर गलाया ।।
तिसा जणासा जो घर रक्खै, राजा होऐ राम।
मैं तिज्जो घर बसण दियां नीं, जीणां करां हराम ।।
धोवण बोलै, 'सुणै धोविया, राजा राम दुहाई।
जे निसचा तूं मेरा लैणां, तां अग्गी दिख पाई ।।

परखी लै तूं सीता साईं, मैं सतबन्ती नार।
जे गल झूठी मेरी होई, तां तूं मिज्जो मार॥
धोवण दी गल सुणीं धोबिएं. अपणा बचन सुणाया।
धोबी बोलै, 'सुणै धोबणीं, जादू पढ़ी न आया॥
नीं सिखिया मैं टूणां मन्तर, नीं मैं बड़ा मदारी।
राम चन्द तां जादू टूणें दा ऐ बड़ा खलारी॥
लंका दे विच जाई तिन्नी, अणमुक टूणे कीते।
रावण दे सक्के भाई जो, दित्ते धूण-पलीते॥

दो० झूठ गलाणां राजियां, धरती करने राज।
असां मजूरी चाकरी, सांजो तिसने भाग॥

राम आल तां वीर बभीषण, भेत रावणें खोलै।
वसीकरण मन्तर दे कन्नें. इक-इक गल्ला बोलै॥
वीर बभीषण वसें न हुन्दा, गढ़ लंका नीं टुटदा।
रावण दा इस धरती ऊप्पर, वंस कदीं नीं मुकदा॥
सुग्रीवे जो वसें करी कै, बाली था मरुआया।
अंगद तिसदा पुत्तर तिन्नीं, चरनां दास बणाया॥
जादूगर जे राम न हुन्दा, सीता कदीं न बचदी।
जान्दी अग्गी विच्च फकोई, खिड़-खिड़ करी न हसदी॥
धोबी बोलै, 'सुणैं धोवणीं, मैं तां भोला-भाला।
मैं हुण तेरा विच्च अयोध्या, कल करां मुंह काला॥
जादूगर मैं नईं मदारी, नीं मैं राजा राम।
मैं भीं पड़दे ढक्कां तेरे, तूं होई बदनाम॥
राम गुसाईं जो सीता दी, होणी तगड़ी लोड़।
बदकार जणासां दे अग्गें, दिन्नां हत्थां जोड़॥
जे तूं चिड़-चिड़ जैदा कीती. असां चाढ़नी मार।
जे तूं बचणां तां इस वेलें. निकल घरे ते बार॥
अद्दिया रातीं अज खड़ोती, लाई इतणी देर।
तूं तां मेरा नक्क बढाया, राम राज विच न्हेर॥
धोबण हत्थां जोड़ै धोबी, दित्ती खूब दुहाई।
भेस वटाई राम खड़ोते, लीला राम रचाई॥

बोलण लग्गे हत्थां जोड़ी, 'अज दी रात निहाल़।
दिन चढ़दे ने लई मुकदमें, जायां तूं दरबार।।
पाणी दा पाणीं नतरोणां, दुद्दे होणा दुद्द।
भाई धोबी अज्ज घड़ी पर, ठंडी कर तूं बुद्ध।।'

दो० मैले भेसें रात थी, नीं पछणोए राम।
धोबी बोलै, 'हट परें, मैं होआं बदनाम।।'

दो० हाखीं पड़दा मह्णुआं, नीं पछणोन्दे राम।
हर दम सीना जोरियां, पल छिन नीं बिसराम।।

मैं तां इजतू आल़ा भाई, करां मजूरी कर्म।
राम गुसाईं दे नक्के पर, रती रई नीं सरम।।
जिन्नी अपणी सरम गुआई, दूए दी के ढक्कै।
अपणीं इज्जत चली गई तां, दूए दी के रक्खै।।
समझाया तां अणमुक्के दा, धोबी गल्ल न मन्नैं।
राम गुसाईं दी गल्ला जो, धोबी पूरा भन्नै।।
हारी हुट्टी उठी खड़ोते, महलां आए राम।
विल़सण मंज्जे उप्पर होई, निन्दर अज्ज हराम।।
सीता पुच्छै राम गुसाईं, अज के टूणा होया।
सज्जी हक्ख फणाके मारै. को महले पर रोया।।
राम गुसाईं सीता जो हुण, सारी गल्ल सुणाई।
धोबी-धोबण दी समझाई, सारी अज्ज लड़ाई।।
इस धरती पर छिट्टू लग्गै, राम न बक़सन लोक।
इक-इक गल्ला ताईं राजे, जो दिन्दे हन दोस।।
राम राज विच बाघ बक्करी, पाणी पीन्दे किट्ठे।
राम ! राम पर लोक उछाल़न, गन्दे पाणी छिट्टे।।
नी पकड़ोन्दी गल्ल करदियां, कदीं कुसी दी जीव्ह।
खान्दे दी जे दाढ़ी हिल्लै, उलटे होन नसीब।।
बाल़ भरे दी मैल राजियां, पर परजा नीं झल्लै।
इक-इक कम्मे जाचै आई, हेठें उपरें तल्लै।।
सच्चा होणां लोकां अग्गें, नईं सुखाल़ा कम्म।
सच्चाई दे ताईं तगड़ा, भरना पौऐ डन्न।।

जे राजा नीं चल्लै अप्पूं, तलुआरी दी धार ।
परजा काले बालां विच्चा, पुट्टै धौला बाल ॥

दो० राज लियोणां राम दा, नईं सुखाला खेल ।
परजा राजे पीड़दी, ताज्जें निक्लै तेल ॥

लोकां जो सुख देणें ताईं, दुखे च रैह्णा पोऐ ।
पहरेदार सपाई राजा, रात दिनें नीं सौऐ ॥
अप्पूं मारै सन्हां डाके, तां नीं पहरेदार ।
जिस राज्जें इनसाफ नईं ऐ, के करने दरबार ॥
जिस राज्जे विच परजा दा मन, अन्दरो अन्दर घटोए ।
मते रोज तां राज न चल्लै, घड़ी-घड़ी बदलोऐ ॥
जिस धरती दे राजे बोले, नईं सणोऐ गल्ल ।
जालूं विगड़ै विरकिट पौऐ, नईं मनोऐ मल्ल ॥
लोकां दी गल्लां दा राजें, असर रतीं नीं होऐ ।
धरती पौऐ ताज सिरे दा, तिसतों नईं चकोऐ ॥
मन चित लाई लोका दी गल, सोचै करै बचार ।
राम राज तां सच्चा भाई, जिय्यां अटल पहाड़ ॥
अप्पूं चुक्कै दुख दी पंड्डा, लोकां दिऐ सन्तोख ।
अपणें ताईं माड़ा राजा, लोकां तों निरदोस ॥
राम सारियां गल्लां सोची, कीता मनें बचार ।
सीता जो महलां विच रक्खी, होऐ नीं उद्धार ।
धोबी दे मन गल्ल रड़कणीं, नीं औणां सन्तोख ।
मिंज्जो सबनां लोकां देणां, दिन चढ़दे ने दोस ॥
सोची समझी मने बचारी, अपणां मता मताया ।
चौं घड़ियां दे तड़कें आई, लछमण वीर जगाया ॥
लछमण बोलै, 'राम राज विच, के होया रघुराई ।
इतणें तड़कें कजो जगाया, के आफत ऐ आई ॥
कुल-बुल होऐ मन दे अन्दर, राम गए डफलोई ।
अग्गे दी गल मुहएं अटकी, जीव्ह गई थथलोई ॥

दो० राम गुसाइं बोलदे, लछमण मेरे वीर ।
महलां छड्डै जानकी, परजा बी ऐ पीड़ ॥

दो० लोक न वकसन राजियां, भौएं होऐ राम ।
राम राज जो वी बुरा, लोकी अज्ज बणान ॥

सीता जो वणवास होऐ हुण राम ने गल गलाई ।
राम राज तों परजा मंग्गै, पूरी अज्ज सुणाई ॥
राम गलाया, 'अपणें कन्नां, अज्ज सुणीं मैं आया ।
धोबी अपणी धोबण मारी, सांजो बुरा गलाया ॥
धोबण रातीं कम्म कमाई, विच्च झोंपड़े आई ।
लई धोबिएं सीता दा नां कीती मार कुटाई ॥
धोबी बोलै, 'मैं राम नईं, धोबण मैं नीं रह्णी ।
सीता साईं अपणें घर मैं, धोबण नईं वसाणीं ॥
रावण दे घर रेई आई, राम गल् ने लाईं ।
'मैं राम नईं धोबी बोलै, मेरी खरी कमाई ॥
जिस गल्ला तों परजा दा मन, होऐ दुखी उदास ।
उस गल्ला जो कदीं न करिए, परजा करदी आस ॥
परजा जो दुख देणा भाई, राजें धरम न होऐ ।
चार दिशां दा राज परौह्णां, परजा जेथू रोऐ ॥
परजा मंग्गै लछमण सातों, सीता जो बणवास ।
सुख सन्तोषें परजा सौऐ, ठंडे भरै सुआस ॥
राम राज तां ताईं होणा, धरती धुरी खड़ोणां ।
परजा दा दुख मेथों भाई, तखतें नईं झलोणां ॥
अपणें सुख दे ताईं राजा, परजा कजो दुखाऐ ।
लोकां दे सन्तोषे ताईं, अपणा आप मुकाऐ ॥
सुखें सुखाल् नईं राजियां, दे शिर चढ़दे ताज ।
कंड्डे तिक्खे छैल् वछौणें, होन राजियां राज ॥
छडणा पौऐ परजा ताईं, अपणा सुक्ख सरीर ।
झलणा पौऐ विच्च कालजें, तत्ता पैना तीर ॥

दो० जिस राजे दा धरतिया, रती नईं सत्कार ।
तिस राजे जो ताज दा, नीं ऐं किछ अधिकार ॥

जोरे कन्ने राज करै जे, राजा धरती आई ।
ठोकर अपणां कोप करै तिस, राज्जें मचै दुहाई ॥

लोकां दी गल गासें जाऐ, ठौकर वज्जै ढोल ।
नईं सणोऐ बोल राजे, जो परजा दा बोल ॥
परजा दी गल नईं मनोऐ, खून खराबे होन ।
आप मुहारे माह्णूं रस्सी, पाई नीं जकड़ोन ॥
राजा आपूं सिद्दा चल्लै, लोकी सिद्दे जान ।
ढेर मढेरे राजे दिक्खी, लोकी छालीं लान ॥
जो राजा सो परजा होऐ, दिक्खा बुद्ध बचार ।
देणा पौऐ अपणें आपें, राजे जो किछ बाड़ ॥
इतणी राम गलाई गल तां, चिट्टी फिरी भियाग ।
बोलण लग्गे 'परजा ताईं, सीता करां तियाग ॥
लिय्या रत्थ सजाई लछमण, कजो करैं हुण आस ।
अज्जे तों सीता जो मेरे, हुकमे ने त्रणवास ॥
लोकां ताईं महल माड़ियां, छड्डण पौन्दे ताज ।
परजा दी गल्ल जा मनोई, सैह राम दा राज ॥
जिस राजे दी राणी परजा, ताईं छड्डै सुक्ख ।
जुगां-जुगां बी नईं सुक्कदा, तिस राज्जे दा रुक्ख ॥
राम राज तां राजा आणै, तगड़ा जिगरा बन्है ।
भुक्खा नंग्गा पैर पताणां, चल्लै लोकां कन्नें ॥
अप्पूं राजा महल माड़ियां, परजा धरती सौऐ ।
परजा दा सन्ताप कोप सब, राजे उप्पर पौऐ ॥
हे लछमण ! गल परजा दी हुण, मत्थें सिरें चढ़ाणी ।
परज पैर भवूती भाई, बिरथा नईं गुआणी ॥'

दो० लछमण होया हब्ब था, नई बलोऐ बोल ।
सीता दे भवनें जती, होया डोल-पडोल ॥

दो० राजा परजा दास ऐ, परजा हुकम अटल्ल ।
परजा हर दम तोलदी, राजे दा मन बल्ल ॥

बोलण लग्गी अज्ज जानकी, 'जे परजा ऐ चाह्न्दी ।
आणा रत्थ सजाई भाई, मैं जंगल आं जान्दी ॥
लोकां ताईं असां जणासां, कीते कई तियाग ।
हे लछमण मत देर करैं हुण, हाखीं खोड़ी जाग ॥

जिस गल्ला वी होऐ करना, परजा मन सन्तोष ।
मेरे बणवासे दा तिज्जो, रती नईं किछ दोस ॥'
इतणी गल गलाई जानकी, अपणा हुकम सुणाया ।
बणवासे जो जाणे ताईं, अप्पूं रथ मंगाया ॥
परजा ताईं अणमुक था हुण, सीता दा बलिदान ।
धरत खड़ोती धरम धुरी पर, लोकी मते गलान ॥
दिन चढ़दे ने लछमण सीता, लई बणें जो आया ।
विच्च अयोध्या धोबी-धोबण, जो था बुरा गलाया ॥
लोकी बोलन होछा माह्‌णू, होछा कम्म कमाऐ ।
धोबी दे मीह्‌णें ने सीता, अज्ज बणें जो जाऐ ॥
खरे बुरे जो नईं पछाणें, सिल्ला दई पछाड़ै ।
जिय्या भिल्लण चन्नण रुक्खे, चुल्ही दे विच बालै ॥
लोआ सुन्ना इक्को भाएं, मूरख नईं पछाण ।
तजां दे हीरे खोड़ी कै, पणियां तिल्ले लान ॥
सोध करा सुन्ने दी पूरी, अग्गी विच्च तपाई ।
पाणिएं अन्दर मैल होऐ तां, हेठें जमदी जाई ॥
निर्मल पाणी नीर वगै नित, मैला रती न होऐ ।
इस दे उप्पर धूड़-धुड़ैना, आई नईं खड़ोऐ ॥
होछा माह्‌णू चूंड-पचूंडी, करदा उलकापात ।
चिट्टे मैले नईं पछाणें, धोबी मूरख जात ॥

दो० तपन तपीसर धूणियां, तप तों औऐ तेज ।
फुल्ल खिड़ै विच जंगलां, कंड्‌डें होऐ सेज ॥

अपणें उप्पर मैल कदी नीं, पाणीं झल्लै भाई ।
परजा दी गल अपणें उप्पर, नीं ओढी रघुराई ॥
छड्‌डी सीता जंगल अन्दर, लछमण महलां आया ।
राम गुसाईं घुट्टी कै हुण, हिक्का कन्नें लाया ॥
बोलण लग्गे, 'भाई लछमण, आईं मिज्जो ठंड ।
लोकां दी गल चानण होई, चढ़ी पिया ऐ चन्द ॥
परजा ने तां नईं भुल्लणां, साड़ा घोर तियाग ।
लोकां दी गल सिरें चढ़ाई, राम करै हुण राज ॥

परजा दी गल सिरें न चढ़दी, राम राज था न्हेर ।
सूरज बंसें कालख लगदी, हुन्दा नइं सबेर ॥
लोअ् चानणां चमकै सारें, होई अज्ज भियाग ।
कुनी न करना इस धरती पर, सीता बड़ा तियाग ॥
इतणीं गल गलाई राम ने, अप्पूं गे डफलोई ।
लछमण दी हिक्का ने लग्गी, गल्ल गई जकड़ोई ॥
बोलै लछमण रोई डुस्की, के कीता रघुवीर ।
सीता जो अज बणें भेजिया, अप्पूं राम अधीर ॥
लछमण दी गल्ला दे उप्पर, राम ने गल सुणाई ।
बोलण लग्गे, 'सब्ब मुसीबत, उप्पर जणासां आई ॥
मरदां ने सांबी कै रखे, अपणे सब अधिकार ।
उपर जणासां तगड़े कीते, अपणें पैने वार ॥
मरदां अग्गें भिरी जनानी, जीन्दी हस्स तरुस्सी ।
मरद तिसा पर घूरी वट्टै, तां जणास नीं रुस्सी ॥
मरदां उप्पर बणीं मुसीबत, सैह जणासां झल्ली ।
कंदां कालख छहोण दिऐ न, काली होऐ मल्ली ॥

दो० मरदां औन मुसीबतां, लैन जनाने ढाल ।
औऐ आफत मरद पर, बणै जनाने काल ॥

दो० धी भैण दा रूप एह, मां होऐ जा नार ।
धरत जनाना रूप ऐ, कइं करै उपकार ॥

मरद जणासां दा हक मारी, अप्पूं किल्ला खाऐ ।
निरबल दस्सै बली जणासा, अप्पूं बली कहाऐ ॥
धरती उप्पर बली जणासां, सारे कहरे झल्लन ।
माह्णू दे पापां जो झल्ली, जिगरें कीली ठल्लन ॥
सीता ने अज अपणे उप्पर, धोवी दी गल ओढी ।
राम राज जो बुरा गलाया, मारी धोवण धोबी ॥
राम राज दे ताईं सीता, दित्ता इक वलिदान ।
सीता ताईं कदी न होए, राम-राम कुरबान ॥
इक पासें थे राम व्याकुल, दूएं थी वैदेही ।
घोर बणें विच सरयू कढें, तिसा जो निन्दर पेई ॥

साईं-संझा दी थी सुतियो, सूरज चढ़दें जागी ।
शेर गरजदे जंगल अन्दर, हाथी बोलन लागी ॥
जीव-जन्त सब विच्च जंगलें, सीता दे थे पाह्‌री ।
कैह्‌दा चा निकली कै आई, विच्च वणें दे वाड़ी ।
जंगल दे जीवां दी बोली, सीता जिगरा धड़कै ।
सीता अग्गें चिड़ू-पखेरू, रती भरें नीं फड़कै ॥
किल्ली बणें च तौर-बतौरी, सीता पागल होई ।
सीता जो दिक्खी कै धरती, छम-छम करदी रोई ॥
इक पासें तां भालू बोलन, दूएं थे भगियाड़ ।
सां-सां करदे अक्खें वक्खें, नालू खड्ड पहाड़ ॥
खड़े पहाड़ा उप्पर आई, मोर पपीआ बोलै ।
सीता अपणें दुखड़े जो हुण, कुस दे अग्गें फोलै ॥
गिया घरोई चन्द अंबरें, पखरू बोले सारे ।
लगे डुब्बणा गासें ऊचे, लस-लस करदे तारे ॥

दो० सीता दिक्खै जंगलें, पतरां दी थी छेड़ ।
आई छालीं मारदी, हिरना दी इक हेड़ ॥

हिरन खेलदे खबलें आई, अणमुक छालीं लान ।
भुलियां गल्लां सीता जो सब, आई याद करान ॥
सूरज रसमां दा परछौआं, रुक्खां उप्पर पौऐ ।
टप-टप करदा पाला नुचड़ी, धरती उप्पर पौऐ ॥
सीता दा दुख दिक्खी रुक्खां, डब-डब रोज चुआया ।
हिरन बणें दा छालीं लान्दा, सीता अग्गें आया ॥
रिच्छ बान्दरां दी इक टोली, सीता दिक्खण आई ।
सोचन सारे मन दे अन्दर, के कीता रघुराई ॥
सीता दिक्खी विच्च जंगलें, मिरगां रौला पाया ।
सूंकां मारै जीव जन्त सब, रुक्ख बूट गुरनाया ॥
सीता जो किलिया दिक्खी कै, जीव-जन्त थे हब्ब ।
सिरें हत्थ देई कै सोचन, होया बड़ा प्लद्द ॥
बालमीक ऋषिए दी कुटिया, पखरू बोल सुणाऐ ।
अपणी भाषा दे विच सीता, दे दुखड़े जो गाऐ ॥

हिरन बणें दे दौड़ी आए, कुटिया अन्दर सारे ।
ऋषिएं अपणीं ताड़ी लाई, साह सिरे जो चाढ़े ।।
दिब्ब दृष्टिया कन्नें ऋषिएं, सीता दिक्खी आई ।
मिरग पखेरू बणें च सारे, अणमुक देन दुहाई ।।
कुटिया छड्डी बालमीक हुण, सीता लागें आए ।
बैंदेही दे गए-गुआचे, साह मुड़ी कै आए ।।
ऋषिए जो दिक्खी कै सीता, हाखीं डोलै पाणीं ।
तुर-बुर करदी दिक्खै तिसजो, राणीं बणीं नमाणीं ।।
रावण बी ऋषिए दे भेसें, अलख जगाई आया ।
सीता माता जो पिछला अज, चेता मुड़ी कै आया ।।

दो० बेसुध होई जानकी, धरती पई पछाड़ ।
जियां हिरनी मूरछा, दिक्खै जां भगियाड़ ।।

दो० दुद्दें जलिया न पीय्यै, कोई चिट्टी छाह ।
डग-मग डोलै जिन्दड़ी, टुट्टै जां उत्साह ।।

सीता जो बेसुरत दिक्खिया, ऋषिएं मन्तर मारे ।
बैंदेही दे प्राण पखेरू, मुड़ी सरीरें चाढ़े ।।
हाखीं खोड़ी उठी खड़ोती, सीता बोलै राम ।
ऋषिएं सीता लई पछाणीं बोले बचन ललाम ।।
ऋषि गलाऐ, 'हे बेटी तूं', दस्स कुथूं तें आई ।
कुनी भेजिया घोर जंगलें, जय राम रघू राई ।।
तिस दा मिज्जो ना दस झट-पट, भस्म करां तत्काल ।
अपणें घोर सरापे कन्नें, सद्दां तिसदा काल ।।
जाणी जाण जुगां दा पूरा, सीता लई पछाणीं ।
परख लैंण दे ताईं बोली, इतणी तत्ती बाणीं ।।
बालमीक दे सीता कन्नां, लग्गे कौड़े बोल ।
तकड़ी डंड्डी नईं झल्लदी, बादें घाटें तोल ।।
सीता बोलै हे मुनिवर मैं, कटणा ऐ बणवास ।
राम राज दी परजा सारी, मेथों करदी आस ।।
अपणीं मरजी कन्नें मुनिवर, मैं जंगल जो आई ।
मिज्जो शाप दई दे तत्ता, ठंड दियां रघुराई ।।

परजा ताईं राम गुसाईं, सुख छड्डे हन सारे ।
ताईं तां गासे पर चमकन, सूरज चन्द सितारे ।
जिय्यां सूरज चन्दर चमकन, होऐ तारें लोअ् ।
खरा राज तां चानण दिन्दा, बल्दी जोत धियोअ् ॥
सीता ने ऋषिए जो सारी, अपणी गल्ल सुणाई ।
बालमीक ने धरमे दी अज, सीता धीअ् बणाई ॥
जंगल दे विच आणी सीता, अपणी कुटिया अन्दर ।
जग मग जोत जगी जंगल विच, कुटिया थी अज मन्दर ॥

दो० जिस घर नईं जनानियां, ता घर ऐ समसाण ।
तेथूं बास न ठौंकरें, खेलन भूत मसाण ॥

सीता दे औणे नें कुटिया, दे विच रल-छल होई ।
रुक्खां उप्पर भान्त-भान्त दे, पत्तर गए ढकोई ॥
मिरग वणें दे सीता दिक्खण, कुटिया नेड़ें आएं ।
शेर हाथियां बान्दर रिच्छां, अणमुक फेरे पाए ॥
हिरन बणें दे छालीं मारन गीत गान भागियाड़ ।
बाघ बक्करी किट्ठे घुम्मन, सीता दें दरबार ॥
बाज पखेरू चिड़ियां कन्नें, अणमुक करन कलोलां ।
रुक्खां उप्पर बूर गुच्छिया, कू-कू बोलन कोलां ॥
मोरां ने कुटिया दे अग्गे, अपणे फंग खलारे ।
बणें पपीआ पी-पी बोलै, ऊचें लई हुलारे ।
मिरग पखेरू करन कलोलां, आई वणें बहार ।
नौएं पत्तर रुक्खां छाए, होए हरे पहाड़ ॥
चन्द चानणी दूणी होई, गासें तारे छाए ।
सुरगे दे सब देव देवते, धरती उप्पर आए ॥
फुल्ल वणें दा इक-इक खिड़िया, कलियां कुंबल आए ।
भील वणें दे सारे जंगल, सीता दिक्खण आए ॥
लाल फलां दे गुच्छे रुक्खां, बणें च माया आई ।
धरती उप्पर चऊं पासियां, घा हरियाली छाई ॥
सीता राणीं वणीं बणें दी, अपणा हुकम चलाया ।
जंगल दे जीवां हुण सारा, हिरख बरोध मटाया ॥

हाथी कुटिया अग्गें आई, सुंड्डां जो लमकान ।
सिंह वणें दे सीता अग्गें, अपणें सीस नुआन ॥
सीता दी आज्ञा दे कन्नें, पैंछी कम्म कमान्दे ।
खून खराबे भुल्ले सारे, इक दूए गल़ लान्दे ॥

दो० चऊं पासियां जंगलें, होई जय-जय कार ।
कोई खटका नीं रिया, बदिया प्रेम पियार ॥

दो० रल़-छल़ होऐ धरतिया, सीतल पौऐ पैर ।
बदचा मेल-मलाप ऐं, घटै हिरख तां बैर ॥

ऋषिए दी कुटिया विच सीता, अणमुक कम्म कमाऐ ।
सरयू जाई करै सनानां, ठौकर फुल्ल चढ़ाऐ ॥
ऋषिए ताईं घाएं आसन, सीता रोज बछान्दी ।
पाणी पूजा ताईं रक्खै, हवनें अग्ग जगान्दी ॥
तप ऋषिए दा दूणा होया, सीता पुत्तर होया ।
नां तिसदा ऋषिएं लव रखिया, कुटिया चानण होया ॥
पसू-पखेरू जंगल सारे, कीड़ पतंगे आए ।
अपणी-अपणी भाषा दे विच, सबनां गीत सुणाए ॥
ऋषिए दी कुटिया विच्च होई, रौणक मौज बहार ।
जीव-जन्त सब देन बधाई, हाथी तां भगियाड़ ॥
शेर बाघ अज गड़-गड़ गरजन, जिय्यां बाजा बजदा ।
मोर पपीए कोयल दा था, बोल वणें विच्च सजदा ॥
कुक्कड़ कनैं कबूतर बोलन, कैंदल़ नच्चै दूणा ।
चिड़ी घुटारी घुग्गी बोलै, कनैं बटेरा कूणा ॥
काले कोआं रण-बण लाई, गुटर-गुटर हुण बोलन ।
गिद्दड़ फौई अपनी पूछा, धरती उप्पर झोलन ॥
उल्लू वी अज गीतां गाऐ, बटनौली़ वी हस्सै ।
खड़कन्नूं सैह मारै छालीं, दूणा नच्चो दस्सै ॥
बोलन सारे पसू पखेरू, बणें होई भियाग ।
पत्थर सप्पड़ नदी पहाड़ां, सबनां आई जाग ॥
कल-कल करदे बगन पहाड़ां, झरने रौला़ पान ।
चिट्टा पाणी ठंड धरतिया, गीत बधाई गान ॥

इय्यां लग्गै बड़ा मदारी, विच्च जंगलें आया ।
तिन्नीं आई बूटा-बूटा, जंगल विच्च हसाया ।।

दो० पालें मोती धरतिया, सीता दें दरबार ।
जंगल दे सब बूटिया, छाई सदा बहार ।

छन्द/ कवित्त: धरतिया भाग जागे, संझा दी भियाग होई,
दिक्खा किय्यां कुटिया च, आया राम राज ऐ ।
भाग दी लकीर दिक्खा, राजियां फकीर दिक्खा,
दिक्खा किय्यां ठोकरें, चुक्की लिया ताज ऐ ।
लव अवतार दिक्खा, धरती उद्धार दिक्खा,
दिक्खा बेल बूटियां जो, आई किय्यां जाग ऐ ।
सीता दा दुलार दिक्खा, ममता पियार दिक्खा,
राम राज 'संसार' एह, वाल्मीक भाग ऐ ।।

महाकाव्य 'माया'

अष्टदश-सर्ग

छन्द/ किती वरी धरतिया, विसणू महेस होए,
कवित्त: गौरजां तां लच्छमी दे, कई अवतार न ।
किती वरी धरती, पताल् गास होए सब,
रुक्ख बूट जीब-जन्त, होए वार-वार न ।
ब्रह्म वेद किती वरी, इन्दर गनेस देव,
होए रात रुत किती, वरी दिन बार न ।
बोलदा एह 'संसार', माया जाल् किती वरी,
किती वरी टुट्टिया तां, होए तार-तार न ॥

दो० सीता हुण सीतल करै, मिरग पखेरू जन्त ।
ठौकर माया जंगलें, छाया सुक्ख अनन्त ॥

सूरज दी रसमां ने चमकन, पत्तर कुंबल् सारे ।
इय्यां लग्गै धरती उप्पर, आई उतरे तारे ॥
कुटिया हुण सोभा थी भारी, बोलन जंगल जन्त ।
ऊच्चे टिल्लें जगमग होऐ, जागे साधू सन्त ॥
राम गुसाईं दा जाया हुण, खिड़-खिड़ करदा हस्सै ।
किलकारी जोरे ने मारै, सीता दे मन बस्सै ॥
सीता लब पाया पंघूड़े, राम-राम रघुराई ।
निक्के बूटे साई पालै, दुद्दें धार पियाई ॥
इय्यां ई कुटिया दे अन्दर, म्हीने ग्यारह बीते ।
चोल् टोपू सीता ने हुण, लब दे ताईं सीते ॥
भ्यागा इक दिन बड्डें तड़कें, सीता कुटिया आई ।
ऋषि करा दा था तपस्या, अपणीं ताड़ी लाई ॥

लब जो आई गाढ़ी निन्दर, विच पंघूड़े पाया।
नदिया पर जाई कै सीता, जो था चेता आया॥
सीता सोचै लब किल्ला अज पिता तपस्या विच्च।
मिरग मियालां ने वण भरिया, रातीं बोलन रिच्छ॥
जे लब उठिया रोया अन्दर, कुटिया रौला पौणा।
तिसदे लागें रखिया नीं मैं, कोई अज्ज खडौणा॥
जे लब रोया जोरे कन्नें, तां तप होणा भंग।
शाप देण दी ऋषि नीं करदे, कदीं कुसी तो संग॥
शाप ऋषि दा लब दे उप्पर, अज आई न पौऐ।
कुजो पता हुण रैह् जागदा, रात दिनें नीं सौऐ॥
सीता दे मन इक दम आए, पुट्ठै मते वचार।
झट-पट दौड़ी कुटिया पासें, नदी न मारी छाल॥

दो० मरजी होऐ ठौकरें, माह्णू बणन बचार।
मरना जीणा धरतिया, सब लीला करतार॥

कुटिया दे विच आई सीता, लब हिक्का ने लाया।
नदिया पासें चली गई हुण, वरती ठौकर माया॥
लब जो सीता मूंडें लाई, नदिया कंडें आई।
ऋषिए दी जां ताड़ी खुल्ली, कुटिया खाली पाई॥
अज पंघूड़ै खाली दिक्खी, होया ऋषि हैरान।
लब दे वाझी धड़कन लग्गी, धक-धक तिसदी जान॥
बालमीक हुण सोचण लग्गा, ठौकर कीती चाल।
पता नई कुस मिरग मियालें, खादा निक्का बाल॥
कुशा दा डाल योग साधना, ने था बाल वणाया।
ऋषिएं जीवादान दई कै, लब दी जगह सुआया॥
समा वीतिया किछ घड़ियां विच, सीता कुटिया आई।
विच पंघूड़ें बालक खेलै, सीता समझ न आई॥
सीता पुच्छै ऋषिए तों हुण, 'धरम-पिता के होया?
विच पंघूड़े दूआ बालक, कुसदा आई रोया॥
जा मैं जागा करनी जा तां, जागदिया जो सुपना।
बालक होया लब दे साईं, वड्डा निक्का उतणां॥

मेरे कुच्छड़ अपणा लव ऐ, जा मंज्जे दे उप्पर ।
किय्यां होए कुनीं वणाए, इकसी दे दो पुत्तर ।।
मेरे लब ने के खत्तरेडा, होया माया होई ।
सीता पुच्छै बालमीक तों, अज्ज गई बकलोई ।।
मन्तर जन्तर टूणा होया, जा कोई ऐ माया ।
दूआ पुत्तर कुस माऊ दा, विच पंघूड़ें पाया ।।
कुनी लियोन्दा दूआ बालक, कुण इसदे मां-बब्ब ।
सीता ऋषिए आल खड़ोई, दिक्खै होई हब्ब ।।

दो० ठौकर अग्गें धरतिया, सब माह्णू अणजाण ।
तपी तपीसर धूणियां, भिरी भलेखे खान ।।

दो० मरजी होऐं ठौकरें, हाखीं टपला खान ।
माया खेलै धरतिया, ऋषि भलेखा खान ।।

सीता जो दुखिया दिक्खी कै, ऋषिएं बोल उचारे ।
बोलण लग्गे, 'हे बेटी हन, माया खेल नियारे ।।
ठौकर अपणी लीला अग्गें, अप्पूं पार न पाऐ ।
माह्णू माया जाल अन्दर, वार वार भरमाऐ ।।
इसवरे तों अपणीं माया, अप्पूं नीं पकडोऐ ।
माया दे न्हेरे दिक्खी कै, ठौकर वी डफलोऐ ।।
माया चक्कर नीं पकड़ोऐ, ठोकर लै अवतार ।
ठौकर अग्गें माया नच्चै, दूणा करै दुलार ।।
माया दे घिरनू दे अन्दर, ठौकर जा बकलोई ।
चक्कर माया धरती उप्पर, ठौकर जा पलठोई ।
ठौकर धरती कम्म कमाऐ, माया विच भरमाऐ ।
धरती उप्पर अवतारां ने, अणमुक फेरे पाऐ ।।
अपणी माया ठौकर जो वी, धरती पर भरमाऐ ।
अवतारां जो नीं किछ जाणै, ठौकर जो वी ढाऐ ।।
माया अस्तर ठौकर दा ऐ, ठौकर नई पछाण ।
दूआ बालक लब दा भाई, सीता निक्का जाण ।।
कुटिया दे विच रल-छल होई, ठौकर माया आई ।
ऋषिए नें वैदेही जो हुण, सारी गल्ल सुणाई ।।

"मैं पंघूड़ा खाली दिक्खी, होया था हैरान ।
माया चक्कर दे विच भुल्ला, मेरा सब्ब ज्ञान ।।
नईं सोचिया रती भरें दी, रती न नजर दुड़ाई ।
ठौकर दी माया ने मेरी, सुध-बुद्ध सब भुलाई ।।
असां सोचिया साड़ा लव अज, मिरग मियालें खादा ।
ठौकर माया कुटिया अन्दर, कीता आई बादा ।।

दो० लग्गा माया मेटणा, तप जो कीता याद ।
पाणीं दे विच गोतियां, खाणा लगा जहाज ।।

माया ने मैं करी लड़ाई अपणां मन्तर मारी ।
कुशा डालुएं बालक वणियां, ऋषिएं गल्ल उचारी ।।
परमेसर दी माया अग्गें, माह्‌णू दी नीं पेस ।
माया चक्कर दिऐ भुलाई, भुलदे हन दरवेस ।।
माह्‌णू अपणी करै बड़ाई, रती न बुद्ध बचार ।
ठौकर दी माया दे अग्गें, हर दम खाऐ हार ।।
तप बल अपणा छीन करी कै, कुशा दा लब बणाया ।
माऊ दी ममता तों डरदें, विच पंघूड़ें पाया ।
परमेसर दी माया आई, लब दा सक्का भाई ।
जिन्द सरीरें तप बल कन्नें, कुशा डालुएं पाई ।।
लब-कुश तेरे पुत्तर सीता, तप दा ऐ उपकार ।
ठौकर दी माया जो लब दे, कन्नें किट्ठा पालू ।।
इतणीं गल्ल सुणीं ऋषिए दी, सीता मन सन्तोष ।
लब-कुश जो किठियां पालै हुण, सीता जगदी जोत ।।
लब-कुश जो किठियां दिक्खी कै, भुलिया ऋषि पछाण ।
सीता दे मन दई भलेखा, लब-कुश, कुश लब जान ।।
जीव-जन्त तां नईं पछाणैं, वालमीक नीं जाणैं ।
जिय्यां ठौकर अपणी माया, अप्पूं नईं पछाणैं ।
लब-कुश कुटिया दे विच खेलन, दौएं सक्के भाई ।
शेरां कन्नें करन कलोलां, हाथी पकड़न जाई ।।
पली बडोई बड्डे होए, अठ वरसां दे वीर ।
ऋषिए तों सब बिदिया सिक्खी, खिजन धनुषें तीर ।।

सीता सोचै राम गुसाईं, जो गल जाई दस्सां।
महलां दे विच लव-कुश कन्नें, मैं वी जाई बस्सां ।।

दो० **माह्णू सोचां सोचदा, सोचां होन कलेस।**
माह्णू सोचै होर किछ, ठौकर मारै मेख ।।

दो० **विच्च अयोध्या धोविएं, चाढ़ी धोबण मार ।**
राम वजोगें जानकी, सोचै कई बचार ।।
राम गुसाईं दे जाए हुण, बणें च पलदे प्यारे।
राम राज कुटिया विच पल्दा, करमां खेल नियारे ।।
इक राजे दे बचियां ताईं, अग्गें पिच्छें नौकर।
दूए मंग्गन दर-दर भिखिया, सब लीला ऐ ठौकर ।।
बिन करमां दे तखत न मिलदे, नईं राजियां राज।
करमां दी गत बड़ी अनोखी, सीता मनें उदास ।।
खरे करम दा मिट्ठा फल ऐ, अमृत बणैं मखीर।
फिटियो दुद्दें कदीं न वणदी, जतन करी कै खीर ।।
करम बड़े बलुआन जतन वी, करमां अग्गें झुकदा।
करम बणाऐ लेख मत्थियां, मिटी कदी नीं सकदा ।।
विध माता लिखदी करमां पर, माह्णू मत्थें भाग।
बाझी करमां पौन धरतिथा, सिर दे चढ़ियो ताज ।।
ताज माह्णुआं दें सिर चढ़दे, ताज न करिए मान।
खोट कमाई खोटे करमां राजें भिक्ख मंगान ।।
तप दा होए राज माह्णुए, राजो होऐ नरक ।
करम करै नीं ताज चढ़ाई, तां माह्णू ऐं गरक।।
ताज चढ़ाई माह्णू भुल्लै, खरे-बुरे दा ज्ञान ।
माया दा घिरनू धरती पर, राजे तो बलुआन ।।
सीता दा मन पींग हुलारे, लम्मे भरै सुआस ।
करमां दी गत जाणी बुज्झी, सीता मनें निरास ।।
अहंकार राजे जो होऐ, तिसजो धरती सुट्टै ।
भिख मंगाऐ दर-दर तिसतों, पक्का गढ़ वी टुट्टै ।।
ताज चढ़ाई मन दे अन्दर, जे होऐ अभिमान ।
माह्णुएं दी होछी बुद्धि पर, ठौकर वी पछतान ।।

दो० राज ताज सब धरतिया, माया जाल़ झलेर ।
जोर भुलाऐ माह्‌णुएं, रती न लाऐ देर ॥

जिस राजे जो अपणी सत्ता, पर होऐ अभिमान ।
सत्ता दे अभिमाने तिसदे, अप्पूं ठौकर ढान ॥
सदियो हाथी पुड़ै मकोड़ी, सुंड्डा दन्द चुभाऐ ।
पर्वत साई दन्त सरीरे, धरती उप्पर ढाऐ ॥
इक पासें तां सीता दे भन, आए कई बचार ।
दूएं पासें राम गुसाईं, कीता इक दरबार ॥
ऋषि वसिष्ट तां विसुआमित्तर, आए मुनिवर सन्त ।
भरत वभीषण सारे सद्‌दे, लछमण सत्रुहन्त ॥
सुग्रीबे दे सर्णें सदाए, राजे देस महान ।
जामवन्त नल नील तां अंगद, महावीर हनुमान ॥
राम गुसाईं दरवारे विच, अपणी गल्ल सुणाई ।
अस्वमेध करने दी इच्छा, सवनां कनें जताई ॥
सब देसां दे राजे सद्दे, अपणा सब्द सुणाया ।
राम गुसाईं अस्वमेध दा, करना जतन गलाया ॥
अस्वमेध जे नीं करिये हुण, इस धरती पर आई ।
धन दौलत बल वैभव सारा जाणा पापें खाई ॥
इक छत्तर जे राज न होऐ, तां वी गल नीं वणदी ।
अस्वमेध विन राम राज दी, झंडी गास न चढ़दी ॥
गढ़ लंका विच रावण जित्तन, मेरे वीर महान ।
अस्वमेध बिन विच्च अयोध्या, वीरां दी नीं शान ॥
अहंकार दे जाल़ अन्दर, माया जीव फसाए ।
तिन लोकी दे नाथ धरतिया, माया विच भरमाए ॥
अपणे बल पौरुष जो दिक्खै, महावीर वलवान ।
वीर वहादर योधे दिक्खन, दल वल दा अनुमान ॥

दो० ठौकर माया धरतिया, खेलन पंज बकार ।
ठौकर माया खेलदा वार वार अवतार ॥

दो० पंज बकारां मारदा, कोई धरती वीर ।
राम नाम दा जाप ई, भवसागर दा तीर ॥

पंज बकारां मारै कोई, विरला तपी महान ।
क्रोध काम मद लोभे जित्तै, वसें करै अभिमान ॥
पंज बकारां दा धरती पर, तगड़ा पंज्जा भाई ।
ठीकर दी सब लीला अद्भुत, फसदा अप्पूं आई ॥
ऋषि मुनि सब योगी हारे, हारे तपी महान ।
पंज बकारां तों धरती पर, बचदा नीं विदुआन ॥
नल नील सुग्रीव तां अंगद, जय रघुवीर गलान ।
भरत सत्रूघुन लछमण सारे, अपणे सीस नुआन ॥
अज्ज बभीषण वी बलशाली, गढ़ लंका दा राज ।
लछमण वी हुण धनुषे चुक्कै, राम गुसाईं काज ॥
महावीर हुण वचन सुणाऐ, पर्वत चुक्की आया ।
सौ योजन दी भरी उडारी, रावण महल जलाया ॥
विच्च पताले दानव मारे, जय वीर हनूमान ।
राम गुसाईं काज सुआरे, लोकी सब्ब गलान ॥
मेघनाथ जो लछमण जित्तै, दानव दन्तां मारै ।
महावीर जो अपणें तीरें, लंका भरत उतारै ॥
जामवन्त सुग्रीव नील नल, योधे अपरमपार ।
विच्च सागरें लई मसाला, तारे सिल्ल पहाड़ ॥
वीर बभीषण भेतां दस्सी, गढ़ लंका दा ढाया ।
कुम्भकरण बलशाली योधा, रावण मार मुकाया ॥
इक-इक योधा माया फसिया, अहंकार अभिमान ।
अपणी अपणी करन बड़ाई, जय वीर हनूमान ॥
विच्च अयोध्या हल-चल होई, गरजे योधे सारे ।
तीरां मारन उप्पर गासें, विजली दे लसकारे ॥

दो० अपणां अपणां जोर सब, अपणें मुहएं गान ।
अपणीं अप्पूं वीरता दा सब करन वखान ॥

सान्त करी सब वीर योधियां, मुनिवर बोले बाणीं ।
विसुआमित्तर गुरू वसिसटें, गल्लो गल्ल पछाणीं ॥
बोलण लग्गे विसुआमित्तर, राम राम रघुराई ।
अस्वमेध जग सफल न होऐ, विना जनक दी जाई ॥

सुन्ना सुज्झै खब्बा पासा, अस्वमेध के आस ।
धरती डोलै बाम अंग विन, खाली होऐ गास ।।
बिजन जानकी अस्वमेध तां, धरती पर नीं होऐ ।
बाम अंग बिन अग्न आहूति नीं सम्पूरन होऐ ।।
देव-देवते होन करूपें, तां सब आस अधूरी ।
अस्वमेध दी झंड्डी उप्पर, गासे चढ़ै न पूरी ।।
अस्वमेध दा घोड़ा निर्बल, बाम अंग बिन होऐ ।
हिण-हिण करदा दौड़ै सारें, जाई भिरी खड़ोऐ ।।'
ऋषिए दी गल सुणी सारियां, राम राम रघुराई ।
राम गलाया, 'असां जानकी, घोर परीछा पाई ।।
जे मैं सद्दा मुड़ी तिसा जो वचन अधूरा रैह्णां ।
त्रेता द्वापर सतयुग कलियुग, भार बचन नीं सैह्णां ।।
जतन करा सीता बिन होऐं, अस्वमेध जग पूरा ।
जे मैं सीता मुड़ी बुलाई, रैह्णा बचन अधूरा ।।'
राम गुसाईं दी गल्ला पर, बोले विसुआमित्तर ।
सुन्ने दी इक घड़ी जानकी, करना जग्ग पवित्तर ।।
इस गल्ला पर ऋषियां मुनियां, अपणां मता मताया ।
बाम अंग सुन्ने दी सीता, रक्खी जग्ग रचाया ।।
वाम अंग हुण सुन्ना सारा, राम आहूति पान ।
दूएं पासें अस्वमेध दे, घोड़े वीर सजान ।।

दो० सेना जोरें गरजदी, गए गड़ाके गास ।
हिण हिण घोड़ा हिणकदा, राम नाम दी आस ।।

दो० सुग्ग पुरी दे देवते, दिक्खन चढ़ी बमान ।
महावीर नल नील सब, अपणीं फौज सजान ।।

धूड़-धुडैना गासें छाया, गरजे बान्दर रिच्छ ।
अस्वमेध दे वाजे बज्जे, नई सणोऐ किच्छ ।।
कई खरोणी सेना चल्ली, जामवन्त हनुमान ।
भरत सत्रुघुन अग्गें पिच्छें लछमण लई लगाम ।।
अंगद नल नीले ने अपणें, सस्तर अस्तर कस्से ।
फ़ौज राम दी दिक्खी सारे, देव देवते हस्से ।।

वीर बभीषण सेना सांबै. दल सारा उठि आया।
अस्तर सस्तर चमके सारें, धरती पलटी काया ॥
न्हेरी झक्खड़ चढ़िया गासे, रुख-बूट सरन्हाए।
राम राज जो मत्थे टेकण, अणमुक राजे आए ॥
कई राजियां ताजां खोड़ी धरती सीस नुआया।
अस्वमेध दे घोड़े दिक्खी, राम नाम गुण गाया ॥
जाऐ घोडा जिस कूटा जो, सेना दौड़ै सारी।
राम राज दी सेना उप्पर, माया करै सुआरी ॥
गासें सुज्झै झक्खड़ झांजा, सूरज रसम ढकोई।
लब-कुश पुच्छन सीता तों हुण, पासें दूर खड़ोई ॥
'दिनें-धियाड़ें हे माता अज, सूरज होया काला।
जीव-जन्त सब दौड़ी आए, छड्डी ऋषिएं माला ॥'
सीता दिक्खै गासे पासें, दिऐ न कोई उत्तर।
कुटिया दे विच हब्ब खड़ोते, सीता दे दो पुत्तर ॥
कुटिया दे विच सीता बैठी, लब कुश जो समझाऐ।
अज्ज बालकां आल खड़ोई, अपणां बोल सुणाऐ ॥
अहंकार राजे जो आया, जंगल करै चढ़ाई।
कई खरोणी सेनां आई, धूड़ अंबरें छाई ॥

दो० राज-ताज बल फौज दा, अहंकार दे चिन्ह।
सत्ता ने मन डोलदा, वड़ी घड़ी पल छिन्न ॥

काले बद्दल जीव हौकियां, दे गासे पर छान।
सत्ता बल जो देन घटाई, सारे पुन्न मुकान ॥
लब-कुश जो समझाऐ सीता, हाखीं आया नीर।
दूएं पासें विच्च जंगलें, गरजे सेना वीर ॥
बैदेही दी सोचा उप्पर, कुश ने सब्द सुणाया।
बोलण लग्गा, 'हे माता तूं, हाखी रोज वगाया ॥
अहंकार राजे दा तोड़ां, अज्ज करां मैं चूर।
तप दी धरती सेना भेजी, राजें बड़ा कसूर ॥
तप दें अग्गें राज शक्तियां, दी नीं चल्लै पेस।
जंगल दे विच करन तपस्या, ऋषि मुनि दरबेस ॥

तप बल कन्नें राज शक्तियां, जो राजे टकरान ।
हवन-कुण्ड दी ज्वाला अन्दर, सेना भस्म करान ।।
गल्ल गलाई लब कुश ने हुण, कस्से तीर कमाण ।
धनुषां डोरी लई चढ़ाई, राम-राम भगवान ।।
लब कुश बोले, 'अपणें बल दी, करनी असां परीछा ।
बिच्च पतालें धरती गासें, करना सेनां पीछा ।।
राज शक्तियां जो अज देणीं, तगड़ी माता मार ।
सच्च समझियां राज बले दा, आया ऐ अज काल ।।"
इतणीं गल्ल करी कै लब कुश, उठी खड़ोते भाई ।
बालमीक जो मत्था टेकी, सीता सीस नुआई ।।
कुटिया छड्डी बिच्च जंगलें, आए बालक वीर ।
बालमीक दे अग्गें बिलखै, सीता अज्ज अधीर ।।
वैदेही पुच्छै ऋषिए तों, अज के अचरज होया ।
बिच्च जंगलें उडै धुड़ैना, मेरा जिगर घटोया ।।'

दो० लब-कुश दोएं शक्तियां, राम राम भगवान ।
सीता माया धरतिया, आई खेल रचान ।।
इस सारें भौ सागरें, मोह जाल़ जंजाल़ ।
सीता बिलखै धरतिया, लब-कुश निक्के बाल ।।

वैदेही ऋषिए तों पुच्छै, 'बिच्च बणें के होया ।
दिक्खा जाई घोर जंगलें, मेरा लब ऐ रोया ।।
सुणां ! सुणा ! कन्नां जो लाई, कुश वी दिऐ दुहाई ।
बिलखी सिसकी सीता बोलै, 'राम-राम रघुराई ।।'
इतणीं गल्ल गलाई सीता, धरती पई पछाड़ ।
सीता जो हुण पई मूरछा, सेना सुणी दहाड़ ।।
अस्वमेध दे घोड़े दी हुण, हिण-हिण होई बन्द ।
ध्रुब तारे दी जग-मग मद्धम, गासें दिक्खै चन्द ।।
अस्वमेध दा घोड़ा पकड़ी, लब सेना ललकारै ।
कुश दे मत्थें पई तियूड़ी, धनुष बाण टंकारै ।।
लछमण मन दे अन्दर सोचै, बालक बड़े अयाणें ।
कोमल पिड्डें किय्यां पैने, तिक्खे तीर चुभाणें ।।

छैल-छबीले निक्के बालक, ऋषियां दी सन्तान ।
सारे योधे तुर-बुर दिक्खन, जामवन्त हनुमान ॥
हब्ब बभीषण दिक्खी होया, सत्रुघुन नीं रोकै ।
कुण समझाऐ दऊं बालकां, भरत मने विच सोचै ॥
नल-नील सुग्रीव तां अंगद, होए हब्ब हरान ।
नेड़ें आई दऊं बालकां, राम लगे समझाण ॥
बोलण लग्गे राम खड़ोई, 'सुणा बालको गल्ल ।
अस्वमेध दा घोड़ा छड्डा, मेरा बचन अटल्ल ॥
अस्वमेध दा घोड़ा साड़ा, झंडा विजय चढ़ाया ।
खेल बालकां दा नीं कोई, वचन राम समझाया ॥
तुसां वणें जा करा तपस्या, युद्ध राजियां खेल ।
न्हेरी झक्खड़ कदीं न झल्लै, कूली पतली बेल ॥

दो० राजे पकड़न घोड़ियां, ऋषियां दा नीं कम्म ।
घोड़ा मंग्गै बालको, कई सिरां दा डन्न ॥

राम गुसाईं दी गल्ला पर, लव ने वचन सुणाया ।
बालक बोलै राम-राम तूं, तप पर जोर जमाया ॥
तपोभूम ऋषियां दी जंगल, नीं तेरा रजुआड़ा ।
जंगल दी धरती सब साड़ी, इस पर कबजा साड़ा ॥
दूए दें घर पाया आई, तू तां बड़ा खलल्ल ।
तपोभूम जो छिट्टू लाई, कीता तप निसफल्ल ॥
तप बल ने टक्कर लैणीं तां, नईं सुखाला कम्म ।
अग्गें बदण दियां नीं घोड़ा, सुण खोड़ी कै कन्न ॥
अहंकार सिर तेरें चढ़िया, अज तां खरा न होणां ।
बल पौरुष तप बल दा राजा, तेथों नईं झलोणां ॥
इतणीं गल्ल गलाई लव ने, धनुषें तीर चढ़ाया ।
बालमीक कुटिया तों चल्ली, जंगल दे विच आया ॥
बोलण लग्गा, 'धरम धुरी तू, के कीता रघुराई ।
अज्ज बालकां उप्पर कीती, आई कजो चढ़ाई ॥
तप बल दे बालक हन मेरे, दियां शाप ततकाल ।
अस्वमेध जग भंग करा मैं, होया ढेरा बाल ॥

अस्वमेध्र कुटिया नीं झल्लै, दिक्ख मदाने जाई ।
वीर बालकां ने नीं करदे, अपणी जोर जमाई ॥
निर्बल उप्पर मत चुक्कैं तूं, राम-राम ! हथियार ।
नीं तां धरती उप्पर पौणां, सारें हा-हा कार ॥'
ऋषिएं अपणीं हक्ख उघाड़ी, राम-राम समझाया ।
विच्च करोधें लछमण भरिया, ऋषिए नेड़ें आया ॥
लछमण बोलै, 'वालमीक सुण, राम-राम हन राम ।
बालक तों तू दिऐं छुड़ाई घोड़े हत्थ लगाम ॥

दो० गल्ल सुणीं जां बालकां, हिल्ली धरती गास ।
लब ने घोड़ा पकड़िया, हिण-हिण करदा नाच ॥

दो० तप बल ठंडा नीर ऐ, सत्ता तत्ता गार ।
तप बल ने घुलना बुरा, होऐ इक दिन हार ॥
'बालक घोड़े नीं छड्डे तां, असां लड़ाई करनीं ।
अपणीं कीती दऊं बालकां, युद्ध भूम विच भरनी ॥
लछमण दी इस गल्ला उप्पर, लव जो गुस्सा आया ।
बालक बोलै, 'मेघनाथ तों, तू जीन्दा ऐं आया ॥
मेघनाथ दी माया नीं हुण, नीं ऐं सुखणूं वैद ।
हनूमान जो उडण दियां नीं, रक्खां सत दिन कैद ॥
भरते दी ताकत नीं एथूं, तीरे दियां सुटाई ।
हनूमान जिस पर था चढ़िया, तेरी जिन्द बचाई ॥
गढ़ लंका दा नीं युद्ध एह, नीं बूटी हुण औणीं ।
सौणां विच्च मदाने एथूं, गाढ़ी निन्दर पौणीं ॥
लुकी-छुपी नीं तीर चल्लणें, बाली उप्पर वार ।
अहिरावण महिरावण नीं हन, लछमण अकल वचार ॥
लंका दा गढ़ नीं ऐं एथूं, साड़ा नीं ऐं भेत ।
जेड़ा दस्सै वीर बभीषण, अमृत कुण्डू पेट ॥
तप दे अग्गें नईं खड़ोन्दे, सिरें राजियां ताज ।
अन्हे बोले कदीं न लड़दे, चिड़ियां कन्नें बाज ॥
लब दी इतणी गल्ल सुणीं तां, लछमण तीर चढ़ाया ।
सीता ने कुटिया तों निकली, हा-हाकार मचाया ॥

सीता दा हा-कार सुणीं कै, कुश ने अस्तर छड्डे ।
अक्खे-वक्खें राम गुसाईं, दी सेना दे गब्हे ।।
तप दे अस्तर गासैं छाए, लोअ्-लुआना छाया ।
सारी सेना धरती सुत्ती, घोड़ा हिणी-हिणाया ।।
लव ने अस्तर धनुष चढ़ाई, पैना तीर चलाया ।
राम गुसाईं दा दल सारा, मुड़ी अयोध्या आया ।।

दो० सुत्ते योधे राम दे, जामवन्त हनुमान ।
भरत बभीषण लखण सब, नल अंगद बलवान ।।

हनूमान तों गुरज अप्पणां, चुकिया नईं चकोऐ ।
लछमण तों धनुषे दी डोरी, जोरें नीं खंजोऐ ।।
जोर छीन सबनां दा होया, अस्तर माया छाई ।
गई मूरछा पुच्छन सारे, के होया रघुराई ।।
जामवन्त नल नील योधियां, धीरज नईं ठकाणें ।
भरत बभीषण बोलन सारे, बालक वीर अयाणें ।।
सुग्रीबे दी पेस नईं हुण, हारे सत्रू हन्ता ।
राजे दी नीं होस ठकाणें, के करदी ऐ जन्ता ।।
तिन्न वरी तां लई कमानां, राम चढ़ी कै आए ।
लव-कुश दे परतापे दिक्खी, सब योधे घबराए ।।
राम गुसाईं दी सेना अज, करदी खड़ियां बाऽईं ।
निर्बल तों बलुआन हारदा, ठौकर मन्नैं ताऽईं ।।
अपणी माया दा ठौकर नीं, पाऐ पारावार ।
तिन्न लोक दा नाथ बालकां, तों अज खाऐ हार ।।
राम गुसाईं अप्पूं कीती, सेना दी अगुआई ।
बालमीक इस गल्ला दिक्खी, जोरें दिऐ दुहाई ।।
'राम गुसाईं गल्ल बचारा, राम-राम रघुराई ।
तिन्न वरी तां हारी चुक्के, हल्लैं सबर न आई ।।
जे हारे हुण चौथी वारी, सेना मुड़ी न जीणी ।
दिक्खा जोतस लाई अप्पूं, रास तुहाड़ी होणीं ।।
सीता दा था सत बल सारा, राम पार नीं पाया ।
ठौकर भुल्लै ताज चढ़ाई, माया जाल बछाया ।।

वीर योधियां दी बस होई, लब ने लई लगाम ।
लई गिया घोड़े कुटिया जो, तुर-बुर दिक्खन राम ।।

दो० **लछमण हुण चुप-चाप था, होया भरत अधीर ।**
लब जो नीं हुण रोकदे, नल नील महावीर ।।

दो० **अहंकार अज तोड़िया, लब-कुश वीर महान ।**
धन-धन माता जानकी, योधे सब्ब गलान ।।

जामवन्त महावीर सब, योधे निर्बल होए ।
अस्तर सस्तर धरती उप्पर, अप्पूं अज्ज रखोए ।।
पेस नईं हुण रई कुसी दी, नईं बभीषण बोलै ।
राम गुसाईं दे अग्गें अज, कुस दे भेतां खोलै ।।
रुक्ख-बूट सब सन्न हुई गे, बणें सनाटा छाया ।
राम गुसाईं दी सेना जो, मुड़ी पलाटा आया ।।
पसू पखेरू बणें न बोलै, मिरग न रौला पाऐ ।
लब घोड़े जो लई गिया हुण, तिसजो कुण समझाऐ ।।
अस्वमेध दा घोड़ा पकड़ी, लब कुटिया जो आया ।
सीता दे चरनां पर आई, अपणां सीस नुआया ।।
लब बोलै, 'हे माता मेरी, सांजो दियां वधाई ।
राम राज दी सेना सारी, जंगल असां हराई ।।
सीता गल्ला सुणीं हब्ब थी, छम-छम नीर बहाऐ ।
सूरज दी रस्मां ने जिय्यां, पर्वत ढलदा जाऐ ।।
सीता जो सिल-सप्पड़ दिक्खी, लब था किछ घबराया ।
बोलण लग्गा, 'हे माता तूं, रती न किछ गलाया ।।
जिन्नीं जितिया गढ़ लंका दा, रावण जिन्द गुआई ।
तिसदी सेना विच्च जंगलें, सारी असां हराई ।।
अस्वमेध दा घोड़ा पकड़ी, चरनां सीस लुआया ।
हे माता ! तूं चुप्प हुई एं, वर नीं रती सुणाया ।।
वीर नील नल योधे अंगद, लछमण तां हनुमान ।
लब तों कोई लईं न सकिया, घोड़ें हत्थ लगाम ।।
भरत सत्रूघुन सारे हारे, राम-राम रघुराई ।
जामवन्त सुग्रीवें दित्ती, युद्ध खड़ी दुहाई ।।

दो० हे माता हुण सीस दे, तेरा ऐ परताप ।
झंड्डा झुल्लै धरतिया, जय-जय गूंजै गास ॥
सीता ने जां गल्ल सुणीं तां, लव जो था समझायां ।
बोलण लग्गी, 'घोड़ा पकड़ी, जग्ग भंग करुआया ॥
अस्वमेध दे भंग होण ने, सिर जो चढ़िया भार ।
किय्यां होणां भौसागर तो, मेरा बेडा पार ॥'
वैदेही दी गल्ला पर लव, तुर-बुर करदा दिक्खै ।
जिय्यां कोई खरा करदियां, अग्गें आई छिक्कै ॥
इतणीं गल्ल गलाई सीता, होई बड़ी उदास ।
पी-पी करदा उडै पपीआ, जिय्यां ऊचे गास ॥
दौं घड़ियां दे बाद जानकी, हाखीं खोड़ी बोली ।
गई गुआची गल्ल पुराणी, जिगरे उप्पर तोली ॥
बोलण लग्गी हे लब सुण तूं, ठौकर खेल नियारे ।
मैं वैदेही लब-कुश पुत्तर, राम न पिता तुहाड़े ॥
अस्वमेध तुसां भंग कीता, राम-राम रघुराई ।
वैदेही सिर लांछन चढ़िया, जोरें दियां दुहाई ॥'
सीता बोलै, 'पुत्तर मेरे, मैं धरती तो आई ।
जनक धर्म दा पिता कहाया, तिसदी जिन्द सुकाई ॥
विच्च स्वयंवर राम गले विच, जयमाला मैं पाई ।
सिव जी दा था धनुष तोड़ियां, राम-राम रघुराई ॥
धनुष सिबां दा टुटी गिया तां, धरती आए झोले ।
विच्च अयोध्या माता ने थे, दो वर मुहएं बोले ॥
चौदह बरसां राम वणें दा, इक वर था बणवास ।
भरत राज दी करी घोषणां, दसरथ छड्डे सास ॥
बचन पिता दे लए नभाणां, जोगी राम कहाया ।
पैर खड़ावां मत्थें टिक्का, भगवां चोला पाया ॥
दो० राज तिलक दा नगरिया कारज होया भंग ।
राहु केतु वरदान थे, राम अयोध्या चन्द ॥
दो० लब-कुश जो हुण पिछलियां, गल्लां लगी सुणाण ।
राम कहाणीं जानकी, अप्पूं लगी गलाण ॥

चन्द सूरजें मुंह लुकाया, सुणीं राम बणवास ।
राम गुसाईं भगवां चोला, रोया सब रणवास ॥
लखण राम दे कन्नें आए, रई सके नीं किल्ले ।
मैं वी भगवां चोला पाई, चढ़े बणां दे टिल्ले ॥
तेरह वरियां बणें च बासा, सुखें न कीती आस ।
साल चौदवें पंचवटी विच कीता असां निवास ॥
सूप नखा रावण दी भैणां, तेथूं फेरा पाया ।
वीर लछमणें जो ब्याह करने, ताईं बोल सुणाया ॥
लछमण जतिएं नक-कन वड्डे सूप नखा दे जाई ।
षर-दूषण ने अग्गे तिन्नां, दित्ती भिरी दुहाई ॥
षर दूषण दे पंचवटी विच होया तगड़ा युद्ध ।
दानव दौएं मरी गए जां, रावण फेरी बुद्ध ॥
मारीचे जो हिरन बणाई रावण अलख जगाया ।
पंचवटी विच दसकंधर ने, माया जाल रचाया ॥
सुन्ने दे हिरने जो दिक्खी, जी मेरा ललचाया ।
राम गुसाईं जिद्दा दिक्खी, धनुषें तीर चढ़ाया ॥
विच्च जंगलें हिरन दौड़िया, दौड़ें पिच्छें राम ।
राम-राम मारीच गलाऐ, छड्डै अपणें प्राण ॥
राम-राम दी सुणीं उआजा, मैं पूरी डफलोई ।
जंगल दे विच मैं समझिया, अणहोणी गल होई ॥
मेरी जिद्दा उप्पर लछमण विच्च जंगलें आया ।
कुटिया खाली दिक्खी रावण, आई अलख जगाया ॥
रावण जो मैं साधू समझी, आई कुटिया बाहर ।
विच्च बमाने रावण पाई, उडिया गास उडार ॥

दो० गिद्ध जटायू गास पर, करै युद्ध घमसाण ।
वीर पखेरू तड़फिया, रुकिया नईं बमान ॥

मेरे ताईं गढ़ लंका विच, होई घोर लड़ाई ।
राम गुसाईं रावण दी थी, इट्टा इट्ट बजाई ॥
मरी गए सब दानव योधे, दसकंधर वी मरिया ।
गढ़ लंका दा सारा लांछन, सिर मेरे था चढ़िया ॥

मेरी अग्न परीछा होई, अग्गी विच्च तपाई ।
अगन देव दा तीरथ न्हौता, भिरी अयोध्या आई ।।
शब्द वेध वाणें दे लांछन, ने दसरथ था मोया ।
दसरथ दे लांछन ने साड़ा, बणें च बासा होया ।।
सूप-नखा था लांछन लग्गा, लंका कैद कटोई ।
रावण दे लांछन दे कन्नें, अग्गी विच्च फकोई ।।
धोबी अपणीं धोबण मारैं, मिज्जो था बणवास ।
अस्वमेध हुण भंग होया तां, के जीणें दी आस ।।'
इतणीं गल्ल गलाई लव जो, सीता दई दिलासा ।
ध्वजा राम दी अप्पूं पकड़ी, ऊची गास पताका ।।
लव ने इतणीं गल्ल सुणीं तां, तिसजो अचरज होया ।
जनक सुता दे पिच्छें चल्ला डुस्की सिस्की रोया ।।
किछ घड़ियां हुण सोची समझो, लव ने बचन उचारे ।
बोले दौएं भाऊ माता, तेरे खेल नियारे ।।
जिन्नी कीता तिन्नीं पाया, राम-राम रघुराई ।
तिज्जो तां बणवास देई कै अपणी फौज हराई ।।
जे घर रैंह्न्दे कर्दा न हुन्दा, अस्वमेध जग भंग ।
लव-कुश वाझी घोड़ा रोकी, कुण करदा तां जंग ।।
इतणी गल्ल गलाई लव कुश, चरनां सीस नुआया ।
लव कुश कन्नें सीता दिक्खी, राम मनें घबराया ।।

दो० अपणीं करनी डोलदी, विच्च सरीरें जान ।
सीता लछमी धरतिया, राम-राम भगवान ।।

दो० ठौकर अपणी करनियां, तो अप्पूं घबरान ।
खरे बुरे दे लेखिया, दा होऐ भुगतान ।।

राम गलाया हे लछमण ! सुण, भरत सत्रुघुन भाई ।
घोड़े पकड़ी सीता तां अज, खरे रूप नीं आई ।।
वालू खिल्लरें वैदेही दे, हाखीं दी लो भारी ।
धरती दी धुर तत्ती लग्गै, गास सुज्झदा गारी ।।
अंबर छाया झक्खड़ झांजा, बद्दल धरती छह्‌ोया ।
वैंदेही जो शान्त करा अज, नीं तां अचरज होया ।।

दिनें धियाड़ें तारे दुस्सन, सूरज रसम ढकोई।
पर्वत सारे झुल्लन कंबन, धरती धुरी पटोई॥
जामवन्त नल अंगद सारे, होए नील हरान।
सुग्रीव वभीषण वैदेही दे, चरनां सीस नुआन॥
अस्वमेध दा घोड़ छुट्टा, होया शब्द अकास।
धूं धुआखड़ धरती छाया, वैदेही दा हास॥
सारे दिक्खन दूर खड़ोई, धरती होई लाल।
राम गुसाईं आल खड़ोते, लव कुश दौएं वाल॥
फटी गई धरती गब्हे दी, होई हुण दो फाड़।
वैदेही ने गुफा दे अन्दर, मारी डूगी छाल॥
धरती गई समाई सीता, दिक्खन सब्ब खड़ोई।
फटियो धरती सां-सां करदी, इक दम गई जड़ोई॥
धरती विच्चा आई सीता, गई धरतिया अन्दर।
माया अपणां कम्म कमाई, आई अपणें मन्दर॥
सीता दे कोपे दिक्खी कै, लव कुश बड़े अधीर।
राम गुसाईं सेना विलखै, डोलै, हाखीं नीर॥
धरती उप्पर खेलै माया, सब ठौकर दा खेल।
ठेडे खाऐ माह्णू अणमुक, कदीं बछोड़ा मेल॥

दौ० तोता विलखी बोलदा, झूठा जग अभिमान।
छड लोकां दे आसरे, जप तूं सीता राम॥

जितणां-जितणां जिसदे जिम्में, पहरां लिखिया भाई।
उतणा उतणां हाकां पाई, जान्दे सब्ब नभाई॥
सुपने दे विच राज पाट था, कंगलियां घर आया।
धरती दा हिल्लण दिक्खी कै, कंगला था घबराया॥
माया दे सुपने जाणीं कै, कंगला रस्ते भुल्लै।
धरत पतालें सागर गासें, माया झडा झुल्लै॥
सुपने दे विच माया दिक्खी, कजो करा अभिमान।
नीं दुखाईए मन कुसी दा, तां मिल्लै भगवान॥
मरना जीणा सारा सुपना, माया खेल रचाई।
ठौकर माया सुपना धरती, राम-राम रघुराई॥

मन माया दें पंज्जें फसदा, बणदा डाकू चोर ।
ठगी करै माह्णू धरती पर, मारै म्हुच्छी जोर ।।
माया दे जाल् जो छड्डी, राम गुसाईं आए ।
लछमण तोपै सरयू कंड्डें, राम बकुण्ठें आए ।।
सरयू दा जल डूगा दिक्खी, लछमण डुबकी लाई ।
तोता कंगला हव्व होए, राम-राम रघुराई ।।
राम लखण दौए नीं दुस्सन, सीता गई पताल् ।
कंगला तोपै राम जो हुण, मारी मंज्जें छाल् ।।
कंगली कंगले जो बोलै, तूं के कीता आई ।
माया दे विच राम भुलाया, मेरी जिन्द सुकाई ।।
कंगला बोलै, 'कर राम तूं राम-राम हुण राम ।
माया दे जाल् विच भुल्ला, नीं माया नीं राम ।।'
कंगले कंगली दा रौला, सुणीं गुआंडी आए ।
कंगला बोलै कंगली ने, 'सीता राम गुआए ।।'

दो० चक्कर माया धरतिया, नईं जपोऐ राम ।
जिन्द धड़ोऐ धागियां, नीं माया नी राम ।।

दो० करमां दे विन नीं जपै, माह्णू आई राम ।
जिसदे हिरदें राम ऐ, सैह रूप भगवान ।।

माया छड्डी राम नाम दा, करिए धरती जाप ।
हिरख बरोधे मनों कड्डिए, नीं होऐ सन्ताप ।।
जीब जन्त धरती दे सारे, ठौकर लीला भाई ।
धरती उप्पर परमेसर ने, अपणीं खेल रचाई ।।
माह्णूं दे सिर घिरनू फिरदा, माया जाल बछाया ।।
धागे डोरे अणमुक जालें, चप्पें चप्पें छाया ।
अज्ज कंगला तौर बतौरा, नेड़ गुआंडी हव्व ।
जाल कटोया अज्ज कंगलें, दिक्खिया हाखीं रब्ब ।।
राम नाम दें वाझी कटदा, नीं ऐं माया जाल् ।
राम-राम रघुराई दे विन, होऐ नईं सुकाल् ।।
कंगले दे घर चौं पासियां, राम-राम रघुराई ।
कंगली छडी माया निन्दर, चरन राम मन लाई ।।

विच सुनन्दर कंगलें कीता, धरती धुरी उद्धार ।
नेड़ गुआंडी बन्नें लग्गे, होया बेड़ा पार ॥

कंगला मन कंगली माया, निन्दर ऐ संसार ।
सुपने दे विच माह्‌णू करदा, आई सब्ब बपार ॥

माह्‌णू दा मन हरियल तोता, अणमुक करै वचार ।
राम जपै माह्‌णू फल पाऐ, तरै सागरें पार ॥

बिन कर्मां तों नईं जपोऐ, माह्‌णू कण्ठें राम ।
माया पड़दा हाखीं छाऐ, नीं दुस्सन भगवान ॥

तीरथ वरतां किछ नीं मिलदा, जे तोता नीं साफ ।
मैला मन माह्‌णूं दा मुहएं, करै राम दा जाप ॥

इस ग्रंथे जे कोई पढ़गा, जा सुणगा चित लाई ।
सत जन्म दे पापां धोंगा, राम राम रघुराई ॥

दो० **राम नाम दे आसरें, होया बेड़ा पार ।**
माया नाएं ग्रंथ दी, लीला ऐ करतार ॥

'संसार' गलाऐ माया छड्डै, तां माह्‌णू निरदोस ।
जीव-जन्त जो राम पछाणें, तां तिसजो ऐ होस ॥

बालमीक तुलसी ने गाया, राम नाम दा नांऽ ।
भादू म्हीने दी अठमीं जो, भोग ग्रंथ नैं पांऽ ॥

माया नाएं ग्रंथ लखोया, किरपा राम अपार ।
तरताली सबत्त विक्रमी, पूरे दो हज्जार ॥

फतेहपुरे दे बिच्च गराएं, लिखिया माया ग्रंथ ।
राम नाम दी लीला गाई, महा वीर हनुमन्त ॥

संसार चन्द 'प्रभाकर'

जन्म 10 जून, 1935

प्रकाशित पुस्तकें

1, उपन्यास 'निरपराध अपराधी' (7) महाकाव्य 'माया'

2, उपन्यास 'पश्चात्ताप'

3, कहानी संग्रह 'मानव मन'

4, कहानी संग्रह 'जन जीवन'

5, काव्य संग्रह 'जगदी जोत'

6, काव्य संग्रह 'देव धरती'